Swami Vivekananda : The Voice of Resurgent India

पुनरुत्थित भारत की आवाज़ : स्वामी विवेकानन्द

SEMINAR PAPERS
30 JANUARY 2016

SWAMI VIVEKANAND STUDY CENTRE
Km. MAYAWATI GOVT. GIRLS POST GRADUATE COLLEGE
BADALPUR (GAUTAMBUDH NAGAR) U.P. - 203207

SWAMI VIVEKANANDA : THE VOICE OF RESURGENT INDIA

पुनरुत्थित भारत की आवाज़ : स्वामी विवेकानन्द

PROCEEDINGS NATIONAL SEMINAR

30th JANUARY 2016

Sponsored By

UNIVERSITY GRANTS COMMISSION, NEW DELHI

(UNDER THE SCHEME OF EPOCH MAKING SOCIAL THINKERS OF INDIA)

EDITOR-IN-CHIEF

Dr. KISHOR KUMAR

EDITORIAL BOARD

Dr. Divya Nath, Dr. Anita Rani Rathore

Dr. Deepti Bajpai, Dr. Vineeta Singh

SWAMI VIVEKANAND STUDY CENTRE

Km. MAYAWATI GOVT. GIRLS POST GRADUATE COLLEGE

BADALPUR (GAUTAMBUDH NAGAR) U.P.

Swami Vivekananda : The Voice of Resurgent India ISBN : 978-93-80216-12-6

SWAMI VIVEKANANDA : THE VOICE OF RESURGENT INDIA

ISBN : 978-93-80216-12-6

© S.V.S. Centre, K.M.G.G.P.G. College, Badalpur, Gautambudh Nagar

EDITOR-IN-CHIEF
Dr. KISHOR KUMAR

Published by :
Swami Vivekanand Study Centre
Km. Mayawati Govt. Girls Post Graduate College Badalpur
(Gautambudh Nagar) U.P. - 203207

Note : *Views expressed in the articles belong to the authors; the organizers and publisher are not responsible for them. Also, it is assumed that the articles have not been published earlier and are not being considered for any other journal/Book.*

Printed by :
Paras Parkashan, Delhi

CONTENTS

प्राचार्या की कलम से 6
डॉ. ज्योत्स्ना गर्ग

संपादकीय 7
डॉ. किशोर कुमार

वर्तमान परिदृश्य में स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता 10
डॉ. किशोर कुमार

भारतीय संस्कृति के अग्रदूत–स्वामी विवेकानन्द 16
डॉ. हेमलता सुमन

स्वामी विवेकानन्द का नव्य वेदान्त दर्शन 45
डॉ. बृजेश चन्द्र त्रिपाठी

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन 59
डॉ. दीप्ति वाजपेयी

वर्तमान परिदृश्य में स्वामी विवेकानन्द के विचारों की प्रासंगिकता 66
डॉ. अंजु रानी

स्वामी विवेकानन्द : एक सांगीतिक व्यक्तित्व 71
डॉ. भगत सिंह

स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में चिन्तन 77
डॉ. तारकेश्वर गुप्ता

वेदान्त का स्वरूप तथा स्वामी विवेकानन्द 89
डॉ. अरविन्द कुमार

स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन 95
डॉ. स्नेहलता शिवहरे, सुधीर कुमार

स्वामी विवेकानन्द एवं उनका नारी विषयक दृष्टिकोण 112
डॉ. लक्ष्मीना भारती

विवेकानन्द एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली 118
डॉ. शकुन्तला

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और स्वामी विवेकानन्द 124
डॉ. बॉबी यादव

भारतीय समाज के पुनरुत्थापक स्वामी विवेकानन्द जी का दार्शनिक एवं शैक्षिक चिन्तन 128
डॉ. जे. के. विकल

 ISBN : 978-93-80216-12-6

स्वामी विवेकानन्द के चिन्तन में मानवतावादी विचारधारा का प्रभाव 141
डॉ. विकास चन्द, वरिष्ठ विजय कुमार

स्वामी विवेकानन्द एक युवा आदर्श 148
रंजीता रानी, डॉ. हरिन्द्र कुमार

स्वामी विवेकानन्द एवं हिन्दू धर्म 155
डॉ. कनकलता वर्मा

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा-दर्शन का महत्व 160
सुचिस्मता दास

Religious Harmony and Peace Through Knowledge – A Vision of Swami Vivekanand 168
Dr. Divya Nath

Vivekananda's Views on 'Tolerance and Acceptance' 174
Dr. Anita Rani Rathore

Political Views of Swami Vivekananda 184
Dr. Pankaj Choudhary

Swami Vivekananda : A Youth Icon 197
Abhinav Chaudhary

Swami Vivekananda As A Nation Builder 202
Km. Poonam & Dherander Kumar

Vivekananda's Views on Education and Youth 211
Mrs. Shilpi

Vivekananda : An Universal Saint 222
Dr. Seema Sharma

Swami Vivekanand's Philosophy of Vedanta And Education 227
Dr Sonam Sharma

Swami Vivekananda and Personlity Development 236
Balram Singh

Swami Vivekananda And Education 250
Dr. Tarun Shrivastava & Dr. Arvind Kumar Yadav

Vision of Vivekananda on Philosophy of Education 259
Dr. Vineeta Singh

Swami Vivekananda – Religious View 268
Deepak Singh & Dr. Sohan Singh

Swami Vivekananda and his Views on Physical Education 275
Jaipal & Dr. Ashok Kumar Sharma

Religion As Described In The Words of Swami Vivekanand : Some Observations 280
Dr. Anita Goswami

Swami Vivekanand's Philosophy on Education 288
Anita Kumari

Swami Vivevekananda : The Voice of Resurgent India 294
Dr. Pratima Verma & Sunita Srivastava

Swami Vivekananda : A Historical Personality 304
Dr. Santosh Singh

Relevance of Swami Vivekananda as A Political Thinker In Contemporary World 323
Dr. Sarita Sharma & Dr. Gunjan Sachdeva

Swami Vivekananda : Thoughts on Different Dimensions in Education 344
Dr. Surendra Singh

Relevance of Swami Vivekananda Thoughts in Today's Time 356
Dr. Vikas Gupta

Swami Vivekananda A Youth Icon 362
Seema Teotia

Swami Vivekananda As A Youth Icon 365
Dr. Seema Varma

Swami Vivekananda : Education Philosophy 373
Sudhir Kasana

Vivekananda's Vision on Character Building 384
Dr. Aparna Sharma

Importance of Swami Vivekananda's Educational Thoughts In Present Scenario 391
Dr. Manorama Singh

Need To Pour Oil-Drops Upon The Troubled Water 398
Dr. Usha Sawhney

Vivekananda As Futuristic Thinker 404
Neetika Sharma

प्राचार्या की कलम से......

विवेकानन्द पुनरुत्थित भारत की अभिव्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ एवं सशक्त व्यक्तित्व हैं। विवेकानन्द एक ऐसा नाम, एक ऐसा व्यक्तित्व जो सम्मोहन आकर्षण और लोकप्रियता का पर्याय है। विवेकानन्द एक ऐसे यायावर सन्यासी थे, जो ईश्वर के सान्निध्य को मानव मात्र में भी महसूस करते थे। आपके ओजस्वी भाषणों को सुनने के लिये देश के ही नहीं अपितु विदेश के लोग भी लालायित रहते थे क्योंकि विवेकानन्द की नैतिक स्वाधीनता, तेजस्वी आदर्शवाद और निर्भय निष्ठा उनके भाषण में परिलक्षित होती थी। विवेकानन्द ने धर्म का पहला कर्त्तव्य निश्चित किया "दरिद्रजन की सेवा और उनका उत्थान" विवेकानन्द समस्त मानवीय ऊर्जा के सम्बन्ध के मूर्तिमान आदर्श है। उनका चिंतन सार्वभौम है, जिसमे मानव कल्याण की भावना निहित है। अत: विवेकानन्द के चिन्तन की प्रासंगिकता कालजयी है।

मैं, विवेकानन्द अध्ययन केन्द्र के समन्वयक डॉ. किशोर कुमार को राष्ट्रीय सेमिनार के सफल आयोजन के लिये बधाई देती हूँ साथ ही उन्हें **"पुनरुत्थित भारत की आवाज़ : स्वामी विवेकानन्द"** जैसे समसामयिक विषय को वैचारिक मंच प्रदान करने तथा सारगर्भित शोध पत्रों को कार्यवाही रिपोर्ट के माध्यम से चिर संचित करने के लिये भी साधुवाद देती हूँ। शोध पत्रों एवं कार्यवाही रिपोर्ट के सफल प्रकाशन हेतु मेरी शत्–शत् शुभकामनाऐं।

–डॉ. ज्योत्स्ना गर्ग
प्राचार्या

ISBN : 978-93-80216-12-6

संपादकीय

पुनरुत्थित भारत से अभिप्राय है– चेतनाशील भारत, तर्क रहित धारणाओं से मुक्त भारत, औचित्यपूर्ण अवधारणाओं का भारत, स्वतन्त्र और सही भारत, सिद्धान्त एवं व्यवहार में मानवतावादी भारत। पुनरुत्थित व्यक्ति, पुनरुत्थित समाज और पुनरुत्थित राष्ट्र सीमाओं से, विभिन्न दायरों से, छद्म चेतनाओं से, किसी क्षेत्र से और किसी विषय वस्तु के एकान्तिक पक्ष से स्वयं को सीमित नहीं रखता अपितु उसका दायरा और सीमायें असीमित हैं, अनन्त हैं।

पुनरुत्थित व्यक्ति "धर्म और विज्ञान", "तकनीक और कला", "पूर्व और पश्चिम", "राष्ट्र और विश्व" के मध्य औचित्यपूर्ण समन्वय बनाने में सक्षम है। स्वामी जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। स्वामी विवेकानन्द विभिन्न धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर कहते हैं कि धर्म हमें बंधनों से मुक्त करने का माध्यम है अर्थात् मुक्ति लक्ष्य है और धर्म माध्यम, परन्तु हमने धर्म को लक्ष्य मान लिया। धर्म का ऐसा बाह्य स्वरूप हमें सम्प्रदायवाद की ओर ले जा रहा है। हमें इस छद्म चेतना से बचना है और वास्तविक चेतना को जागृत करना है। स्वामी जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य छात्र–छात्रा के व्यक्तित्व में अन्तर्निहित श्रेष्ठ मूल्यों और क्षमताओं को अभिव्यक्ति प्रदान करना है परन्तु आजादी के 68 वर्ष पश्चात् नई शिक्षा नीति की आवश्यकता एक विडम्बना को प्रदर्शित करती है।

एक पुनरुत्थित व्यक्ति एवं एक सामान्य व्यक्ति में केवल एक अंतर होता है–पुनरुन्थित व्यक्ति द्वारा मानवीय क्षमताओं और चेतना का औचित्यपूर्ण अधिकतम उपयोग करना एवं सामान्य व्यक्ति द्वारा उनका औसत उपयोग करना।

भारत में पुनरुत्थित अभिव्यक्ति का क्रम अविरल है महात्मा गांधी, राम मनोहर लोहिया, डॉ. अम्बेडकर, सुभाष चन्द्र बोस, अन्ना हजारे, जय प्रकाश नारायण, डॉ. कलाम, ई. श्रीधरन और असंख्य व्यक्तित्व इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं परन्तु यह असंख्य भी अपेक्षित बदलाव के लिए कम हैं। परिदृश्य आपके सामने है, जो अच्छा नहीं है। यह संवाद अगर किसी एक को भी इस प्रक्रिया में प्रेरित कर सका तो सेमिनार अपने उद्देश्यों में सफल माना जाएगा।

स्वामी विवेकानन्द अध्ययन केन्द्र, युग–प्रवर्तक, सार्वभौमिक चिंतन की

ISBN : 978-93-80216-12-6

अनुराशि, मानव मात्र की कल्याण भावना से ओत–प्रोत स्वामी विवेकानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से अकादमिक जगत एवं जन सामान्य को सुपरिचित कराने एवं उनके सम्बन्ध में तर्क रहित अवधारणाओं के समूल उन्मूलन हेतु निरन्तर प्रयासरत है। "पुनरुत्थित भारत की आवाजः स्वामी विवेकानन्द" नामक इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन इसी प्रयास की एक श्रृंखला है। वृहद् संख्या में विद्वतजनों एवं शोधार्थियों द्वारा की गई प्रतिभागिता ने संगोष्ठी को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ. कमल टावरी, सेवानिवृत आई.ए.एस. एवं पूर्व अतिरिक्त सचिव भारत सरकार ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि आज समस्या एक पक्षीय नहीं वरन् समग्रता में है अतः हमें समाधान भी समग्रता में ढूंढना होगा। स्वार्थ को छोड़कर परार्थ, सर्वार्थ एवं परमार्थ को ग्रहण करना ही हमारी सांस्कृतिक विकास की धरोहर है और यही स्वामी विवेकानन्द का संदेश भी है उन्होंने युवा शक्ति से आह्वान रुप में कहा कि स्थापित मान्यताओं और नियमों पर प्रश्न कीजिए और उनका उत्तर स्वयं खोजिए। यदि हम पुनरुत्थित भारत चाहते हैं तो हमें सबल और सतत् प्रयास करने होंगे। ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति में निहित है बस उसके क्रियान्वयन की आवश्यकता है।

उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि डा. आर.पी.एस. यादव, अपर सचिव, उच्च शिक्षा परिषद् लखनऊ ने अपने उद्बोधन में कहा कि स्वामी विवेकानन्द भारतीय नव जागरण के अग्रदूत हैं। शिक्षा के विषय में उनके विचार समाज की सोच बदलने की सामर्थ्य रखते हैं अतः शिक्षकों का यह गुरुतर दायित्व है कि वह स्वामी जी के विचारों को आत्मसात कर भावी पीढ़ी को अग्रसारित करें।

संगोष्ठी की अन्य विशिष्ट अतिथि एवं वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्त्ती डॉ. शीला टावरी ने अन्तः जागृति की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि अन्तस् से चेतना का जागरण जीवन को जन्म देता है। विवेकानन्द जी भारतीय संस्कृति के उन्नायक माने जाते हैं अगर हम अपनी आन्तरिक चेतना को जगाकर स्व–कर्त्तव्यों का सम्यक् निर्वहन करें तो स्वामी जी की भाँति अपनी संस्कृति के सबल उन्नायक बन सकते हैं।

संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रुप में प्रसिद्ध इतिहासविद् प्रो. अशोक कुमार शास्त्री जी ने कहा कि हमें अपने समस्त पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर समग्र भाव से स्वामी विवेकानन्द के विचारों को आत्मसात करना चाहिए। राष्ट्र निर्माण स्वामी

विवेकानन्द का स्वप्न था और इस हेतु उन्होंने चरित्र निर्माण पर बल दिया था अतः आज सामाजिक समानता तथा उत्तम नैतिक शिक्षा प्रदान किए जाने की आवश्यकता है जो युवाओं का चरित्र–निर्माण कर उन्हें राष्ट्र–निर्माण के योग्य बना सकती है।

स्वामी विवेकानन्द अपने समय से बहुत आगे के व्यक्ति थे। उनका जीवन साहस, त्याग, सेवा, चरित्र, एवं श्रद्धा पर आधारित था। स्वामी जी की श्रद्धा अंध भक्ति नहीं वरन् औचित्य पूर्ण श्रद्धा थी। वर्तमान परिस्थितियों में उनके चिंतन की प्रासंगिकता पर विचार–विमर्श एवं शोध निःसन्देह राष्ट्र–निर्माण का नूतन पथ आलोकित करेगा इस उद्देश्य के दृष्टिगत संगोष्ठी को तीन तकनीकी सत्र में विभाजित किया गया था। प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. राजेश कुमार, एसो. प्रो.–इतिहास दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा, द्वितीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. के. के. शर्मा, एसो. प्रो.–इतिहास, एम. एम. कॉलेज, गाजियाबाद द्वारा एवं तृतीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. रंजना जैन, विभागाध्यक्ष–अंग्रेजी विभाग, कु. मायावती राजकीय महिला स्ना. महाविद्यालय, बादलपुर द्वारा की गई।

विभिन्न तकनीकी सत्रों में विषय–विशेषज्ञों, अतिथि वक्ताओं एवं प्रतिभागियों द्वारा स्वामी विवेकानन्द के विचारों के सैद्धान्तिक पक्ष, दार्शनिक एवं व्यवहारिक पक्षों पर सारगर्भित विचाराभिव्यक्ति की गई तथा उनके सार्वभौमिक एवं समसामयिक व्यक्तित्व पर तथ्यपूर्ण शोध–पत्र प्रस्तुत किये गये।

संगोष्ठी में समापन सत्र के अतिथि वक्ता प्रो. हरविन्दर सिंह, प्रो. मार्केटिंग मैनेजमेंट आई.एम.टी., गाजियाबाद ने स्वामी जी को ओजस्वी व्यक्तित्व का धनी बताते हुए कहा कि विवेकानन्द जी समग्र व्यक्तित्व का पर्याय है। उनकी शिक्षा का सार समग्रता का भाव अपने अन्दर ग्रहण करने में है। यदि हम उनके विचारों पर व्यवहारिक रुप से अमल करें तो निश्चित रुप से समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. अश्वनी कुमार गोयल, संयुक्त सचिव, उच्च शिक्षा उ.प्र. ने सार रुप में कहा कि स्वामी विवेकानन्द का मूल मंत्र है– "उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक बढ़ते रहो"। आज राष्ट्र के लिए कुछ करने का समय है। अतः राष्ट्रहित के लिए हम अपने लक्ष्य निर्धारित करें तभी विवेकानन्द जी के सपनों का भारत सृजित होगा।

अन्त में महाविद्यालय की प्राचार्या एवं संगोष्ठी संरक्षिका डॉ. ज्योत्स्ना गर्ग

ने सेमिनार समापन अवसर पर विचाराभिव्यक्ति करते हुए कहा कि विवेकानन्द जी एक ऐसा व्यक्तित्व है जो सम्मोहन, आकर्षण व लोकप्रियता का पर्याय है। वह ईश्वर के सानिध्य को मानव–मात्र में महसूस करते थे। विवेकानन्द जी की नैतिक स्वाधीनता, तेजस्वी आदर्शवाद एवं निर्भय निष्ठा उनके भाषणों में परिलक्षित होती है। उनके चिन्तन में मानव कल्याण की भावना निहित है अतः उनका चिन्तन कालजयी है।

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन एवं कार्यवाही ग्रन्थ का प्रकाशन स्वामी विवेकानन्द के विचारों को प्रसारित करने एवं व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र निर्माण हेतु उसे व्यवहारिक रुप देने का हमारा एक विनम्र प्रयास है। भविष्य में भी स्वामी विवेकानन्द अध्ययन केन्द्र के तत्त्वावधान में ऐसे लघु किन्तु महत्वपूर्ण प्रयास होते रहेंगे।

हम विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का आभार व्यक्त करते हैं जिनकी अनुदान राशि ने सेमिनार के आयोजन को संभव बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई साथ ही हम डॉ. अश्वनी कुमार गोयल जी के हृदय से आभारी हैं जिनकी प्रेरणा का बीज इस अध्ययन केन्द्र की स्थापना के रूप में फलीभूत हो सका।

हम संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ. कमल टावरी एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. शीला टावरी जी का विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने अपने व्यस्ततम कार्यक्रम से समय निकालकर अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व से संगोष्ठी का मानवर्धन किया। हम संगोष्ठी में आये अन्य अतिथियों एवं प्रतिभागियों का भी आभार व्यक्त करते हैं जिनकी प्रतिभागिता संगोष्ठी की सफलता का आधार है।

हम कृतज्ञ हैं महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. ज्योत्स्ना गर्ग के प्रति जिनके निरन्तर समर्थन एवं हमारी कार्य क्षमताओं के प्रति उनके विश्वास के फलस्वरूप संगोष्ठी आयोजन जैसा दुरुह कार्य सहजता से सम्पन्न होना सम्भव हो सका।

अन्त में, अनेकता में एकता का साक्षात् उदाहरण अपने महाविद्यालय परिवार का मैं अन्तः करण से धन्यवाद व्यक्त करता हूँ जिसकी समूह–चेतना से कार्य करने की विशिष्ट पद्धति किसी भी कार्य की सफलता का घोष है।

–डॉ. किशोर कुमार

प्रधान सम्पादक एवं सेमिनार संयोजक

"वर्तमान परिदृश्य में स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता"

डॉ. किशोर कुमार
असि. प्रो. इतिहास विभाग
कु.मा.रा.म.स्ना.महा. बादलपुर

पुनरुत्थित भारत के निर्माण का सर्वाधिक शक्तिशाली माध्यम शिक्षा है। शिक्षा हमारी सुप्त चेतना को जागृत करने, समाज में स्थापित तर्क रहित धारणाओं से मुक्त कर औचित्यपूर्ण तथ्यों को स्थापित करने और सर्वाधिक महत्वपूर्ण हमारे एकान्तिक दृष्टिकोण को व्यापकता की ओर अग्रसर करती है। वर्तमान विकासोन्मुख भारत के उत्तर आधुनिक समाज को समरसता, तार्किकता, सहिष्णुता, वैज्ञानिक अभिरूचि के साथ-साथ औचित्यपूर्ण विचार मंथन की आवश्यकता है। आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, राजनीतिक, शैक्षिक इत्यादि समस्त पक्षों पर होने वाली राष्ट्र की उन्नति की सार्थकता नैतिकता एवं सावयविक वातावरण के अभाव में अर्थहीन है।

यह एक वैश्विक सत्य है कि किसी भी समाज की प्रगति उस समाज के व्यक्तियों की विचार-शक्ति, उनकी तार्किक क्षमता, वैज्ञानिक अभिरूचि एवं औचित्य की अवधारणा पर निर्भर करती है, जो आधुनिक समाज के निर्माण की आधार शिला है किन्तु सूक्ष्मता से अवलोकन करने पर हमारा वर्तमान उत्तर आधुनिक सामाज आज भी राष्ट्र की विभिन्न चुनौतियों, विचारधाराओं, मान्यताओं एवं दर्शनों आदि को तर्करहित अवधारणाओं पर आधारित पूर्वाग्रहों से ग्रस्त अभिव्यक्ति प्रदान करता है जबकि किसी विषय, मुद्दे, दर्शन एवं मान्यता पर संकीर्ण विचारधारा के आधार पर तर्क रहित होकर निष्कर्ष प्राप्त कर लेना अकादमिक जगत् एवं जनसामान्य, दोनों के लिए ही अहितकारी परिदृश्य है। जो हमारी वास्तविक उन्नति का मार्ग अवरूद्ध कर देता है।

महान व्यक्तियों का दर्शन, जीवन के प्रति उनकी संकल्पना और

 ISBN : 978-93-80216-12-6

दृष्टि किसी विशेष समूह, स्थान व समय की सीमाओं में न बँधकर कालजयी एवं वैश्विक होती है साथ ही उनके विचार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को समृद्ध करते हैं। स्वामी विवेकानन्द ऐसी ही विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं जो देश-काल की सीमाओं में नहीं बँधते। धर्म व आध्यात्म, राष्ट्र, समाज, कर्मयोग, मानव-मूल्य एवं शिक्षा-दर्शन के सम्बन्ध में उनके विचार उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उनके जीवन काल में थे क्योंकि उपर्युक्त सभी पक्षों पर उनके विचारों का प्रादुर्भाव मात्र वैचारिक धरातल पर नहीं हुआ वरन् ठोस एवं सबल पृष्ठभूमि में उनके प्रांजल तथा उदात्त चिन्तन का विकास हुआ इसीलिए उनका चिंतन सार्वभौमिक है।

वर्तमान भारत विभिन्न प्रकार की चुनौतियों को अपने अन्दर समाहित किए परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है ऐसे समय में मानव मूल्यों एवं चरित्र-निर्माण करने वाली शिक्षा की अत्यधिक आवश्यकता है। येन-केन-प्रकारेण आर्थिक प्रगति को लक्ष्य मानने वाली शिक्षा, मनुष्य की संवेदनाओं को मृतप्राय बना देती है। ऐसी शिक्षा राष्ट्र का तथाकथित भौतिक विकास तो कर सकती है किन्तु मानव को मानवीय गुणों से रहित कर मशीनी मानव (रोबोट) बना देती है।

शिक्षा आत्म-विकास करने का एक सहज माध्यम है। शिक्षा द्वारा व्यक्ति का जीवन उत्तरोतर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होता है। स्वामी विवेकानन्द मानते हैं कि ज्ञान मनुष्य में अन्तर्निहित है। शिक्षा द्वारा उसके प्रस्फुटन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। वस्तुतः शिक्षा मनुष्य में पूर्वनिहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है। स्वामी विवेकानन्द जी के शब्दों में- "समस्त ज्ञान, चाहे वह व्यवहारिक हो या परमार्थिक, मनुष्य के मन में ही निहित है। बहुधा वह प्रकाशित न होकर ढका रहता है और शिक्षा द्वारा जब वह आवरण धीरे-धीरे हटता जाता है, तो हम कहते हैं कि हमें ज्ञान प्राप्त हो रहा है।" इस प्रकार विवेकानन्द जी मानते हैं कि सच्ची शिक्षा वही है जो अन्तःकरण के अनन्तज्ञान को

 ISBN : 978-93-80216-12-6

प्रकाशित करने में सहायक हो। सारी शिक्षा एवं प्रशिक्षण का एकमेव उद्देश्य मनुष्य का निर्माण होना चाहिए क्योंकि जब मनुष्यता का विकास होता है तो वह चारों ओर एक सकारात्मक प्रभाव डालता है। जो व्यक्तित्व मानव-तत्त्व से परिपूर्ण होते हैं, उनके जीवन की गति लययुक्त हो जाती है और वह अपने चारों ओर एक जादुई प्रभाव उत्पन्न करते हैं। ऐसे व्यक्ति समाज में आमूल-चूल परिवर्तन करने की क्षमता रखते है। स्वामी जी कहते है– "इन महान धर्माचार्यों को देखो, उन्होंने अपने जीवन काल में सारे देश को हिला डाला था। व्यक्तित्व ही था वह जिसने यह अन्तर पैदा किया। दार्शनिक में यह प्रभाव डालने वाला व्यक्तित्व किंचिन्मात्र होता है और महान धर्म संस्थापकों का वही व्यक्तित्व प्रचण्ड होता है। प्रथम में बुद्धि तथा दूसरे में जीवन होता है। पहला मानो एक रसायनिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा कुछ रसायनिक उपादान एकत्र होकर आपस में संयुक्त हो जाते हैं और अनुकूल परिस्थिति होने से या तो उनमें प्रकाश की दीप्ति प्रकट होती है, या वे असफल ही हो जाते हैं। दूसरा जलती हुई मशाल के सदृश है, जो शीघ्र ही एक के बाद दूसरे को प्रज्ज्वलित करता है।"

इस प्रकार समस्त शिक्षा का ध्येय है– मनुष्य का विकास। जिस संयम के द्वारा इच्छा-शक्ति का प्रवाह और विकास वश में लाया जाता है तथा फलीभूत होता है वह शिक्षा कहलाती है।

स्वामी विवेकानन्द ऐसी शिक्षा को निषेधात्मक मानते है जो मनुष्य को मनुष्य न बनाकर विभिन्न अवधारणाओं में जकड़ देती है। शिक्षा का अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य के मस्तिष्क में ऐसी बहुत सी बातें ठूँस दी जाएँ जिससे अन्तर्द्वन्द्व होने लगे और व्यक्ति सम्पूर्ण जीवन उन्हीं अन्तर्द्वन्द्व में व्यतीत कर दे। वह मानते हैं कि जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सके, मनुष्य बन सके, चरित्र गठन कर सके तथा विचारों का सामञ्जस्य कर सके वही वस्तुतः शिक्षा कहलाने योग्य है। यदि कोई व्यक्ति पाँच ही भावों को समाहित कर तदनुसार

 ISBN : 978-93-80216-12-6

जीवन और चरित्र गठित कर सकता है तो उसकी शिक्षा उस व्यक्ति की अपेक्षा बहुत अधिक है जिसने सम्पूर्ण पुस्तकालय को कंठस्थ कर रखा है।

आज अधिकांश शिक्षा पुस्तकस्थ ज्ञान का कण्ठस्थीकरण मात्र है। बहुत सी आदर्श की बातें शाब्दिक रूप से रटकर हम स्वयं को ज्ञानी सिद्ध कर रहे हैं। जबकि ऐसी शिक्षा हमें जीवन की चुनौतियों पर विजय प्राप्त करने योग्य भी नहीं बना पा रही है। किंकर्त्तव्यविमूढ़ता की स्थिति जीवन के हर पक्ष पर दिखाई दे रही है। हम मार्ग को लक्ष्य मान कर उसी में उलझे हुए हैं। वर्तमान शिक्षा सही दिशा दिखा पाने में असफल हो रही है क्योंकि इसमें मानवीय पक्ष विलुप्त प्राय है जबकि सच्चा मानव तत्व या व्यक्तित्व ही वह शक्ति है जो सकारात्मक प्रभाव डालती है।

स्वामी जी कहते हैं– "जो शिक्षा साधारण व्यक्ति को जीवन–संग्राम में समर्थ नहीं बना सकती, जो मनुष्य में चरित्रबल, परहित भावना तथा सिंह के समान साहस नहीं ला सकती, वह भी कोई शिक्षा है? हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे चरित्र का निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि विकसित हो और देश के युवक अपने पैरों पर खड़ा होना सीखें।"

अस्तु, आज व्यक्ति, समाज व राष्ट्र की विभिन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए स्वामी जी के विचारों के अनुरुप शिक्षा की आवश्यकता है। सामाजिक परिवर्तन के चक्र में भौतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के मध्य सन्तुलन अपरिहार्य हो गया है। समन्वित एवं संतुलनकारी शिक्षा समाज में सावयविक वातावरण का निर्माण कर नव–जागरण की अखंड ज्योति प्रज्ज्वलित कर सकती है। सांसारिक उन्नति और मुक्ति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। मुक्ति तो निःसन्देह अन्तिम लक्ष्य है ही किन्तु राष्ट्र, समाज व विश्व का अभ्युदय भी आवश्यक है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। ध्यातव्य है कि यह अभ्युदय

ISBN : 978-93-80216-12-6

सकारात्मक एवं नैतिकता की सीमा में होना चाहिए। इस हेतु मनुष्य में मानवीय तत्त्व विकसित करने वाली शिक्षा की आवश्यकता है। यही स्वामी विवेकानन्द जी के शिक्षा सम्बन्धी चिन्तन का सार है जो कि वर्तमान सन्दर्भों में अति प्रासंगिक है।

सन्दर्भ–

1. *शिक्षा, स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण मठ, नागपुर।*
2. *भारत जागरण, स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण मिशन, नई दिल्ली।*
3. *व्यक्तित्व का विकास, स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण मठ, नागपुर।*
4. *शिक्षक क्रान्ति का अग्रदूत, निखिलेश्वरानन्द स्वामी, रामकृष्ण मिशन, कोलकाता।*
5. *स्वामी विवेकानन्द, एम. कुमार शर्मा, अर्जुन पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली।*
6. *सार्वलौकिक नीति तथा सदाचार, स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण मठ, नागपुर, 2012*
7. *वेदान्त, स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण मठ, नागपुर 2007*
8. *विवेकानन्द की जीवनी, रोमां रोलां, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2014*
9. *कर्मयोग, स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण मठ (प्रकाशन मठ), नागपुर, 1997*
10. *Nair V.S. Sukumaran, Swami Vivekananda The Educators, Sterling Publisher, New Delhi.*
11. *Bharthy Vijaya, Educational Philosophies of Swami Vivekananda & John ewey, A.P.H publishing corporation, New Delhi*
12. *Swami Vivekananda, My Idea of EDUCATION, Advaita Ashrama, Kolkata, 2015*

भारतीय संस्कृति के अग्रदूत–स्वामी विवेकानन्द

डा. हेमलता सुमन
एसो. प्रो.
नरायण पी.जी. कालेज
शिकोहाबाद

भारतीय इतिहास के संकटमय संक्रान्ति काल में, जब–जब अधःपतन की चरमावस्था होती है, ऊंच–नीच का भेदभाव समाज में असहनीय हो उठता है, राजदण्ड जब दुर्बलों को अन्याय पूर्वक पीड़ित करता है, धर्म की हानि–ग्लानि होती है, अत्याचारपूर्वक दुर्नीतियां जब शतशः रूप धारण कर लेती है तब पुरातन की जीर्ण–मृत देह को शमशान–चिता में फूंककर उसी की राख की ढेरी पर नव–स्फुलिंग द्वारा पुनः एक नवीन सृष्टि का सूत्रपात होता है, समाज व मनुष्य को समय–समय पर गढ़ते रहने की आवश्यकता होती है, मूल्यों व धर्म की रक्षा हेतु किसी न किसी उद्धारक, सन्त, महात्मा का प्रादुर्भाव होता है, श्रीमद्भगवद्गीता में भी श्री कृष्ण ने यही कहा है–

"यदा–यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः
अभ्युत्थानम अधर्मस्य तद्ात्मनम् सृजाम्यहम्।"

मन्त्र दृष्टा वैदिक ऋषि–ऋषिकाओं से वर्तमान युग तक अनेक महापुरुषों ने जन्म ले भारतीय मूल्यों, संस्कृति एवं गौरवमय इतिहास को प्राण दिये। स्वामीरामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महर्षि अरविन्द घोष, महात्मा गांधी आदि इसी सुदीर्घ परम्परा के प्रतिनिधि रहे हैं।

परमाचार्य श्री रामकृष्ण परमहंस के अतिप्रिय शिष्य स्वामी विवेकानन्द ने अपने निर्भीक आत्मोत्सर्ग से भारत के गौरवशाली भविष्य का सूत्रपात किया और न केवल भारत अपितु पाश्चात्य देशों में भी अपने अद्वितीय ज्ञान, विलक्षण बुद्धि, आश्चर्यचकित व निरूत्तर कर देने वाली तर्क

 ISBN : 978-93-80216-12-6

शक्ति का लोहा मनवाया। विवेकानन्द जी भारत के महान सन्त थे, जो ब्रहमचर्य, दया, ममता, प्रेम आदि उदात्त मानवीय गुणों से परिपूर्ण थे, जिनके हृदय में स्वदेश–प्रेम की अग्नि सतत् प्रज्वलित रहती थी। आपने भारतीय और विश्वसंस्कृति के पुनरूध्दारव विकास में अमूल्य योगदान दिया। आध्यात्मिक उपदेष्टा स्वामी विवेकानन्द ने हिन्दू धर्म को नवजीवन दे पाश्चात्य देशों को वेदान्त के सत्य से अवगत कराया तथा विश्वप्रसिद्ध "रामकृष्ण मिशन" की स्थापना की। स्वामी विवेकानन्द ने अपनी ओजपूर्ण वाणी में संसार में बिखरे विद्युत–कणों को एकत्र कर आह्वान किया–

"हे मानव!, मृत की पूजा से हम तुम्हें जीवन्त की पूजा के लिए बुला रहे हैं, गतकाल के लिए शोक करना छोड़कर वर्तमान में प्रयत्न करने के लिए हम तुम्हें बुला रहे हैं, लुप्त मार्ग के पुनरूद्धार में वृथा शक्ति क्षय करने के बजाय नवनिर्मित, विशालतम तथा समीप के पथ में हम तुम्हें बुला रहे हैं। बुद्धिमान! समझ लो जिस शक्ति के आर्विभाव के साथ ही दिग दिगन्तर में उसकी प्रतिध्वनि उठ चुकी है, अपन कल्पना द्वारा उसकी पूर्णता का अनुभव करो और वृथा सन्देह, दुर्बलता तथा दास–जाति–सुलभ ईर्ष्या द्वेष को छोड़ इस महायुग चक्र के प्रवर्तन में सहायता करो।"[1] स्वामी विवेकानन्द के विचार एवं चरित्र मानव समाज के परिवर्तन के इतिहास की परम्परा की रक्षा करते हुए ही एक के बाद दूसरे स्तर पर क्रमशः विकसित हुए हैं।

आचार्य नरेन्द्र का जन्म कलकत्ता के उत्तर भाग में सिमुलिया मुहल्ले में 12 जनवरी 1863 ई. में प्रातः छः बजकर तैतीस मिनट तैतीस सैकेन्ड पर हुआ था। उनके पिता विश्वनाथ दत्त, दादा प्रसिद्ध सन्यासी दुर्गाचरण थे तथा माता भुवनेश्वरी देवी थी। विवेकानन्द के पिता पेशे से वकील थे। वकालत में व्यस्त रहते हुए भी अध्ययन से उनका प्रबल अनुराग था। उन्होंने अंग्रेजी के साथ–साथ फारसी भी सीखी थी। तमाम सुख सुविधाओं एवं ऐश्वर्य से परिपूर्ण होने पर भी विवेकानन्द

 ISBN : 978-93-80216-12-6

की मां भुवनेश्वरी देवी उदास रहती थी। कारण था पुत्र सुख का न मिलना। वह एक बुद्धिमति, कर्मकुशल तथा प्राचीन पन्थी थी। वे बंगला लिखना–पढ़ना भली भांति जानती थी। महाभारत और भागवत आदि पुराणों का नियमित पाठ करती थी, वह तत्कालीन परिस्थितियों पर भी पति से चर्चा करती थी उनके तेजस्वी चरित्र में शील–सौजन्य का ऐसा सुन्दर समन्वय था जो अन्य सभी को आकर्षित करता था। वे मृदभाषी परन्तु गम्भीर स्वभाव की थी इसलिए कोई भी स्त्री वाचाल बनने का साहस नहीं कर पाती थी। वे धर्म परायणाथी, भगवान शिव की पूजा अर्चना पूर्ण मनोयोग एवं विधि–विधान से करती थी। उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति न हो पायी थी इसलिए उदास हो जाती थी। सरलभक्ति तथा सहज विश्वास के साथ वे देवाधिदेव शिव की स्तुति हेतु कठोर व्रतों का पालन करती, शिव अर्चना में उनका अधिकांश समय व्यतीत होता।

एक दिन प्रातः काल शिव पूजा के बाद भुवनेश्वरी देवी ध्यानमग्न हो गयी, इतनी लीन हो गयी कि कब संध्या हो गयी उन्हें स्मृति न रही। अचानक वह स्वप्न देखती हैं कि तुषार धवल कर्पूर गौर कैलाशपति उनके समक्ष खड़े हैं और उन्होंने एक नन्हे से शिशु का रूप ले लिया है। स्वर्गीय आनन्द से पुलकित हो 'हे शिव' 'हे शिव' करती हुई उठ बैठी उसी दिन पौष संक्रान्ति की पावन बेला में पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। नामकरण संस्कार में पुत्र का नाम नरेन्द्र रखा गया।

नरेन्द्र बचपन से ही नटखट थे। वह बना किसी भय–भटकार के स्वेच्छा से आचरण करते। माता तंग आकर उन्हें शान्त करने के लिए नरेन्द्र के सिर पर जल डाल देती तब वह शान्त होते। आशुतोष शिव भी जलाभिषेक से सन्तुष्ट होते हैं– इस विश्वास के साथ भुवनेश्वरी देवी जी यह उपाय करती और आश्चर्य वह शान्त हो भी जाते। नरेन्द्र को बचपन में विले के नाम से पुकारा जाता था। एक बार बालक के उधम से तंग आकर माता ने यह तक कह डाला "महादेव ने स्वयं

 ISBN : 978-93-80216-12-6

न आकर जाने कहां से भूत भेज दिया है"[2] वे कहती "देख विले अगर तू ऊधम मचायेगा तो महादेव तुझे कैलाश में न आने देंगे"[3] नन्हें नरेन्द्र भयभीत हो चुप हो जाते।

नरेन्द्र बचपन से ही मां के मुख से रामायण एवं महाभारत की भक्तिमय कहानियां सुनते आये थे। सुदूर अतीत युग के धर्मवीरों की पवित्र जीवनियां सुनकर उनके शिशु मन में आनन्द की हिलारे उठती और वे मां के साथ घण्टो तक अपनी चंचलता छोड़ मंत्र मुग्ध सुनते रहते। प्रभावित होकर नरेन्द्र बाजार से राम सीता की एक मूर्ति ले आये और पूर्ण मनोयोग से पूजा करते।

एक दिन उनके कोचवान ने किसी बात पर विवाह की चर्चा छेड़ दी किन्हीं कारणवश कोचवान विवाह के विरूद्ध था, उसने बालक नरेन्द्र के समक्ष वैवाहिक जीवन के क्लेश व अशान्ति की ऐसी रूपरेखा बांधी की सुकुमार मन पर यह छाप अंकित हो गयी वह एकाएक उदास हो गये– सोचने लगे अब क्या करूं ? वे रूधे कंठ से माता से बोले–"मां मैं सीता राम की पूजा कैसे करूं? सीता तो राम की पत्नी है।"[4] वस्तु स्थिति से अनिभिज्ञ होने के कारण माता ने हंस कर शिव की पूजा करने को कह दिया। माता की बात मानकर नरेन्द्र शि मूर्ति की स्थापना कर पूजा प्रारम्भ की। किन्तु अगले ही क्षण उन्हें स्मरण हो आया माता ने कहा था शिव तुम्हे कैलाश में न आने देंगे, उन्होंने अत्यिधिक चिंतित हो मां से कहा–"मां क्या मैं सचमुच ही दुष्ट हूं, इसलिए शिव ने मुझे अपने पास से हटा दिया है? अगर मैं साधू हो जाऊं तो क्या शिव मुझे अपने पास लौट आने देंगे? माता ने कहा– हां क्यों नहीं।[5] पर यह बात अनजाने में कह जाने के बाद ही एकाएक किसी अनिर्दिष्ट भय से माता का मन कांप उठा वे डर गयी कि कहीं अपने दादा की भांति यह भी न सन्यासी हो जाये।

तीक्ष्ण बुद्धि वाले नरेन्द्र माता व पिता से जिज्ञासावश पूछ बैठते" भातकी थाली छोड़कर बदन पर हाथ लगाने से क्या होता है? बांये

 ISBN : 978-93-80216-12-6

हाथ से जलपात्र उठाकर जल पीने से हाथ क्यों धोने पड़ते हैं? हाथ में तो झूठा लगा नहीं। अपने प्रश्नों के यथोचित उत्तर न पाकर नरेन्द्र और अधिक उत्पात मचाते। बड़ी दोनों बहनों को तो वे खूब परेशान करते और जब वे उन्हें पकड़ने जाती तो अपने शरीर पर नाली की गन्दगी लपेट उन्हें चिढ़ाते और पकड़ने को कहते, बहनें मन मारकर रह जाती।

पांच वर्ष की आयु होने पर नरेन्द्र पढ़ने हेतु घर पर ही गुरु की व्यवस्था की गई, तत्पश्चात प्राथमिक शिक्षा समाप्त होने पर उन्हें मेट्रोपोलिटिन इन्स्टीटयूशन में भेज दिया गया। समवयस्क सहपाठियों का साथ पा नरेन्द्र खुश हो गये। उधमी व स्वतन्त्र नरेन्द्र को विद्यालय का अनुशासन व्यथित कर देता, क्रोध के मारे वे मार–पीट पर उतारू हो जाते, अध्यापक उन्हें शान्त करते। मृदु वाणी से ही वह शान्त हो पाते। एक दिन बाल्यकाल के बारे में किसी शिष्य से बातें करते हुए स्वामी जी ने कहा था– "बचपन में ही मैं एक जिद्दी शैतान था, नहीं तो क्या खाली हाथ ही सारी दुनियां घूम सकता था"[6]

नरेन्द्र को भूत प्रेत आदि किसी से भय नहीं लगता था, किसी के कहने पर कि उक्त पेड़ पर भूत रहता है पूरी रात भूत की प्रतीक्षा में उसी पेड़ के नीचे बैठे रहते। 14 वर्ष की अवस्था में उन्हें पेट में रोग हो गया, स्वास्थ्य लाभ हेतु उनके पिता ने पूरे परिवार को 1877 में रायपुर बुला लिया अपने पिता के पास पहुंच वे आनंदित हो उठे। पिता को वह बहुत सम्मान देते थे। रायपुर में स्कूल नहीं था, पिता जी नरेन्द्र को घर पर ही स्वयं शिक्षा देने लगे। पुत्र की प्रतिभा पिता से छिपी न रह सकी। पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त इतिहास दर्शन तथा साहित्य सम्बन्धी अनेक पुस्तके वे नरेन्द्र को पढ़ाते। पुत्र की योग्यता तार्किता एवं तीव्र बुद्धि देख विश्वनाथ गदगद हो उठते। एक दिन विश्वनाथ जीने आनन्द के साथ नरेन्द्र से कहा– "बेटा आशा है एक दिन तुम्हारे द्वाराबंग भाषा गौरवान्वित होगी" और इसमें संदेह नही कि स्वामी

विवेकानन्द द्वारा लिखित 'वर्तमान भारत', 'परिवाजक', 'भावबार–कथा' (चिंतनीय बातें) प्राच्य और पाश्चात्य आदि ग्रन्थों ने उनकी भविष्य वाणी को सत्य प्रमाणित कर दिया।

नरेन्द्र ने दो वर्ष तक पिता के साथ रहकर ज्ञानलाभ ही नही किया बल्कि उनके किशोर चरित्र पर पिता की महानता की गम्भीर छाप भी पड़ी। तेजस्विता, दूसरों को दुखी देख व्याकुल होना, विपत्ति में भी धैर्य का साथ न छोड़ना तथा निर्विकार चित्त से अपने कर्तव्य का पालन करना नरेन्द्र ने अपने पिता से ही सीखा था। नरेन्द्र नियमित व्यायाम करते थे, दीर्घ और बलिष्ठ शरीर के कारण वे 16 वर्ष की अवस्था में 20 वर्ष के प्रतीत होते थे। 'हिंदू मेला' के प्रवर्तक नवगोपाल मित्र ने बाक्सिंग में प्रथम आने पर उन्हें चांदी की बनी तितली ईनाम में दी थी।, उस समय के छात्र समाज में क्रिकेट के उत्कृष्ट खिलाड़ी के रूप में भी उन्हें काफी सम्मान मिला था।

स्वास्थ्य लाभ हेतु पिता के पास रहने के कारण लगभग दो वर्ष तक अनुपस्थित हाने से 'प्रवेशिका श्रेणी' में भरती होने में उन्हें कुछ अड़चने आयी। दो वर्ष की पाठ्य पुस्तके कठोर परिश्रम और लग्न के साथ एक ही वर्ष में समाप्त कर वे प्रथम श्रेणी में उर्त्तीण हुए तो परिवार, मित्र तथा गुरुजनों की खुशी का ठिकाना न रहा। नरेन्द्र के जीवन के सही दिशा तथा उच्चादर्श देने में उनकी उच्च विचारशील माता की शिक्षा एवं प्रयत्नों का भी परिणाम था।

नरेन्द्र ने 1879 में 'प्रवेशिका परीक्षा' में पास होकर जब कालेज में प्रवेश लिया उस समय वह 18 वर्ष के थे। परीक्षा के लिए तैयारी के समय तीन वर्ष का पाठ्यक्रम एक ही वर्ष में पूरा करना पड़ा था जिसके कारण उन्हें मलेरिया हो गया और उन्हें 1 वर्ष के लिए कालेज छोड़ना पड़ा। दूसरे वर्ष वे जनरल असेम्बली इन्स्टीट्यूशन एफ.ऐ. में पढ़ने लगे। नरेन्द्र ने एफ.ए. की परीक्षा से पहले ही दर्शन–शास्त्र एवं उच्चसाहित्य सम्बन्धी ग्रन्थादि का अध्ययन कर, मिल आदि पाश्चात्य

 ISBN : 978-93-80216-12-6

नैयायिकों के मतवाद का ज्ञान प्राप्त कर लिया था तथा ह्ययूम एवं हर्बर्ट स्पेन्सर के दार्शनिक ग्रन्थों का अध्ययन प्रारम्भ कर दिया था।

जनरल असेम्बली कालेज के अध्यक्ष विलियम हेस्टी साहब बड़े पण्डित, कवि और दार्शनिक थे। नरेन्द्र, ब्रजेन्द्रनाथ सील आदि कुछ प्रतिभाशाली छात्र उनके प्रिय शिष्य थे जो उनके पास नियमित रूप से दर्शनशास्त्र का अध्ययन करते थे। हेस्टी नरेन्द्र को वे इतना चाहते थे कि एक बार कालेज की 'आलोचना सभा' में नरेन्द्र के दार्शनिक मतविशेष के विश्लेषण से विशेष सन्तुष्ट होकर उन्होंने कहा था–"He is an excellentphilosophical student in all the German and English Universities there is not one student so brilliant as he."[8]

डेकोर्ट का अहमवाद, ह्यूम और बेन की नास्तिकता, डार्विन का विकासवाद और स्पेन्सर का अज्ञेयवाद इत्यादि विभिन्न दार्शनिकों की विचारधाराओं में बहते हुए नरेन्द्र सत्य की प्राप्ति के लिये अत्यधिक व्याकुल हो उठते। 1907 ई. की प्रबुद्ध पत्रिका में ब्रजेन्द्रनाथ ने एक लेख लिखा जिसमें नरेन्द्र की मानसिक अशान्ति और विपलव का युक्ति पूर्ण विवरण दिया था। नरेन्द्र सोचते मानव जीवन का उद्देश्य क्या है? इस पंचेन्द्रिय ग्राहय जड़ जगत के पीछे ऐसा कोई शक्तिमान पुरुष है या नहीं, जिसके इशारे पर जड़ समाष्टि परिचालित हो रही है? ईश्वर है तो उसके दर्शन कैसे हो सकते हैं। कोई भी धर्म प्रचारक धर्म तथा ईश्वर के ऊपर भाषण देते तो नरेन्द्र पूछ बैठते "महाशय क्या आपने ईश्वर को देखा है?" आध्यात्मिक तत्वों की व्याख्या करने वाले नरेन्द्र के व्याकुल मन को व जिज्ञासाओं को शान्त न कर पाते। धर्म प्रचारकों की सम्प्रदायगत रटी हुई बोलियां सुनकर वे और भी अधिक सन्देहग्रस्त बेचैन हो उठते। सत्य प्राप्ति की तीव्रतर खोज उन्हें व्यथित कर देती। एक बात को तो उनके अन्तःस्थल ने जान लिया था कि–

"अविद्यायामन्तरे वर्तमान स्वयं धीराः पण्डितम्मन्यमानाः दन्द्रम्यमानाः परियन्ति मूढ़ा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः"–कठोपनिषद 1/2/3

ISBN : 978-93-80216-12-6

अर्थात चारों ओर विद्या से घिरे हुए अपनी समझ में बड़े बुद्धिमान बने हुए और स्वयं के पण्डित मानने वाले वेमूढ, अंधो के नेतृत्व में चलने वाले अन्धों के समान अनेक कुटिल रास्तों पर भटकते रहते हैं।"

नरेन्द्र सत्य प्राप्ति हेतु ही ब्रहम समाज में गये। वे ब्रह्म समाज के सदस्य बने परन्तु मतवादों और नियमित उपासना आदि द्वारा उनकी अत्युत्कट आध्यात्मिक तृष्णा तृप्त नही हुई। अपने चारों ओर आध्यात्मिक गुरुओं के वातावरण के बीच डूबे हुए पाश्चात्य दार्शनिको की विचारधाराओं से क्षुब्ध और आलोड़ित, तथा युक्तिवादी ब्राह्म होते हुए भी वे सद्गुरु की प्राप्ति के लिए व्याकुल हो उठे। वे सोचते कौन बता सकता है कि "सत्य क्या है" शान्ति कैसे मिले? वे किससे पूछें–कस्मिन भगवो विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवतीति? अर्थात किसको जान लेने पर सब कुछ जान लिया जाता है?

एक दिन विवाह–प्रसंग की आलोचना में नरेन्द्र ने अपने हृदय की अशान्ति को प्रकट कर विवाह के विघ्नों के स्पष्ट कर दिया, तब प्रसिद्ध डाक्टर तथा उनके पिता के रिश्तेदार रामचन्द्रदत्त ने उनसे कहा–"यदि वास्तव में सत्य की प्राप्ति ही तुम्हारा मूल उद्देश्य है तो ब्रह्म समाज आदि स्थानों में न भटककर श्री रामकृष्ण परमहंस जी के पास चले जाओ। नरेन्द्र कुछ मित्रों को लेकर दक्षिणेश्वर चले गये। नरेन्द्र को देख श्री रामकृष्ण परमहंस विभोर हो उठे और उन्हे गले से लगाकर स्नेहपूर्ण गदगद कण्ठ से कहा– "तू इतने दिनों तक मुझे भूलकर कैसे रहा? कब से मैं तरे आने की बाट जोह रहा हूं। विषयी लोगों के साथ बात करते–करते मेरा मुहं जल गया है, अब आज से तेरे समान सच्चे साथी के साथ बात करके मुझे शान्ति मिलेगी" नरेन्द्र ने दोनों हाथ जोड़कर सम्मान के साथ कहा– मैं जानता हूं आप सप्तर्षि मण्डल के ऋषि हैं, नररूपी नारायण हैं, जीवों के कल्याण की सामना से तुमने देह धारण की है......"

 ISBN : 978-93-80216-12-6

श्रीरामकृष्ण परमहंस का अपूर्व त्याग शिशु की भांति अभिमान शून्य सरल व्यवहार, विनय–नम्र मधुरता, गम्भीर निष्काम प्रेम आदि ने नरेन्द्र के हृदय पर थोडे दिनों में ही प्रभाव डाल दिया। फिर भी नरेन्द्र ने परमहंस जी के समक्ष सम्पूर्ण समर्पित होने में तीन वर्ष का लम्बा समय लगाया। जिसमें नरेन्द्र ने तरह तरह से उनकी परीक्षा ली। ऐसा शिष्य जो गुरु की परीक्षा लेकर ही शिष्यत्व गृहण करे, अपने को पूर्ण समर्पित कर सके, ऐसा विलक्षण कार्य तो विलक्षण नरेन्द्र ही कर सकते थे।

श्री रामकृष्ण समझ गये थे कि नरेन्द्र को समय पर जगत के सैकड़ो–हजारों धर्मपिपासु नर–नारियों की आध्यात्मिक तृष्णा मिटाने, पाश्चात्य सभ्यता के अनुकरण के गर्व से दिग्भ्रान्त स्वदेशियों को लुप्त प्राय: सनातन धर्म के पथ पर लौट आने के लिए पुकारना होगा। उनके जीवन में प्रकाशित 'जितने मत उतने पथ' रूपी सार्वभौमिक आदर्श के प्रचार कार्य में नरेन्द्र ही योग्य अधिकारी है। भविष्य की सोचकर रामकृष्ण उन्हें सर्वमतों के आधार स्वरूप–वेदान्त में वर्णित साधना मार्ग में परिचालित करने के लिए प्रयत्नशील हुए। किन्तु नरेन्द्र सगुण निराकार के ध्यान में आस्थावनत थे। इसलिए उन्होंने अद्वैत वाद को काफी समय बाद ग्रहण किया। नरेन्द्र सहज ही रामकृष्ण की इस बात पर विश्वास न कर पाये की वे ही अधिकारी पुरुष हैं, और जगदम्बा के विशेष कार्यसिद्धि के लिए अवतरित हुए हैं।

एक दिन महर्षि देवेन्द्र नाथ की नौका पर नरेन्द्र प्रात: ही पंहुच गये और तीव्र व्याकुलता के साथ प्रश्न किया– आपने ईश्वर को देखा है? महर्षि ने कई प्रकार से नरेन्द्र को आश्वासन देकर नियमित रूप से ध्यान आदि करने को कहा। नरेन्द्र का हृदय संतुष्ट न हुआ और वे व्यथित हो लौट आई। घर लौटकर नरेन्द्र ने धर्मशास्त्रों एवं दर्शनशास्त्र को परे रख दिया, जब ये ईश्वर प्राप्ति में ही सहायक नही तो व्यर्थ पाठ करने से क्या लाभ? रात भर वह सोचते रहे और मन में जिज्ञासा लिए दक्षिणेश्वर पहुंच कर रामकृष्ण से वही प्रश्न दौहराया–"क्या आपने

 ISBN : 978-93-80216-12-6

ईश्वर के दर्शन किये हैं? अपूर्व शान्ति के साथ परमहंस जी ने कहा– हां बेटा मैंने ईश्वर के दर्शन किये है। तुम्हें जिस प्रकार प्रत्यक्ष देख रहा हूं इससे भी अधिक स्पष्ट रूप से उन्हें देखा है। नरेन्द्र का विस्मय सौ गुना बढ़ाते हुए उन्होंने पुनः कहा– क्या तुम भी देखना चाहते हो? यदि तुम मेरे कहे अनुसार काम करो तो तुम्हे भी दिखा सकता हूं।"[10] श्री रामकृष्ण की वाणी से जिस प्रकार की साधना व पथ का संकेत मिला वह कठिन तो था ही, ब्रह्म समाज के आदर्श से अनुप्राणित नरेन्द्र यकायक उसे ग्रहण न कर सके। किन्तु ब्रह्म समाज की एक विशेष घटना ने नरेन्द्र का भ्रम ब्रह्म समाज से तोड़ दिया। हुआ यूं कि जब काफी समय तक नरेन्द्र दक्षिणेश्वर नही गये तो रामकृष्ण स्वयं ही ब्रह्म समाज की साधारण सभी में आ पहुंचे और ईश्वर कथा सुनते–सुनते वेदी तक पहुंच गये। नरेन्द्र ने उनके आने का कारण अनुमान से समझ कर उनके पास आकर उनकी गिरती भावमय देह को संभाल लिया। सभी ब्रह्म समाज के सदस्य आश्चर्य से देखने लगे, कई लोगो ने साधारण भद्रतासूचक शिष्टाचार भी नहीं दिखाया तथा अवज्ञामिश्रित विरक्ति स्पष्ट कर दी। इसी बीच परमहंस समाधिमग्न हो गये, उन्हें देखने लोग उमड़ने लगे। संचालको ने कोलाहल व गड़बड़ी के कारणगैस बत्ती बंद कर दी। नरेन्द्र बड़ी मुश्किल से पीछे के दरवाजे से उन्हें बाहर ले गये और दक्षिणेश्वर भेजने की व्यवस्था की। नरेन्द्र के हृदय पर ब्रह्म समाज के लोगों के व्यवहार से काफी चोट पहुंची और उन्हीं के लिये रामकृष्ण को अपमानित होना पड़ा यह सोचकर नरेन्द्र व्यथित एवं क्षुब्ध हो उठे और इसके बाद वे कभी भी ब्रह्म समाज नही गये।

बचपन से ही नरेन्द्र के हृदय में जब कोई सन्देह होता तो उसकी पूरी मीमांसा कर लिए बिना उन्हें शान्ति न मिलती। रात–दिन सोचकर भी वे रामकृष्ण के सम्बन्ध में वे किसी प्रकार का स्थिर निश्चय न कर सके। बी.ए. की परीक्षा की तैयारी करते समय एक आम बहस में नरेन्द्र ने अपने मित्रों से कहा– "मैं समझता हूं कि सन्यास ही

 ISBN : 978-93-80216-12-6

मानव जीवन का सर्वोच्च आदर्श होना चाहिए, नित्य परिवर्तन शीलसंसार के पीछे सुख की कामना से इधर–उधर दौड़ने की बजाय उस अपरिवर्तनीय 'सत्यं, शिवं, सुन्दरं' को पाने के लिए प्राणपण से कोशिश करना सौ गुना श्रेष्ठ है"[11]

इसी बीच उनके पिता का हृदय–घात से स्वर्गवास हो गया। नामी वकील होने के कारण विश्वनाथ यथेष्ट कमाते थे किन्तु मुक्त हस्त होने के कारण भविष्य के लिए कुछ संचय न कर सके थे। दुख पड़ते ही सभी रिश्तेदारों ने किनारा कर लिया। तब कानून की परीक्षा की तैयारी के साथ–साथ नरेन्द्र के काम की तलाश शुरु कर दी। तीन चार महीनों तक कोई काम न मिलने के कारण परिवार अन्न के लिए भी तरस गया। नरेन्द्र कई–कई दिनों तक उपवास करने लगे जिससे उनका शरीर दुर्बल हो गया किन्तु आत्म निर्भर शील नरेन्द्र ने मित्रों की मदद नहीं ली। इन विपरीत परिस्थितियों के कारण नरेन्द्र काफी दिनों तक दक्षिणेश्वर न जा सके। रामकृष्ण जी व्याकुल हो उठे। नरेन्द्र का हृदय संसार की निम्न मानसिकता एवं स्वार्थपरक सम्बन्धों से इतने दुखी थे कि गुप्त तरीके से सन्यास लेने की सोचने लगे। उसी समय रामकृष्ण का कलकत्ता में आगमन हुआ। यह सोचकर कि गृह त्याग से पहले गुरुचरणों की वन्दना कर लूं नरेन्द्र रामकृष्ण जी से मिलने गये। परन्तु ऐसा न हो सका और रामकृष्ण उन्हें दक्षिणेश्वर ले गये। गुरुकृपा से नरेन्द्र अटर्नी आफिस में काम करने लगे तथा पुस्तकों का अनुवाद कर आजीविका चलाने लगे। विद्यासागर महाशय के स्कूल में नरेन्द्र ने अध्यापन कार्य भी स्वीकार कर लिया।

इसी बीच रामकृष्ण को गले का रोग हो गया। उनकी सेवाशुश्रुषा के लिए नरेन्द्र उन्हें काशीपुर के उद्यान भवन में ले आये। रामकृष्ण ने अपने शिष्यों को सन्यास देने का संकल्प किया। शुभ दिन नरेन्द्र के हाथ में गेरूआ वस्त्र देकर कहा– क्या तुम लोग सम्पूर्ण निराभिमानी होकर भिक्षा की झोली कंधे पर लिए राजपथों पर भिक्षा मांग सकोगे?

 ISBN : 978-93-80216-12-6

गुरु के आदेश को मान कर वह लोग जो भी भिक्षा में लाये सभी ने प्रसाद के रूप में ग्रहण किया। उच्च शिक्षा और उच्च वंश की गौरव बुद्धि से रहित युवक सन्यासियों का तीव्र वैराग्य देख रामकृष्ण जी भाव विभोर हो उठे। सन्यास ग्रहण करने के पश्चात अतीत युग के युग–प्रवर्तक सन्यासियों की जीवनी और उपदेशों की चर्चा नरेन्द्र का जीवन लक्ष्य बन गई। महात्मा बुद्ध का अपूर्व त्याग, आलौकिक साधना और असीम करूणा नरेन्द्र को द्रवित कर जाती। बुद्ध गया में जाकर नरेन्द्र ने उसी बोधिवृक्ष के नीचे ध्यानस्थ हो गये जहां महात्मा बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्त किया था। लगातार तीन दिन कठोर तपस्या में व्यतीत कर नरेन्द्र काशी उद्यान भवन लौट आये। वे समझ गये थे कि जिस अतृप्त पिपासा से कातर हो वे इधर–उधर भटक रहे थे वह यकायक रामकृष्ण जी की कृपा के बिना अधूरी है। नरेन्द्र ने संकल्प स्थिर कर लिया। वह कठोर इन्द्रिय–निग्रह कर आत्म दर्शन के लिए एकाग्रचित्त हो समाधिलीन हो गये।

नरेन्द्र जो कल तक दार्शनिक, तार्किक और उद्धत थे आज वह गुरु भक्त साधक बन गये। पाश्चात्य दर्शन के ऊपर–ऊपर मनोरम दिखने वाले तर्कयुक्तियों के जाल ने तथा ब्रह्म समाज के प्रभाव ने उनके चित्त पर जो आवरण डाल दिया था वह गुरु कृपा से हट गया। रामकृष्ण के निर्देश ये अब उनके पाठ्यग्रन्थ मात्र पाश्चात्य दर्शन और विज्ञान ही नहीं रह गये, अब वे पूर्ण मनोयोग से उपनिषद्, अष्टावक्र संहिता, पंचदशी, विवेक चूडामणि आदि ग्रन्थों का अध्ययन भी करने लगे थे। साधना पथ में काफी दूर अगसर होने के बाद नरेन्द्र अन्त में समझ गये कि 'निर्विकल्प समाधि' की प्राप्ति के बिना आध्यात्मिक पिपासा पूर्ण नही। रामकृष्ण नरेन्द्र के हृदय की बात समझते थे फिर भी उन्होंने नरेन्द्र से पूछा–"नरेन्द्र तू क्या चाहता है? नरेन्द्र ने उत्तर दिया, मैं शुकदेव की तरह निर्विकल्प समाधि द्वारा सदैव सच्चिदानंद सागर में डूबे रहना चाहता हूं"[12] रामकृष्ण ने किंचित अधीरता के साथ कहा– बार–बार

 ISBN : 978-93-80216-12-6

एक ही बात कहते हुए तुझे लज्जा नहीं आती, समय आने पर कहां तू वटवृक्ष की तरह बढ़कर सैकड़ों लोगो को शान्ति की छाया देगा, और कहां तू अपनी ही मुक्ति के लिए व्यस्त हो उठा! इतना क्षुद्र आदर्श तेरा?"[13] नरेन्द्र की आंखों में आंसू आ गये वे कह उठे– निर्विकल्प समाधि न होने तक मेरा मन किसी भी तरह शान्त नही होने का, और यदि वह न हुआ तो मैं वह सब कुछ भी न कर सकूंगा। इतने पर परमहंस बोले– तू क्या अपनी इच्छा से करेगा जगदम्बा तेरी गर्दन पकड़कर करा लेंगी। तू न करे तेरी हड्डियां करेगी। नरेन्द्र की कातर प्रार्थना की उपेक्षा करने में असमर्थ होकर रामकृष्ण ने अन्त में कहा– अच्छा जा, निर्विकल्प समाधि होगी"।

एक दिन सांयकाल ध्यान करते–करते नरेन्द्र अप्रत्याशित रूप से निर्विकल्प समाधि में डूब गये। इन्द्रिय–प्रत्यक्ष द्वैत–प्रपंच मानो महाशून्य में लीन हो गया। देशकाल–निमित्त से परे अवस्थित निजबोध स्वरूप आत्मा अपनी महिमा में स्थित हुई। काफी समय बाद जब उनकी समाधि भंग हुई तब उन्हें महसूस हुआ कि मन सम्पूर्ण रूप से कामना शून्य होने पर भी एक अलौकिक शक्ति उन्हें 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' की चेतना जागृत कर रही थी आज नरेन्द्र के हृदय की सारी अशान्ति और आकांक्षाओं का अन्त हो गया। उनका मुखमण्डल ब्रह्मविद् की दिव्यज्योति से उद्भाषित हो उठा। रामकृष्ण नरेन्द्र को कभी शंकर, कभी शुकदेव तो कभी नारायण ऋषि कह कर पुकारते। पूजनीय स्वामी योगानंद जी ने कहा था कि–"स्वामी जी में ऋषि की समाधि तृष्णा–,शुकदेव की 'मायाशून्यता', शकराचार्य का ज्ञान और नारद की भक्ति सब एकत्र सम्मिलित हो गये थे इसलिए रामकृष्ण जी उनके विभिन्न भावों को देखते हुए उन्हें अलग–अलग समय अलग–अलग नामों से पुकारा करते थे।"[14]

15 अगस्त 1886 ई. को श्री रामकृष्ण परमहंस जी की पवित्र आत्मा परमात्मा में विलीन हो गई। नरेन्द्र को तथा उनके साथियों को काशीपुर का बगीचे वाला मकान छोड़ना पड़ा। नेरन्द्र ने सोचा कि सद्गुरु

 ISBN : 978-93-80216-12-6

के आदर्श का प्रचार में विघ्न न हो इसके लिए सभी को केन्द्रभूत होना होगा। सभी साथी सन्यासियों ने इस बात को माना। वे सब मिलकर गुरु के आदर्श को जीवन का उद्देश्य मानकर उत्साह पूर्वक कहते– जय रामकृष्ण! मनुष्य गढ़ना ही हमारे जीवन का उद्देश्य हो। स्मरण रखना यही हमारी एकमात्र साधना है। वृथा विद्या का गर्व छोड़ दो। ईश्वर की अनुभूति ही जीवन का एक मात्र लक्ष्य है। हम अपने आदर्श परमहंस जी के जीवन का ही अनुसराण करेंगे। एक मात्र भगवद् प्राप्ति ही हमारा चरम लक्ष्य है। नरेन्द्र को अपने प्राण सदृश मानने वाले सन्यासी गण प्रत्येक वाक्य को गुरुदेव की आदेश वाणी की तरह श्रद्धा के साथ पालन करते।

सन 1888 के मध्य नरेन्द्र तीर्थ यात्रा पर निकल पड़े। वे वाराणसी, काशी तथा अयोध्या होते हुए आगरा वृन्दावन पहुंचे। जब वे आगरा से मथुरा जा रहे थे तो एक वृद्ध को चिलम पीता देख स्वयं भी चिलम पीने के लिये मांगी। वृद्ध ने संकोच से कहा मैं भंगी हूं। सुनते ही अनायास ही उनका हाथ हट गया किन्तु अगले ही क्षण उन्हें आभास हुआ कि–" शुनि चैव श्वपोक च पण्डिताः सम दर्शिनः" सच्चे ज्ञानी कुत्ते और चाण्डाल में भी ब्रह्म का दर्शन करते हैं। यदि सन्यासी होकर मैं भी जाति भेद से मुक्त न हुआ तो मेरे सन्यास लेने का क्या लाभ?"[15] उस व्यक्ति से चिलम ले उन्होंने पी और तब आगे की यात्रा शुरु की।

उत्तरी भारत के कई स्थानों की यात्रा करने के बाद स्वामी जी को भारत की आत्मा से परिचित होने का अवसर मिला वे एक वर्ष तक वराहनगर और बलराम वासु केघर बागबाजार कोलकता में रहे। उन्होंने विभिन्न शास्त्रों तथा पाणिनी व्याकरण का अध्ययन यात्रा के दौरान किया। वे ब्रह्मलीन परमहंस जी की जन्मस्थलीकामारपुकुर तथा मां शारदा (परमहंस जी की पत्नी) के जन्म स्थान जयराम बाटी भी गये।

 ISBN : 978-93-80216-12-6

जब स्वामी जी पाण्डीचैरी (मद्रास) में थे उस समय शिकागो (अमेरिका) में एक 'विश्व धर्म सम्मेलन' होने जा रहा था उनके शिष्यों के हार्दिक अनुरोध पर वे इस सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए 31 मई 1893 को वह बम्बई से शिकागो के लिए चल पड़े। आठवें दिन वे श्रीलंका की राजधानी कोलम्बो पहुंचे। उन्होंने वहां अनेक मन्दिरों एवं मठों के दर्शन किये। कोलम्बो से सिंगापुर होते हुए वे हांगकांग में तीन दिन रूके। इस बार दखिण चीन की राजधानी केंटन पहुंचे। चीन और भारत की दुर्दशा देख स्वामी जी व्यथित हो उठे। जापान के याकोहामा बन्दरगाह से स्वामी जी बैंकुवर होते हुए तीन दिन की रेल यात्रा के बाद शिकागो पहुंचे। स्वामी विवेकानन्द जब शिकागो पहंचे तो उनके भगवे वस्त्रों को लोग बड़ी कौतुहलता से देखते। स्वामी जी को अनुभव हुआ कि अमेरिका के लोग विदेशियों से मधुर व्यवहार करते थे किन्तु उनके व्यवहार में दिखावा अधिक होता। किसी प्रकार की आर्थिक मदद न मिलने के कारण उनके पैसे 2 सप्ताह में समाप्त हो गये तब उन्हे ज्ञात हुआ कि धर्मसम्मेलन सितम्बर से पहले नही होने वाला था और नियमानुसार उनके पास परिचय पत्र भी नहीं आया इससे स्वामी जी को बड़ी निराशा हुई और वह बोस्टन चले गये। बोस्टन में एक महिला से उनका परिचय हुआ जो उनकी विचित्र वेशभूषा के कारण आकर्षित हुई। इन्हीं के घर पर स्वामी जी का परिचय हावर्ड विश्वविद्यालय में ग्रीक के प्रो. जे.एच.राइट से हुआ। प्रो. राइट ने धर्म सम्मेलन के आयोजकों को लिखा कि स्वामी जी वहां आये सभी विद्वानों से अधिक ज्ञानवान हैं इस पत्र को लेकर स्वामी पुनः शिकागो गये। ठहरने के लिए किसी होटल में जगह न मिलने पर स्वामी जी मालगोदाम के एक पैकिंग बौकस में रहे। बर्फ गिरने के कारण ठण्ड अधिक हो गई थी। प्रातः तड़के ही स्वामी जी सड़क पर निकल पड़े, कोई उपाय न देखकर भीख मांगने लगे। किन्तु इसमें भी उन्हें उपेक्षा ही मिली। वही सड़क पर श्रीमति जोर्ज व्हेल नामक एक महिला से परिचय हुआ। उन्हीं के प्रयत्नों से स्वामी जी सम्मेलन के आयोजकों के पास

 ISBN : 978-93-80216-12-6

पहुंचे। उन्हें सम्मेलन में भाग लेने की अनुमति मिल गई और उनके ठहरने की भी व्यवस्था की गई। 11 सितम्बर 1893 को विश्व धर्म सम्मेलन में भारत से ब्रह्म समाज के प्रतिनिधि प्रताप चन्द्र मजूमदार, जैन धर्म में वीरचन्द्र गांधी, थियोसफिकल सोसायटी की ओर से ऐनी बेसैन्ट भी आई थी। स्वामी जी अपने काषाय वस्त्र में होने के कारण सभी के आकर्षक का केन्द्र बने हुए थे। उनके भाषण व व्यक्तित्व से प्रभावित होकर ऐनी बेसैन्ट ने लिखा था–"महिमामय मूर्ति काषाय वस्त्रों को सुशोभित शिकागो के धुयें से मलिन वृक्ष पर भारतीय सूर्य की तरह दैदिप्यमान.........स्वामी विवेकानन्द मुझे इसी रूप में दिखाई दिये। यह भारत के गौरव राष्ट्र के मुख को उज्जवल करने वाले सबसे पुराने धर्म के प्रतिनिधि दूसरे उपस्थित प्रतिनिधियों में सबसे कम अवस्था के होने पर भी प्राचीनतम एक श्रेष्ठतम सत्य की जीवन्त मूर्ति...... ...अपनी जन्मभूमि की गौरवपूर्ण गाथाओं को न भूलकर भारत के सन्देश की घोषणा की"।[16]

स्वामी जी का हिन्दु धर्म पर भाषण होने के बाद 19 सितम्बर को अन्य प्रतिनिधियों ने अपने वक्तव्य दिये रेवन्ड नामक एक प्रतिनिधि ने स्वामी जी पर मिथ्यावादी होने का आरोप लगाया और उन्हे सम्मेलन से निकालने की मांग की। किन्तु सम्मेलन के आयोजक इससे सहमत नही हुए अपितु उन्होंने स्वामी जी को परामर्श दिया के वे इन आपत्तियों का खण्डन करें। फलतः 22 सितम्बर को स्वामी जी ने इन प्रतिवादों का खण्डन किया।

अपने प्रवचनों से स्वामी जी ने अमेरिका ही नहीं अपितु विश्व को झकझोर कर रख दिया था। धर्म सम्मेलन की विज्ञान सभा के अध्यक्ष श्री स्नेहिल ने उनके विषय में लंदन के पायोनियर में लिखा–". .... हिन्दू धर्म के एकमात्र आदर्श प्रतिनिधि स्वामी विवेकानन्द निर्विवाद रूप से सम्मेलन में सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रभावशाली व्यक्ति हैं. ...."

 ISBN : 978-93-80216-12-6

सम्मेलन के बाद न्यूयोर्क हेराल्ड ने लिखा–"शिकागो धर्म सम्मेलन में विवेकानन्द जी सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति है उनका भाषण सुनकर लगता है कि धार्मिक क्षेत्र में इस प्रकार के उन्नत राष्ट्र भारतवर्ष में हमारे धर्मप्रचारकों को भेजना मूर्खता मात्र है।"

स्वामी जी के व्यक्तित्व की विश्वभर में चर्चा होती रही उस समय तो अमेरिका के समाचार पत्रों में एकमात्र वही चर्चा का विषय बन गये थे। हजारों लोग उनसे मिलने आते, उनसे प्रश्न करते और स्वामी जी बड़ी सादगी के साथ कहते–"मैं सामान्य दूत मात्र हूं मेरा कार्य सन्देश पहुंचाना है।"

व्याख्यानों व प्रवचनों की यह श्रंखला 1895 तक चलती रही। स्वामी जी के व्याख्यानों से धन भी मिलता किन्तु वह तत्काल दान कर देते थे।

शिकागो धर्म सम्मेलन में स्वामी जी को प्राप्त सम्मान की सुनकर भारत वर्ष में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। स्वामी जी के शिष्य खेतरी और रामनंद के राजाओं ने विशेष समारोह आयोजित किये और स्वामी जी को बधाई सन्देश भेजे। मद्रास के राजा रामस्वामी मुदलयर तथा उनके दीवान सुब्रहमन्य अय्यर ने भी एक विराट सभा आयोजन किया।

शिकागो सम्मेलन से स्वामी विवेकानन्द एक विश्वविद्यालय व्यक्तित्व बन चुके थे। भगवान बुद्ध से स्वामी जी की तुलना करते हुये 'द लंदन डेली क्रोनिकल' ने लिखा–"लोकप्रिय हिन्दू सन्यासी विवेकानन्द के अंग–प्रत्यंग से बुद्ध की चिरपरिचित मुखमण्डल की आभा छलकती है। उन्होंने वाणिज्य से प्राप्त हमारी सम्बन्नता, रक्त पिपासापूर्ण युद्ध धर्म आदि के सम्बन्ध में हमारी असहिष्णुता की तीव्र आलोचना करते हुये कहा कि इस मूल्य में बिचारे हिन्दू हमारी (अंग्रेजों) की आडम्बरपूर्ण सभ्यता से प्रेम नहीं करेंगे।"

स्वामी जी ने पाश्चात्य जगत की भोगप्रधान संस्कृति तथा आयुध

 ISBN : 978-93-80216-12-6

निर्माण में उसकी होण के भावी दुषपरिणामों के प्रति सचेत करते हुये कहा–"सावधान मैं अपनी दिव्यदृष्टि से देख रहा हूं कि समस्त पाश्चात्य जगत एक ज्वालामुखी पर खड़ा है जो किसी भी समय आग उगल कर उसे नष्ट कर सकता है। यदि तुम अभी भी सचेत न हुए तो आगामी 50 वर्षो में तुम्हारा विनाश निश्चित है। स्वामी जी ने कहा–"जो देश अपनी सभ्यता पर इतना अहंकार करता हैं उसमें प्रत्याशित आध्यात्मिकता कहां है"।[17]

स्वामी जी ने अनेक अमेरिकी बुद्धि जीवियों को सन्यास की दीक्षा दी और उन्हें वेदान्त की शिक्षा देने लगे। अनेक स्त्री पुरुष उनके शिष्य बन गये और वे स्वयं वेदान्ती कहने में गर्व महसूस करते। स्वामी जी के प्रभाव से ईसाई मिशनरी आतंकित हो उठे थे वे स्वामी जी के विरोध में कुछ ना कुछ बोलते ही रहते। स्वामी जी के वचनों को सुनने के लिये लोग जगह न मिलने पर सीढियों पर बैठकर अर्थात किसी भी तरह उनके प्रवचनों को सुनते और आत्मसात करते। स्वामी जी की शिष्या श्रीमति एम.सी.फ्रंकि ने आखों देखा वर्णन किया है–"पाश्चात्य जगत के लिये भारत का संदेश तथा सार्वजनिक धर्म का आदर्श विषय पर उत्कृष्ट एवं विद्धतापूर्ण भाषण सुन श्रोता–समूह मंत्रमुग्ध हो गया उस रात्रि मैंने स्वामी जी के दर्शन जिस रूप में किये वह अपूर्व था।"

हावर्ड विश्वविद्यालय में प्रो. फोक्स ने उन्हें दर्शनशास्त्र पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया 25 मार्च 1896 को स्वामी जी ने दर्शन के अध्यापकों एवं छात्राओं के मध्य व्याख्यान किया विश्व विद्यालय के छात्रों के अनुरोध पर ये व्याख्यान पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जिसकी भूमिका प्रो. ऐवरेस्ट ने लिखी तथा स्वामी जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की थी। स्वामी जी ने न्यूयोर्क में वेदान्त सोसायटी की स्थापना की जिसमें फ्रासिंलएच लिगेट इसके सभापति, बहन हरिदासी (कुमारी बाल्डो) योग की अध्यापिका तथा कृपानन्द, योगानन्द, अभयानन्द आदि

 ISBN : 978-93-80216-12-6

वेदान्त के प्रचारक नियुक्त किये गये। श्रीमति आर्थर स्मिथ, श्रीमती वाल्टर, कुमारी मेरी फिलिप, कुमारी ऐमा, धर्सवी आदि को सोसायटी के संचालन का कार्य सौंपा गया। भारतीय ज्ञान के अनन्य उपासक प्रो. मैक्समूलर जिन्होने 'नाइन्टीन्थ सैंचुरी' पत्रिका में रामकृष्ण परमहंस पर एक लेख था वे स्वामी विवेकानन्द के वेदान्त प्रचार से काफी प्रभावित थे। मैक्समूलर का स्नेह पा स्वामी जी को अत्यधिक प्रसन्नता हुई। उक्त कथन मूलर जी की मनः स्थिति को प्रकट करता है–"श्री रामकृष्ण के योग्यतम शिष्य के दर्शन का सौभाग्य सदा नहीं मिलता।" स्वामी जी आत्मनिग्रह और सदाचार के प्रतीक थे। वे सच्चे अर्थो में वेदान्ती थे। कट्टर आत्मनिग्रही होते हुए भी वे किसी से घृणा नहीं करते थे। वेश्या और सन्यासी सभी उनकी दृष्टि में समान थे। स्वामी जी बचपन से ही चरित्र की पवित्रता पर विशेष बल देते थे। उन्होंने स्वयं लिखा है कि–मुझे अपने गुरु की तरह कामिनी, कांचन और कीर्ति से परान्मुख सच्चा सन्यासी बनकर मरने दो, इन तीनों में कीर्ति का लोभ सबसे अधिक मायावी होता है"।[18]

स्वामी जी की वेश्याओं के प्रति सहानुभूति के पीछे एक रोचक प्रसंग है। जिस समय वह भारत भ्रमण पर थे तब खेतरी नरेश के साथ वह जयपुर नरेश के पास पहुंचे तो जयपुर नरेश ने सम्मान में वेश्या का नृत्यगान रखा। जयपुर नरेश ने स्वामी जी के पास भी निमंत्रण भेजा किन्तु स्वामी जी ने निमंत्रण अस्वीकार कर दिया। स्वामी जी के इनकार से वेश्या को काफी दुख हुआ। उसकी पीड़ा चीत्कार कर उठी। उसने सूरदास का 'प्रभु जी मेरे अवगुन चित्त न धरो' पद् गाया। उसकी वाणी की करूण पुकार को जब स्वामी जी ने जो पास के ही भवन में थे सुना तो उन्हें काफी पश्चाताप हुआ। उन्होंने वेश्या से माफी मांगी।

स्वामी जी के गुरु रामकृष्ण वेश्याओं को सम्मान की दृष्टि से देखते थे। उनके दर्शन को वेश्याऐं दक्षिणेश्वर आती थी। हिन्दू से ईसाई बने

 ISBN : 978-93-80216-12-6

रेवरण्ड मजूमदार ने वेश्याओं की काफी आलोचना की तब स्वामी जी ने कहा—वेश्याऐं यदि दक्षिणेश्वर न जायेंगी तो कहां जायेंगी। ईश्वर की पुण्य आत्माओं की अपेक्षा पापियों के लिए विशेष कृपा है। जो लोग भगवान के घर में जाकर भी 'वह वेश्या है" वह नीच जाति का है', 'वह छोटा है' इस प्रकार के विचार रखते हैं ऐसे व्यक्तियों को – जिन्हें तुम सज्जन कहते हो, उनकी संखया जितनी कम हो उतना ही अच्छा है। जो भक्त की जाति, व्यवसाय या योनि देखते हैं हमारे रामकृष्ण को क्या समझेंगे। मेरी प्रभु से प्रार्थना है कि उन्हें नमन करने शत् शत् वेश्याऐं आयें, चोर डाकू आयें, भद्र पुरुष आयें न आयें सबके लि प्रभु का द्वार खुला है'।

15 जनवरी 1897 को स्वामी जी श्रीलंका गये वहां कुमार स्वामी द्वारा हिन्दू समाज की ओर से भव्य स्वागत किया गया जिसे देख वे बोले– मैं कोई राजा, धनकुबेर अथवा प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ नहीं हूं अपितु एक निर्धन, भिक्षा पर निर्वाह करने वाला सन्यासी हूं.....। मैं आपकी भावनाऐं समझता हूं कि हिन्दू जाति ने अभी भी अपनी आध्यात्मिक सम्पत्ति को नही खोया है अन्यथा वे एक सन्यासी का इतने भक्ति भाव से स्वागत न करते। अतः हे हिन्दुओं अपनी सांस्कृतिक विरासत के इस गौरव को न भूलो। अनेक प्रकार की प्रतिकूल परिस्थितियों में भी धर्म के आदर्श का दृढ़ता से पालन करो"। स्वामी जी का कहना था–"जो कुछ मैं हूं, जो कुछ सारी दुनिया एक दिन बनेगी, वह मेरे गुरु रामकृष्ण के कारण बनेगी, उन्होंने हिन्दुत्व, इसलाम और ईसाई मत में वह अपूर्व एकता खोजी जो सब चीजों के भीतर रमी हुई है। श्री रामकृष्ण इस एकता के अवतार थे।"[19]

जाफना–श्रीलंका होते हुए वह स्टीमर से भारत वापस लौटे। पूरे चार वर्ष बाद स्वामी जी को देख उनकी अनुयायी, मठ साथी सभी प्रसन्न हो उठे। विदेशों में भारत की गरिमामयी संस्कृति का प्रचार करने वाले प्रथम और आलौकिक व्यक्तित्व के स्वागत में रामनद नरेश भास्कर

 ISBN : 978-93-80216-12-6

वर्मा पृथ्वी पर लेटकर स्वामी जी के इस दण्डवत प्रणाम कर उठे, उस समय संध्या की लालिमा अपना अपूर्व आलोक बिखेर रही थी मानो भारत के इस अद्वितीय सपूत का सूर्य भगवान भी स्वागत कर रहें हो। रामनंद नरेश ने जहां स्वामी जी के चरण चिन्ह पड़े वही पर एक "स्मृति स्तम्भ" का निर्माण कराया जो आज भी स्वामी जी की कीर्ति पताका को फहरा रहा है। विभिन्न संगठनों संप्रदायों आदि की ओर से संस्कृत तमिल, तेलगु आदि भाषाओं में स्वामी जी को अभिनन्दन पत्र दियें गये। 8 फरवरी 1897 को स्वामी जी ने विक्टोरिया हाल में 'मेरी समरनीति', 'भारतीय जीवन वेदान्त का प्रयोग', 'भारतीय महापुरुष' तथा 'हमारा वर्तमान कर्तव्य' आदि विषयों पर सारगर्भित व्याख्यान दिये–स्वामी जी ने आह्वन किया–

"वीर बनो, श्रद्धालु बनो, चारित्रिक तेज एवं वीर्य को जागृत कर गहनीय उत्साह के साथ कर्म में प्रवृत्त हो जाओ। इस कोलकता नगरी के राजमार्ग पर एक सामान्य बालक की भांति मैं भी खेलता हुआ घूमता था। चाहता हूं कि आज इस धूलि पर बैठ कर आप लोगों से मन की बात कहूं कि हे बंगाली पुरुषों मेरे कार्यभार को ग्रहण करो, इस कार्य को कल्पना से कहिं अधिक उन्नति एवं विस्तार दो। मैने सूचना देकर केवल दिशा निर्देश दिया है उसकी पूर्ति तुम करो। वर्तमान के उत्तदायित्व और कर्तव्य को समझो। अन्य किसी देश के युवकों के कंधों पर इतना गुरुवर भार कभी नहीं पड़ा था। विगत दस वर्षो में मैने समस्त भारत का भ्रमण किया है। मेरी यह दृढ़ मान्यता है कि बंगाली युवकों में वह शक्ति प्रकट होगी जो भारत को उसके आध्यात्मिक अधिकार पद पर प्रतिष्ति करायेगी.....। किस आदर्श महापुरुष पर अनुराग रखकर उसकी ध्वजा तले खड़े हुए बिना कोई राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता। श्री रामकृष्ण के रूप में हमें एक ऐसा धर्मवीर, एक आदर्श प्राप्त हुआ है, यदि ये राष्ट्र उत्थान चाहता है तो मैं उच्च स्वर में घोषणा करता हूं कि सभी को इसी नाम का मतवाला बनना पड़ेगा।"[20]

 ISBN : 978-93-80216-12-6

वेदान्त पर बोलते हुए 'सर्वावयव वेदान्त' व्याख्यान में उन्होंने बताया कि वेदान्त ऐसा जटिल शास्त्र नहीं है। वही सनातन धर्म की नीव है। समाज में व्याप्त छूआ–छूत की भावना की ओर संकेत करते हुए उन्होंने कहा कि केवल रसोई तक धर्म को सीमित रखने से वर्णाश्रम की रक्षा होगी, पागलपन है। स्वामी जी पाखण्डी ब्राहमणों तथा वैष्णवों के धार्मिक व्यवसाय की तीव्र आलोचना करते थे। वे कर्म में बहुत विश्वास करते थे। उनका मानना था कि भाषण से उत्तेजना पैदा की जा सकती है। स्थाई प्रभाव उत्पन्न करने के लिए कर्म करना होगा। वे मानव धर्म को सर्वोपरि मानते थे।

1 मई 1897 को स्वामी जी ने सर्वसम्मति से 'रामकृष्ण मिशन' बनाने का निर्णय लिया जिसके उद्देश्य निम्नलिखित स्वीकृत किये गये–

1. मानव समाज के कल्याण हेतु श्री रामकृष्ण ने जो कुड कहा तथा किया, उसका प्रचार प्रसार और मनुष्य की शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक उन्नति के लिए इनके जैसे भी प्रयोग हो सके, इसके लिए सहायता करना मिशन का उद्देश्य है।
2. विश्व के सभी मतों का सनातन धर्म का अंग मानते हुए सभी मतावलम्बियों के बीच सौहार्द की स्थापना हेतु श्री रामकृष्ण ने जो कार्यक्रम किया, उसका संचालन मिशन का व्रत है।
3. मानव की भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति हेतु योग्य व्यक्तियों को शिक्षित करना, श्रम एवं उद्यम को प्रोत्साहन देना और श्री रामकृष्ण ने अन्य धर्मो के विषय में जो कुछ कहा, उसका समाज में प्रसार करना।
4. भारत के इच्छुक ग्रहस्थों और सन्यासियों की शिक्षा के लिए आश्रमों की स्थापना करना तथा देश–देशान्तर की जनता को शिक्षित करने के उपायों को अपनाना।
5. व्रत धारण करने वालो को विदेशों में भेजकर वहां स्थापित आश्रमों

 ISBN : 978-93-80216-12-6

तथा भारतीय आश्रमों के सामंजस्य से अन्य आश्रमों की स्थापना करना आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्र से स्वामी जी अत्यधिक प्रभावित हुए। आर्य समाजियों की चारित्रिक विशेषता, त्याग, राष्ट्र प्रेम समाज सुधार आदि के वह प्रशंसक बन गये। वह इन सदगुणों की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते थे, किन्तु उनकी साम्प्रदायिक कट्टरता का विरोध करने में भी वह पीछे नहीं रहते थे।

'दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज' लाहौर के अध्यक्ष लाला हंसराज आर्य समाज के कट्टर समर्थक थे। कुछ आर्य सामाजी मित्र तर्क दे रहे थे कि वेद मंत्रों का केवल एक ही अर्थ हो सकता है किन्तु स्वामी जी का कहना था कि लोग अपनी–अपनी बुद्धि से अलग–अलग अर्थ निकालते हैं। स्वामी जी ने कहा–" लालाजी! आप जिस विषय पर इतना हठ कर रहे हैं, उसे हम कट्टर कहते हैं। हम जानते हैं कि इस प्रकार की कट्टरता से आपको अपने समाज के प्रचार में सहायता मिलती है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि मनुष्य को अपने विश्वास और धारणा के अनुसार उन्नति करने के लिए स्वतन्त्र रखना चाहिए। यद्यपि यह उन्नति धीरे–धीरे होती हैं, तथापि ऐसी उन्नति स्थाई होती है।" एक अन्य दिन स्वामी जी का आर्य समाजियों से श्राद्ध के विषय में शास्त्रार्थ हुआ। आर्य समाज श्राध्द में विश्वास नहीं करता। स्वामी जी ने अपने प्रबल तर्कों को श्राद्ध का समर्थन किया और आर्य समाजियों को पराजित कर दिया।

डा. जय राम मिश्र अपनी पुस्तक 'स्वामी राम तीर्थ– जीवन और दर्शन' में लिखते हैं–"...... तीर्थराम स्वामी विवेकानन्द के निकटतम सम्पर्क में आये और उनके आदर्शों से अत्यधिक प्रभावित हुए। स्वामी विवेकानन्द आधुनिक युग के प्रथम मंत्र दृष्टा ऋषि थे, जिन्होंने शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त को व्यवहारिक रूप प्रदान किया। उन्होंने अद्वैत वेदान्त को भक्ति, कर्म देश सेवा, मानव मात्र की सेवा आदि अनेक पहलुओं

 ISBN : 978-93-80216-12-6

से समझने–समझाने का प्रयास किया था। स्वामी विवेकानन्द से साक्षात्कार उनके सत्संग आदि में तीथराम की त्याग आदि भावनाओं को और भी अधिक उद्‌दीप्त कर दिया। स्वामी विवेकानन्द के आदर्शों ने तीथराम की मूक आत्मानुभूति को वाणी प्रदान की। आगे चल कर तीथराम ने वेदान्त के उस पहलू की पुनः नये ढंग से व्याख्या की, जिसका निर्देश स्वामी विवेकानन्द पहले ही कर चुके थे।"

बंगाल के ब्राह्मण अन्य सभी जातियों को शूद्र मानते थे जबकि स्वामी जी की दृष्टि में क्षत्रियों और वैश्यों का भी अस्तित्व था। रामकृष्ण जन्मदिवस पर स्वामी जी ने घोषणा की कि श्री रामकृष्ण के सभी अब्राह्मणशिष्यों का व्यज्ञोपवीत संस्कार किया जायेगा और श्री शरच्चन्द्रचक्रवर्ती यह संस्कार सम्पन्न करेंगे। स्वामी जी ने कहा" श्री रामकृष्ण के सभी भक्त ब्राह्मण है। वेदों की आज्ञा है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तीनों वर्णो को उपनयन संस्कार का अधिकार है। संस्कार के आभाव में ये लोग व्रात्य बन गये हैं। आज रामकृष्ण के जन्मदिवस के पुनीत अवसर पर वे अपने अधिकार के अनुसार क्षत्रिय या वैश्य बनें। समय आने पर इन्हें ब्राह्मण भी बनाना पड़ेगा। स्वामी जी के इस क्रांतिकारी कार्य का रूढ़िवादियों ने प्रबल विरोध किया स्वामी जी इस कार्य से हिन्दू समाज के एक बहुत बड़े भाग में आयी हीन भावना को दूर करना चाहते थे किन्तु कट्टरपंथियों को यह असह्य हो गया। यज्ञोपवीत धारण करने वालों को समाज में अनेक प्रकार स प्रताड़ित किया गया। उस समय भले ही यह कार्य आलोचना का विषय बना, किन्तु बाद में बंगाल की यह ब्रह्मणेतर जातियों को इससे प्रेरणा मिली, वे क्षत्रियत्व और वैश्यत्व ग्रहण करने की मांग करने लगी। निसंदेह स्वामी जी के कार्य की तुलना महर्षि दयानन्द सरस्वती के 'कृणवन्तो विश्वमार्यम' के महान उदाघोष से की जा सकती है।

अत्यधिक परिश्रम के कारण स्वामी जी का शरीर दुर्बल जो चला था। वह कई बार अस्वस्थ पड़ चुके थे। इधर वह पुनः अस्वस्थ हो

ISBN : 978-93-80216-12-6

गये। चिकित्सकों ने उन्हें जलवायु परिवर्तन का परामर्श दिया। अतः 30 मार्च 1998 को वह दार्जलिंग चले गये। जिन अछूत जातियों को बंगाली समाज स्पर्श करने में भी संकोच करता था उनकी बस्तियों में जाकर स्वामी जी ने स्वयं सफाई तथा रोकथाम कार्य किया। उन्होंने एक सच्चे वेदान्ती का आदर्श स्थापित करते हुए दलितों, दुर्बलों की सेवा में ईश्वर के दर्शन किये। इस कार्य में उन्होंने अपने प्राणों की भी परवाह नहीं की।

स्वामी जी की प्रेरणा से 'प्रबुद्ध भारत' पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ था, जिसके सम्पादक श्री सिगरावेलू मुदलियार थे। कुछ दिन पूर्ण उनका निधन हो जाने से पत्रिका का प्रकाशन बन्द होने की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। स्वामी जी ने पत्रिका को अल्मोड़ा से प्रकाशित करने की व्यवस्था की। स्वामी स्वरूपानन्द को उसका सम्पादक और श्री सेवियर को संचालक नियुक्त किया गया। स्वामी जी ने विरजानन्द को ढाका भेजा औश्र वहां जाकर श्री रामकृष्ण के उपदेशों का प्रचार करने को कहा। स्वामी विरजानन्द ने कहा–"मैं कुछ दिन आपके साथ रहकर आत्मसाक्षात्कार करना चाहता हूं। मुझे कुछ दिन और साधना करने दीजिये तभी मैं प्रचार कार्य कर पाऊंगा"। उनके इस कथन से स्वामी जी क्षुब्ध हो उठ और उन्हें डांटते हुए बोले "स्वार्थी व्यक्ति की तरह अपनी ही मुक्ति के लिए प्रयत्न करने पर तुम नरक में जाओगे यदि पूर्ण ब्रह्म का साक्षात्कार करना चाहते हो तो दूसरों की मुक्ति में सहायक बनों। आत्म मुक्ति की कामना को समूल नष्ट करना ही सर्वश्रेष्ठ साधन है।

वस्तुतः स्वामी जी लोक कल्याण को सन्यासी का सर्वोपरि कर्तव्य मानते थे। वह नहीं चाहते थे कि सन्यासी केवल आत्म कल्र्याण की चिन्ता करे और समाज से विरक्त होकर उसका परित्याग कर दे। इसी उद्‌देश्य को दृष्टि में रखकर उन्होंने श्री रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। उन्होनं स्वामी विरजानन्द से पुनः कहा "फल की इच्छा छोड़कर

 ISBN : 978-93-80216-12-6

लोक कल्याण के मार्ग पर चल पड़ो यदि इसके लिए नरक में भी जाना पड़े तो कोई हानि नहीं।" इसके बाद कुछ देर के लिए वह ध्यान मग्न हो गये थे। फिर आंखे खोल कर उन्होंने कहा "मैं अपनी शक्ति का तुम लोगों में संचार करूंगा चिंता की कोई बात नहीं ईश्वर सदा तुम्हारे साथ रहेगा।"

स्वामी जी मानवता को सबसे बड़ा धर्म मानते थे अतः वह सन्यासियों को मानव बनने की शिक्षा देते थे। वह प्रायः कहा करते थे "मैं एक ऐसा धर्म का प्रचार करना चाहता हूं जिससे मनुष्य पैदा हो। एक दिन उनके एक शिष्य ने पश्चिमी देशों में उनके भाषा और भारत में भाषण न देने का कारण जानना चाहा तो वह बोले" इस देश में पहले भूमिका तैयार करनी होगी। पश्चिमी देशों का वातावरण अनुकूल है। भोजन के आभाव में दुर्बल शरीर, दर्बल मन तथा रोग–शोक, दुख–दीनता की जन्म भूमि भारत में भाषण देकर क्या होगा? पहले कुछ ऐसे व्यक्ति तैयार करने है जो अपने परिवार की चिंता न करते हुए परहित के लिए आत्मोत्सर्ग करने के लिए तत्पर हों। मठ की स्थापना कर मैं कुछ बाल सन्यासियों को इसके लिए तैयार कर रहा हूं जो शिक्षा समाप्ति के अनन्त घर–घर जाकर लोगों को देश की दीन–हीन दशा से अवगत कराऐंगे......। शिक्षा हीन, धर्म विहीन, वर्तमान अधोगति के विषय में उन्हें समझा कर कहो "भाइयों! उठो जागो और कितने दिन सोये रहोगे, शास्त्रों के महान अर्थ को उन्हें सरल भाषा में समझा दो। इतने दिनों तक इस देश के धर्म पर ब्राह्मणों का एकाधिकार रहा। काल के प्रवाह से अब वह समय नहीं रहा जो ऐसी व्यवस्था करो कि सभी लोग धर्म को ग्रहण कर सकें। सभी को समझा दो ब्राह्मणों की तरह उनका भी धर्म पर अधिकार है। ऊंच–नीच सभी को इस अग्नि मंत्र की दीक्षा दो अन्यथा तुम्हारे अध्ययन को धिक्कार है......जाकर यह सभी को यह बात सुना दो कि उनमें अनंत शक्ति है। उस शक्ति को जागृत करो, अपनी मुक्ति से क्या होगा? मुक्ति की कामना भी तो स्वार्थपरायणताकी

 ISBN : 978-93-80216-12-6

चरम सीमा है। पहले इस प्रकार की भूमिका तैयार करो बाद में मुझ जैसे हजारों विवेकानन्द भाषण देने के लिए संसार में जन्म लेंगे इस विषय पर चिन्ता न करो.........।"

19 जून 1899 इग्लैंड की यात्रा पर चल पड़ने से पहले स्वामी जी ने बेलुड़ मठ में 'सन्यासियों का आदर्श' विषय पर व्याख्यायन दिया इसमें उन्होंने सन्यासियों के निम्नलिखित कर्तव्यों का उल्लेख किया–

1. सन्यासियों को परिहित की कामना में आत्म बलिदान के लिए तैयार रहना चाहिए।
2. वर्तमान में गुफा में बैठकर ध्यान करते हुए देह त्याग करने की आवश्यकता नहीं है। आज श्रेय के पथ पर बढ़ते हुए मानव मात्र की मुक्ति हेतु सहायता करनी होगी।
3. सन्यासी गम्भीर ध्यान के साथ ही मठ की भूमि पर हल चलाने के लिए भी तैयार रहे। उन्हें शस्त्रों की मीमांसा के साथ ही मठ की भूमि में उत्पन्न अन्न को बाजार में ले जाकर बेचने के लिए तत्पर रहना चाहिए।
4. प्रत्येक सन्यासी याद रखेगा कि मठ का उद्देश्य 'मानव' तैयार करना है। हृदय स्त्री की तरह कोमल होते हुए भी शरीर व मन सदृढ़ रहें। स्वाधीनता की इच्छा हो, किन्तु विनम्रता बनी रहे। दृढ़ चित्त होकर दूसरे के दुख में आंसू बहाने होंगे।

कांग्रेस का 1900 का अधिवेशन लाहौर में हुआ था। इसकी अध्यक्षता करते हुए न्यायमूर्ति गोविन्द महादेव रानाडे न सन्यासियों के लिए ब्रह्मचर्य की अनिवार्यता की आलोचना की थी उन्होंने कहा था कि वैदिक युग में जाति प्रथा का अभाव था। अनेक विवाहित ऋषि भी समाज के नेता होते थे सन्यासी नहीं। उनका यह भी कहना था कि उस युग में स्त्री पुरुष सभी स्वतन्त्र थे, कठोर संयम जैसी कोई भावना नहीं थी। मानव के सुखों का सभी पूरी तरह उपभोग करते थे। श्री रानाडे

 ISBN : 978-93-80216-12-6

ने यह भी कहा था कि सिख धर्म के सभी गुरु विवाहित थे। श्री रानाडे के तर्कों के विरोध में मायावती आश्रम में स्वामी जी ने 'श्री रानाडे के भाषण की समालोचना' नामक निबन्ध लिखा जिसमें उन्होंने स्पष्ट किया कि विवाहित तथा ब्रह्मचारी धर्मचार्य उतने ही प्राचीन है जितने कि वेद।

स्वामी जी का स्वास्थ्य निरन्तर गिरता जा रहा था। औषधि सेवन तथा परहेज से वह विरक्त से हो गये। जून 1902 में वह सभी कार्यो से उदसीनता व्यक्त करने लगे। 17 जून को उन्होंने स्वामी शुद्धानन्द से पंचांग मंगाया। वह काफी देर तक पंचांग देखते रहे कोई समझ नहीं पाया कि वह ऐसा क्यों कर रहे हैं। 1 जुलाई को स्वामी जी मठ के विस्तृत मैदान में घूम रहे थे। सहसा एक स्थान पर संकेत करते हुए वे बोले "देहावसान होने पर मेरा अन्तिम संस्कार इसी स्थान पर करना" कोई कुछ न कह सका, सब लौट आये। दूसरे दिन बुधवार और एकादशी थी स्वामी जी ने उपवास रखा था। प्रातः काल उन्होंने स्वयं सबको भोजन परोसा, इसके बाद सबके हाथ धुलाये तथा स्वयं उन्हें तौलिये से पौछा। अस्वस्थता के कारण वह इन दिनों सबके साथ बैठकर भोजन नहीं करते थे किन्तु इस दिन उन्होंने सभी के साथ बैठकर भोजन किया। वह प्रसन्नचित्त जान पड़ते थे और उनका कहना था कि आज वह स्वयं को स्वस्थ अनुभव कर रहे हैं। भोजन के बाद वह विद्यार्थियों को तीन घंटे तक लघु कौमुदी पढ़ाते रहे।

संध्या की आरती के बाद वह अपने कमरे में चले गये और अपने सहयोगी ब्रह्मचारी से बोले "कमरे की सभी खिड़कियां खोल दो" खिड़कियां खुलने पर वह गंगा तट की ओर देखने लगे इसके बाद उन्होंने उस ब्रह्मचारी को बाहर जाकर जप करने को कहा। स्वयं भी माला लेकर पदमासन में बैठकर जप करने लगे। एक घण्टे का जाप करने के बाद वह लेट गये। उन्होंने बाहर बैठे ब्रह्मचारी को भीतर बुलाकर पंखा झलने को कहा। स्वामी जी की माला उनके हाथ में ही थी। ब्रह्मचारी पंखा झलने लगा कुछ देर बाद उसने स्वामी जी के मुंह से कुछ अस्पष्ट शब्द सुने इसके साथ ही उन्होंने दो गहरी

 ISBN : 978-93-80216-12-6

सांसे ली और उनका सिर एक ओर लुढ़क गया। ब्रह्मचारी को कुछ भी समझ में नहीं आया वो दौड़ता हुआ बाहर आया। उसने अन्य लोगों को इस विषय में बताया सभी भागे–भागे अन्दर गये उन्होंने देखा कि युग पुरुष स्वामी विवेकानन्द ब्रह्मलीन हो गये थे।

सन्दर्भ–

1. *स्वामी विवेकानन्द चरित्र बालक विवेकानन्द–भास्करेश्वरानन्द पृष्ठ 4*
2. *स्वामी विवेकानन्द चरित्र बालक विवेकानन्द–सत्येन्द्र नाथ मजूमदार पृष्ठ 12*
3. *स्वामी विवेकानन्द चरित्र बालक विवेकानन्द–सत्येन्द्र नाथ मजूमदार पृष्ठ 13*
4. *स्वामी विवेकानन्द चरित्र बालक विवेकानन्द–सत्येन्द्र नाथ मजूमदार पृष्ठ 15*
5. *स्वामी विवेकानन्द चरित्र बालक विवेकानन्द–सत्येन्द्र नाथ मजूमदार पृष्ठ 15*
6. *स्वामी विवेकानन्द से वार्तालाप द्वि.सं.–पृष्ठ 40*
7. *स्वामी विवेकानन्द चरित्र–सत्येन्द्र नाथ मजूमदार पृष्ठ 27*
8. *स्वामी विवेकानन्द चरित्र–सत्येन्द्र नाथ मजूमदार पृष्ठ 80*
9. *स्वामी विवेकानन्द चरित्र–सत्येन्द्र नाथ मजूमदार पृष्ठ 87*
10. *स्वामी विवेकानन्द चरित्र–सत्येन्द्र नाथ मजूमदार पृष्ठ 96*
11. *सूक्तियां एवं सुभाषित स्वामी विवेकानन्द– पृष्ठ 123*
12. *स्वामी विवेकानन्द चरित्र–सत्येन्द्र नाथ मजूमदार पृष्ठ 124*
13. *स्वामी विवेकानन्द चरित्र–सत्येन्द्र नाथ मजूमदार पृष्ठ 124*
14. *विवेकानन्द चरित्र श्री रामकृष्ण आश्रम–पृष्ठ 128*
15. *भारत के अमर मनीषी स्वामी विवेकानन्द–डा. भवन सिंह राणा पृष्ठ 51*
16. *भारत के अमर मनीषी स्वामी विवेकानन्द–डा. भवन सिंह राणा पृष्ठ 62*
17. *सूक्तियां एवं सुभाषित स्वामी विवेकानन्द– पृष्ठ 11*
18. *सूक्तियां एवं सुभाषित स्वामी विवेकानन्द– पृष्ठ 12*
19. *सूक्तियां एवं सुभाषित स्वामी विवेकानन्द– पृष्ठ 13*
20. *देव वाणी स्वामी विवेकानन्द, श्री रामकृष्ण आश्रम द्वारा प्रकाशित– पृष्ठ 26*

स्वामी विवेकानन्द का नव्य वेदान्त दर्शन

डॉ. बृजेश चन्द्र त्रिपाठी
असि. प्रो.,
रामा पी.जी. कालेज,
चिनहट, लखनऊ

वेदान्त 'वेद' शब्द से बना है और 'वेद' का अर्थ है ज्ञान। समस्त ज्ञान वेद है और ईश्वर को भाँति अनन्त है। कोई व्यक्ति ज्ञान की कभी सृष्टि नहीं करता। क्या तुमने कभी ज्ञान का सर्जन होते देखा है? ज्ञान का अन्वेषण मात्र होता है– आवृत का अनावरण होता है। ज्ञान सदा यही है, क्योंकि वह स्वयं ईश्वर है। अतीत, वर्तमान, अनागत इन तीनों का ज्ञान हम सबमें वि, मान है। हम उसका अनुसंधान मात्र करते हैं, और कुछ नहीं। ये सारे ज्ञान स्वयं ईश्वर है। वेद संस्कृत भाषा के महान् ग्रन्थ हैं। हम अपने देश में वेदपाठी के सममुख नतमस्तक होते हैं, भौतिक शास्त्र के विशेषज्ञ की हम कोई चिंता नहीं करते। यह अन्धविश्वास ही है। यह बिल्कुल ही वेदानत नहीं। यह कोरा जड़वाद है। ईश्वर के लिए समस्त ज्ञान पवित्र है। ज्ञान ही ईश्वर है। अननत ज्ञान पूर्ण मात्रा में प्रत्येक जीवधारी में निहित है। तुम वास्तव में अज्ञानी नहीं, भले ही ऐसा दिखायी पड़े। तुममें से प्रत्येक ईश्वरावतार है। तुम सर्व शक्तिसम्पन्न सर्वान्तर्यामी, दिव्यस्वरूप के अवतार हो। हो सकता है, मेरी बातों पर तुम्हें हँसी आये, किन्तु वह समय दूर नहीं, जब तुम इसे समझ सकोगे। तुम्हें समझना पड़ेगा। कोई पीछे नहीं रहने पायेगा।

भारत में सम्प्रदायों का आरम्भ तो सफलतापूर्वक हो जाता है, किन्तु कुछ ही वर्षों में वे इसलिए दिवंगत हो जाते हैं कि उनके पीछे कोई ग्रन्थ नहीं होता। यही अन्य देशों में होता है। एकत्ववादी आन्दोलन के उत्थान और पतन के इतिहास को लो। वह तुम्हारे राष्ट्र के सर्वोच्च चिन्तन का प्रतीक है। मेथाडिस्ट, बैप्टिस्ट और इतर ईसाई सम्प्रदायों

 ISBN : 978-93-80216-12-6

की भांति उसका प्रचार क्यों नहीं हो सका? कारण स्पष्ट है। उसका अपना कोई ग्रन्थ न था। ठीक विपरीत यहूदियों को देखो। मुट्ठी भर लोग, हर राष्ट्र से खदेड़े जाकर भी संघटित हैं, क्योंकि उनका अपना धर्मग्रन्थों की बदौलत ही जीवित है? आज जितने भी जीवित धर्म हैं, उनमें से प्रत्येक का अपना स्वतंत्रा धर्मग्रन्थ है। धर्म की दूसरी आवश्यकता है व्यक्ति विशेष के प्रति पूज्य भाव। यह विशिष्ट व्यक्ति विश्व के स्वामी या महान् उपदेशक के रूप में पूजा जाता हैं। मनुष्य के लिए किसी देहधारी मानव की उपासना करना अनिवार्य है। कोई अवतारी पुरुष, पैगम्बर या महान् नेता मानव हो चाहिए ही। सारे धर्मों में आज यही बात दिखायी पड़ेगी। हिन्दू और ईसाई धर्मों में अवतार की मान्यता है। बोद्ध, इस्लाम, यहूदी आदि धर्मों में पैगम्बर को गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। लेकिन लक्ष्य सबका समान है– उनकी पूजा– भावना किसी व्यक्ति या व्यक्ति समुदाय पर केन्द्रित है।

किसी पैगम्बर का आविर्भाव होता है। वह अपने अनुयायियों को हर तरह के पुरस्कारों का वचन और अनुसरण न करने वालों को चिरन्तन नरक की धमकी देता है और इस प्रकार वह अपने पन्थ का प्रचार करता है। वर्तमान सारे प्रचार शील धर्म घोर कट्टरपंथी है। कोई सम्प्रदाय अन्य सम्प्रदायों से जितनी घृणा करेगा, उतना ही वह सफल होगा और अपने अनुयायियों की संख्या उत्तरोतर बढ़ाता जायेगा। संसार के अधिकतर भागों में भ्रमण करने के उपरान्त और विविध जातियों के मध्य रहने एवं विश्व की वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखते हुए मैं इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि विश्वबन्धुत्व के सम्बन्ध में इतनी बातें होते रहने पर भी प्रस्तुत स्थिति चलती ही रहेगी।

दूसरे, वह व्यक्ति विशेष की अराधना को और भी अधिक अग्राह्य मानता है। तुमें से वेदान्त के विद्यार्थी वेदान्त से आशय उपनिशद् है– जानते हैं कि केवल यही धर्म किसी व्यक्ति–विशेष से चिपका नहीं है। कोई भी एक स्त्री या पुरुष वेदानितयों की आराधना का पात्र नहीं

बन सका है। यह सम्भव भी नहीं। कोई मानव किसी पक्षी या कीट की अपेक्षा अधिक पूज्य नहीं होता। हम सब भाई है। अन्तर केवल परिणाम का है जो क्षद्र कीट है, बिल्कुल वही मैं भी हूँ। इस प्रकार तुम देखते हो कि वेदान्त में, किसी व्यक्ति का हमारे आगे खड़ा होना, और हम सबका उसकी आराधना करना, उसका हमें घसीटते हुए आगे बढ़ाना और हमारा उद्धार करना, इसकी सम्भावना ही नहीं है। वेदान्त आपको यह सब नहीं देता। कोई ग्रन्थ नहीं, पूजा के लिए कोई व्यक्ति नहीं, कुछ भी नहीं।

सुरलोक में रहकर हमारी अनुभूति के बिना ही संसार की गतिविधि का आयोजन करने वाले, अपने लीला के लिए शून्य से हमारा सर्जन करने वाले और निज परितोष के लिए हमें आपद्ग्रस्त करने वाले ईश्वर की जगह वेदान्त सर्वान्तर्यामी सर्वव्यापक ईश्वर का निरूपण करता है। इस राष्ट्र से तो राजराजेश्वर की विदाई हो चुकी है। लेकिन वेदान्त से तो स्वर्ग का साम्राज्य सहस्त्रों वर्ष पूर्व ही लुप्त हो गया था।

कोई धर्मग्रन्थ नहीं, कोई व्यक्ति (अवतार) नहीं, कोई सगुण ईश्वर नहीं। इन सभी को जाना होगा। फिर इन्द्रियों को भी जाना पड़ेगा। हम इन्द्रियों के दास नहीं रह सकते। अभी हम बर्फीली नदी से ठण्ड ठिठुरकर मरने वालों की भांति, आबद्ध हैं। सो जाने की ऐसी बलवती ईर्ष्या द्वारा वे लोग आक्रान्त है कि जब उनके साथी उन्हें मृत्यु से सजग कर जाग्रत करना चाहिते हैं, तो वे कहते हैं, “जान जाय बला से। लेकिन नींद हराम न होने पाये।” हम इन्द्रिय–सुख की सस्ती वस्तु के शिकार हैं, भले ही उसमें हमारा सर्वनाश ही क्यों न हो। हमने यह भुला दिया है कि जीवन में और अधिक महान् वस्ताएँ हैं।

एक हिन्दू पौराणिक कथा है कि ईश्वर ने एक बार धरती पर शूक्रावतार लिया। उनकी एक शुक्री भी थी। कालान्तर में उनके कई शूक्र सन्तानें हुई। अपने परिवार वालों के बीच वे बड़े चैन से रहे। कीचड़ में लौटते हुए वे खूब मस्त थे। वे अपनी दिव्य महिमा एवं

 ISBN : 978-93-80216-12-6

प्रभुता भूल बैठे। देवता बड़े चिन्तित हुए। वे धरती पर उतर आये और उनसे शूक्र– शरीर त्यागकर देवलोक लौट चलने की विनती करने लगे। ईश्वर ने उनकी एक न सुनी और उन सबको दुत्कार दिया। वे बोले, "मैं बड़ा प्रसन्न हूँ और इस रंग में भंग देखना नहीं चाहता हूँ।" कोई चारा न देख देवताओं ने प्रभु का शूक्र– शरीर नष्ट कर दिया। तत्क्षण ईश्वर की दिव्य भव्यता लौट आयी और वे बड़े विस्मित थे कि शूक्र–स्थिति में वे प्रसन्न रहे कैसे!

हम इसको शनैः शनैः समझ सकेंगे और तब हम देखेंगे कि स्वर्ग आदि सब कुछ यही हैं, इसी क्षण है और दिव्य सत्ता पर अभ्यासों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। यह सत्ता सभी–लोकों एवं स्वर्गों से बढ़कर है। लोगों का विचार हैं कि यह संसार त्रुटिपूर्ण है और वे कल्पना करते हैं कि स्वर्ग कहीं अन्यत्र है। यह संसार बुरा नहीं है। तुम जानों तो यह साक्षात् ईश्वर है। इसका बोध भी दूभर है और इस पर विश्वास करना और भी दुष्कर है। कल फाँसी पर लटकाया जाने वाला हत्यारा भी ईश्वर है, पूर्ण ब्रह्म है। अवश्य ही यह विषय जटिल है, पर वह बोधगम्य हो सकता है।

मनुष्य को कोई सहायता नहीं प्राप्त होने की। न कोई सहायता कभी मिली, मिल रही है और न मिलेगी ही। सहायता की आवश्यकता भी क्या? तुम पुरुष और स्त्री नहीं हो? क्या पृथ्वी के पालक को दूसरों की सहायता चाहिए? क्या तुम लज्जित नहीं होते? तुम खाक बन जाओ तो तुम्हें मदद मिलेगी। पर तुम तो आत्म रूप हो। स्वयं कठिनाइयों से छुटकारा पाओ। कोई तुम्हारा सहायक नहीं है और न कभी होगा। अपनी रक्षा स्वयं करो। यह सोचना कि कोई सहायक हैं, मीठा सपना मात्र है। उससे कोई लाभ नहीं होने का।

एक बार एक ईर्सा मेरे पास आया और बोला–"आप घोर पापी है।" मैंने जवाब दिया–"जी हाँ! मैं पापी हूँ। आप अपना काम देखिए।" वह ईसाई प्रचारक था। उसने मुझे तंग करना न छोड़ा। मैं जब उसे

 ISBN : 978-93-80216-12-6

देखता हूँ, तो भाग खड़ा होता हूँ। वह कहने लगा–"मेरे पास आपके भलाई के लिए कुछ उपाय हैं। आप पापी हैं और नरक में गिरने जा रहे हैं।" मेरा जवाब था–"बहुत खूब! और कुछ?" मैंने उससे प्रश्न किया– "आप कहाँ जाने वाले है?" वह बोल उठा– "मैं स्वर्ग जाने वाला हूँ।" मैंने बता दिया– "मैं नरक जाऊँगा।" उस दिन से उसने पिण्ड छोड़ दिया।

आत्मा के क्षेत्र में भी जहाँ–तहाँ क्षुद्र वासनाएँ प्रक्षेपित होने लगी है। मैं कई प्रेतात्मा सम्बन्धी सभाओं में गया हूँ। उनमें से एक मैं एक महिला सभानेत्री थी। वे मुझसे बोली–"आपकी माताजी और आपके पितामह मेरे यहाँ आते हैं।" उन्होंने कहा कि "उन्होंने मेरा अभिवादन किया और मुझसे बातें की।" किन्तु माताजी अभी जीवित है! लोगों का यह प्रिय विषय सा हो गया है कि मरने के बाद भी उनके सगे सम्बन्धी सुपरिचित शरीर में ही जी रहे हैं और प्रेतात्मवादी उनके अन्धविश्वास का फायदा उठाते हैं मुझे बड़ा दुःख होगा कि मेरे स्वर्गीय पिता अपने उसी घिनौने शरीर को अभी भी धारण किये हुए है। उनके सभी पितर जड़ावृत हैं, इससे लोगों को सान्त्वना मिलती है। एक सीन पर ईसा मसीह मेरे सामने हाजिर कराये गये। मैं पूछ बैठा, "प्रभो, आप कैसे हैं?" मेरे लिये ये सभी बातें निराशाजनक हैं। यदि वह सन्त महापुरुष अभी भी शरीरधारी हैं, तो हम बेचारे जीवधारियों का क्या होगा? प्रेतत्मवादियों ने उन बुलाये गये सज्जनों में से किसी को छूने नहीं दिया। यदि वह सब सच भी है, तो भी मुझे उनकी आवश्यकता नहीं। मैं सोचता हूँ– "माँ!माँ! ये नास्तिक सचमुच लोगों की यही समुचित सांसा है। केवल पंचेन्द्रियों की वासना मात्र हैं। यहाँ के पदार्थों से तृप्त न होकर मरने के बाद भी उन्हीं को और अधिक पाने के इच्छुक है।"

यह वेदान्त सर्वत्र है, केवल तुम्हें उससे अवगत होना है। ये निरर्थक विश्वासपुंज एवं अन्धविश्वास समूह ही हमारी प्रगति में बाधक है। अगर

 ISBN : 978-93-80216-12-6

सम्भव हो तो हम इन्हें दूर फेंके और यह समझें कि ईश्वर सत्य–आत्मा के द्वारा एक उपास्य आत्मा है। अब अधिक बनने का प्रयत्न मत करो। भौतिकता को दूर हटाओ! ईश्वर की धारणा यथार्थतः आध्यात्मिक होनी चाहिए। ईश्वर सम्बन्धी अन्य आदर्श जो न्सूनाधिक रूप में जड़वाद से प्रेरित हैं, उन्हें अवश्य ही विदा दो। जब मानव अधिकाधिक आध्यात्मिक होगा, तो उसे निरर्थक विचारों को दूर फेंकना होगा, उन्हें पीछे छोड़ आना होगा। वस्तुतः प्रत्येक देश में कुछ ऐसे पुरुष हुए हैं, जो भौतिकता के परित्याग के लिए शक्तिमान हो एवं आत्मा के अमर आलोक में खड़े होकर आत्मा की आत्मा से आराधना करते हैं।

सारे संसार में धर्मक्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों में बहुतेरे वास्तव में राजनीतिक कार्यकर्ता ही रहे हैं। यही मानव इतिहास रहा है। किसी से समझौता न करते हुए शायद ही उन्होंने सत्य का अनुशीलन किया हो, वे लोग सदा ही समूह या समाज नामधारी ईश्वर के उपासक रहे है। अधिकतर जनसमुदाय के अन्धविश्वासों और दुर्बलताओं के समर्थक से ही उनका सम्बन्ध रहा है। प्रकृति पर विजय–प्राप्ति उनका लक्ष्य नहीं, बल्कि अपने को प्रकृति के अनुकूल बनाने में लगे रहना उनका साध्य है– और कुछ नहीं। भारत में जाकर किसी नये धर्म का प्रचार करो–वे अपना कान हटा लेंगे। लेकिन यदि तुम बताओं कि यह वेद से उद्भत है, तब वे कहेंगे, 'यह ठीक है।' मैं यहाँ इस मत शिक्षा दे सकता हूँ, किन्तु तुममें से ऐस कितने हैं, जो इसे ध्यानपूर्वक स्वीकार करेंगे? पर यह पूर्णतया सत्य है, और मुझे तुम्हारे लिए इसका प्रतिपादन करना ही है।

ईसा मसीह के उद्गार थे, "परम पिता और मैं दोनों अभिन्न है', और तुम इसे दुहराते हो, फिर भी मनुष्य के लिए यह सहायक सिद्ध नहीं हुआ। लगभग बीस सदियों तक मानव इस उद्गार का मर्म न जान सके। ईसा मानवों के रक्षक ठहराये गये। वे ईश्वर और हम कीड़े है। यही हाल भारत में भी है। हर देश में यही धारणा प्रत्येक सम्प्रदाय

 ISBN : 978-93-80216-12-6

विशेष की रीढ़ है। सैंकड़ों, हजारों वर्षों से दुनिया में लाखों–करोड़ो की संख्या में जगदीश्वर, अवतारी पुरुष, उद्धारक, पैगम्बर आदि की आराधना व्यक्ति को प्रेरित करती आयी है। लोगों को यही सिखाया गया है शिकवे असहाय हैं, दुःखी जीव है और मुक्ति के लिए किसी व्यक्ति विशेष या व्यक्ति समूह पर ही उनको आश्रित रहना है। इन विश्वास भावनाओं में अद्भुत तत्व है अवश्य। किन्तु वे अपनी चरमावस्था में भी धर्म की शिशु शालाएँ मात्र हैं, और उनसे किसी को कोई खास सहायता नहीं मिली। मानव एक प्रकार के सममोहन के द्वारा अति अधर्मावस्था को प्राप्त हो गया है। हाँ, इस दशा में भी कुछ ऐसे स्थितिप्रज्ञ लोग हैं जो इस मोह–जाल को काट फेंकते है। महापुरुषों के आविर्भाव का अनुकूल समय आयेगा और उनके सतत प्रयास से धर्म की ये शिशु शालाएँ विनष्ट हो जायेगी और यथार्थ धर्म–आत्मा से आत्मा की आराधना–अधिक सजीव और शक्तिशाली हो सकेगा।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा–दर्शन का महत्त्व–वर्तमान समय में हमारा राष्ट्र कई समस्याओं से जूझ रहा है। इनमें से अधिकांश समस्याओं की जड़ है शिक्षा का अभाव। अगर हम अपने राष्ट्र की उन्नति चाहते हैं तो इन समस्याओं को जड़ से समाप्त करना होगा। इसका उपाय हम स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा–दर्शन से प्राप्त कर सकते हैं। एक देशभक्त होने के नाते विवेकानन्द जन–जन के लिए शिक्षा को आवश्यक मानते थे जो उनकी नजर में राष्ट्र की उन्नति का एक मात्र संभव मार्ग है। उनके अनुसार शिक्षा वह है जो अंदर से बाहर की तरफ आये न कि बाहर से थोपा जाये। इसके आधार में स्वामीजी ने धार्मिक उत्थान एवं आत्मज्ञान को रखा। इन्हीं से शिक्षा में आत्मानुशासन की प्रवृत्ति आती है। शिक्षा का उद्देश्य मात्र धनोपार्जन नहीं अपितु इसका चरम लक्ष्य है संपूर्ण मानव का निर्माण। शिक्षा के माध्यम से ही स्वधर्म की प्राप्ति, चरित्र निर्माण, मानसिक दृढ़ता एवं बुद्धि की तीक्ष्णता आती है। साथ ही विवेकानन्द ने शारीरिक स्वास्थ्य

ISBN : 978-93-80216-12-6

एवं (जीविकोन्मुखी) प्रायोगिक शिक्षा पर भी बल दिया। इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम, आस्था, सिद्धांत, एकाग्रता एवं अपनी गलतियों से सीखने की कला आनी चाहिए। इन सबका पालन करते हुए शिक्षक एवं विद्यार्थी सही शिक्षा पद्धति पर चलकर अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकते हैं। विवेकानन्द ने शिक्षा के सरलीकरण पर विशेष जोर दिया। उनके अनुसार बच्चों को नैसर्गिक विकास हेतु छोड़ देना चाहिए वहीं शिक्षक का कर्त्तव्य है कि वह मार्ग की बाधाएँ हटाता हुआ साथ रहे। इस प्रकार विवेकानन्द ने हमें एक ऐसा मार्ग दिखाया जिस पर चलकर हम राष्ट्र की उन्नति का सपना साकार कर सके।

भारतवर्ष में हम शिक्षा को मोक्ष के उपाय के रूप में देखते हैं। यहाँ शिक्षा वह माध्यम है जिससे चरित्र के माहनतम गुणों को प्राप्त किया जा सकता है। यही शिक्षा का महत्तम उद्देश्य है। परन्तु इन सबसे पहले शिक्षा वह कुंजी है जो रोजमर्रा के कुछ मूलभूत एवं व्यवहारिक समस्या रूपी ताले को खोल सके।

हम सभी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में आयी खामियों की बात करते हैं। इसके प्रभाव– दुष्प्रभाव की आलोचना करते हैं। परन्तु सिर्फ कमियाँ गिनाने से हमारा काम पूरा नहीं हो जाता है। यदि हमें शिक्षा व्यवस्था को सकारात्मक रूप से बदलना है तो किसी आधारभूत सिद्धांत का सहारा लेना होगा और इस क्षेत्र में वर्तमान शिक्षा में आदर्श–पुरुष के रूप में मुझे स्वामी विवेकानन्द का नाम सर्वाधिक सार्थक प्रतीत होता है। विवेकानन्द आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने कि वे अपने जीवनकाल में थे। उनके शिक्षा संबंधी विचार जितने गहरे आदर्श से जुड़े हैं उतने ही व्यवहारिक भी हैं। यहाँ हमें दर्शन एवं प्रायोगिकता का अनूठा संगम देखने को मिलता है।

विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन को समझने के क्रम में दो मुख्य बिन्दु आते हैं – जन/सार्वजनिक शिक्षा एवं धर्म।

जन–शिक्षा– विश्व का कोई भी देश अशिक्षित जनता के साथ

विकसित नहीं हो सकता है। विवेकानन्द ने पश्चिम के देशों की यात्रा की एवं देखा कि वहाँ सम्पन्नता तथा समृद्धि है जबकि हमारे देश में गरीबी एवं अभाव। इस अंतर का कारण उन्होंने शिक्षा में ही पाया।

आज भी हमारा भारतवर्ष दरिद्रता, भूख, असामाजिकता, तत्व, अपराध, बेरोजगारी, आर्थिक संकट, अज्ञान जैसे समस्याओं से जूझ रहा है। इनसे संघर्ष द्वारा विजय पाने के लिए भी हम विवेकानन्द के दिखाये हुए रास्ते पर चल सकते हैं। विवेकानन्द सदा से गरीबों एवं कमजोरों के परम मित्र रहे हैं। असहाय भारतीय जनता का उत्थान उनका प्रमुख उद्देश्य रहा है। इसके समाधान एवं विकास के लिए शिक्षा को ही उन्होंने अपना हथियार बनाया। एक सच्चे देशभक्त के रूप में वे सदा ही भारत की निरीह जनता के प्रति संवेदनशील रहे। स्वामी जी के शब्दों में जब तक हमारे देश में लाखों लोग भूख और अज्ञान में जीवन–यापन करेंगे; मैं हर उस इंसान को विश्वासघाती ठहराऊँगा जो उन लाखों लोगों की कीमत पर शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और उन लोगों पर ध्यान मात्र नहीं देते हैं। यह हमारा राष्ट्रीय पाप है कि हम जनता को अनदेखा करें और यही एकमात्र कारण है कि हमारा देश अवनति के मार्ग पर चल पड़ा है। कोई भी राजनीतिक प्रयास देश का उद्धार तब तक नहीं कर सकती जब तक कि जनता अच्छी तरह शिक्षित न हो एवं उसे भरपूर पोषण–संरक्षण न मिले।

शिक्षा तभी सार्थक होगी जब वह जन–जन तक पहुँचे क्योंकि एक–एक व्यक्ति से ही समाज बनता है। यह शिक्षा ही लोगों में आत्म सम्मान की भावना को बढ़ायेगी तथा पूर्ण शिक्षित व्यक्ति ही अपने देश की उन्नति में सक्रिय भूमिका अदा कर सकता है।

धर्म– भारतवर्ष में भाषा, जाति, संस्कृति आदि की विविधता है इसलिए जनता में शिक्षा का आलोचक बिखरने हेतु एक सार्वजनिक एवं सामान्य मंच की आवश्यकता है। स्वामी विवेकानन्द ने धर्म को ही इस मंच के रूप में अपनाया।

यहाँ धर्म से तात्पर्य किसी सम्प्रदाय विशेष, जैसे– हिन्दू या ईसाई से नहीं है। धर्म अर्थात् वे शाश्वत तत्व जो मनुष्य को आत्मबोध करवाने में सहायक होते हों। यह आत्मबोध ही लोगों के मध्य सभी प्रकार के भेद–भाव को समाप्त कर देता है। हम अन्य सभी को आत्मवत ही देखने लगते हैं। इससे आत्मविश्वास बढ़ता है। मानसिक क्षमता में वृद्धि होती है। यह आंतरिक शक्ति ही धर्म है एवं ठीक इसके विपरीत किसी भी प्रकार की मानसिक कमजोरी ही पाप है। यह कमजोरी हर प्रकार के बुरे कर्म एवं बुरी सोच के मूल में है।

विवेकानन्द उपनिषदों की सहायता से शक्ति, निर्भयता एवं सत्य का संदेश देते हैं; जो किसी भी धर्म की प्रारंभिक शर्त है और यही शिक्षा के प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

अब हम देखते हैं विवेकानन्द के लिए शिक्षा का क्या तात्पर्य है–

" Education is the manifestation of perfection already in man."

(अर्थात– शिक्षा मनुष्य के अंतर में पहले से स्थित पूर्णता को व्यक्त करने का माध्यम है।)

वास्तविक ज्ञान कभी बाहर से नहीं आता यह व्यक्ति के अंतर में आविष्कृत होता है। यह स्वतः ज्ञेय है। शिक्षा का कार्य है मस्तिष्क/मन में उपस्थित ज्ञान को आवरण मुक्त करना तत्कालीन विश्वविद्यालय की शिक्षा पर टिप्पणी करते हुए स्वामी जी ने कहा कि यह मात्र एक मशीन है जो तत्परता से कार्यालय में काम करने वाले कर्मचारी उत्पन्न करती है। यह लोगों को उनके विश्वास से आस्था से वंचित कर देती है। शिक्षा को उन सूचनाओं के समतुल्य समझना भी गलत है जिन्हें दिमाग में भर दिया जाता है, जो स्वयं में ही उलझकर रह जाती हैं एवं जीवन भर उनका कोई सार्थक उपयोग नहीं हो पाता है।

इसके विपरीत शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए स्वधर्म की प्राप्ति,

 ISBN : 978-93-80216-12-6

चरित्र–निर्माण, मस्तिष्क का विकास (बौद्धिक विकास), बुद्धि की तीक्ष्णता एवं आत्मनिर्भरता।

स्वधर्म की प्राप्ति– प्रत्येक व्यक्ति का विकास एक अनोखे तरीके से होता है। कोई किसी की नकल करे ऐसा संभव नहीं। बाहरी दबाव द्वारा विनाशक वृत्तियों का ही विकास होता है जो जिद् एवं अव्यवस्था को जन्म देती हैं। अगर हम किसी बच्चे को स्नेह, स्वतंत्रता एवं सहानुभूति प्रदान करते हुए उसके अपने तरीके तथा अपन क्षमतानुसार बढ़ने का अवसर प्रदान कण्रें तभी उसका पूर्ण विकास संभव है एवं इसी प्रकार वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है। यह ठीक वैसा ही काम है जैसा पौधे को विकास में की गयी मदद। माता–पिता एवं शिक्षकों को बच्चे पर अपनी इच्छा नहीं थोपनी चाहिए।

चरित्र–निर्माण– आत्मविश्वास का प्रथम चरण है चरित्र निर्माण। यह शरीर एवं मन पर विषम परिस्थिति में भी नियंत्रण रखने का पर्याय है। यह व्यक्तिगत आदर्शों पर निर्भर करता है। इसके लिए शिक्षकों द्वारा व्यवहारिक उदाहरण दिये जा सकते हैं।

शारीरिक स्वास्थ्य– स्वामीजी ने शारीरिक स्वास्थ्य पर विशेष बल दिया है, क्योंकि एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन को धारण कर सकता है। उपनिषदों के अनुसार भी दुर्बल शरीर के स्वामी को आत्मज्ञान नहीं हो सकता है।

वृत्तिमूलक/ कौशल संबंधी शिक्षा– विवेकानन्द ने शिक्षा के प्रायोगिक पक्ष पर भी बल दिया है। यह शिक्षा मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाती है। इसकी मदद से लोग नौकरी न ढूँढकर स्वयं किसी व्यवसाय की शुरुआत कर सकते हैं। विवेकानन्द के शब्दों में – "We need technical education and all else which may develop industries, so that men, instead of seeking for service, may earn enought to provide for themselves, and save something against a rainy day."

 ISBN : 978-93-80216-12-6

विवेकानन्द की दृष्टि में शिक्षा का अंतिम लक्ष्य है 'मानव निमार्ण'। यदि शिक्षा, मानव में सभी संभावित गुणों के विकास में सक्षम होती है तभी हम कह सकते हैं कि शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य पूरा हुआ।

शिक्षा के इन लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु आवश्यक तत्त्व है––कठिन परिश्रम एवं एकाग्रता, गलतियों से सीखना एवं विश्वास/आस्था।

कठिन परिश्रम एवं एकाग्रता– किसी भी प्रकार के कार्य के लिए कठिन परिश्रम आवश्यक है। लक्ष्य के प्रति समर्पण एवं उसकी प्राप्ति के लिए हर संभव प्रयास ही उत्तम मार्ग है। लेकिन सिर्फ परिश्रम से काम नहीं बनता है। उसके साथ एकाग्रता की भी आवश्यकता पड़ती है। यदि हमारा ध्यान भटकता रहे तो कड़ी मेहनत के बाद भी संभव है कि लक्ष्य की प्राप्ति न हो। संघर्ष हमारा सर्वश्रेष्ठ शिक्षक एवं एकाग्रता ही शिक्षा प्राप्त करने का एकमात्र रास्ता है।

गलतियों से सीखना– हमेशा अपनी गलतियों पर अफसोस करना एवं यह सोचकर डरना कि आगे भी यही गलती दोबारा हो जाएगी; जीने का गलत तरीका है। इसके बदले हमें जीवन में आगे कुछ अच्छा करने की सोच रखनी चाहिए। गलतियों से सबक लेना चाहिए ताकि उन्हें बिना दोहराये आगे बढ़ सकें। गलतियाँ ही इस प्रकार हमारे सफलता की सीढ़ी बन सकती है।

विश्वास/आस्था– आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए हमें अपना सम्मान करना चाहिए। अपनी क्षमता पर विश्वास होना चाहिए। इसी से लक्ष्य प्राप्ति की प्रेरणा मिलती है। माता–पिता को बच्चों के प्रति नकारात्मक सोच नहीं रखनी चाहिए, उन पर भरोसा रखना चाहिए। विद्यार्थी भी शिक्षकों पर आस्था रखे तो विद्यालय में जीवन में भी बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं।

अब हम देखते हैं शिक्षा के तीन महत्वपूर्ण कारकों पर स्वामी विवेकानन्द क्या सोचते हैं। ये हैं–– शिक्षक, विद्यार्थी एवं शिक्षण विधि।

 ISBN : 978-93-80216-12-6

शिक्षक– शिक्षक को अपने विषय पर पूरा अधिकार होनो चाहिए। उसका उद्देश्य धन या यश की प्राप्ति नहीं अपितु मानवता के प्रेम के लिए कर्म होना चाहिए। विद्यार्थियों के प्रति उनके मन में सहानुभूति हो, यह जरूरी है। शिक्षक से यह अपेक्षित है कि वह विद्यार्थियों के अंदर पहले से मौजूद पूर्णता को उभारे। ऐसा करते हुए शिक्षक स्वतः ही विद्यार्थी की श्रद्धा एवं प्रशंसा का पात्र बन जाते हैं। यथार्थ शिक्षक में यह क्षमता होनी चाहिए कि वह विद्यार्थी को उसके स्तर पर आकर समझे एवं समझाये।

विद्यार्थी– एक विद्यार्थी के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है– अनुशासन। यह बाहर से नहीं अंदर से उपजना चाहिए। आत्मानुशासन सर्वोत्तम गुण है जो अन्य गुणों की आधार–शिलाा है। शब्द एवं कर्म की पवित्रता, ज्ञान–पिपासा, कठिन परिश्रम, समर्पण, श्रद्धता, उत्साह, सहनशीलता, सत्यान्वेशन, शिक्षक पर आस्था एवं आत्मनियंत्रण– विद्यार्थी के अन्य वांछित गुण हैं। ये सभी गुण शिक्षक के उचित मार्गदर्शन एवं अनुकूल वातावरण में विकसित किये जा सकते हैं।

शिक्षण विधि– हमें लक्ष्य के साथ शिक्षण विधि पर भी ध्यान देना चाहिए। शिक्षा ऐसी दी जाए जिससे विद्यार्थी की स्वच्छंदता नष्ट न हो। शिक्षक का धर्म है कि वह मार्ग की बाधाएँ हटाता रहे ताकि विद्यार्थी अपने अंदर छिपे ज्ञान की अनंत संभावनाओं से साक्षात्कार कर सके।

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन की धुरी है– धार्मिक उत्थान एवं चरित्र निर्माण। वे चाहते थे कि शिक्षा अत्यंत स्वाभाविक एवं सरल पद्धति से दी जाए। वर्तमान समय में आत्मानुशासन, शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों के लिए आवश्यक है क्योंकि यही पूर्ण मानव का निर्माण करती है। पूर्ण मानव बने बिना शिक्षा कभी पूरी नहीं हो सकती। मानवता के बिना डिग्री या नौकरी मूल्यहीन है। विवेकानन्द के शब्दों में – "When you have men who are ready to sacrifice their everything for their coun-

 ISBN : 978-93-80216-12-6

try, sincere to the back bone- when such men arise, India will become great in every respect."

अर्थात् शिक्षा ही हमें वह दृष्टि प्रदान करती है जिसके साथ हम अपना सर्वस्व न्यौछावर करके भी देश की उन्नति के महायज्ञ में शामिल हो जाते हैं। ऐसी शिक्षा ही राष्ट्र निर्माण में सक्षम एवं सच्ची शिक्षा है।

संदर्भ–

1. *Sen, Amiya P. (2000), 'Swami Vivekananda', New Delhi: Oxford University Press.*
2. *Gupta Asha (1998), Vivekananda', Delhi: Atmaram and sons Publications.*
3. *Saiyidain, K.G. (1970), 'Facts of Indian Education', Delhi: NCERT*
4. *Saiyidain, K.G. (1958), 'Education, Culture and Social Order', Delhi: Asia Publication House*
5. *Radhakrishnan, S. (1984), 'True knowledge', Delhi: Ravindra Printing Press.*
6. *Radhakrishnan, S. (1972), 'Indian Philosophy Vol. I μ II', London: George Allen and Unwin Ltd.*
7. *Sharma, D.S.(1961), 'The Upanishads, An Anthology', Bombay: Bharatiya Vidhya Bhavan.*

 ISBN : 978-93-80216-12-6

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन

डॉ. दीप्ति वाजपेयी
असि. प्रो., संस्कृत विभाग
कु.मा.रा.म.स्ना. महा. बादलपुर

शिक्षा मनुष्य में अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है। ज्ञान अभाव की नहीं वरन् भाव की संज्ञा है। वस्तुतः ज्ञान प्राप्त करने का अर्थ अप्रकट को प्रकट अवस्था में लाना है। ज्ञान मनुष्य में स्वभाव–सिद्ध है। वह हमारे अन्तस् में विद्यमान है ज्ञान बाह्य प्रयासों से अथवा स्वाभाविक प्रक्रिया से अनावृत होता है। स्वामी विवेकानन्द जी शिक्षा को मानव में निहित एवं स्वभाव–सिद्ध ज्ञान का प्रकटीकरण मानते है। वह कहते है– "कोई ज्ञान बाहर से नहीं आता; सब अन्दर ही है। हम जो कहते है कि मनुष्य जानता है, यथार्थ में, मानव शास्त्र संगत भाषा में हमें कहना चाहिए कि वह अविष्कार करता है, अनावृत या प्रकट करता है। मनुष्य जो कुछ सीखता है वह वास्तव में 'अविष्कार करना' ही है। अविष्कार का अर्थ है– मनुष्य का अपनी अनन्त ज्ञान रुप आत्मा के ऊपर से आवरण को हटा लेना।"

<u>शिक्षा का स्वरूप</u>– वस्तुतः विश्व का असीम ज्ञान भण्डार स्वयं हमारे अन्दर है। शिक्षा तो एक सुझाव, एक प्रेरक मात्र है, जो हमें अपने ही मन का अध्ययन करने के लिए प्रेरित करती है। इस प्रकार विवेकानन्द जी ज्ञान को अभाव या असत्ता की उत्पत्ति नहीं वरन् अप्रकट का प्रकटीकरण मानते है। समस्त ज्ञान, चाहे वह लौकिक हो या आध्यात्मिक मनुष्य के अन्तस् में विद्यमान है। प्रारम्भ में सामान्यतः वह प्रकाशित न होकर अप्रकट रहता है। शिक्षा के माध्यम से ज्ञान पर पड़ा आवरण धीरे–धीरे हटता जाता है और हम सामान्य भाषा में उसे सीखना कहते है। जिस व्यक्ति के ज्ञान पर पड़ा आवरण अनावृत नहीं होता वह अज्ञानी कहा जाता है। जिसका आवरण पूर्णतः हट जाता

 ISBN : 978-93-80216-12-6

है वह सर्वज्ञाता बन जाता है और उसे सर्वज्ञ या सर्वदर्शी कहते है। भाव यह है कि बीज में निहित वृक्ष से समान, चकमक पत्थर में व्याप्त अग्नि के समान, ज्ञान मन में निहित है तथा उद्दीपक कारण ही वह घर्षण है, जो ज्ञानाग्नि को प्रज्जवलित कर देता है।

स्वामी विवेकानन्द जी मानते है कि कोई अन्य व्यक्ति आपको कुछ सिखा नहीं सकता। व्यक्ति स्वयं अपने अनुभवों या प्रयासों से ही सीखता है। शिक्षक या गुरु तो मात्र सीखने के लिए उत्तम वातावरण का निर्माण करते है। वह ज्ञान के अविष्करण हेतु उद्दीपक का कार्य करते है। ज्ञान का प्रस्फुटीकरण व्यक्ति स्वयं अपने अन्तस् से करता है। जिस प्रकार एक विशाल वट वृक्ष छोटे से बीज में सिमटा रहता है तथा खाद–पानी के सानिध्य से विशाल रुप में परिणत हो जाता है तदैव समस्त ज्ञान एवं शक्ति–राशि हमारे अन्दर ही प्रसुप्त या अव्यक्त रुप में निहित होती है भले ही हम उसका बोध कर पाते है या नहीं। इस शक्ति या ज्ञान भंडार का बोध होना ही सामान्य भाषा में शिक्षा द्वारा ज्ञान में अभिवृद्धि कही जाती है।

शिक्षा का उद्देश्य– स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य है– "मनुष्य का निर्माण, चरित्र का निर्माण"। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जिससे चरित्र निर्माण हो, मानसिक बल बढ़े बुद्धि का विकास हो तथा मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके। उनके शब्दों में– "सभी प्रकार की शिक्षा और अभ्यास का उद्देश्य 'मनुष्य' निर्माण ही होना चाहिए। सारे प्रशिक्षणों का अन्तिम ध्येय मनुष्य का विकास करना ही है। जिस प्रक्रिया से मनुष्य की इच्छा शक्ति का प्रवाह और प्रकाश संयमित होकर फलदायी बन सके उसी का नाम शिक्षा है। हम मनुष्य बनाने वाला धर्म चाहते हैं। हम मनुष्य बनाने वाला सिद्धान्त ही चाहते हैं। हम सर्वत्र, सभी क्षेत्रों में 'मनुष्य' बनाने वाली शिक्षा ही चाहते हैं।"

इस प्रकार विवेकानन्द जी ने सच्चा मनुष्य बनना शिक्षा का उद्देश्य

 ISBN : 978-93-80216-12-6

माना है। सच्चे मनुष्य का अर्थ है– चरित्रवान मानव। उनके मत में शिक्षा चरित्र–गठन के लिए होनी चाहिए। मनुष्य का चरित्र उसकी विभिन्न प्रवृत्तियों की समष्टि है, उसके मन के समस्त झुकावों का योग है। हमारा व्यक्तित्व हमारे विचारों का परिणाम है। प्रत्येक विचार हमारे व्यक्तित्व को आकार प्रदान करता जाता है और हम जो बनना चाहते हैं, बनते चले जाते हैं। इस विश्वास को सुदृढ़ कर आत्मविश्वास जागृत करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। वह कहते हैं– "अगर तुम सोचो कि मैं कुछ हूँ, मुझमें शक्ति है तो सचमुच तुममें शक्ति आ जाएगी। यह एक महान सत्य है जिसका तुम्हें स्मरण रहना चाहिए। हम उस सर्वशक्तिमान प्रभु की सन्तान हैं, उस अनन्त ब्रह्माग्नि की चिन्गारियाँ हैं, हम सब कुछ हैं, सब कुछ करने को तैयार हैं और सब कुछ कर सकते हैं इस दृढ़–आत्मविश्वास की प्रेरणा शक्ति ही हमें उन्नति का मार्ग दिखा सकती है।"

इस प्रकार भारतीय पुनर्जागरण के कर्णधार स्वामी विवेकानन्द चरित्र निर्माण के माध्यम से व्यक्तित्व के निर्माण को शिक्षा का उद्‌देश्य मानते हैं। शिक्षा का उद्‌देश्य मानव में अन्तर्निहित पूर्णता की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति है। समस्त ज्ञान एवं शक्तियाँ मनुष्य–मन में निहित है उन्हें अनावरित करना ही शिक्षा है।

शिक्षा–विधि– स्वामी विवेकानन्द ज्ञान का स्रोत मनुष्य मन में अंतर्निहित मानते हैं अतः ज्ञान प्राप्ति के लिए एक ही भाव की आवश्यकता बताते है और वह है– 'एकाग्रता'। मन की एकाग्रता ही शिक्षा का सम्पूर्ण सार है। ज्ञानार्जन के लिए प्रत्येक व्यक्ति को एकाग्रता के मार्ग का अवलम्बन करना पड़ता है। एकाग्रता की शक्ति जितनी अधिक होगी, ज्ञान की प्राप्ति भी उतनी ही अधिक होगी। एकाग्रता ही आवरण को हटा कर ज्ञानरुपी प्रकाश को बाहर फैलाती है। उनके अनुसार– "किसी भी कार्य की सफलता एकाग्रता पर निर्भर करती है। कला, संगीत आदि में अत्युच्च प्रवीणता इसी एकाग्रता का फल

 ISBN : 978-93-80216-12-6

है। विश्व का समस्त ज्ञान अपना रहस्य खोल देने के लिए तत्पर है केवल हमें यही जानना है कि इसके लिए किस तरह दरवाजा खटखटाया जाए या आवश्यक आघात कैसे किया जाए। खटखटाने या आघात करने की शक्ति और दृढ़ता एकाग्रता से प्राप्त होती है।"

इस प्रकार विवेकानन्द जी एकाग्रता की शक्ति को ज्ञान के खजाने की एकमात्र कुंजी मानते हैं। अतः शिक्षा–विधि के रुप में शिक्षक को स्वयं एकाग्रचित्त होकर ज्ञानार्जन हेतु शिष्य की एकाग्रता हेतु वातावरण निर्माण करना ही सर्वोत्तम शिक्षाविधि है।

शिक्षक एवं शिक्षार्थी– स्वामी विवेकानन्द के मत में शिक्षक जाज्वल्यमान अग्नि के सदृश चरित्र वाले होने चाहिए जिससे उच्चतम शिक्षा का सजीव आदर्श शिष्य के सामने रहे। वह मानते हैं कि आदर्श शिक्षक में तीन विशिष्ट गुण होने चाहिए। पहला गुण यह है कि उसे शास्त्रों का मर्म ज्ञात हो। उसने स्वयं शास्त्रों का सार-तत्त्व जीवन व चरित्र में ढाल रखा हो अन्यथा उसका ज्ञान केवल शब्द राशि होगा उसमें प्राण तत्त्व का अभाव होगा और इस तरह का ज्ञान जिसमें प्राणतत्त्व का अभाव हो शिष्य में चेतना जागृत नहीं कर सकता।

गुरु के लिए दूसरी आवश्यक बात है– 'निष्पापता'। अपने अन्दर आध्यात्मिक सत्य की उपलब्धि करने और दूसरों में उसका संचार करने का एकमात्र उपाय हृदय एवं मन की पवित्रता है। गुरु को पूर्णरूप से शुद्धचित्त होना चाहिए तभी उसके शब्दों का मूल्य होगा।

गुरु का तृतीय गुण उसकी स्वार्थरहितता एवं विशुद्ध प्रेम से परिपूर्ण होना है। गुरु को धन, नाम या यश सम्बन्धी स्वार्थ–सिद्धि हेतु शिक्षा नहीं देनी चाहिए। उसके कार्य समस्त मानव जाति के प्रति विशुद्ध प्रेम से प्रेरित होने चाहिए।

उपर्युक्त गुणों से परिपूर्ण शिक्षक सीखने हेतु सर्वोत्तम वातावरण का सृजन कर सकता है क्योंकि सीखना अर्थात् ज्ञान का बोध तो स्वयं

 ISBN : 978-93-80216-12-6

शिष्य ही कर लेगा, आवश्यकता मात्र उद्दीपन की है। स्वामी जी के शब्दों में– "जिस प्रकार पौधा अपनी प्रकृति का विकास अपने आप ही कर लेता है, उसी प्रकार बालक भी स्वयं को शिक्षित करता है। पर हाँ, तुम उसे अपने ढंग से आगे बढ़ने में सहायता दे सकते हो। तुम जो कर सकते हो, वह निषेध–आत्मक होगा, विधि–आत्मक नहीं। तुम केवल बाधाओं को हटा सकते हो और ज्ञान स्वाभाविक रुप से प्रकट हो जायेगा। बीज से उगते हुए पौधे की शारीरिक बनावट के लिए तुम मिट्टी, पानी व समुचित वायु का प्रबन्ध कर सकते हो, बस यही तुम्हारा कार्य समाप्त हो जाता है। पौधा अपने आप बढ़ता है। ऐसा ही शिक्षा के बारे में है। बालक स्वयं अपने–आप को शिक्षित करता है। समस्त ज्ञान मनुष्य के अन्तर में अवस्थित है, उसे केवल जागृति, केवल प्रबोधन की आवश्यकता है और बस इतना ही शिक्षक का कार्य है।"

इस प्रकार विवेकानन्द जी के मत में शिक्षक, शिष्य में ज्ञान का आरोपण नहीं करता वरन् ज्ञान के अनावरण हेतु वातावरण का निर्माण करता है।

शिक्षक की भाँति स्वामी जी शिष्य में भी कतिपय गुणों की अनिवार्यता स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार शिष्य सत्य का बोध तभी कर पाता है जब वह सब प्रकार से इच्छाओं का परित्याग कर दें। इच्छाएँ सत्य के उदय में अवरोधक का कार्य करती है। विवेकानन्द जी के शब्दों में– "आत्मनिग्रह अन्य सब बहिर्मुखी कर्मों की अपेक्षा शक्ति की अधिक महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति है। किसी स्वार्थपूर्ण उद्देश्य से परिचालित होने पर मन की सारी शक्तियाँ बहिर्मुखी होकर इतस्ततः बिखर जाती है। परन्तु यदि उनका निग्रह किया जाए तो उनसे आत्म बल की अभिवृद्धि होती है।"

इसके अतिरिक्त शिष्य में सच्ची सहनशीलता भी होनी चाहिए। सुख व दुःख किसी भी अवस्था में मन का सन्तुलन खोना नहीं चाहिए।

ISBN : 978-93-80216-12-6

यह सन्तुलन सीखने की प्रक्रिया में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। शिष्य का एकमात्र ध्येय होता है– "उच्चतम सत्य के ज्ञान की प्राप्ति"। इस हेतु उसमें सत्य के बोध की तीव्र आकांक्षा होनी चाहिए। यह तीव्र आकांक्षा सत्य के प्रादुर्भाव का मात्र प्रशस्त करती है। शिष्य के लिए इन गुणों का होना अनिवार्य है। इन गुणों के अभाव में सच्चे गुरु के सम्पर्क में आकर भी ज्ञान का स्फुरण प्राप्त नहीं होगा।

अनुशासन– स्वामी विवेकानन्द जी आत्म–अनुशासन के महत्व को प्रतिपादित करते हैं। शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार का अनुशासन शिक्षा प्रक्रिया का आवश्यक अंग है। मन के सन्तुलन, आत्म–निग्रह तथा सहिष्णुता जैसे गुणों को शिष्य के लिए आवश्यक बता कर स्वामी विवेकानन्द जी स्वानुशासन को ही सर्वोत्तम अनुशासन के रूप में स्वीकार करते हैं। यही नहीं शिक्षा प्रक्रिया व ज्ञान के प्रादुर्भाव में आत्म अनुशासन की अपरिहार्यता को स्पष्ट शब्दों में व्यक्त करते हैं। उनके अनुसार शिष्य को स्वयं अपनी अन्तरिन्द्रियों एवं बहिरिन्द्रियों को नियन्त्रित करना चाहिए। शिष्य को अपना मनोनिग्रह खुद सीखना चाहिए तभी वह ज्ञान का साक्षात्कार कर सकता है।

निष्कर्ष–निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि स्वामी विवेकानन्द जी ने ज्ञान प्राप्ति या शिक्षा को बाह्य आरोपण की विषय–वस्तु नहीं बताया है। ज्ञान तो प्रत्येक व्यक्ति के अन्तस् में स्वयं विद्यमान है आवश्यकता उसे जागृत करने या अनुभूत करने की है। जब वह कहते है–"कभी किसी व्यक्ति ने दूसरे को नहीं सिखाया। हममें से प्रत्येक को अपने–आप सीखना होगा। बाहर के गुरु तो सुझाव या प्रेरणा देने का कारण मात्र है, जो हमारे अन्तःस्थ गुरु को सब विषयों का मर्म समझने के लिए उद्बोधित कर देते हैं। तब फिर सब बातें हमारे ही अनुभव और विचार शक्ति द्वारा स्पष्टतर हो जाएगी और हम अपनी आत्मा में उनकी अनुभूति करने लगेंगे", तो इन्हीं शब्दों में उनके शिक्षा दर्शन का सार निहित है।

 ISBN : 978-93-80216-12-6

उनका उद्देश्य शिक्षा द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को स्वजागृत कर तत्कालीन भारतीय चेतना में नव जागरण लाना था और इस हेतु आवश्यक था कि कोई बाह्य शक्ति नहीं वरन् व्यक्ति की अन्तः चेतना ही सत्य के साक्षात्कार का तथा अन्तर्निहित ज्ञान के प्रादुर्भाव का कारण बने।

आधुनिक सन्दर्भों में भी स्वामी जी के कालजयी विचारों की प्रासंगिकता स्वयं सिद्ध है। समकालीन भारतीय चेतना के जागरण की भाँति वर्तमान समय में भी पुनः भारतीय सांस्कृतिक चेतना को उन्नयन के दूसरे पड़ाव पर ले जाने की आवश्यकता है। हर भारतीय में अक्षय ऊर्जा के संचरण एवं संकल्पशक्ति को जागृत करने हेतु स्वामी विवेकानन्द के युग–युगीन एवं शाश्वत शिक्षा–दर्शन की महती आवश्यकता है। जिसके माध्यम से भारत पुनः आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना के चरम् का स्पर्श कर विश्व का सिरमौर बन सकता है।

संदर्भ–

1. *स्वामी विवेकानन्द, “व्यक्तित्व का विकास”, रामकृष्ण मठ नागपुर।*
2. *स्वामी विवेकानन्द, “वेदान्त” रामकृष्ण मठ, नागपुर।*
3. *स्वामी विवेकानन्द, “शिक्षा”, रामकृष्ण मठ, नागपुर।*
4. *विवेकानन्द साहित्य, अष्टम खण्ड, अद्वैत आश्रम, कलकत्ता।*
5. *भरत कुमार तिवारी, “विवेकानन्द का दार्शनिक चिन्तन”, भारतीय भाषा पीठ, नई दिल्ली।*
6. *रामनाथ शर्मा, “समकालीन भारतीय शिक्षा”, विनीत पब्लिकेशन, मेरठ।*
7. *स्वामी विवेकानन्द, भारत जागरण रामकृष्ण मिशन, नई दिल्ली।*
8. *Dr. Sudipa Dutta Roy] "Education in the vision of Swami Vivekananda".*

वर्तमान परिदृश्य में स्वामी विवेकानन्द के विचारों की प्रासंगिकता

डॉ. अंजु रानी
राजनीति विज्ञान विभाग
एस. डी. (पी. जी.) कॉलेज
दनकौर, गौतम बुद्ध नगर

"उठो, जागृत हो जाओ, लक्ष्य प्राप्ति किए बिना मन रुको।"

देश की राजनीतिक चेतना के साथ–साथ सांस्कृतिक तथा धार्मिक भावनाओं के विकास में अपना बलिष्ठ कन्धा लगाने वालों महर्षि विवेकानन्द का नाम विशेष रूप से स्मरणीय है। महर्षि विवेकानन्द ने जनता को अनुद्योग आलस्य, अकर्मण्यता के स्थान पर उद्योग, परिश्रय और कर्मण्यता का पाठ पढ़ाया। धार्मिक कृत्यों में आडम्बर पूर्ण अर्चना के स्थान पर नवीन मानसिक पूजा को महत्व दिया। रूढ़िवाद की पुरातन छिन्न–भिन्न श्रृंखलाओं को नष्ट करके जनता को धर्म के मूल तत्वों को समझाया। स्वामी विवेकानन्द भारत के महान दार्शनिक समाज सुधारक, नेता और शिक्षा चिन्तक हुए हैं।[1]

जब पराधीन भारत विवशतापूर्वक अपना धर्म, अपनी संस्कृति, सभ्यता एवं अपने आध्यात्मिक बल को खोता जा रहा था उस समय देश के सामाजिक एवं धार्मिक मंच पर स्वामी विवेकानन्द जेसे युग पुरुष का अभ्युदय हुआ। उनके राजनीतिक विचार उनके सामाजिक एवं धार्मिक विचारों के ही सहगामी हैं। उनका विश्वास था कि आर्थिक समृद्धि से भारत स्वं राजनीतिक स्वतन्त्रता का उद्देश्य पूरा कर सकेगा। ऐसे समय में जबकि भारत में राजनीतिक उदासीनता एवं निराशा ने भारतवासियों को अकर्मण्य बना दिया था, उन्होंने सांस्कृतिक राष्ट्रीयता का दर्शन देकर कर्म, संवा एवं त्याग पर आधारित राष्ट्रीयता की नई परिभाषा प्रस्तुत की।[2]

 ISBN : 978-93-80216-12-6

भारतवर्ष के प्रत्येक सुधार के लिए धार्मिक उत्थान की आवश्यकता है। भारतीयों को सामाजिक और राजनीतिक विचारों से भरने से पहले उसे आध्यात्मिक भावों से भरना होगा। किसी भी सभ्यता के स्थायी होने का मुख्य आधार उसका धर्म है।[3]

भारतीय स्वतन्त्रता के बाद आज भी भारतीय समाज में अनेक कुरीतियों जाति की संकीर्णताओं तथा छुआछूत की दुर्बलता से पीड़ित है। ऐसे समाज में यदि भारतीय संघर्ष और कर्मठता की अवधारणा को जीवन धारण नहीं करता तो उन्नति के मार्ग प्रशस्त नहीं हो सकते। अतः सम्पूर्ण विश्व की वैज्ञानिक उन्नति के संसाधनों के परिपेक्ष्य में भारतीय जीवन शैली के आधार पर ही उन्नति के मार्ग को प्रशस्त किया जा सकता है।[4]

तत्कालीन समाज में स्त्रियां दुरावस्था का शिकार थीं उन्हें शिक्षा से वंचित कर दिया गया था। उनके मानवीय अधिकारों के अत्यन्त सीमित कर दिया गया था। स्वामी जी ने इनका विरोध करते हुए का था कि स्मृतियों की रचना कर उनमें स्त्रियों के लिए कड़े–कड़े नियमों के प्रावधान कर पुरुषों ने स्त्रियों को केवल संतान पैदा करने वाली मशीन बना कर रख दिया है। स्वामी जी ने गरीब–लाचार निरक्षरता की सजा भुगत रही और वर्चस्ववादी पुरुष प्रधान समाज में तिरस्कृत रहने वाली भारतीय नारियोंा के लिए नई उम्मीद जगायी और उनकी समस्याओं का समाधान शिक्षा में खोजा। आप चाहते थे कि भारती स्त्रियां भी प्रखर चेतना सम्पन्न बनें। स्वामी जी चाहते थे कि स्त्रियों के लिए भी सर्वांगी शिक्षा देने वाले प्रशिक्षण केन्द्र संचालित किये जायें। "यदि हमें स्त्रियों को योग्य एवं सामर्थ्यवान बना दिया तो वह अपनी समस्याओं के हल स्वयं खोज लेंगी।" वे मानते थे कि स्त्री समाज का अभिन्न अंग हैं। वे किसी भी पक्षी के दो पंखों की तरह हैं यह कभी भी सम्भव नहीं है कि कोई भी पक्षी एक ही पंख से उड़ सके। विवेकानन्द का कहना था कि स्त्री पुरुष के भीतर जीवात्मा के अंग है फिर उनमें लिंग भेद कैसा?[5]

 ISBN : 978-93-80216-12-6

स्वामी जी ने मानव ईश्वर की पूर्ण प्रतिष्ठा को स्वीकार करते हैं। उनका मानना था कि जिन रूपों में ईश्वर की उपासना की जाती है वह किसी न किसी रूप में मानव–मात्र में विद्यमान है। मन्दिरों में बैठकर पूजा करने से बेहतर मानव–सेवा करके ईश्वर की सेवा की जा सकती है। धर्म के प्रति उनका दृष्टिकोण अत्यन्त व्यापक है। वे सभी धर्मों को मानव जाति के कल्याण हेतु साधन मानते हैं। धार्मिक क्षेत्र में भी वे वैज्ञानिक अनुसंधान प्रणाली के प्रयोग करने पर बल देते हैं। विश्व बंधुत्व की भांति ही विश्व धर्म को भी मान्यता देते हैं। उनका विचार था कि कला, विज्ञान और धर्म एक ही परम सत्य को व्यक्त करने के तीन विभिन्न साधन है। धर्म ही मानव समाज के उत्थान का श्रेष्ठ मार्ग है।[6]

विवेकानन्द अन्तर्राष्ट्रीयवादी थे। वे विश्व–बन्धुत्व के समर्थक थे। विश्व धर्म सभा में उनका अन्तर्राष्ट्रीयवाद का भाव उभरकर सामने आया। जहाँ अन्य सब प्रतिनिधियों में अपने–अपने धर्म की चर्चा करते रहे, वहीं केवल विवेकानन्द ने सब धर्मों व ईश्वर की चर्चा की बात की।[7]

स्वामी जी का मानना था कि शिक्षा से ही राष्ट्र–निर्माण होता है। अतः हमारी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो मनुष्य का निर्माण करें। उनके अनुसार विद्यार्थियों की पारम्परिक शिक्षा तो दी ही जानी चाहिए, परन्तु आवश्यक है कि उन्हें वैज्ञानिक एवं तकनीकि शिक्षा दी जानी चाहिए।[8]

ब्राह्मणों को शिक्षा की उतनी आवश्यकता नहीं है जितनी चाण्डाल को। यदि ब्राह्मण को एक अध्यापक की आवश्यकता है तो चाण्डाल को दस की हैं क्योंकि जिसको प्रकृति ने जन्म से सूक्ष्म बुद्धि नहीं दी है उसे अधिक सहायता दी जानी चाहिए। विवेकानन्द जी का समान अवसर का सिद्धान्त समाजवादी दिशा का द्योतक है। विवेकानन्द इस सिद्धान्त का समर्थन करके समाज के निम्न वर्गों का उत्थान करना चाहते थे।[9]

ISBN : 978-93-80216-12-6

स्वामी जी ने देश के सब निवासियों के लिए 'समान अवसर' के सिद्धान्त का समर्थन कर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। आपने लिखा है कि यदि प्राकृति में असमानता है, तो भी सबके लिए समान अवसर होने चाहिए अथवा कुछ को अधिक और कुछ को कम तो दुबर्लों को सबलों से अधिक अवसर दिया जाना चाहिए।[10]

स्वामी जी के विभिन्न विचार आज के परिवेश में भी उतने ही प्रासंगिक है क्योंकि वे अहर्निश राष्ट्र की चिंता करते थे–"यदि भारत को महान बनाना हो, उसका भविष्य उज्ज्वल करना है तो इसके लिए आवश्यक है संगठन करने, भक्ति संग्रह करने की और बिखरी हुई इच्छा भात्रियों का एकत्रीकरण करने की।"[11]

आज समग्र भारतीय परिदृश्य को देखकर यह सहजता से कहा जा सकता है कि यह समय देश के लिए सर्वाधिक समस्याग्रस्त है एवं तीव्रता से परिवर्तनशील भी है। आज दलित–उत्पीड़न, स्त्री–शोषण, व्यक्ति स्वातन्त्रय, आतंकवाद, नक्सलवाद, सम्प्रदायवाद, भाशावाद, आर्थिक भ्रष्टाचार, राजनीतिक दिवालियापन, नेतृत्व का आभाव जैसी अनेकानेक समस्याएँ जटिलतम होती जा रही हैं। इन्हीं का दुष्परिणाम है कि आज का मानव आतंक, भय, संत्रास, अकेलापन, अजनबीपन, खालीपन, अविश्वास एवं कुंठा आदि मानसिक विकृतियों से ग्रस्त होता जा रहा है। ऐसे समय में विवेकानन्द का साहित्य देश एवं यहाँ के मनुष्यों को आशा–अपेक्षा और उम्मीदों से भर देता है क्योंकि स्वामी जी ने जहाँ भारतीय जनमानस में आत्म सम्मान का भाव जगाने का प्रयास किया, वहीं समाज को अपनी बुराइयों को त्यागने और गरीबी से निकले के उपाय भी बतलायें। उनका जीवन एवं विचार देश एवं देशवासियों के सर्वतोभावेन कल्याण से ही सम्बन्धित है।[12]

सन्दर्भ–

1. *विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक, प्रो. एस. पी. रुहेला।*
2. *शिक्षा भास्त्री–पी.डी. पाठक, पृ. सं. 257*

3. भारत और उसकी समस्याएँ, स्वामी
4. डॉ. विरेन्द्र सिंह यादव, वैश्विक परिदृश्य में स्वामी विवेकानन्द के विचारों की प्रासंगिकता, पृ. सं. 300
5. हिन्दू धर्म और उसका दर्शनशास्त्र।
6. ब्रह्मास्थानन्द–जितने मत उतने पथ।
7. डॉ. विरेन्द्र सिंह यादव, वैश्विक परिदृश्य में स्वामी विवेकानन्द के विचारों की प्रासंगिकता, पृ. सं. 215
8. स्वामी विवेकानन्द जी व्यावहारिक जीवन वेदान्त।
9. स्वामी विवेकानन्द व्यक्ति और विचार–राजेन्द्र प्रसाद गुप्त–राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
10. शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज भास्त्रीय आधार सिद्धान्त–रमन बिहारी लाल, पृ. सं. 311
11. पत्रिका–सोच–विचार, जनवरी 2010, लेख विवेकानन्द, भशुन्यजी साहा भांकर, पृ. सं. 14
12. The life of Sawmi vivekanand by his Esatern and Western Discipline (अद्वैत आश्रम, अल्मोड़ा-अल्मोड़ा भाग)

स्वामी विवेकानन्द : एक सांगीतिक व्यक्तित्व

डॉ. भगत सिंह
असि. प्रो. संगीत विभाग
राजकीय कांशीराम डिग्री कॉलेज, गाजियाबाद

स्वामी विवेकानन्द का नाम हमारे ध्यान में आते ही हमारे अन्दर अध्यात्म, स्फूर्ति, आनन्द एवं जागृति का बोध होता है स्वामी जी की छवि एक ऐसे युवा सन्यासी की थी जिसका रोम–रोम भारतीयता से अनुप्राणित था। वे भारत की वैदिक संस्कृति के पूर्ण प्रतिनिधि थे। भारतीय समाज की हीन अवस्था को दूर करने हेतु उन्होंने जन जागरण का बीड़ा उठाया। स्वामी विवेकानन्द का व्यक्तित्व बहु आयामी था। वे व्यावहारिक कर्मयोगी थे। उन्होंने शुष्क एवं नीरस विषय वेदान्त को भी व्यावहारिक एवं सरस बना दिया। वे एक स्पष्टवक्ता, विनोदी, उत्साही एवं मेधावी संन्यासी थे। भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं संगीत के लिए स्वामी जी पूर्ण समर्पित थे। आप बचपन से ही संगीतानुरागी थे। श्री रामकृष्ण वचनामृत ग्रन्थ में यत्र तत्र उल्लेख है कि नरेन्द्र के आने पर वे उनका मधुर गाना अवश्य सुनते हैं। स्वामी जी ने विधिवत् रूप से संगीत शिक्षा ग्रहण की थी। भारतीय संगीत की प्राचीन विद्या ध्रुपद धमार की शिक्षा आपको अपने पिता श्री विश्वनाथ दत्त से प्राप्त हुई थी। गायन एवं वादन दोनों में ही आप निपुण थे। संगीत–शास्त्र एवं प्रयोग के विषय में आपने 'कल्पतरु' नामक किताब लिखी। इस पुस्तक में भारतीय संगीत पर विशद वर्णन है। जिस समय स्वामी विवेकानन्द का भारत भूमि पर अवतरण हुआ था, भारतीय संस्कृति का ह्रास हो रहा था और हिन्दु धर्म पतन की ओर अग्रसर था। स्वामी जी ने भारतीय संस्कृति की प्राचीनता एवं महानता को विश्व के सम्मुख रखा। युवा भक्ति के वे प्रेरणा स्त्रोत थे। स्वामी जी कभी भी प्राचीन आदर्शों तिलांजलि देकर नवीन आदर्शों को अपनाने के पक्ष में नहीं थे। आपका मानना था कि हमारे प्राचीन सिद्धांत ठोस नींव पर खड़े

हैं। वैदिक युग में संगीत उपसाना का माध्यम रहा है। इसका विकास धर्म की गोद में हुआ। शिक्षा के एक अंग के रूप में संगीत उपासना का माध्यम रहा है। इसका विकास धर्म की गोद में हुआ। शिक्षा के एक अंग के रूप में संगीत को स्वीकार किया गया है। स्वामी विवेकानन्द मानते थे कि हमारी प्राचीन धरोहर आने वाली पीढ़ी तक पहुँचनी चाहिए। हमारा संगीत अध्यात्म की ओर उन्मुख रहा है। हमारा चरित्र विकास व सर्वांगीण विकास संगीत के द्वारा संभव है।

स्वामी जी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। उनके व्यक्तित्व का एक पहलू यह है कि वे एक महान संगीतकार थे। इस बात की जानकारी बहुत कम लोगों को है। "विवेकानन्द स्वयं एक सन्यासी होने के साथ–साथ एक कवि और बड़े अच्छे गायक थे। अपनी बातों को कहने के लिए वे गद्य, पद्य तथा गीत इन तीनों का आश्रय लिया करते थे।"[1] स्वामी विवेकानन्द शब्दों के ही नायक नहीं, संगीत के भी नायक थे। आपको शास्त्रीय संगीत का उच्च कोटि का ज्ञान था। इनके बचपन का नरेन्द्रनाथ था। स्वामी जी को संगीत के संस्कार विरासत मे मिले थे। आपके पिताजी विश्वनाथ दत्त ध्रुमपद एवं धमार के ज्ञाता थे। अतः संगीत की इस कठिन विद्या की बारीक जानकारी आपको अपने पिता से प्राप्त हुई थी। आपकी माता भुवनेश्वरी देवी जी द्वारा भी संगीत की शिक्षा मिली थी। माता जी द्वारा आपको भक्ति संगीत की प्रेरणा मिली थी।

ऐसा उल्लेख है कि परिव्राजक के रूप में भारत–भ्रमण के दौरान एकनाथ पंडित नामक एक वरिष्ठ संगीतज्ञ से आपका मुलाकात हुई थी। वे एक ध्रुपद गायक थे और स्वामी जी ने उनका संगीत सुनने की इच्छा प्रकट की। एकनाथ पंडित के साथ स्वामी जी मृदंग पर संगत करने लगे। आपके मृदंग वादन से गायक एवं श्रोता सन्तुष्ट हुए। इसके बाद वार्तालाप से ज्ञात हुआ कि स्वामी जी गाते भी है तो लोगों ने स्वामी जी से गाने का अनुरोध किया। स्वामी जी तानपूरा उठाकर

 ISBN : 978-93-80216-12-6

आलाप देने लगे। फिर जब उन्होनें लयकारी की कोई भी मृदंग पर उनकी संगत न कर सका। सहसा ही उन्होंने एकनाथ पंडित को तानपूरा देकर स्वयं ही मृदंग बजाकर अपनी संगत करने लगे। इस अद्भुत घटना पर पंडित एकनाथ कह उठे कि स्वामी जी आप केवल गायक ही नहीं बल्कि नायक भी हैं। संगीत में नायक की उपाधि उसी को दी जाती है जो गुरु द्वारा सीखी हुई संगीत कला का शुद्ध रूप में प्रदर्शन करता है।

स्वामी जी की वाणी में ओज एवं मधुरता थी। वे शब्द और संगीत दोनों के नायक थे। प्रसिद्ध विद्वान रोलां ने स्वामी जी के बारे में लिखा है–"उनके शब्द महान संगीत हैं, बीथोवन भौली के टुकड़े हैं, हैंडल के समवेत गान के छंद–प्रवाह की भांति उद्दीपक लय हैं।" स्वामी जी के मधुर कंठ एवं गान कला पर आपके गुरु जी रामकृष्ण परमहंस भी समाधिस्थ हो गये थे। "परमहंस को उन्होंने जो गीत सुनाया वह ब्राह्म समाज का गीत था जिसकी टेक है–'मन चलो निज निकेतन' यह गीत सुनकर श्री रामकृष्ण को भाव समाधि लग गई थी।"[2] श्री रामकृष्ण वचनामृत ग्रन्थ में परमहंस जी का विस्तृत लीला वर्णन है। इस ग्रन्थ में जगह–जगह यही वर्णन है कि रामकृष्ण नरेन्द्र के आते ही उनका गाना अवश्य सुनते हैं। भारत के महान संगीतविद ढंग से ध्रुपद, धमार, ख्याल, भजन और टप्पा का अध्ययन किया था। टप्पा एवं ठुमरी के विषय में उनकी राय अच्छी नहीं थी। इसका कारण था की वे ऐसी गायकी पसन्द करते थे जिसमें उत्साह, वीर एवं मंगल भावों का उदय हो। उन्होंने कहा था–"अब हमें रणभेरी, रणसिंगा, डमरू बजाना चाहिए। रूद्रताल पर दुन्दुभि–रव करना अब आवश्यक है। हर–हर महादेव की गर्जना से हमें गगन भेदी स्वरनाद करना है। हम जो गीत और वाद्यों से कोमल भावना से स्वर कम्पित करते हैं, उसे निकाल बाहर करना जरूरी है। टप्पा, ठुमरी बन्द कर दो और ध्रुपद धमार की स्वर लहरियां जनता के कानों में सुनाओ।"[3]

विभिन्न शिक्षकों से उन्होंने मृदंग, तबला और सितारा भी सीखा। वेणी उस्ताद (वेणी माधव अधिकारी) और उस्ताद अहमद खाँ से उन्होंने ध्रुपद व ख्याल सीखा। "He recevied his calassical music training form beni Ostad (his original name was Beni Gupta)"[4]। पखावज का ज्ञान आपको काशी घोषाल से मिला। स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय संगीत के ऊपर एक किताब भी लिखी जिसका नाम 'संगीत कल्पतरू' है। जब उन्होंने किताब लिखी जब उनकी आयु मात्र 20–22 वर्ष की थी। इससे पता चलता है कि वे संगीत की बारीकियों से अच्छी तरह परिचित थे। नेताजी नगर कॉलेज ((कलकत्ता) के प्रो. डॉ. सर्बानन्द चौधरी ने अपने लेख 'Sangeet Kalpataru of Swami Vivekanand' में इस पुस्तक पर विस्तृत चर्चा की है। "In 1887, when Vivekanand was only 24 years old, he co-edited and published and published a Bengali Song Anthology named Sangeet Kalaptaru¸[5] अपनी संगीत शिक्षा के दिनों में स्वामी जी नियमित रूप से कठोर अभ्यास किया करते थे। स्वामी जी पाश्चात्य संगीत के भी जानकर एवं प्रशंसक थे। पाश्चात्य संगीत सुनने के बाद उसके प्रति आपने उच्च धारणा बना ली थी। उन्होंने कहा, "जब मैंने उने संगीत को ध्यानपूर्वक सुनना शुरू किया और उस शास्त्र का अध्ययन किया, तो प्रशंसा किये बिना नहीं रह सका।"[6]

संगीत के आदर्श रूप के बारे में स्वामी जी ने कहा–"ध्रुपद और ख्याल आदि में एक विज्ञान है। किन्तु कीर्तन अर्थात् मधुर और विरह तथा ऐसी अन्य रचनाओं में ही सच्चा संगीत है, क्योंकि वहाँ भाव है। भाव ही आत्मा है, प्रत्येक वस्तु का रहस्य है।"[7] संगीत की स्वर चिह्न एवं श्रुतियों के बारे में स्वामी जी का कहना था–"युगों पूर्व भारत मं संगीत को पूर्ण सप्त स्वरों तक विकसित किया गया था, यहाँ तक कि अर्ध एवं चतुर्थांश स्वर तक भी विकसित हुए थे।"[8] अमृत बाजार पत्रिका के रविवारीय मैगजीन सैक्शन में दिनांक 5 मार्च 1964 को

एक लेख 'नायक नरेन्द्र' नाम से प्रकाशित हुआ था, जिसमें उल्लेख है कि कलकत्ता में स्वामी विवेकानन्द को एक पांडुलिपि मिली जिसमें कई रचनायें ताल शास्त्र पर थीं। स्वामी को चंचलता पूर्ण गायकी जैसे टप्पा, ठुमरी यानि जिसमें मुरकियों का अधिक प्रयोग हो, पसन्द नहीं थी।। उन्हें भारतीय संगीत की प्राचीन विद्या ध्रुपद एवं धमार गायकी अधिक पसन्द थी। इसके द्वारा वे चाहते थे। कि भारतीयों में प्राचीन संस्कृति का संचार हो जिससे उनमें क्षुद्रता समाप्त हो। वे हर दृष्टि से भारतीयों को श्रेष्ठता के शिखर पर देखना चाहते थे। स्वामी जी का मानना था कि देश की वर्तमान अवस्था में ध्रुपद गायन ही एकमात्र उपयोगी है। ध्रुपद गान के विज्ञान का यदि कीर्तन संगीत में समावेश हो जाये तो आदर्श संगीत की सृष्टि हो सकेगी।

परमहंस रामकृष्ण के गीतों में एकताल, झपताल, त्रिताल, सात मात्राओं का जतताल, आढ़ा खमेटा आदि तालों का प्रयोग हुआ है। स्वामी विवेकानन्द रचित गीतों में तीव्रा, सूल, चौताल, अद्धा आदि तालों का प्रयोग किया गया है। स्वामी जी एक कुशल रचनाकार थे। आपने स्वरचित गीतों को निम्न प्रकार से रागों एवं तालों में निबद्ध किया–

1. 'खण्डन भव बंधन–राग–यमन, ताल–चौपाल (रामकृष्ण मिशन के केन्द्रों में गाई जाने वाली दैनिक प्रार्थना)
2. 'एक रूप अरूप नाम वरण,' राग–बड़हंस सारंग ताल–चौताल
3. 'नाहिं सूर्य नाहिं ज्योति' राग बागेश्री–ताल अड़ा
4. 'मुझे वारी बनवारी सैंया' राग ठुमरी, ताल कहरवा

स्वामी विवेकानन्द शास्त्रीय संगीत के ज्ञाता थे तथा उनका मानना था कि संगीत के द्वारा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास संभव है। आपके गायन में केवल स्वर एवं ताल का प्रदर्शन ही नहीं था बल्कि उसमें अध्यात्म का ओज, हृदय में हिलोरें मारता भारत का प्राचीन गौरव तथा भावों का समुद्र था। वे संगीत के द्वारा युवाओं में उदात्त भावों का

उदय चाहते थे जिसमें उनमें सच्चरित्रता, सहृदयता एवं मानवता का विकास हो। वर्तमान समय में संगीत में फूहड़ता बढ़ती जा रही है। यह केवल मनोरंजन का साधन मात्र रह गया है। ऐसे समय में स्वामी जी के संगीत सम्बन्धी विचारों एवं कार्यों पर विचार करना आवश्यक है। स्वामी जी की लिखी हुई किताब 'संगीत कल्पतरु' में भारतीय संगीत पर गहन चर्चा की गई है। दुर्भाग्य से यह किताब अब उपलब्ध नहीं है। यदि स्वामी जी के सांगीतिक कार्यों को हमारे संगीत प्रेमियों एवं युवाओं से परिचित कराया जाये तो यह संगीतकारों एवं वर्तमान पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक होगा।

सन्दर्भ–

1. *स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन, डॉ. रश्मि श्रीवास्तव पृ. 190*
2. *रेडियो रूपक, स्वामी विवेकानन्द, रामधारी सिंह दिनकर*
3. *स्वामी विवेकानन्द और उनका अवदान, सम्पादक विदेहात्मानन्द पृष्ठ 248*

4- *www.Swamivivekanandaquotes.org 2012*

5- *www.Swamivivekanandaquotes.org*

6. *विवेकानन्द साहित्य खण्ड 8 पृ. 246*
7. *विवेकानन्द साहित्य खण्ड 10 पृ. 39*
8. *विवेकानन्द साहित्य खण्ड1 पृ. 262–63*

स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में चिन्तन

डॉ. तारकेश्वर गुप्ता

असि. प्रो. बी. एड. विभाग

महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर

महा. हरदोई।

नव्य वेदान्त की शिक्षा भारतीय शिक्षा के संकट का समाधान प्रस्तुत करती है। बच्चा जिस वातावरण में शिक्षा ग्रहण कर रहा है वह जीवन की शिक्षा के लिए पर्याप्त नहीं है क्योंकि प्रतिस्पर्धात्मक समाज का पूर्णरूप से समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता। वेदान्तिक शिक्षा का आशय राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर मानव जाति की एकता को प्रोत्साहित करना है। शिक्षा–प्रणाली को ठीक प्रकार से कार्यान्वित करने हेतु अध्यापक, विद्यार्थी और अभिभावकों से समान रूप से उत्तरदायित्व के निर्वहन की अपेक्षा है। अध्यापक और प्रशासक पर्याप्त रूप से कक्षाओं में शिक्षण के मनोवैज्ञानिक विधियों के सुझाव को कार्यान्वित करने के प्रति उत्साही नहीं है।

प्रस्तावना (Introducation)–"जो शिक्षा–प्रणाली जन–साधारण को जीवन–संघर्श से जूझने की क्षमता प्रदान करने में सहायक नहीं होती, जो मनुष्य के नैतिक बल का, उसकी सेवा–वृत्ति का, उसमें सिंह के समान साहस का विकास नहीं करती, वह भी क्या शिक्षा नाम के योग्य है।"

देश की राजनीतिक चेतना के साथ–साथ सांस्कृतिक तथा धार्मिक भावनाओं के विकास में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित करने वाले स्वामी विवेकानन्द विशेष रूप से स्मरणीय है। स्वामी जी ने जनता को अनुद्योग, आलस्य, अकर्मण्यता के स्थान पर उद्योग, परिश्रम और कर्मण्यता का पाठ पढ़ाया। धार्मिक कृत्यों में प्रचीन विचारधारा के स्थान पर तथा आडम्बरपूर्ण अर्चना के स्थान पर नवीन मानसिक पूजा को महत्व दिया।

 ISBN : 978-93-80216-12-6

रूढ़िवाद की पुरातन छिन्न–भिन्न श्रृंखलाओं को नष्ट करके जनता को धर्म के मूल तत्वों को समझाया। जातिवाद को जड़ से उखाड़ फेंकने का सबल प्रयत्न किया। इन सब विसंगतियों का कारण मानव में शिक्षा का अभाव है। स्वामी विवेकानन्द मानते थे कि शिक्षा के अभाव में मनुष्य का नैसर्गिक विकास नहीं हो सकता। जैसा कि वेदान्त दर्शन मानता है कि प्रत्येक बालक में अनन्त ज्ञान (Omniscience), अनन्त बल (Omnipotence) तथा अनन्त व्यापकता (Omniprecence) की भक्तियाँ विद्यमान हैं परन्तु उसे इन भक्तियों का पता नहीं है। शिक्षा द्वारा उसे इसकी प्रतीति करवाई जाती है, तथा इनका उत्तरोत्तर विकास करने में छात्र की सहायता की जाती है। इसी बात को स्वामी जी कहते हैं कि–"शिक्षा द्वारा मनुष्य का निर्माण किया जाता है। समस्त अध्ययनों का अन्तिम लक्ष्य मनुष्य का विकास करना है। जिस अध्ययन द्वारा मनुष्य की संकल्प–शक्ति का प्रवाह संयमित होकर प्रभावोत्पादक बन सके उसी का नाम शिक्षा है।"

स्वामी विवेकानन्द तत्कालीन शिक्षा–प्रणाली से दुःखी थे। उनका विचार था कि उस समय की शिक्षा मनुष्य में कोई गुण उत्पन्न नहीं करती। यह मनुष्य बनाने वाली शिक्षा है ही नहीं। उसमें कोई तत्व की बात दी ही नहीं जाती। अंग्रेजी शिक्षा–प्रणाली में निषेधों पर बल दिया जाता। अभावात्मक शिक्षा व्यक्ति को पंगु बना देती है, उसकी मौलिकता को कुंठित कर देती है और उसमें मनुष्यत्व के गुणों का विकास नहीं करती। स्वामी जी कहते हैं कि–"यदि तुम केवल पाँच ही परखे हुए विचार आत्मसात् कर उनके अनुसार अपने जीवन और चरित्र का निर्माण कर लेते हो, तो तुम एक पूरे एक ग्रन्थालय को कण्ठस्थ करने वाले की अपेक्षा अधिक शिक्षित हो। यदि शिक्षा का अर्थ जानकारी ही होता, तब तो पुस्तकालय संसार के सबसे बड़े सन्त हो जाते और विश्वकोश महान ऋषि बन जाते।"

स्वामी विवेकानन्द का जीवन–दर्शन–स्वामी विवेकानन्द के

 ISBN : 978-93-80216-12-6

जीवन–दर्शन का महत्वपूर्ण बिन्दु है कि निर्भय बनो, संघर्श करो और शान्ति के साथ मानव जाति की सेवा करो। वे प्रत्येक को शत्रुओं से निर्भय बनाना चाहते थे, सभी चुनौतियों का बिन प्रतिबन्ध निडरता तथा आत्मवि वास के साथ सामना करना सीखना चाहते थे। पाश्चात्य की आदर्शवादी दर्शन तथा प्राचीन हिन्दु धर्म की सर्जनात्मक दर्शन द्वारा संश्लेशण और महान हिन्दु जीवन–पद्धति को गौरवान्वित करना चाहते थे। स्वामी जी सच्चे अर्थों में वेदान्ती थे। वेदान्त–दर्शन की संक्षिप्त विशेषता है–"'एक सद्विप्रं बहुधावदन्ति' उतिष्ठ, जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधते' ब्रह्म सत्यम् जगन्मिथ्या" आदि। स्वामी जी अद्वैतवाद के समर्थक थे। उन्होंने सृष्टि, आत्मा, ईश्वर, आत्मानुभूमि, संन्यास, भक्ति, योग आदि अनेक विषयों पर अपना मौलिक विचार व्यक्त किया। उनका वेदों और उपनिषदों पर अटूट विश्वास था। उन्होंने भारत तथा भारत से बाहर देशों में वेदान्त दर्शन को सर्वजनीन, सार्वभौमिक दर्शन के रूप में प्रचारित एवं प्रसारित किया। उन्होंने वेदान्त की व्याख्या आधुनिक परिप्रेक्ष्य में की।

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा–दर्शन–स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन वेदान्त और उपनिषदों पर आधारित है। उनका विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति में आत्मा विद्यमान है। आत्मा को पहचानना ही धर्म है। शिक्षा आत्म–विकास की प्रक्रिया है। स्वामी विवेकानन्द की शिक्षा मानव–निर्माण की शिक्षा (Man-Making Education) का प्रतिपादन करती है। स्वामी जी आध्यात्मिक उन्नति से पूर्व देश की समृद्धि के पक्षधर थे, उनका कहना था कि जब तक प्रत्येक भारतवासी का जीवन स्तर उच्च नहीं हो जाता, जब तक जीवन–संघर्श के लिए वे सन्नद्ध नहीं हो जाते, उन्नति की बातें निस्सार होंगी। स्वामी जी तत्कालीन शिक्षा–प्रणाली के कटु आलोचक हैं।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा का अर्थ–स्वामी विवेकानन्द के अनुसार–"शिक्षा मानव में अन्तर्निहित पूर्णता का विकास है।" प्रत्येक

 ISBN : 978-93-80216-12-6

मनुष्य में कुछ जन्मजात भक्तियाँ निहित होती हैं। शिक्षा ऐसी ही भक्तियों को विकसित एवं स्थिर करती है। शिक्षा आत्म विकास की प्रक्रिया भी है, क्योंकि बच्चा अपने आप को शिक्षित करता है। स्वामी विवेकानन्द पुस्तकीय शिक्षा को शिक्षा नहीं मानते थे। उनका कहना था कि जो शिक्षा मनुष्य को यन्त्र बना दे वह वास्तविक शिक्षा नहीं है। वास्तविक शिक्षा वह है जो व्यक्ति के संकल्प भक्ति को विकसित करती है और उसे अपने भीतर छिपी आध्यात्मिकता को अनुभव करने योग्यता प्रदान करती है। शिक्षा द्वारा असीम भक्ति, असीम उत्साह, असीम साहस और असीम सहन शीलता उत्पन्न होनी चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा के सिद्धान्त–

1. **ज्ञान व्यक्ति के भीतर होता है**–स्वामी विवेकानन्द के विचार है कि संसार ने जितना प्राप्त किया है वह मनुष्य के मन से ही आया है। ब्राह्माण्ड का असीम पुस्तकालय मनुष्य के मन में ही विद्यमान है। बाह्यय संसार तो केवल सुझाव है, यह तो एक अवसर है जो मनुष्य को अपने मन के लिए मिला है। सेव के गिरने ने न्यूटन को सुझाव दिया और उसने अपने मन में अध्ययन किया। उसने अपने मन के बहुमूल्य विचारों को पुनः व्यवस्थित किया और उनमें एक नई कड़ी खोज निकाली जिसे हम गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त कहते हैं।

2. **आत्म–शिक्षा**–स्वामी विवेकानन्द का विश्वास है कि बच्चा–आत्म शिक्षा सीखता है। बच्चा स्वयं अपने आप से सीखता है। उसकी अपनी सूझ–बूझ और विचार भक्ति से ही उसे सभी वस्तुओं का स्पष्ट ज्ञान होता है। व्यक्ति में समूचा ज्ञान विद्यमान होता है, उसे केवल जगाने की आवश्यकता होती है।

3. **मन की एकाग्रता**–शिक्षा का सार–स्वामी विवेकानन्द मन की एकाग्रता को शिक्षा का सार मानते हैं। जिस व्यक्ति में एकाग्रता की भक्ति जितनी अधिक होती है वह अपेक्षाकृत उतना महान

 ISBN : 978-93-80216-12-6

कहलाता है। 'एकाग्रता की चाभी से ही ज्ञान के खजाने खोले जा सकते हैं।' मन को अधिक से एकाग्र करना ही शिक्षा का लक्ष्य है। शिक्षा का मापदण्ड व्यक्ति द्वारा पढ़ी गयी पुस्तकों की संख्या नहीं बल्कि यह तथ्य है कि वह हाथ में लिए काम पर किस सीमा तक मन को एकाग्र कर सकता है।

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण–

1. **सबके लिए शिक्षा**–स्वामी विवेकानन्द सभी के लिए शिक्षा के प्रबल समर्थक हैं। उनका विचार है कि शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। यह बच्चों की शरीरिक, सामाजिक और आध्यात्मिक आवश्यकता है। स्वामी जी का कथन है कि "जब तक भारत की जनता को अच्छी शिक्षा नहीं दी जाती, उन्हें अच्छा भोजन नहीं दिया जाता, उनकी अच्छी तहर से देखभाल नहीं की जाती, तब तक राजनीति की किसी भी मात्रा का कोई लाभ नहीं होगा।" उनका विश्वास है कि भारत में तमाम बुराईयों की जड़ गरीबी है। वह गरीबों की दशा सुधारने का एकमात्र उपाय शिक्षा को मानते हैं। उनका मानना है कि जनता में ज्ञान और शिक्षा के प्रसार से राष्ट्र का विकास होता है। स्वामी जी का मानना है कि जन–साधारण को व्यावहारिक शिक्षा दी जानी चाहिए। उन्हें कृषि की शिक्षा मिलनी चाहिए क्योंकि भारत एक कृषि प्रधान देश है और कृषि की उन्नति पर ही भारत की उन्नति निर्भर है। वाणिज्य और व्यापार की शिक्षा का भी समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। साथ ही जीवन के लिए आवश्यक विशयों की शिक्षा प्रदान करना समाज का कर्तव्य है।

2. **नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा**–स्वामी विवेकानन्द के अनुसार धर्म शिक्षा की आत्मा है। परन्तु धर्म की उनकी परिभाषा बड़ी व्यापक है। वे किसी सम्प्रदाय–विशेष को धर्म नहीं मानते थे। उनकी दृष्टि में धर्म एक साधना है, एक अनुभूति है, आत्म–साक्षात्कार है। वे

 ISBN : 978-93-80216-12-6

कहते हैं कि "मैं अभी इस विशय पर विचार नहीं कर रहा हूँ कि किसी जाति की जीवन–भक्ति राजनैतिक आधार पर प्रतिष्ठित होना अच्छा है या धार्मिक आधार पर। परन्तु अच्छा या बुरा हमारी जाति का जीवन–शक्ति धर्म में ही केन्द्रीभूत है, इसे बदल नहीं सकते, न इसे विनष्ट ही कर सकते हैं।" भारत में हजारों वर्षों से धर्म की धारा प्रवाहित होती रही है। भारत का वायुमण्डल धार्मिक आदर्शों से बीसियों सदियों तक पूर्ण रहकर जगमगाता रहा है। इसी धार्मिक आदर्श में पैदा हुए और पले–बढ़े हैं। स्वामी जी कहते हैं। कि हमें धर्म का आधार नहीं छोड़ना चाहिए।। याद रखो यदि तुम पाश्चात्य भौतिकवादी सभ्यता के चक्कर में पड़कर आध्यात्मिकता का आधार त्याग दोगो तो उसका परिणाम होगा कि तीन पीढ़ियों में तुम्हारा जातीय अस्तित्व मिट जायेगा क्योंकि राष्ट्र का मेरुदण्ड टूट जायेगा, राष्ट्रीय भवन की नींव ही खिसक जायेगी। इन सबका परिणाम होगा सर्वतोन्मुखी सत्यानाश। अतः देशवासियों को नैतिक और धार्मिक शिक्षा देना अनिवार्य है।

3. **स्त्री शिक्षा**–विस्तार ही जीवन है तथा संकीर्णता ही मृत्यु, प्रेम ही जीवन है और घृणा ही मृत्यु। अतः प्रत्येक भारतीय को जीवित रहने के लिए आवश्यक है कि वह अपने ज्ञान का असीमित लोगों में प्रचार करे। स्वामी विवेकानन्द नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। उनका विश्वास था कि सबसे पहले नारी जाति का उत्थान होना चाहिए, उसके पश्चात् ही भारत का वास्तविक कल्याण हो सकता है। स्त्री शिक्षा पर बल देते हुए उन्होंने कहा था–"पहले अपनी नारियों को शिक्षित करो फिर वो आपको बतायेंगी कि उनके लिए किन सुधारों की आवश्यकता है।" उन्होंने आगे कहा–"उस परिवार या देश के उत्थान की कोई आशा नहीं, जहाँ नारियों का सत्कार नहीं होता, जहाँ वे दुःखी रहती हैं। इसी कारण उनका उत्थान सबसे पहले होना चाहिए।" उन्होंने सुझाव दिया कि लड़कियों का पालन–पोषण और उनकी शिक्षा लड़कों के समान होनी चाहिए।

 ISBN : 978-93-80216-12-6

उन्होंने नारियों की पवित्रता पर भी बल दिया है। उन्होंने कहा वर्तमान कन्याएँ ही भविष्य की माताएँ एवं जननी होंगी। वह भक्ति की सजीव प्रतिमा है। मनु ने भी कहा है–"जहाँ स्त्रियों का आदर होता है वहाँ देवता भी प्रसन्न रहते हैं और जहाँ उनकी आदर नहीं होता है वहाँ सारे कार्य और प्रयत्न निष्फल हो जाते हैं।"

4. **मानव**–निर्माण की शिक्षा–स्वामी विवेकानन्द शिक्षा द्वारा मानव का निर्माण चाहते थे उन्होंने Complete Works, Vol. II में लिखा है "ज्ञान और प्रेम के बिना अस्तित्व नहीं हो सकता। प्रेम के बिना ज्ञान और ज्ञान के बिना प्रेम नहीं हो सकता। हम असीम अस्तित्व, असीम ज्ञान और असमी आनन्द का समन्वय चाहते हैं। यही अमारा लक्ष्य है। हम संतुलित समन्वय चाहते हैं, एकांगी विकास नहीं और यह भांकर की प्रतिभा तथा बुद्ध के हृदय को समन्वित करने से ही सम्भव हो सकता है। मुझे आशा है कि सब इस प्रकार के आनन्दपूर्ण समन्वय की प्राप्ति के लिए प्रयास करेंगे।" इस प्रकार विवेकानन्द ने मानव के सम्मुख उच्च आदर्श रखे। वह कहते हैं 'यदि आप मनुष्य की पूजा नहीं कर सकते जो ईश्वर का रूप है तो आप उस ईश्वर की पूजा कैसे कर सकते हैं जो अरूप है। यदि आप मनुष्य के चेहरे में भगवान का रूप नहीं देख सकते हैं। यदि आप नर–नारियों में ईश्वर को देखना आरम्भ कर लें तो मैं आज से ही आपको धार्मिक समझने लगूँगा।' स्वामी जी एक ऐसी शिक्षा–प्रणाली के पक्षधर थे जो जीवन–निर्माण (Life-Building) मानव–निर्माण (Man-making) और चरित्र–निर्माण (Character-makin) कर सके। उनके विचारानुसार जीवन की मान्यता और सुन्दरता चरित्र–निर्माण और आध्यात्मिकता में ही निहित है।

1. **शिक्षा के लक्ष्य (Aims of Education)**–"शिक्षा मनुष्य में अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है। यह पूर्णता मनुष्य में स्वत: विद्यमान

 ISBN : 978-93-80216-12-6

रहती है और शिक्षा द्वारा इसका अनावरण मात्र किया जाता है। अपूर्ण को किसी बाह्य प्रयत्न द्वारा पूर्ण नहीं किया जा सकता।"

1) **शारीरिक पूर्णता**–स्वामी जी के अनुसार शरीरिक दुर्बलता हमारी पूर्णता में सबसे बड़ी बाधा है। वे लिखते हैं–"सबसे पहले हमारे युवकों को सबल बनना चाहिए। धर्म तो बाद की चीज है, तुम गीता पढ़ने के बजाय फुटबाल खेलकर स्वर्ग के अधिक निकट पहुँच सकते हो। यदि तुम्हारा शरीर स्वस्थ है, अपने पैरों पर दृढ़ता पूर्वक खड़ा हो सकता हो, यदि तुम अपने भीतर मानव–शक्ति का अनुभव कर सकते हो, तो तुम आत्मा और उपनिशदों की महत्ता को अधिक अच्छी प्रकार समझ सकते हो।"

2) **जीवन संघर्ष के लिए तैयारी**–स्वामी जी मानते हैं कि जो कोई प्रकृति के विरुद्ध लड़ता है उसमें ही चैतन्य का विकास होता है, जहाँ पुरुषार्थ है वहीं जीवन के चिह्न हैं, वहीं प्रकाश है। वे लिखते हैं–"आजकल संसार भर में तुम्हीं जड़ के समान पड़े हो। तुमको बिल्कुल मन्त्र–मुग्ध कर दिया गया है। बहुत प्राचीन समय से औरों ने तुमको बतलाया कि तुम हीन हो, तुममें कोई भक्ति नहीं है और तुम भी यह सुनकर सहस्रों वर्षों से अपने को समझने में लगे हो कि तुम हीन हो, निकम्मे हो। वैसा सोचते–सोचते वैसा ही बन गये हो।" स्वामी जी के अनुसार जीवन–संघर्ष की तैयारी का प्रतिफल "उत्पादन के रूप में प्रस्फुटित होना चाहिए।"

3) **राष्ट्रीयता एवं अन्तर्राष्ट्रीयता का विकास**–नव्य वेदान्त के अनुसार सम्पूर्ण मानवता में एक तत्व विद्यमान है, परन्तु उसका विकास क्रमशः होता है। अतः स्वामी जी राष्ट्रीयता एवं अन्तर्राष्ट्रीयता में विरोधाभास नहीं देखते थे। राष्ट्रीय भावना और राष्ट्रीय गौरव का विकास शिक्षा का लक्ष्य है। वे कहते हैं, हे वीर! साहस का अवलम्बन करो। गर्व से कहो, मैं भारतवासी हूँ और प्रत्येक भारतवासी मेरा भाई है। भारतवासी मेरे प्राण हैं, भारत की मिट्टी मेरा स्वर्ग है।

ISBN : 978-93-80216-12-6

भारत के कल्याण में मेरा कल्याण है।

4) **चरित्र–विकास–स्वामी जी ने कहा था**–"आज हमें जिसकी वास्तविक आवश्यकता है वह है चरित्रवान स्त्री–पुरुष। किसी भी राष्ट्र का विकास और उसकी सुरक्षा उसके चरित्रवान नागरिकों पर निर्भर है। शिक्षा का लक्ष्य चरित्र–निर्माण होना चाहिए।"

5) **विविधता में एकता की खोज**–स्वामी जी के अनुसार भौतिक एवं आध्यात्मिक विश्व में एकता है। तथा ब्रह्म भी एक है। उन्होंने भौतिक और आध्यात्मिक आदर्शों में समन्वय स्थापित किया है। शिक्षा द्वारा विविधता में एकता ढूंढ़ने की योग्यता का विकास होना चाहिए।

2. **पाठ्यक्रम**–'अध्यात्म' भारत की संस्कृति का आधार है। तथा धर्म शिक्षा का आत्मा है। अतः जीवन को परिपूर्ण बनाने के लिए शिक्षा का आधार आध्यात्मिक होना चाहिए और हृदय की शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम में धर्म को उचित स्थान प्रदान करना आवश्यक है। धर्म की शिक्षा अन्य विषयों के रूप में नहीं हो सकती स्वामी जी भारतीय वेदान्त और पाश्चात्य विज्ञान का समन्वय चाहते थे। वे मानते थे कि वेदान्त और विज्ञान के समन्वय से मनुष्य का चिन्तन विवेक युक्त होगा और मानवता अधिक सुखी होगी। पाठ्यक्रम में विज्ञान और तकनीकी के साथ–साथ कला, सामाजिक विज्ञान के विषय, संस्कृत, प्रादेगिक भाषा तथा दर्शन को स्थान देने की बात कही साथ ही शरीरिक शिक्षा का प्रबल समर्थन किया।

3. **शिक्षण–विधि**–स्वामी जी एकाग्रता को सबसे अच्छी विधि मानते थे। वे मन की एकाग्रता को शिक्षा का सार मानते थे। वे लिखते हैं–"जितनी अधिक एकाग्रता होगी, उतना ही अधिक ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।" "मैं शिक्षा का मूल तथ्यों के संग्रह को नहीं, अपितु एकाग्रता को मानता हूँ। यदि मुझे पुनः शिक्षा प्राप्त करनी होती तो मैं एकाग्रता और अनाशक्ति दोनों ही शक्तियों को विकसित

 ISBN : 978-93-80216-12-6

करता है। और तब उस मन रूपी निर्दोश यन्त्र की सहायता से इच्छा मात्र से ही तथ्यों का संकलन कर लेता।" खेल–कूद और वैयक्तिक निर्देशन एवं परामर्शन विधि का प्रयोग किया जाता सकता है।

4. **अनुशासन**–स्वामी विवेकानन्द गुरु और शिष्य के लिए आत्मानुशासन को आवश्यक मानते हैं। उनका विचार है कि गुरु स्वयं अनुशासित रहे तभी उसके व्यवहार और आचरण से प्रभावित होकर छात्र भी अनुशासित रहेंगे। स्वामी जी दण्ड के प्रबल विरोधी थे। वे बालकों को उनकी प्रकृति के अनुरूप शिक्षा देने की बात कहते हैं। वे यहाँ मुक्त्यात्मक अनुशासन के समर्थक मालूम पड़ते हैं।

5. **शिक्षक**–स्वामी जी लिखते हैं कि–शिक्षक के व्यक्तित्व के बिना कोई शिक्षा हो ही नहीं सकती। जिनका चरित्र प्रज्ज्वलित अग्नि के समान हो, ऐसे व्यक्ति के निकट शिष्य को बाल्यावस्था से ही रहना चाहिए। अध्यापक एक दार्शनिक, मित्र एवं निर्देशक है जो विद्यार्थी को अपने मार्ग पर बढ़ने में सहायता करता है। स्वामी जी अध्यापक के तीन गुण बताते हैं–प्रथम शिक्षक को शास्त्र का ज्ञाता होना चाहिए। द्वितीय उसे मन और हृदय से पवित्र होना चाहिए और तृतीय उसमें त्याग की भावना होनी चाहिए। स्वामी जी कहते हैं कि "सच्चा अध्यापक वह है जो विद्यार्थी के स्तर तक तत्काल पहुँच सकता है, अपनी आत्मा को उसकी आत्मा में प्रवेश कर सकता है, उसकी आँखों से देख सकता है, उसके कानों से सुन सकता है और उसकी बुद्धि से समझ सकता है।"

6. **विद्यार्थी**–स्वामी विवेकानन्द बच्चे को शिक्षा का केन्द्र मानते हैं। वह ज्ञान का खजाना है। ज्ञान उसके भीतर होता है। वे आन्तरिक ज्ञान पर बल देते हैं। वे कहते हैं–"अपने भीतर खोजो तुम्हें अपने भीतर ही उपनिशद् मिलेंगे। तुम स्वयं ही संसार की सबसे बड़ी पुस्तक हो। जब तक भीतर का अध्यापक नहीं खुलता, बाहर का

 ISBN : 978-93-80216-12-6

समूचा अध्ययन व्यर्थ है।" स्वामी जी शिष्य में शुद्धता, विचार, वाणी और कर्म की पवित्रता पर बल देते हैं। उसमें ज्ञान की पिपासा भी होनी चाहिए। जिज्ञासु ही वास्तविक शिष्य है। उसे गुरु में अटूट विश्वास और श्रद्धा होनी चाहिए।

7. **विद्यालय**–स्वामी जी जब गुरुकुल–प्रथा और गुरुकुल–वास की संकल्पना व्यक्त करते हैं तो निश्चय ही वह गुरु गृह होगा, किन्तु इसकी केवल कल्पना की जा सकती है। जिसका आधार कवेल अध्यापक का गुण हो सकता है। वे वर्तमान परिस्थितियों में परिवर्तन करके गुरुकुल–वास की सलाह देते हैं।

निष्कर्ष–स्वामी विवेकानन्द आधुनिक भारत के समाज सुधारक, विश्व विचारक, माहन शिक्षा शास्त्री तथा व्यावहारिक सन्त थे जो प्राचीन ज्ञान को जागृत करना चाहते थे। उन्हें आधुनिक भारतीय परिस्थितियों का पूर्वाभास था और जो समन्वयकारी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया वह आज के सापेक्ष है। वेदान्त और विज्ञान के समन्वय की आवश्यकता इतनी कभी प्रबल नहीं हुई जितनी की आज। उन्होंने आत्म–ज्ञान, निर्भरता, साहस, एकाग्रता, ब्रह्मचर्य, नारी शिक्षा तथा जन–साधारण की शिक्षा का बल दिया है। उन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की भ्रातृत्व भावना, ईश्वर की अनुभूति, त्याग और सत्यता का पालन करने का प्रचार किया। उन्होंने आध्यात्मिकता एवं भौतिक आदर्शों का समन्वय किया तथा राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का समर्थन किया। उन्होंने कहा था–"हम मानव–निर्माण का धर्म चाहते हैं। हम मनुष्य का निर्माण करने वाले सिद्धान्त चाहते हैं और मानव के सर्वांगीण निर्माण की शिक्षा चाहते हैं।"

सन्दर्भ–

1. *पाण्डेय, रामशकल (2009), विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा–शास्त्री, आगरा–2 : अग्रवाल पब्लिकेशन।*
2. *वालिया, जे. एस. (2009), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, जालन्धर: अहम् पालपब्लिशर्ज।*

 ISBN : 978-93-80216-12-6

3. *ओड़, लक्ष्मीलाल के. (2005), शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, जयपुर: राजस्थान हिन्दी अकादमी।*
4. *वर्मा, वेदप्रकार (1994), नीति शास्त्र के मूल सिद्धान्त, नई दिल्ली: एलाइड पब्लिकर्स प्राइवेट लिमिटेड।*
5. *अल्तेकार, ए. एस. (1968), प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, वाराणसी: नन्दकि शोर एण्ड ब्रदर्स।*
6. *रस्क, आर. आर. (0000), शिक्षा के दार्शनिक आधार, जयपुर: राजस्थान हिन्दी अकादमी।*

 ISBN : 978-93-80216-12-6

वेदान्त का स्वरूप तथा स्वामी विवेकानन्द

डॉ. अरविन्द कुमार
असि. प्रो. बी. एड. संकाय
कु. मा. रा. म. स्ना. महा.
बादलपुर

मानव जीवन एक जटिल प्रक्रिया है। प्रारम्भ में उसकी एक ही समस्या थी कि जीवन की रक्षा की जाए। कालान्तर में मनुष्य जीवन जटिलतम होता गया और उसके सामने अनेक समस्यायें आने लगी। समय–समय पर इन समस्याओं में निहित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए दर्शन का सहारा लिया गया। दर्शन द्वारा निर्धारित उद्देश्यों एवं जीवन की समस्याओं के लिए सुझाये गये समाधानों को व्यावहारिक रूप से प्राप्त करने हेतु शिक्षा द्वारा प्रयत्न किया जाता है। शिक्षा एक मृत्यु पर्यन्त चलने वाली आध्यात्मिक प्रक्रिया भी है जिसमें मनुष्य को अपने यथार्थ का बोध होता है जवीन जगत के प्रति उसके व्यवहार तथा विचारों में निरन्तर परिवर्तन, परिमार्जन एवं संशोधन होता रहता है। अतः कहा जा सकता है जीवन ही शिक्षा है और शिक्षा ही जीवन है चूँकि शिक्षा एक बहुअर्थी शब्द है अतः इसे पूर्णता परिभाषित करना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। इस सांख्यकालीन विषय पर कुछ बोलने के पहले, जबकि मुझे यह अवसर मिला है, क्या तुम धन्यवाद के कुछ शब्द कहने की अनुमति प्रदान करोगे? मैं तीन वर्षों तक तुम लोगों के साथ रहा। मैं प्रायः पूरे अमेरिका का भ्रमण कर चुका हूँ और अब मैं अपने स्वदेश लौट रहा हूँ, यह ठीक होगा कि मैं अमेरिका के एक एथेन्स में, अपनी कृताता प्रकट करने के लिए इस अवसर का सदुपयोग करूँ। जब मैं प्रथम बार इस देश में आया, तो मैंने कुछ दिनों के बाद सोचा कि मैं इस राष्ट्र पर एक पुस्तक लिखूँगा। परन्तु तीन वर्षों के आवास के उपरान्त मैं यह पा रहा हूँ कि मैं। एक पृष्ठ भी नहीं लिख सकता। इसके विपरीत, बहुत से देशों के भ्रमण के

 ISBN : 978-93-80216-12-6

बाद मैं यह अनुभव करता हूँ कि वेश–भूशा, खान–पान तथा तौर–तरीकों की छोटी–मोटी सभी ब्राह्य विभिन्नताओं के नीचे मानव अखिल विश्व में मानव ही है, सर्वत्र वही अद्भुत मानव–प्रकृति विद्यमान है। फिर भी कुछ विशेषताएँ तो होती ही हैं, अतः मैं थोड़े से शब्दों में यहाँ के अनुभवों को संक्षेप में कहना चाहूँगा। अमेरिका की इस भूमि में मनुष्य की विशेषताओं के सम्बन्ध में कोई प्रश्न नहीं पूछा जाता। यदि मनुष्य है, तो इतना ही यथेष्ट हैं और वे (अमेरिकावासी) उसे अपने हृदय में स्थान दे देते हैं। यह एक ऐसा तथ्य है, जिसको मैंने विश्व के अन्य किसी देश में नहीं देखा।

मैं यहाँ एक भारतीय दर्शन का, जिसे वेदान्त कहते हैं, प्रतिनिधित्व करने आया था। यह दर्शन अत्यन्त प्राचीन है। यह दर्शन उस विशाल पुरातन आर्य साहित्य से उद्गत हुआ है, जिसे वेदों के नाम से पुकारते हैं। यह वेदान्त दर्शन मानो शताब्दियों तक संग्रहित और चयन किये गये उस विशाल साहित्य के अन्तर्गत सभी विचारधाराओं, अनुभवों तथा विवेचनों का सर्वोत्तम पुष्प है। इस वेदान्त दर्शन की कतिपय विशेषताएँ हैं। प्रथमतः यह पूर्णरूपेण अवैयक्तिक है। इसकी उत्पत्ति किसी व्यक्ति विशेष या धर्मगुरु से नहीं हुई। एक व्यक्ति विशेष को केन्द्र में रखकर वह अपनी प्रतिष्ठा नहीं करता। परन्तु जो दर्शन किसी व्यक्ति विशेष को केन्द्रित करके प्रतिपादित हुए है, उनके विरुद्ध भी इसको कुछ कहना नहीं। आगे चलकर भातर में कुछ व्यक्तियों को केन्द्र बनाकर बौद्ध धर्म तथा हमारे अन्य अर्वाचीन सम्प्रदायों का उदय हुआ। ये सब ईसाइयों और मुसलमानों की भांति किसी न किसी को धार्मिक नेता के रूप में मानते हैं और उसमें अपनी निष्ठा रखते हैं परन्तु वेदान्त दर्शन इन सभी विभिन्न सम्प्रदायों की पृष्ठभूमिमिवत् है और वेदान्त तथा विश्व के अन्य किसी भी मत के बीच कोई झगड़ा या विरोध नहीं है।

वेदान्त दर्शन एक सिद्धान्त–जो विश्व के सभी धर्मों में पाया जाता

 ISBN : 978-93-80216-12-6

है—प्रतिपादित करता है और यह दावा करता है कि मनुष्य (वस्तुतः) दिव्य है तथा जो कुछ भी हम लोग अपने चारों ओर देखते हैं, वह उसी दिव्यता के बोध से उद्भूत हुआ है। हर एक वस्तु जो सुन्दर, बलयुक्त तथा कल्याणकारी है और मानव—प्रकृति में जो कुछ भी शक्तिशाली है, वह सब उसी दिव्यता से अद्भूत हुआ। यह दिव्यता यद्यपि बहुतों में अव्यक्त रहती है, मूलतः मनुष्य में कोई भेद नहीं है? सभी समानरूपेण दिव्य है। यह ऐसा ही है, जैसे पीछे एक अनन्त समुद्र अव्यक्त रूप से, जन्मसिद्ध अधिकार रूप में तथा स्वरूपतः प्राप्त है। उस दिव्यता की अभिव्यक्ति की न्यूनाधिक शक्ति से ही हम लोगों में विभिन्नता उत्पन्न होती है। अतएव वेदान्त का कहना है कि उसके आधार पर उससे व्यवहार नहीं करना चाहिए, जिसे वह प्रकट करता है, बल्कि उसे अनुसार जिसका वह प्रतिनिधि है। चूँकि प्रत्येक मनुष्य दिव्यतत्व का प्रतिनिधि है और इसलिए हर एक धर्मशिक्षक को मनुष्य की भर्त्सना करके नहीं, बल्कि मनुष्य में अन्तर्निहित दिव्यता के जागरण के लिए सहायता करनी चाहिए।

वेदान्त यह भी बतलाता है कि समाज या कर्म के किसी क्षेत्र में शक्ति की जो विशाल राशि प्रदर्शित होती है, वह वस्तुतः भीतर से बाहर आती है, इसलिए जिसे अन्य सम्प्रदाय अन्तःस्फुरण कहते हैं, उसे वेदान्त मनुष्य का बहिःस्फरण कहने की स्वतंत्रता लेता है फिर भी वह किसी सम्प्रदाय से झगड़ता नहीं। वेदान्त का उन लोगों से भी झगड़ा नहीं है, जो मनुष्य की इस दिव्यता को नहीं समझते है। ज्ञात या अज्ञात रूप से हर मनुष्य इस दिव्यता को व्यक्त करने का प्रयत्न कर रहा है।

मनुष्य एक छोटे बक्से में कुण्डलित अनन्त स्प्रिंग जैसा है, जो कि अपने को खोलने का प्रयत्न कर रहा है। हम लोग जो भी सामाजिक व्यवस्था देखते हैं, वह इस अभिव्यक्ति का प्रयत्नमशास्त्र है। जितने भी संघर्ष, बुराईयाँ या प्रतिद्विन्द्विताएँ, जिन्हें हम लोग अपने चारों तरफ

 ISBN : 978-93-80216-12-6

तत्ववेत्ता ने कहा है, मान लो कि खेत की सिंचाई के लिए जलाशय कहीं ऊपर ऊँची सतह पर है और उसका जल उस खेत में तेजी से प्रवेश करने का प्रयत्न करता है, परन्तु फाटक लगाकर उसकी गति अवरुद्ध कर दी गयी है। परन्तु जैसे ही फाटक खोल दिया जाता है, वह जल अपनी प्रकृति के अनुसार वेग से, रास्ते में धूल या गन्दगी जो भी हो, उस पर प्रवाहित होने लगता है। परन्तु यह धूल या गन्दगी मनुष्य के दिव्य स्वरूप की अभिव्यक्ति के न तो कार्य है और न कारण। वे सहअस्तित्वमान दशाएँ हैं, अतः उनका प्रतिकार किया जा सकता है।

वेदान्त का यह दावा है कि यह विचार भारत के अन्दर या बाहर सभी धर्मों में पाया जाता है, केवल कतिपय धर्मों में यह विचार पुराणों में तथा अन्य में प्रतीकवाद के रूप में प्रकट किया गया है। वेदान्त का दावा है कि धार्मिक अन्तस्फुरण केवल एक ही नहीं हुआ है, और न केवल दिव्य मानव की एक अभिव्यक्ति मात्र है। ऐसा क्षण भी आता है, जब हर मनुष्य यह अनुभव करता है कि वह विश्व के साथ एक है और इसको वह समझे या न समझे, उसको प्रकट करने के लिए विकल हो जाता है। जिसे हम प्रेम तथा सहानुभूमि कहते हैं, वह एकत्व की अभिव्यक्ति ही है और यही हमारी नैतिकता और सदाचार का आधार हैं। यही वेदान्त के विख्यात सूत्र तत्वमसि–'तू वही है–में संक्षेप में कहा गया है।

इस विचार की अभिव्यक्ति के रूप में हम देखते हैं कि इस प्राचीनतम दर्शन ने अपने प्रभाव के द्वारा बौद्ध तम को, जो विश्व की प्रथम प्रचारक धर्म है, प्रत्यक्षतः प्रेरित किया है। अप्रत्यक्ष रूप से इसने अलेक्जेन्ड्रियनों, नास्टिकों तथा मध्ययुगीन यूरोपीय विचारकों द्वारा, ईसाई धर्म को भी प्रभावित किया है। बाद में जर्मन विचारधारा को प्रभावित करते हुए, इसने दर्शन तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रायः क्रान्ति उत्पन्न कर दी। उस पर भी यह विशाल प्रभाव जो संसार पर पड़ा, वह अलक्ष्य ही

 ISBN : 978-93-80216-12-6

रहा। जिस प्रकार रात्रि में ओस हल्के से गिरकर वनस्पतियों के जीवन का पोशण करती है, उसी प्रकार धीरे–धीरे तथा इलक्ष्य रूप से यह दिव्य वेदान्त दर्शन समूचे विश्व में मानवकल्याणार्थ फैल गया है। इस धर्म के प्रचार के लिए सेनाओं के अभियान का उपयोग नहीं हुआ। बौद्ध मत में, जो विश्व का एक बहुत बड़ा प्रचारक धर्म है, सम्राट अशोक के अवशेष शिलालेख हमें प्राप्त हैं, जिनसे यह पता चलता है कि किस तरह धर्मप्रचारक अलेक्जोन्ड्रिया, एन्टिओक, ईरान, चीन तथा तत्कालीन सभ्य जगत् के अन्य बहुत से देशों में भेजे गये थे। ईसा के तीन सौ वर्ष पहले ही उन लोगों को यह शिक्षा दी गयी थी कि किसी धर्म की निन्दा नहीं करे–'सभी धर्मों का आधार एक है, जहाँ कहीं भी वे हो, जितना तुमसे हो सके, उतना उनकी सहायता करो तथा उन सबको शिक्षा दो, परन्तु उनको हानि नहीं पहुँचाओ।'

अतएव भारत में हिन्दुओं द्वारा कभी धार्मिक उत्पीड़न नहीं हुआ, बल्कि उन्होंने विश्व के सभी धर्मों के प्रति अद्भुत आदर का भाव ही रखा। हिब्रू जाति के कुछ लोग जब स्वदेश से भगाये गये थे, तब हिन्दुओं ने उनको भारण दी, जिसके फलस्वरूप मलाबार के यहूदी अभी तक है। एक अन्य समय में उन्होंने नष्टप्राय ईरानियों के अवशिष्ट अंश का स्वागत अपने देश में किया, और वे लोग आज भी हमारे मध्य हमारे एक अंग और प्रीति–भोजन, बम्बई के आधुनिक पारसियों के रूप में विद्वमान है। ईसा मसीह के शिष्य सेन्ट थामस के साथ आने का दावा करने वाले ईसाई लोगों को भी भारत में रहने तथा अपनी विचारधारा सुरक्षित रखने की अनुमति दी गई। उन लोगों की एक बस्ती अब तक भारत में है। यह सहिष्णुता का भाव वहाँ न मरा है, न मरेगा, न मर सकता है।

यह वेदान्त की महती शिक्षाओं में से एक है। यह जानकर कि ज्ञात या अज्ञात रूप से हम सब उसी ध्येय को पहुँचने के लिए संघर्ष शील है, हम अधैर्यवान क्यों हो? यदि एक मनुष्य दूसरे से मन्द है,

 ISBN : 978-93-80216-12-6

तो हमें अधीर नहीं होना चाहिए, न उसे अपशब्द कहना चाहिए और न उसकी भर्त्सना करनी चाहिए। जब हमारे चक्षु उन्मीलित हो जाते हैं और हृदय पवित्र हो जाता है, तब उस दिव्य प्रभाव का कार्य, हर मानव हृदय में प्रस्फुटित होता हुआ वह वह ईश्वरीय उद्बोधन, अभिव्यक्त हो जायेगा और तभी हम लोग मनुष्य मात्र के भ्रातृत्व का दावा करने में समर्थ होंगे।

जब मनुष्य उच्चतम को प्राप्त कर लेता है और वह न पुरुष देखता है, न स्त्री, न लिंग, न धर्म, न वर्ण, न जन्म, न ऐसे अन्य प्रकार के विभेदों को देखता है, वरन् वह आगे बढ़ता जाता है और उस दिव्यता का अनुभव करता है, जो मानव का सत्य है, वह मनुष्यों में जाता है और उस दिव्यता का अनुभव करता है, जो मानव का सत्य स्वरूप है, वह मनुष्यों में अन्तर्हित है– केवल तभी वह विश्वबन्धुत्व को प्राप्त कर लेता है और केवल ऐसा ही व्यक्ति वेदान्ती है। यह वेदान्त के कतिपय व्यवहारिक और ऐतिहासिक परिणाम है।

संदर्भ–

1. *Swami Vivekananda, My Idea of EDUCATION, Advaita Ashrama, Kolkata, 2015*
2. *सार्वलौकिक नीति तथा सदाचार, स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण मठ, नागपुर, 2012*
3. *वेदान्त, स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण मठ, नागपुर 2007*

स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन

डॉ. स्नेहलता शिवहरे
असि. प्रो. शिक्षा संकाय
महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, हरदोई,

सुधीर कुमार
पी–एच.डी. समाजशास्त्र
सी.एस.जे.एम.यू.
कानपुर,

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 1863 ई. में एक बंगाली परिवार में कलकत्ता में हुआ था। उनका बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। इनके पिता जी विश्वनाथ दत्त हाईकोर्ट के वकील थे। इनका पारिवारिक वातावरण धार्मिक था। इसीलिए इन पर इनके परिवार का गहरा प्रभाव पड़ा। वे बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। उनके सम्बन्ध में उनके प्रधानाचार्य मिस्टर हेस्टी ने एक बार कहा था, "नरेन्द्र दत्त वस्तुतः प्रतिभाशाली हैं, मैंने विश्व के विभिन्न देशों की यात्राएँ की हैं किन्तु किशोरावस्था में ही इसके समान योग्य एवं महान् क्षमताओं वाला युवक मुझे जर्मन विश्वविद्यालय में भी नहीं मिला।" अपने प्रधानाचार्य से प्रेरणा पाकर नरेन्द्र दत्त ने दक्षिणे वर की यात्रा की। यहाँ उनकी भेंट रामकृष्ण वेदान्त की परम्परा को मानने वाले सन्त थे। वेदान्त का मूल सिद्धान्त है कि एक ही बाह्य सब जगह भिन्न–भिन्न रूपों में दिखाई पड़ता हैं। अस्तु उन्होंने अपने उद्देश्यों में सभी धर्मों की एकता जोर दिया। अपने गुरु की मृत्यु के पश्चात् स्वामीजी ने उनकी शिक्षाओं का प्रसार देश–विदेश में किया। 31 मई, 1893 ई. को स्वामी जी ने अमेरिका जाने पूर्व अपना नाम विवेकानन्द रख लिया। विवेकानन्द ने अपने उद्देश्यों के साथ यह भी व्यवहारिक रूप में प्रमाणित कर दिया कि यदि उनके परम गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस के अनुभवों के अनुसार प्राचीन वेदान्त की व्यवस्था करके उसे वर्तमान जीवन से सम्बन्धित कर दिया जाये तो इस राष्ट्र, इस जननी जन्मभूमि की प्रत्येक समस्याओं का निराकरण आसानी से किया जा सकता है। उन्होंने पाश्चात्य देशों में भावात्मक और स्वदेश में क्रियात्मक वेदान्त का प्रचार करके हिन्दू धर्म की महानता

 ISBN : 978-93-80216-12-6

को फैलाया। 1900 ई. में स्वामी जी अमेरिका से स्वदेश लौट आये। यद्यपि उनका स्वस्थ्य ठीक नहीं था तद्यपि वह भाषण देते रहे। मठ के कार्यों का संचालन और ब्रह्मचारियों की कक्षाएँ लेते रहे। 1902 ई. में 4 जुलाई की उन्होंने देह त्याग दिया। संध्या की बेला में मठ में स्थित अपने कक्ष में वह ध्यानरत थे। रात्रि 9 बजकर 10 मिनट पर वह ध्यान महासमाधि में परिवर्तित हो गये। उस समय उनकी आयु 39 वर्ष 5 माह तथा 24 दिन थी परन्तु स्थूल शरीर का नाश होने पर भी जिस शक्ति के रूप में वह उभरे वह आज भी क्रियाशील हैं। स्वामी जी ने स्वयं एक स्थान पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति इस प्रकार की हैं, "शरीर को पुराने वस्त्र की भाँति त्यागकर इसके बाहर चला जाता हो मैं श्रेष्ठ मानता हूँ परन्तु मैं काम से कभी भी विरत नहीं होऊँगा। मैं तब तक मानव को अनुप्रेरित करता रहूँगा जब तक प्रत्येक मनुष्य यह नहीं समझता कि वह भगवान् है।"

स्वामी विवेकानन्द जी का जीवन दर्शन—स्वामी जी का जीवन दर्शन गुरु परमहंस के विचारों के अनुरुप था। वह हमारे संतो और दार्शनिकों के मध्य एक अनुपम स्थान पर अधिष्ठित हैं। उनके कारण ही वेदान्त दर्शन के सार्वभौमिक सत्य मनुष्य के जीवन में व्यवहार रूप में प्रयुक्त हो सके। स्वामी विवेकानन्द मानव जाति के लिए प्रेरणादायक और गौरवपूर्ण स्त्रोत के रूप में माने जाते हैं। वे जीवन को एक संघर्ष के रूप में स्वीकार करते हैं। उनका विश्वास है कि इस संघर्ष में केवल समर्थ की जीत होती है, असमर्थ का नाश होता है। वे संघर्षो का डटकर मुकाबला करने पर बल देते हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि "वीर बनो, हमेशा कहो, मैं निर्भय हूँ, सबसे कहो, डरो मत, भय मृत्यु हैं, भय पाप हैं, भय नर्क हैं, भय, अधार्मिकता तथा भ्रम का जीवन में कोई स्थान नहीं है।" इस कथन से स्पष्ट होता है कि स्वामी विवेकानन्द के जीवन दर्शन का सार अभय होकर संघर्ष के द्वारा मानवता की सेवा करना है। स्वामी जी ने पहले वेदों, उपनिशदों

और अपने गुरु परमहंस जी के उपदेशों एवं उद्देश्यों को स्वयं में समाहित करके उन्हें जन–सामान्य के लिए पुनः प्रस्तुत किया ताकि व्यक्ति उन्हें अपने जीवन में स्थान दे सकें और इससे अपने राष्ट्र की संरचना और संस्कृति के सत्य, सौन्दर्य और संजीवन को पुनः प्राप्त कर लें। स्वामी जी ने अपने महान् गुरु की महान् वैधता और सच्ची सार्वभौम भावना को आत्मसात कर मानवता के परस्पर संघर्षरत वर्गों के मध्य सांमजस्य स्थापित किया। स्वामी जी के जीवन दर्शन को निम्न बिन्दुओं द्वारा जाना जा सकता है–

आत्मा मानव शरीर में सर्वश्रेष्ठ हैं– मनुष्य के तीन अंगों में आपने आत्मा को सर्वश्रेष्ठ माना। आपका विचार था कि शरीर आत्मा का बाहरी रूप होता है तथा मन आन्तरिक आवरण, अतः आत्मा ही वास्तविकता ज्ञाता हैं। यही आत्मा, मन के द्वारा शरीर के कार्य करती हैं अर्थात् आप अद्वैत वेदान्त एवं समन्वयवादी दृष्टिकोण के समर्थक थे और अद्वैत वेदान्त की व्यवहारिक रूप में ढालने की चेष्टा की।

वेदान्त दर्शन का व्यवहारिक रूप– आपने वेदान्त दर्शन को व्यवहारिक रूप दिया तथा आप एक में अनेक के समर्थक थे। आपका विचार था कि विभिन्न प्रकार की पूजा विधि तथा अन्य समस्त आध्यात्मिक कार्य संघर्ष आदि ईश्वर के साक्षात्कार के साधन हैं तथा श्रम करना ही ईश्वर की प्रार्थना है तथा विजय प्राप्त करना ही त्याग का प्रतीक है अर्थात् जीवन स्वयं धर्म है एवं मानव सेवा और ईश्वर सेवा (पूजा) मनुष्यत्व और धर्म सत्य निष्ठा और आध्यात्मिकता में कोई भेद नहीं है।

अनेकता में एकता– स्वामी जी का विचार था कि संसार आशावादी और निराशावादी दोनों का मिश्रण होता है और वेदान्त इन दोनों में समावेश का रास्ता है। आपके अनुसार बुरे व अच्छे दोनों को त्याग दो परन्तु तब शेष क्या रहता है। इन दोनों स्वरूपों के पीछे मनुष्य का यथार्थ रूप है जो अपने को दोनों स्वरूपों में प्रदर्शित करता है।

 ISBN : 978-93-80216-12-6

अत: अपने अभिव्यक्त स्वरूपों पर मानव को नियंत्रण रखना चाहिए तभी वह अपने वास्तविक स्वरूप को अभिव्यक्त करने में स्वतन्त्र करने में सक्षम होगा क्योंकि ईश्वर के रूप में एक ही सत्ता का समस्त प्राणियों में समावेश है अत: वह मानव रूपी प्राणी के दु:ख से दु:खी नहीं होगी।

मनुष्य का वास्तविक स्वभाव– अद्वैत दर्शन में ब्रह्मरूपी शक्ति को समस्त विश्व में सत्य माना गया है और अन्य वस्तुओं को माया की शक्ति द्वारा ब्रह्म से उत्पन्न माना गया हैं। प्रत्येक आत्मा असीम (अमर) है अत: वह जन्म– मरण से परे है। हमें सारे विश्व को एक समझना चाहिए क्योंकि हमारी वास्तविकता विश्व व्यापकता में है, सीमाबद्धता में नहीं। आपका विचार था कि व्यक्तित्व के सम्बन्ध में जनसाधारण की धारणा भ्रमित है। ये लोग व्यक्तित्व को शरीर, मन, स्मृति मानते है जबकि वास्तविकता यह है कि हम अभी तक व्यक्ति नहीं है। हम केवल व्यक्तित्व की प्राप्ति के लिए संघर्षरत हैं तथा हम असीम व्यक्तित्व की प्राप्ति की ओर बढ़ रहे हैं और यही मनुष्य का वास्तविक स्वभाव है।

सार्वभौमिक विज्ञान एवं धर्म के समर्थक– स्वामी जी का विचार था कि वेदान्त और विज्ञान दोनों के सिद्धान्तों में घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। तर्क (विज्ञान) के सिद्धान्त के अनुसार वस्तु की व्याख्या उसके भीतर से होनी चाहिए बाहर से नहीं तथा शिष्ट (वस्तु) की व्याख्या सामान्य (वस्तु) द्वारा होनी चाहिए। विज्ञान के इन दोनों सिद्धान्तों को अद्वैत दर्शन स्वीकार करता है अत: विवेकानन्द अद्वैत धर्म को सार्वभौम विज्ञान धर्म के रूप में स्वीकार करते थे तथा समस्त धर्मों में सहयात्री की भावना का विकास चाहते थे। आपके अनुसार मनुष्य कभी भी मिथ्या से सत्य की ओर अग्रसर नहीं होता वरन् सत्य से सत्य की ओर अग्रसर होता है अत: हमें समस्त धर्मों को स्वीकार करना चाहिए अर्थात् विश्व बंधुत्व की भाँति विश्व धर्म को मान्यता देते थे। महान् भारतीय संत

एवं चिन्तक स्वामी विवेकानन्द जी का जीवन दर्शन अत्यन्त गौरवपूर्ण एवं प्रेरणादायक था। आपने प्रत्येक नर–नारी के लिए सन्देश दिया था। जीवन संग्राम में वीर बनो। कहो, सबसे कहो, कि तुम निर्भय हो, भय का त्याग करो, क्योंकि भय पाप हैं, भय अधोलोक है, भय अधार्मिकता है, अतः भय का जीवन में कोई स्थान नहीं है।

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन– स्वामी जी का शिक्षा दर्शन पूर्णरूपेण भारतीय वेदान्त और उपनिशद् पर आधारित है। उनका मानना है कि जिस प्रकार सामान्य और आध्यात्मिक ज्ञान मानव के मन में है पर इसकी खोज नहीं हो पाती है छिपा ही रह जाता है और जब इससे आवरण हटाया जाता है तो ऐसा प्रतीत होता है कि हम सीख रहे हैं। वे कहते है कि कोई भी मनुष्य किसी दूसरे को नहीं सिखाता वरन् वह स्वयं ही सीखता है। बाहरी शिक्षक तो केवल सुझाव ही प्रस्तुत करता है जिससे भीतरी शिक्षक को समझने तथा सीखने के लिए प्रेरणा मिल जाती है। इसी दृष्टि से स्वामी जी ने अपने समय की शिक्षा को निषेधात्मक बताया। स्वामी जी ने शिक्षा के व्यवहारिक पक्ष पर बल दिया। राष्ट्र के लोगों को जागरूक करते हुये कहा–कि "तुमको कार्य के प्रत्येक क्षेत्र को व्यवहारिक बनाना पड़ेगा। सम्पूर्ण देश का सिद्धान्तों के ढेरों ने विनाश कर दिया है"। समन्वयवादी दृष्टिकोण के समर्थक स्वामी विवेकानन्द के जीवन दर्शन में ही उनके शैक्षिक गुण की झलक समाहित है। आपने वैसे शिक्षा पर कोई विशेष ग्रन्थ नहीं लिखा परन्तु मनुष्य में परम् सत्ता के गुणों की खोज करते हुये आपने शिक्षा को अन्तर्निहित ज्ञान की पूर्णता की अभिव्यक्ति बताया। भारत के लिए किस प्रकार की शिक्षा हो इस सम्बन्ध में आपका विचार था कि हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शान्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है जिससे मनुष्य अपने स्वयं के पैरों पर खड़ा हो सके अर्थात् विवेकानन्द सैद्धान्तिक शिक्षा की अपेक्षा व्यवहारिक शिक्षा पर अधिक बल देते हैं।

 ISBN : 978-93-80216-12-6

शिक्षा का अर्थ– शिक्षा को स्पष्ट करते हुये स्वामी जी ने कहा कि सच्ची शिक्षा वह है जो मनुष्य को जीवन–संघर्ष के लिए तैयार करे, उसका चरित्र–निर्माण कर उसमें समाज सेवा की भावना को विकसित करे। उनमें शेरों का साहस उत्पन्न करे, उसे वीर–साहसी बनाये। वह शिक्षा को ज्ञान का संग्रह नहीं मानते। एक स्थान पर उन्होंने लिखा है, "यदि शिक्षा का अर्थ सूचनाओं से होता, तो पुस्तकालय संसार के सर्वश्रेष्ठ संत होते तथा विश्वकोष ऋषि बन जाते।" शिक्षा के द्वारा अपनी आत्मा में विश्वास होता है और आत्मा के विश्वास में छिपे हुए ब्रह्मा की जागृति होती है। शिक्षा का तात्पर्य उस ज्ञानार्जन से है जो मानव में सर्वांगीण विकास में सहायक हो। "शिक्षा उस सन्निहित पूर्णता का प्रकाश है जो मनुष्य में पहले से ही विद्यामान है।" स्वामी जी के अनुसार शिक्षा वह स्त्रोत है जिसके द्वारा मनुश्य की शक्तियों की वृद्धि होकर बौद्धिक विकास होता है। आज के इस संक्रमण काल में ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिससे विश्व के रहस्यपूर्ण तथ्यों को समझा जा सके। शिक्षा ही व्यक्ति में आत्म–विश्वास, व्यक्तिगत विचारों को मौलिकता की प्रेरणा और भावनात्मक जागृति प्रदान करती है।

स्वामी जी ने शिक्षा को विकास का प्रमुख साधन माना तथा शिक्षा को मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार किया। आपने अपने समय की शिक्षा प्रणाली की कटु आलोचना करते हुये शिक्षा के व्यवहारिक पक्ष को स्वीकार किया तथा शिक्षा का कार्य सूचना देना नहीं वरन् बालक का मनुष्य के रूप में निर्माण करना माना। आपने इसका उदाहरण देते हुये कहा कि यदि सूचना प्राप्त करना ही शिक्षा का अर्थ होता तो पुस्तकालय विश्व के महान् संत एंव विश्वकोष विश्व के महान् ऋषि के रूप में माने जाते क्योंकि इनमें सूचना से सम्बन्धित समस्त तत्व विद्यमान हैं। अतः जो मनुष्य पाँच सद्विचारों को अपने जीवन में उतारते हुये व्यक्तित्व का निर्माण करता है वह

 ISBN : 978-93-80216-12-6

उन व्यक्तियों से अधिक शिक्षित है जिन्हें पूरा पुस्तकालय का ज्ञान है और यह ज्ञान व्यक्ति के अंदर छिपा होता है अर्थात् आप वेदान्त के आत्म सम्बन्धी सिद्धान्त में विश्वास करते थे। स्वामी विवेकानन्द ने अपने समय की शैक्षिक प्रक्रिया की आलोचना करते हुये कहा, "वह बाबुओं का उत्पादन करने में सक्षम एक कुशल यंत्र के अतिरिक्त और क्या है?" यदि इतना ही होता तो भी मैं प्रभु को धन्यवाद देता पर कहाँ देखो न, लोग किस प्रकार श्रद्धा व विश्वास से हीन होते जा रहे हैं। वे घोषणा करते हैं कि गीता भ्रमात्मक है स्वामी जी भारत जैसे देश के लिए कैसी शिक्षा चाहते हैं इस सम्बन्ध में आपने कहा कि "हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिससे मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता हो।" अर्थात् आप शिक्षा को सीखने की प्रतिक्रिया के रूप में भी स्वीकार करते थे आपके अनुसार गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त अपने प्रतिपादन के लिए न्यूटन की खोज नहीं कर रहा था, वरन् वह उसके मस्तिष्क में पहले से ही स्थापित था। न्यूटन तो उसका अन्वेषक था। अतः मनोवैज्ञानिक रूप से कहा जा सकता है कि "सीखना वास्तव में खोज निकालना है।" ज्ञान और शक्ति मनुष्य की आत्मा है परन्तु वह अज्ञानता की ओढ़नी ओढ़े रहती है और अज्ञानता का स्वरूप हटने पर हर मनुष्य सीख चुका होता है। मनुष्य में अज्ञानता का आवरण जितना अधिक हटता है वह उतना ही अधिक ज्ञानी (शिक्षित) होता है और शिक्षा का यही उपयुक्त स्वरूप होता है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार "शिक्षा की व्याख्या शक्ति के विकास के रूप में की जा सकती है। शिक्षा–मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।"

शिक्षा के उद्देश्य– स्वामी जी के रोम–रोम में भारतीयता और आध्यात्मिकता थी। उनका जीवन दर्शन वेदान्त पर निर्भर रहा। शिक्षा के उद्देश्यों की चर्चा बहुत ही व्यापक रूप में की। वह मानते थे कि व्यक्ति अज्ञानता के कारण अपने प्रकृत स्वरूप को नहीं समझ पाता है इसलिए प्राचीन ऋषियों और विद्वानों ने मानव जीवन का लक्ष्य

ISBN : 978-93-80216-12-6

दर्शन की सहायता से बताया क्योंकि इसी के द्वारा वह जीवन को भी व्यवस्थित करती है। जिसे उनके मुख से निकला "तमसो मा ज्योतिर्गमय, असतो मा सद्गमय, मृत्योमाडयम् गमय।" स्वामी जी ने शिक्षा की प्रक्रिया में मुख्य रूप से छात्रों में देश–प्रेम की भावना का विकास एवं समावेश को महत्व दिया। स्वामी जी का कहना है कि "यदि शिक्षा देश–प्रेम की प्रेरणा नहीं देती है तो उसको राष्ट्रीय शिक्षा नहीं कहा जा सकता।" आपने जीवन के चरम लक्ष्य के रूप में आत्मानुभूति को महत्व दिया। अपने इनेहं विचारों को ध्यान में रखते हुए स्वामी जी ने शिक्षा के निम्न उद्देश्य को वर्णित किया–

1. **मनुष्य का मनुष्य के रूप में निर्माण–** स्वामी जी ने मुक्ति की प्राप्ति को जीवन का महत्वपूर्ण लक्ष्य बताया और इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए व्यक्तित्व के विकास को आवश्यक माना। व्यक्तित्व के विषय में आपने कहा कि मनुष्य परम् शक्ति का ही अंश है जिसकी प्रकृति आध्यात्मिक है। अतः शिक्षा का प्रमुख दायित्व है मनुष्य का निर्माण एवं उसके स्वाभाविक गुणों का विकास करना। मनुष्य बनने के लिए आपने अन्तर्निहित शक्तियों के सर्वोत्तम विकास पर बल दिया। वर्तमान शिक्षा प्रणाली का उल्लेख करते हुये कहा कि वर्तमान शिक्षा मनुष्य का सक्रिय विकास नहीं करती इस शिक्षा में व्यक्ति में आत्म विश्वास और मौलिक विचारों के विकास पर ध्यान नहीं दिया जाता अतः सभी प्रकार की शिक्षा में प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य "मनुष्य का निर्माण" करना होना चाहिए।
2. **वैयक्तिक एवं सामाजिक उद्देश्य–** स्वामी जी का विचार था कि मुक्ति के लिए प्रयासरत रहना मनुष्य की वास्तविक वृत्ति तथा व्यक्ति और समाज के बीच के उचित सम्बन्ध की ओर इंगित करता है, जबकि कुछ विद्वान व्यक्ति व समाज के बीच परस्पर विरोध का वर्णन करते हैं, इस विषय में विभिन्न विद्वानों के भिन्न–भिन्न विचार हैं। विवेकानन्द जी का विचार था कि यदि

 ISBN : 978-93-80216-12-6

व्यक्तित्व शरीर में है तो वह नष्ट हो जाता है। हम अभी तक व्यक्ति नहीं हैं, हम वैयक्तिकता के लिए संघर्षरत हैं। यह वैयक्तिकता असीम आत्मा हैं और यही मनुष्य की वास्तविक प्रकृति है, आत्मा ही इकाई है क्योंकि वही अनन्त है। इसकी प्राप्ति का साधन त्याग है। त्याग का तात्पर्य पृथक सत्ता का विरोधाभस तथा वास्तविक वैयक्तिकता का अनुभव। जब मनुष्य पूर्णरूप से स्वार्थ का त्याग कर देता है तब उसका स्वरूप असीम हो जाता है। इस चरण में आकर मनुष्य वास्तविक मनुष्य का स्वरूप हो जाता है। अतः इस दृष्टिकोण से व्यक्ति एवं समाज के बीच कोई मतभेद नहीं होता, अतः शिक्षा के द्वारा बालक के वैयक्तिकता का विकास किया जाना चाहिए जिससे शिक्षा के सामाजिक एवं वैयक्तिक दोनों उद्देश्यों की पूर्ति होती है।

3. **शारीरिक एवं मानसिक विकास–** स्वामी जी ने शिक्षा के द्वारा बालक के शारीरिक एवं मानसिक विकास को महत्व दिया। आपके अनुसार, "सार्थक शिक्षा वह है जो बालकों को शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ बना सके जिससे बालक शारीरिक रूप से सुसंगठित तथा उससे चिन्तन एवं निर्णय लेकर निर्भीक एवं बलवान योद्धा के रूप में गीता का अध्ययन करके देश की उन्नति कर सकें। शारीरिक रूप से स्वस्थ होने पर उसका मानसिक विकास भी उचित होगा। मानसिक विकास के उद्देश्य पर बल देते हुये आपने कहा कि, "हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिसे प्राप्त करके मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके।"

4. **चरित्र निर्माण का उद्देश्य–** मनुष्य के चरित्र का स्वामी जी की दृष्टि में विशेष महत्व था। अतः आपने चरित्र निर्माण को शिक्षा के एक महत्वपूर्ण उद्देश्य के रूप में स्वीकार किया। आपका विचार था कि एक व्यक्ति अपने जीवन में पाँच सद्विचारों का अनुसरण करते हुये अपने चरित्र का निर्माण करता। अतः चरित्र निर्माण के

 ISBN : 978-93-80216-12-6

बिना शिक्षा उद्देश्यहीन होती है तथा पवित्रता से ब्रह्मचर्य के द्वारा मनुष्य में प्रेम व आध्यात्मिक शक्तियाँ विकसित होंगी तथा वह मन, वचन और कर्म से पवित्र बन जायेगा।

5. **आत्म–विश्वास एवं आत्म–त्याग की भावना का विकास**–स्वामी जी का विचार था कि आत्म विश्वास श्रद्धा एवं त्याग की भावना को विकसित करना शिक्षा का महत्वपूर्ण लक्ष्य होना चाहिए। आपने कहा कि "उठो! जागो और उस समय तक बढ़ते रहो जब तक कि परम उद्देश्य की प्राप्ति न हो जाय।" स्वामी जी ने स्पष्ट किया कि शिक्षा सोये हुये आत्म–विश्वास को जागृत करने एवं विकास का प्रभावशाली कार्य है तथा आत्म–विश्वास से ही मनुष्य में आत्म त्याग, श्रद्धा आदि भावनाओं का विकास होता है और आत्म–विश्वास एवं आत्म–त्याग की भावना की वृद्धि से ही मनुष्य अन्तर्निहित पूर्णता की प्राप्ति की ओर अग्रसर होता है।

6. **राष्ट्रीयता की भावना का विकास**– स्वामी जी का विचार था कि मनुष्य में राष्ट्र प्रेम की भावना सम्पूर्ण राष्ट्र को समृद्धि प्रदान करती है। अतः बालकों में राष्ट्र प्रेम की भावना को विकसित करना मनुष्य का महत्वपूर्ण लक्ष्य होना चाहिए। शिक्षा की रूपरेखा ऐसी हो जो बालक को देश भक्ति की दिशा में अग्रसर होने के लिए अभिप्रेरित करते हुये उसे राष्ट्र कल्याण की दिशा में अग्रसित कर सके। स्वामी जी शिक्षा के द्वारा राष्ट्रीयता ही नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय की भावना के विकास पर भी बल देते थे।

पाठ्यक्रम– स्वामी जी समन्यवादी दृष्टिकोण के समर्थक थे। आपका विचार था कि आत्म ज्ञान या जीवन के चरम लक्ष्य के अतिरिक्त बालक को अन्य विषयों का भी ज्ञान होना चाहिए। अतः आपने पाठ्यक्रम के आन्तरिक एवं बाहरी दोनों प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति को महत्व दिया। आपके अनुसार जीवन में उद्देश्यों की पूर्ति इस संसार व शरीर के माध्यम से होती है इसलिए पाठ्य विषय में उन समस्त

 ISBN : 978-93-80216-12-6

विषयों के ज्ञान को आवश्यक बतलाया जो इस संसार से सम्बन्धित हैं। अतः आपने आध्यत्मिक पूर्णता हेतु धर्म, दर्शन, पुराण, उपनिशद् व लौकिक समृद्धि के लिए भाषा, अर्थशास्त्र, राजनीति, मनोविज्ञान, कला, व्यवसायिक विषय, कृषि, खेलकूद व व्यायाम आदि विषयों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया। इसके अतिरिक्त आपने अंग्रेजी भाषा एवं विज्ञान के अध्ययन को भी महत्वपूर्ण माना। आपका विचार था कि हमें तकनीकी शिक्षा (टैक्नीकल एजूकेशन) तथा उन समस्त विषयों का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए जिससे औद्योगिक क्षेत्रों में विकास हो क्योंकि आज के युग में विज्ञान की उन्नति के अभाव में देश की उन्नति नहीं सम्भव है। इस संदर्भ में स्वामी जी का कथन है कि "हम अपने ज्ञान के विभिन्न अंगों के साथ–साथ अंग्रेजी भाषा और पाश्चात्य विज्ञान का अध्ययन करना भी आवश्यकता है। हमें प्राविधिक शिक्षा और उन सब विषयों का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए जिससे हमारे देश के उद्योगों का विकास हो और मनुष्य नौकरियाँ खोजने के बजाय अपने स्वयं के लिए पर्याप्त धन का अर्जन कर सकें और दुर्दिन के लिए कुछ बचा भी सकें।"

शिक्षण–विधि– शिक्षण पद्धति के विषय में आपका विचार है कि सर्वश्रेष्ठ पद्धति ज्ञान की एकाग्रता है। आपने शिक्षा की पूर्णता आध्यात्मिक सिद्धान्तों पर आधारित बनाने के लिए प्रयास किया इसीलिए आपने चित्त एकाग्रता को महत्वपूर्ण शिक्षण–विधि के रूप में स्वीकार किया। आपका विचार था कि इसके अभाव में मानव जीवन में विभिन्न प्रकार की भूलें करता है। एकाग्रचित व्यक्ति भूल नहीं करता। एक साधारण एवं महान् व्यक्ति में यही अन्तर होता है तथा मनुष्य और पशु में भेद होता है। अतः स्वामी जी ने कहा था कि "ज्ञान का भण्डार केवल चित्त को एकाग्रता की चाबी से खोला जा सकता है।" तब प्रश्न यह उठता है कि एकाग्रता कैसे प्राप्त की जाय। आपका विचार था कि मनुष्य ध्यान को एकाग्रता का अभ्यासी है। अतः शिक्षा के

 ISBN : 978-93-80216-12-6

द्वारा बालक में प्रारम्भ से ही अभ्यास द्वारा ध्यान की एकाग्रता को विकसित किया जा सकता है। स्वामी जी ने धर्म एवं योग विधि से सम्बन्धित विचार था कि योग की अनेक सीढियाँ हैं जैसे– कर्म योग, भक्ति योग, राज योग, ये शक्तियों को नियंत्रित करती हैं तथा केन्द्रीयकरण विधि में व्यक्ति को अपने मन को एकाग्र व केन्द्रित करना हैं। उपदेश विधि के अन्तर्गत उनका विचार गुरु गृहवास से था। अनुकरण विधि से विवेकानन्द जी के विचार था कि गुरु को एक आदर्श का प्रतीक होना चाहिए जिससे चरित्र को ज्वाल्यमान होना चाहिए जिससे छात्र उसका अनुकरण करके सही दिशा को उन्मुख हो। निर्देशन व परामर्श विधि से तात्पर्य व्यक्ति निर्देशन परामर्श शिक्षा की पूर्णता व व्यक्तित्व की पूर्णता की अनुभूति से था तथा क्रियात्मक व व्यावहारिक विधि में आपने साधु–संगति, भ्रमण, सेवाकार्य, खेल–कूद, शारीरिक शिक्षा, उद्योग, शिक्षा एवं कौशलों को सम्मिलित किया।

शिक्षार्थी– विवेकानन्द जी ने फ्रॉबेल की शिक्षा के विषय में बाल केन्द्रित विचारधारा का समर्थन करते हुये कहा कि बालक लौकिक व आध्यात्मिक शिक्षा का भण्डार होता है। आपने बालक की तुलना एक वृक्ष से करते हुये स्पष्ट किया कि जिस प्रकार एक पौधे में विकास करके वृक्ष बनने की शक्ति होती है उसी प्रकार बालक अपनी बुद्धि रूपी शक्ति के कारण बुद्धि के अनुरूप सम्पूर्ण विकास कर सकता है। जिस प्रकार पौधे को हम पोषक तत्व एवं रक्षा प्रदान करते हैं। जिसको ग्रहण करके वह प्रकृति के अनुरूप बढ़ता है वैसे ही बालक को शिक्षा देते समय उसके मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करना चाहिए अर्थात् वे बाल–केन्द्रित शिक्षा के आधार पर बालक के कर्तव्यनिष्ठता, धर्मपरायण एवं जिज्ञासा जैसे गुणों का विकास करना चाहते थे।

शिक्षक– स्वामी विवेकानन्द जी ने शिक्षक के गुणों को वर्णित करते हुये कहा कि, "अध्यापक को पूर्ण ज्ञानी होना चाहिए उसे धर्म ग्रन्थों के सारतत्व की जानकारी होनी चाहिए। अतः एक सच्चे अध्यापक

को ग्रन्थों की मूल आत्मा का ज्ञान होना चाहिए, आपके अनुसार, "शिक्षा योजना में शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण होना चाहिए तथा वह छात्र का पथ–प्रदर्शक एवं सहायक हों। उसमें त्याग, साहस, उत्साह, विश्व–बन्धुता, व्यवहारिक, मानव–निर्माणक, आध्यात्मिक दृष्टि से दिव्य, धार्मिक ग्रन्थों के सार तत्वों का ज्ञानी, दण्ड विरोधी, पवित्र एवं ब्रह्मचर्यपूर्ण तथा मनोवैज्ञानिक विचारधारक जैसे गुणों से पूर्ण होना चाहिए। शिक्षा के विषय में विस्तृत विचारों को व्यक्त करते हुये आपका कथन है कि "वास्तव में किसी के द्वारा कभी शिक्षा नहीं दी गयी हैं। हममें से प्रत्येक को अपने आप को शिक्षा देनी पड़ती है। ब्रह्म शिक्षा केवल ऐसे सुझाव देता है जिससें आत्मा कार्य करने एवं समझने के लिए चैतन्य हो जाती है।"

विद्यालय– स्वामी जी ने विद्यालय का स्वरूप बालक के बौद्धिक, शारीरिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक विकास के आधार पर निर्धारित किया था। अर्थात् "आपने विद्यालय के भविष्य में पृथक् कल्पना नहीं की थी, बल्कि गुरु–गृहवास के सम्बन्ध में अपने विचारों को स्पष्ट करते हुये कहा था कि गुरु शुद्ध वायु से युक्त शान्ति, सुखद एवं सुरम्य स्थल में और आध्यात्मिक विचारों में सहायक वातावरण से पूर्ण होना चाहिए। जिसमें बालकों को प्राकृतिक वातावरण पर आधारित प्रकृति वातावरण में शिक्षा दी जानी चाहिए।" अर्थात् स्वामी जी शिक्षा की प्रक्रिया में विद्यालय का महत्वपूर्ण स्थान मानते थे जिसमें बालक का सम्पूर्ण विकास एवं समाज के अनुकूल उसका समाजीकरण हो सके।

अनुशासन– विवेकानन्द जी प्रचलित अनुशासन के पक्षधर नहीं थे। इसलिए उन्होंने अनुशासन में बालक की स्वतन्त्रता को महत्व दिया। अनुशासन सम्बन्धी विचारों को स्पष्ट करते हुये आपने कहा कि छात्रों को विकास के स्वतन्त्र अवसर दिये जाने चाहिए। छात्र का अयोग्य होने पर भी उसे विवश नहीं करना चाहिए, बल्कि उसमें रचनात्मक विचारों का समावेश करना चाहिए। उसमें नकारात्मक विचार नहीं डालने

 ISBN : 978-93-80216-12-6

चाहिए क्योंकि ऐसे विचार बालक को शारीरिक एवं मानसिक रूप से दुर्बल बना देते हैं तथा वह वैसा ही बनने लगता है। इसलिए बालकों का उत्साहवर्धन एवं मार्गदर्शन करना चाहिए जो उनकी आवश्यकताओं और प्रवृत्तियों के अनुरूप हो जिससे वे स्वावलम्बी एवं पूर्ण मनुष्य बन सकें। इस सम्बन्ध में विवेकानन्द जी का विचार था कि निषेधात्मक शिक्षा या कोई भी नकारात्मक विचार जीवन में नहीं अपनाना चाहिए।

स्त्री–शिक्षा– स्वामी जी ने स्त्री शिक्षा को देश के उत्थान के लिए आवश्यक माना। आपके समय में स्त्री पुरुषों का स्थान समान नहीं था, स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा लज्जित दृष्टि से देखा जाता था। स्वामी जी ने वेदान्त द्वारा वर्णित आत्मा के स्वरूप को स्पष्ट करते हुये कहा कि यह समझना कठिन हैं कि हमारे देश में स्त्री–पुरुष में इतना भेद क्यों है जबकि वेदान्त में प्रत्येक प्राणी में एक ही आत्मा का निवास बताया गया है। आपने स्त्री शिक्षा के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा कि "उस परिवार या देश की उन्नति की आशा नहीं की जा सकती जहाँ स्त्रियों की शिक्षा न हो, जहाँ वे सुखमय जीवन व्यतीत न करती हों।" स्वामी जी स्त्री की दीनता, हीनता और पराधीनता के कट्टर विरोधी थे इसीलिए आपने नारी उत्थान के लिए स्त्री शिक्षा पर बल देते हुए कहा कि "पहले अपनी स्त्रियों को शिक्षित करो, तब वे आपको बतायेगी कि उनके लिए कौन से सुधार आवश्यक हैं। उनके मामलों में तुम बोलने वाले कौन होते हो।"

जनशिक्षा– स्वामी जी ने अपने समय में जन–समुदाय की आर्थिक दृष्टि से हीन दशा को सुधारने हेतु जन शिक्षा को महत्व दिया। स्वामी जी का कथन है कि "मैं जनसाधारण की अवहेलना करना महान् राष्ट्रीय पाप समझता हूँ। यह हमारे पतन का प्रमुख कारण है। जब तक भारत की समान्य जनता को एक बार फिर उपयुक्त शिक्षा, अच्छा भोजन या अच्छी सुरक्षा प्रदान नहीं की जायेगी तब तक प्रत्येक राजनीति बेकार सिद्ध होगी।" स्वामी जी साधारण जनता के उत्थान के लिए आवश्यक

 ISBN : 978-93-80216-12-6

मानते थे कि उन्हें अपनी दशा सुधारने का ज्ञान होना चाहिए। उन्हें अनुभव होना चाहिए, कि उनके चारों ओर क्या हो रहा है, तभी तो उन्नति के लिए उनके मन में भावनाएँ उत्पन्न होंगी।" स्वामी जी जनसाधारण को किस प्रकार की शिक्षा देना चाहते थे। इस सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि वे जनता को शिक्षित करने के लिए गाँव–गाँव, घर–घर जाकर ही शिक्षा देने के पक्षधर थे क्योंकि वे शिक्षा प्राप्त करने विद्यालय नहीं जा सकते।

चरित्र शिक्षा– स्वामी जी ने मनुष्य जीवन में उसके चरित्र को विशेष महत्व देते हुए बालक की शिक्षा में चरित्र–निर्माण को प्रमुख स्थान दिया। स्वामी जी का विचार था कि चरित्र निर्माण विचारों से होता है। मनुष्य का विचार जैसा होता है, वैसा ही चरित्र बनता है तथा वह चरित्र के निर्माण में भलाई–बुराई दोनों का योगदान मानते हैं। कुछ स्थिति में सुख की तुलना में विपत्तियाँ अधिक महानतम कार्य करती हैं। जिससे महापुरुषों का सृजन होता है। आपका मानना था कि मनुष्य की स्थिति रेशम के कीड़े के समान होती है। जैसे रेशम का कीड़ा अपने भीतर के तत्वों से रेशम के धागों को अपने चारों ओर बुन लेता है और अंत में उसी में बंद हो जाता हैं ऐसे ही मनुष्य अपने स्वयं के कार्य ग्रह में अपने को बाँध लेता है और अज्ञानवश अपने को बंदी समझता है। इसी प्रकार अच्छे–बुरे प्रभाव व्यक्ति के अन्दर संगठित होकर आदत का निर्माण करते हैं और इन्हीं आदतों (स्वभाव) एवं पूर्व जन्मों के संस्कारों से मनुष्य के चरित्र का निर्माण होता है। स्वामी जी का कथन था कि "मेरी समस्त भावी आशा नवयुवकों में केन्द्रित है जो चरित्रवान हों, बुद्धिमान हों, लोक सेवा के हेतु सर्वतत्व त्यागी और आज्ञापालक हों, जो मेरे विचारों को क्रियाविन्त करने के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग कर सकें। यदि व्यक्ति के विचार उच्च श्रेणी के हैं तो चरित्र भी ऊँचा होगा यदि विचार बुरे हैं तो चरित्र भी निम्न श्रेणी का होगा।"

 ISBN : 978-93-80216-12-6

धार्मिक शिक्षा– आपके अनुसार धार्मिक शिक्षा आत्मा है, आत्म अनुभूि (आत्म साक्षात्कार) है न कि अन्धविश्वास एवं सिद्धान्त। जिस प्रकार शल्य चिकित्सक के ग्रन्थों को पढ़कर व्यक्ति शल्य चिकित्सक नहीं बन सकता उसी प्रकार व्यक्ति केवल धर्म ग्रन्थ पढ़कर तब तक धर्म या ईश्वर को नहीं पा सकता जब तक वह साधना के द्वारा स्वयं परमात्मा का अनुभव नहीं करता। आत्मा की अनुभूति हृदय द्वारा होती है परन्तु हमारी शिक्षा बौद्धिक होने के कारण हृदय को परिष्कृत करती है बालकों की शिक्षा में धर्म के स्थान को स्पष्ट करते हुये कहा कि "विश्व की महान् विभूतियों के प्रति श्रद्धा तथा आदर की भावना जागृत करना धर्म के अन्तर्गत आता हैं। वे महान् आत्माएँ जिन्होंने सत्य को खोज के लिए आत्मोत्सर्ग कर दिया है उनके आदर्शों का अनुकरण, उनके चरित्रों का चिन्तन मनन करके बालकों के हृदय की दुर्बलता दूर होती है तथा शक्ति प्राप्त होती है। अर्थात् आत्मानुभूति एवं आत्म साक्षात्कार ही धर्म की शिक्षा का वास्तविक स्वरूप है।" आपका विचार था कि धर्म के अभाव में मनुष्य शक्तिहीन होता है। आपके शब्दों में, "शक्तिहीनता ही पाप व बुराइयों की जननी है।" अतः प्रत्येक व्यक्ति को 'सोहम्' का जप करते हुये वास्तविक प्रकृति का स्मरण, मनन, श्रवण करना चाहिए।

उपर्युक्त समस्त पहलुओं के विवरण के आधार पर कहा जा सकता हैं कि स्वामी जी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा दर्शन उच्च कोटि का शैक्षिक दर्शन था। जहाँ आपने बालक के सर्वांगीण विकास को बल दिया वहीं आपने स्त्री शिक्षा, जन समुदाय, धार्मिक, चारित्रिक शिक्षा आदि अनेक पक्षों की विस्तृत व्याख्या स्पष्ट की। अर्थात् आप शिक्षा में आमूल परिवर्तन करना चाहते थे। डॉ. आर. एस. मनी के शब्दों में, "उनके जीवन का लक्ष्य इस बात का प्रचार करना था कि लोगों में श्रद्धा तथा मानसिक साहस का विकास हो, वे आत्मा का ज्ञान प्राप्त करें, तथा अपने जीवन को दूसरों की भलाई के लिए त्याग दें। यही थी उनकी इच्छा एवं

आशीर्वाद।"

स्वामी विवेकानन्द जी ने ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा संस्था स्थापित की जिस पर विदेशी चिन्तन की संस्कृति का प्रभाव न था। आपके जीवन एवं शिक्षा दर्शन में समन्वयवादी एवं आदर्शवादी दृष्टिकोण की झलक दिखती है। डॉ. काटजू के अनुसार, "हम अपने राष्ट्र सम्मान के लिए ऋणी हैं और इसी आत्म सम्मान है जो बाद में गाँधी जी के स्वतन्त्रता आन्दोलन की नींव बनीं।" स्वामी जी के शिक्षा पद्धति से प्रभावित होकर पं. जवाहरलाल नेहरू जी ने लिखा था कि "भारत के अतीत में अटल आस्था रखते हुए और भारत की विरासत पर गर्व करते हुये भी, विवेकानन्द का जीवन की समस्याओं के प्रति आधुनिक दृष्टिकोण था और वे भारत के अतीत तथा वर्तमान के बीच एक प्रकार के संयोजक थे।"

सन्दर्भ–

1. *पाण्डेय, रामशकल (2009), विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा–शास्त्री, आगरा–2: अग्रवाल पब्लिकेशन।*
2. *वालिया, जे. एस. (2009), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, जालन्धर: अहम् पाल पब्लिशर्ज।*
3. *ओड;, लक्ष्मीलाल के. (2005), शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, जयपुर: राजस्थान हिन्दी अकादमी।*
4. *वर्मा वेदप्रकाश (1994), नीति शास्त्र के मूल सिद्धान्त, नई दिल्ली: एलाइड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड।*
5. *अल्तेकर, ए.एस. (1968), प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, वाराणसी: नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स।*
6. *रस्क, आर. आर. (0000), शिक्षा के दार्शनिक आधार, जयपुर: राजस्थान हिन्दी अकादमी।*

 ISBN : 978-93-80216-12-6

स्वामी विवेकानन्द एवं उनका नारी विषयक दृष्टिकोण

डॉ. लक्ष्मीना भारती
असि. प्रो. राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महिला महा., फतेहपुर

संक्रमणकाल के दौर से गुजरता पराधीन भारत जब विवशतापूर्वक अपना धर्म, अपनी संस्कृति, सभ्यता एवं अपने आध्यात्मिक बल को खोता जा रहा था, उस समय देश के सामाजिक एवं धार्मिक मंच पर दिव्य युगदृष्टा स्वामी विवेकानन्द (इतिहास की अग्रिम कड़ी में 12 जनवरी सन् 1863 ई. का दिन इसलिए महत्वपूर्ण माना गया है कि इस दिन में जन्में व्यक्ति ने दुनिया में मानवता एवं अमरता का संदेश दिया) जैसे युग पुरुष का अभ्युदय हुआ। ऐसे समय में जबकि भारत में राजनीतिक उदासीनता एवं निराशा ने भारतवासियों को अकर्मण्य बना दिया था, आपने सांस्कृतिक राष्ट्रीयता का दर्शन देकर कर्म, सेवा एवं त्याग पर आधारित राष्ट्रीयता की नई परिभाषा प्रस्तुत की। शोषण, अत्याचार, गरीबी, शिक्षा जैसी सामाजिक बुराइयों से जूझने का मनोबल स्वामीजी के राजनीतिक दर्शन में पाया जाता है जिसमें विश्व के कई समकालीन मानवतावादी, राजनैतिक एवं आध्यात्मिक दर्शनों का सार निहित है। स्वामी विवेकानन्द जी ने पाश्चात्य की अंधेरी गलियों में भटकती हुई नयी पीढ़ी को प्राच्य के सात्विक वैभव के पास लाकर स्वर्णिम दिशा प्रदान की। विश्व मानवता के सजग प्रहरी के रूप में स्वामी विवेकानन्द ने जगत को जहाँ एक ओर सवाभिमान और संस्कृति का पाठ तो पढ़ाया ही, वहीं दूसरी ओर आदर्श जीवन दर्शन को अपनाने की शिक्षा भी दी जिससे माानव के नव–निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ। भारत को आध्यात्मिक विश्व गुरु के रुप में प्रतिष्ठित करने व युवा भारत को जागृति का संदेश देने वाले स्वामी विवेकानन्द धर्म निरपेक्ष

ISBN : 978-93-80216-12-6

समाज में स्त्रियों को गौरवपूर्ण स्थान दिलाने, गरीबों की मुक्ति व दलितों के शोषण के उन्मूलन इत्यादि के कट्टर हिमायती थे।

किसी विशाल वट वृक्ष के नीचे खड़े होकर जब हम विस्तृत आयतन की ओर विस्मयमुग्ध होकर देखते हैं, तब क्या यह सोच भी सकते हैं कि यह विराट वृक्ष एक दिन सरसों के छोटे से बीज के भीतर छिपा हुआ था? उसी प्रकार 12 जनवरी 1863 ईसवी, पौष कृष्ण सप्तमी तिथि के दिन कलकत्ते के सिमला मुहल्ले में विश्वनाथदत्त और भुवनेश्वरी देवी की प्रजा पुत्र संतान के रूप में जो शिशु जन्मा, उसे देखकर उस समय कौन सोच पाया होगा कि भविष्य में उसके मात्र उन्तालीस के जीवन में एक ऐसी आश्चर्यजनक प्रतिभा, ऐसी महान शान्ति का विकास होगा, जिसका प्रभाव देशकाल की सीमा के भीतर सीमाबद्ध नहीं रहेगा, जो भिन्न–भिन्न समय के भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में पले, भिन्न–भिन्न नर–नारियों के, प्राणी मानवता की शाश्वत् महिमा, सत्य, न्याय मैत्री की सजीव प्रेम एवं निर्भय हो लोक–कल्याण साधन करने की स्फूर्ति जगाते रहें। नरेन्द्रनाथ के पिता विश्वनाथदत्त कलकत्ता हाईकोर्ट के व्याख्यात एटर्नी थे। वे अंग्रेजी और फारसी भाषा के विद्वान, बुद्धिमान एवं संगीत प्रेमी व्यक्ति थे। धीर–गंभीर स्वभाव, विद्यानुराग, तेजस्विता, उदारता एवं स्वाधीन विचार यह उनके चरित्र की विशेषता थी। साथ ही वे गरीबों के प्रति सदा सहानुभूतिसम्पन्न, दान में मुक्तहस्त एवं अनेक आत्मीय स्वजन आदि के प्रतिपालक थे। माता भुवनेश्वरी देवी का चरित्र भी अनुपम था। वे रमणीकुल के रत्नस्वरूपा थीं, तभी तो वे रत्नगर्भी बन सकीं। हिन्दू समाज में नारियाँ ही शक्ति की मूल उद्गम हैं, उन्हीं के व्यक्तित्व एवं चरित्र का प्रभाव उनकी संतानां पर विशेष रूप से पड़ता है। भुवनेश्वरी देवी बुद्धिमती, कार्यकुशल एवं शक्तिपरायण थी। अपने मधुर स्वभाव के कारण वे सबकी प्रिय थी। देवी–देवताओं के प्रति वे श्रद्धापरायण थीं तथा भक्तिपूर्ण पूजा अर्चना आदि किया करती थीं। उनके जैसी तेजस्विनी एवं सर्वगुणसम्पन्न नारी वास्तव में विरली

 ISBN : 978-93-80216-12-6

होती हैं। आगे चलकर किसी समय विवेकानन्द ने कहा था– "मुझमें जो ज्ञान का विकास हुआ है, उसके लिए मैं अपनी माता का चिरऋणी हूँ।"

उनके जीवन पर सर्वाधिक प्रभावव उनके गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस का था। बंगाल के इस महान संत का शिष्यत्व प्राप्त कर नरेन्द्रनाथदत्त स्वामी विवेकानन्द बन गये। भारत में उन्होंने हिन्दू जाति की अंतरात्मा को जगाने का प्रयास किया और सामाजिक बुराईयों, कुप्रथाओं, अंधविश्वासों को दूर करने का प्रयास किया। स्वामी विवेकानन्द जी के सामाजिक दर्शन का एक अति महत्वपूर्ण पहलू है 'स्त्रीमुक्ति' सम्बन्धी उनके विचार। 19वीं शताब्दी में भारतीय महिलाओं की स्थिति शूद्रों या दासों से किसी भी प्रकार अलग नहीं थी। यही कारण है कि राजारामोहन राय व उनके बाद के समाज–सुधारकों ने स्त्रियों की दशा सुधारने के लिए व्यापक अभियान चलाया। स्वामी विवेकानन्द जी भी महिलाओं की स्थिति को सुधारकर उन्हें समान स्तर देना चाहते हैं। वे स्त्री को 'शान्ति रूप' मानते हैं। शान्ति के बिना विश्व का पुनर्जीवन संभव नहीं है। विवेकानन्द जी मानते थे कि हमारे देश के अति निर्बल एवं पिछड़ेपन का मुख्य कारण है 'शान्ति' को असम्मान देना। अपने अमेरिका व यूरोप भ्रमण के दौरान उन्होंने देखा कि वहाँ पर 'शान्ति' की उपासना की जाती है, महत्व दिया जाता है, किन्तु फिर भी इसकी पूजा, उपासना ऐन्द्रिय संतुष्टि के माध्यम से करते हैं। तब कल्पना करो कि उन्हें कितनी अपार भलाई प्राप्त होगी जो उसकी पूजा पूर्ण शुद्धता से, सात्विक चेतना से और 'उसे' अपनी माता मानते हुए करते हैं। इसीलिए उन्होंने अपने शिष्यों एवं गुरु भाइयों को यह उपदेश दिया कि वे पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए प्रत्येक स्त्री को माँ के रूप में देखें।

एक बार स्वामी विवेकानन्द शिकागो जाने की तैयारियों में थे। मद्रास की जनता को विदा कर वे खेतड़ी महाराज के मकान में पहुँचे। महाराज ने उनका आदर सत्कार किया, महाराज स्वामी जी के आगमन से खुश

 ISBN : 978-93-80216-12-6

हुए। राजकुमार के जन्म की खुशी में महल में एक दरबार लगाया गया था और नाचने गाने के लिए वहाँ एक तवायफ आने वाली थी। यह जानकर स्वामी विवेकानन्द ने महाराज से कहा, मुझ जैसे सन्यासी के लिए तवायफ का नाच–गाना देखना उचित नहीं है। यह कहकर वे अतिथि गृह की ओर चले गए। जब तवायफ को पता चला कि स्वामी जी मेरी वजह से राजदरबार से उठकर गए हैं तो उसका मन दुःखी हुआ। उसने राजदरबार में नृत्य नहीं किया। वह साज बजाने वालों से बोली, "आप धुन बजाइए आज मैं सिर्फ गाना गाऊँगी।" वह विदुशी थी। इसलिए कोई उसकी बात को मना न कर सका। धुन बजते ही उसने अपना राग अलाप दिया। उसके अलाप की गूँज स्वामी जी के कानों में जा पहुँची। उसे सुनकर स्वामीजी जी उसके पास आकर खड़े हो गए। गायिका ने उनके चरणों में शीश झुकाते हुए कहा "स्वामी जी! हमारा कोई ठिकाना नहीं है। यदि आप अपना दर्शन देकर हमारा उद्धार नहीं करेंगे तो हमें मुक्ति की राह कैसे मिलेगी?" यह सुनकर स्वामी जी आँखों से आँसू छलक पड़े। उन्होंने उस गायिका से कहा, "मैं शिकागों जाने वाला था, यदि मुझे यहाँ आने का मौका न मिलता तो मेरा प्रतिनिधित्व अधूरा रह जाता।" विवेकानन्द को उसकी आवाज में सरस्वती जी का वास लग रहा था। उन्होंने कहा, "हे गायिका माँ! तुम्हारी आवाज सुनकर मुझे जो ज्ञान प्राप्त हुआ है वह मेरे लिए अलौकिक है! इस ज्ञान को तुम्हारे सिवा मुझे अन्य कोई नहीं दे सकता। हे माँ! तुम मेरे अपराधों को क्षमा कर देना।" उस गायिका से मिलकर नारी से सम्बन्धित एक नए सत्य का ज्ञान स्वामी जी को प्राप्त हुआ।

नारी के सम्बन्ध में स्वामी जी कहते हैं– "जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं होगा तब तक विश्व का कल्याण होना असंभव है क्योंकि पंछी कभी एक पंख से नहीं उड़ सकता।"

स्वामी जी का कहना था कि अमेरिका में दरिद्रता का कहीं नामोनिशान नहीं है। यहाँ की महिलाओं का हृदय हिम की तरह निर्मल और पवित्र

 ISBN : 978-93-80216-12-6

है। ये महिलायें समाज के विकास में पूरी निष्ठा से कार्यरत हैं। ये अपने समाज की उन्नति के बारे में सोचती हैं। यहाँ सामाजिक कार्यों का नियंत्रण महिलाओं के हाथों में है। यहाँ उनका हर जगह सम्मान है। मुझे यह देश माँ–बहनों की उदारता से भरा लगता है। यहाँ के पुरुष भी महिलाओं को सम्मान की दृष्टि से देखते हैं, जबकि हमारे देश के लोग महिलाओं को हेय दृष्टि से देखते हैं। यहाँ की स्त्रियाँ बहुत समझदार हैं। वे 25–30 साल की आयु के पहले अपना विवाह नहीं करती। ये आसमान में उड़ने वाले पंक्षी की तरह स्वतंत्र है।

"भारतवर्ष में स्त्री जीवन के आदर्श का आरम्भ और अंत मातृत्व में ही होता है। प्रत्येक हिन्दू के मन में 'स्त्री' शब्द के उच्चारण से मातृत्व का स्मरण हो आता है, और हमारे यहाँ ईश्वर को माँ कहा जाता है।" पश्चिम में स्त्री पत्नी है। वहाँ पत्नी के रूप में ही स्त्री का भाव केन्द्रीभूत मानते हैं। पाश्चात्य देशों में गृह की स्वामीनि और शासिका पत्नी है, भारतीय गृहों में घर की स्वामीनि और शासिका माता है। पाश्चात्य गृह में यदि माता हो तो भी उसे पत्नी के अधीन रहना पड़ता है। क्योंकि घर पत्नी का है। मुझे यहाँ वह पुत्र दिखाई नहीं देता, जो कहता हो की माता का पद प्रथम है। भारतवर्ष में स्त्रीत्व मातृत्व का ही बोधक है, मातृत्व में महाजातकी स्वार्थ शून्यता, कष्ट सहिष्णुता और क्षमाशीलता का भाव निहित है। पत्नी तो छाया की तरह पीछे चलती है, उसे माता के जीवन का अनुकरण करना पड़ता है, यही उसका कर्तव्य है। भारतवर्ष में यदि कोई बालक अपराध करता है, तो पिता ही उसे मारता–पीटता है, माता सदैव पिता और बालक के बीच बचाव करती है। इस नश्वर संसार में ईश्वर के प्रेम के समीपतम माता का ही प्रेम है। हमारे शास्त्रों के अनुसार जन्म पूर्व प्रभाव बालक को शुभ या अशुभ प्रवृत्तियुक्त बनाता है। आप सैंकड़ो महाविद्यालयों में अध्ययन करें, लाखों ग्रंथ पढ़ डालें, संसार के समस्त विद्वानों के संसर्ग का लाभ उठायें किन्तु यदि आपने शुभ संस्कार लेकर जन्म

 ISBN : 978-93-80216-12-6

लिया है, तो आप इन सबसे अच्छे रहोगे। यदि आपको माता ने रोगी शरीर दिया है तो कितने ही औषधि का सेवन करें फिर भी स्वस्थ नहीं हो सकते।

भारतीय समाज में स्त्रियों के विभिन्न सम्बन्ध हैं। माता का स्थान सबसे उच्च है, दूसरा स्थान पत्नी का है, उसके बाद कन्या का स्थान आता है। "जिस समाज में सीता का निर्माण हुआ फिर वह काल्पनिक क्यों न हो उस समाज में स्त्री का जितना आदर है उतना दुनिया में कहीं देखने को नहीं मिलेगा यह मैं समझा हूँ।"

हिन्दू स्त्रियाँ बहुत ही आध्यात्मिक और धार्मिक होती है। कदाचित संसार की सभी महिलाओं से अधिक। यदि हम उनकी सुन्दर विशष्टिताओं की रक्षा करें और साथ ही उनका बौद्धिक विकास भी कर सकें तो भविष्य की भारतीय नारी संसार की आदर्श नारी होगी।

संदर्भ–

1. *विनोद तिवारी– स्वामी विवेकानन्द, मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2011*
2. *स्वामी ब्रह्मस्थानंद– भाक्तिदायी विचार, अध्यक्ष, रामकृष्ण मठ, धंतोली नागपुर, 1988*
3. *स्वामी विवेकानन्द पूर्व और पश्चिम की संत महिलाएँ, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रकाशन मंत्रालय, दिल्ली–6 जून, 1962*
4. *विवेकानन्द साहित्य, द्वितीय खण्ड, अद्वैत आश्रम 5, दिही एन्टाली रोड, कलकत्ता– 14*
5. *योजना, जनवरी– 2012*
6. *जनसत्ता, समाचार पत्र, 12 जनवरी, 2011*
7. *राष्ट्रीय सहारा समाचार पत्र, 12 जनवरी, 2013*

विवेकानन्द एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली

डॉ. शकुन्तला

असि. प्रो., राजनीति विज्ञान विभाग
डॉ. बी.आर. अम्बेडकर राजकीय
महिला महा., फतेहपुर उ.प्र.

" Education is the manifestation of perfection already in man."

(अर्थात– शिक्षा मनुष्य के अंतर में पहले से स्थित पूर्णता को व्यक्त करने का माध्यम है।)

–विवेकानन्द

स्वामी विवेकानन्द आधुनिक भारत के मन्त्रदृष्टा और पुरोधा थे। वे मातृभूमि की वर्तमान दुरवस्था से भी पूरी तरह परिचित थे। इसके लिए उन्होंने वर्तमान शिक्षा प्रणाली को उत्तरदायी माना। विवेकानन्द जी ने अपने विचारों द्वारा राष्ट्रीय जीवन को एक नई दिशा दी। स्वामी जी का आक्षेप था कि वर्तमान शिक्षा ऐसी है जो मनुष्य और उसके चरित्र का निर्माण नहीं करती। शिक्षा का लक्ष्य तो जीवन का निर्माण है, चरित्र का निर्माण है, मानव का निर्माण है। वर्तमान शिक्षा इन लक्ष्यों की पूर्ति में सहायक नहीं है। स्वामी विवेकानन्द ने वर्तमान शिक्षा को अभावात्मक (Negative) बताया जहाँ छात्रों को अपनी सभ्यता, संस्कृति के बारे में कुछ भी सीखने को नहीं मिलता। जहाँ उनमें जीवन के वास्तविक मूल्यों का पाठ नहीं पढ़ाया जाता और जहाँ शिक्षार्थियों में श्रृद्धा का अभाव पनपता है। वर्तमान नकारात्मक शिक्षा के बारे में विवेकानन्द ने कहा– "ऐसा प्रशिक्षण जो नकारात्मक पद्धति पर आधारित हो मृत्यु से भी बुरा है। बच्चा स्कूल ले जाया जाता है और पहली बात सीखता है कि उसका पिता मूर्ख है, दूसरी बात सीखता है कि उसका बाबा पागल है तीसरी कि उसके सभी शिक्षक पाखण्डी है, चौथी कि सभी पवित्र ग्रन्थ झूठे हैं। 16 वर्ष

 ISBN : 978-93-80216-12-6

का होते–होते तो वह छात्र निषेधों का एक समूह, अस्थिहीन और जीवनहीन बन जाता है। यही कारण है कि 50 वर्षों में भी यह शिक्षा एक मौलिक व्यक्ति पैदा नहीं कर सकी है। प्रत्येक व्यक्ति जिसमें मौलिकता है इस देश में नहीं बल्कि कहीं और पढ़ाया गया है अथवा फिर उसे अन्धविश्वासों से मुक्त होने के लिए अपने देश के पुरातन शिक्षालयों में जाना पड़ा है।"

स्वामी विवेकानन्द अँग्रजों की शिक्षा प्रणाली को वे क्लर्कों का निर्माण करने वाला यन्त्र मानते थे। उनका कहना था, "तुम्हारी शिक्षा का उद्‌देश्य क्या है? या तो मुंशी गिरी मिलना या अधिक से अधिक डिप्टी मजिस्ट्रेट बन जाना जो मुंशी गिरी का ही दूसरा रूप है। बस यही न। इससे तुमको या तुम्हारे देश को क्या लाभ होगा? आँखे खोलकर देखो जो भारत खण्ड अन्न का अक्षय भण्डार रहा है, आज उसी अन्न के लिए कैसी करूण पुकार उठ रही है। क्या तुम्हारी शिक्षा इस अभाव की पूर्ति करेगी। वह शिक्षा जो जनसमुदाय को जीवन संग्राम के उपयुक्त नहीं बनाती जो उनकी चरित्र शक्ति का विकास नहीं करती तो उनमें दया का भाव और सिंह का साहस नहीं भरती क्या उसे भी हम शिक्षा का नाम दे सकते हैं।"

स्वामी जी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के समर्थक थे। जहाँ छात्र शिक्षक के निकटतम सम्पर्क में रह सके और उनमें पवित्रता, ज्ञानलिप्सा, धैर्य, विनम्रता, विश्वास तथा आदर की भावना पनप सके। वे शिक्षा संस्थाओं को नगरों के बाहर प्राकृतिक वातावरण में स्थापित करने के पक्ष में थे ताकि छात्रों को शुद्ध वातावरण मिल सके तथा प्रकृति की गोद में उनका शारीरिक मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास हो सके।

ऐसा प्रतीत होता है कि स्वामी विवेकानन्द जी गुरु शिष्य के सम्बन्ध में कबीरदास की इस भावना से सहमत है–

'गुरु तो ऐसा चाहिए, शिष्य से कुछ नही लेय।
शिष्य तो ऐसा चाहिए, गुरु को सब कुछ देय।।

 ISBN : 978-93-80216-12-6

स्वामी विवेकानन्द ने अपनी शिक्षा के स्वरूप में निम्नलिखित आधारभूत सिद्धान्तों पर बल दिया है:–

* शिक्षा व्यक्ति के लिए अनिवार्य एवं निःशुल्क होनी चाहिए।
* शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो तथा एक राष्ट्रभाषा की अनिवार्यता हो।
* शिक्षा चरित्र निर्माण, मनुष्य निर्माण एवं जीवन निर्माणकारी होनी चाहिए।
* धार्मिक शिक्षा सर्वधर्म, समन्वयवादी होनी चाहिए।
* शिक्षा व्यक्ति को आत्म निर्भर बनाने वाली हो।
* शिक्षा व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करने वाली हो।
* राज्य सरकार के नियन्त्रण से विहीन शिक्षा हो।
* व्यक्ति व समाज हित में समन्वयकारी शिक्षा।
* सभी के लिए शिक्षा के समान अवसर हो।
* रूचि एवं बौद्धिक भिन्नता के आधार पर शिक्षा।
* शिक्षा में सकारात्मक विचार हो।
* मोक्ष की प्राप्ति के लिए प्रेरित करना।
* विदेशी अधिकार से स्वतन्त्र रहकर अपने निजी ज्ञान भण्डार की विभिन्न शाखाओं तथा पाश्चात्य विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा का अध्ययन करना।
* ऐसी यान्त्रिक एवं औद्योगिक शिक्षा का प्रबन्ध एवं विकास तथा उद्योग धन्धों की वृद्धि जिनसे व्यक्ति नौकरी के लिए मारा मारा न घूमे, आवश्यकता की पूर्ति के लिए पर्याप्त कमाई कर सके तथा भविष्य के लिए कुछ अर्थ संचय कर सके।
* उपरोक्त लक्ष्य के प्राप्ति के लिए योग्य ब्रह्मचारी आचार्यों तपस्वी व त्यागी पुरुषों व महिलाओं को तैयार करना।

 ISBN : 978-93-80216-12-6

स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षण के पाठ्यक्रम में निम्नलिखित विषयों का समावेश किया–

(1) दर्शन की शिक्षा।

(2) वेदान्तिक शिक्षा।

(3) धार्मिक शिक्षा।

(4) योग के चार मार्गों की शिक्षा।

(5) राष्ट्र भाषा।

(6) शिक्षा मातृभाषा में।

(7) संस्कृत की शिक्षा।

(8) अँगेजी की शिक्षा (सम्पर्क भाषा के लिए एवं अनुसंधान के कार्य को जानने के लिए)।

(9) भूगोल, इतिहास, विज्ञान एवं साहित्य की शिक्षा।

(10 कलात्मक विषय।

(11) मनोविज्ञान की शिक्षा।

(12) शारीरिक शिक्षा।

(13) वैज्ञानिक विषयों की शिक्षा।

स्वामी विवेकानन्द ने न सिर्फ शिक्षा के सिद्धान्तों पर बल दिया बल्कि वे निःशुल्क शिक्षा के पक्ष में थे क्योंकि उनके मत से शिक्षा देने का कार्य त्यागी एवं तपस्वी पुरुषों का ही है जो आर्थिक लोभ से दूर हो। स्वामी विवेकानन्द जी ने छात्रों के लिए शिक्षा गृहण करने के पश्चात् मूल्यांकन की कोई निश्चित प्रणाली प्रस्तुत नहीं की। शायद वे ज्ञान का मूल्यांकन मौखिक परीक्षा या प्रयोगात्मक अर्जित ज्ञान के आधार पर करना चाहते थे। वे किसी डिग्री के पक्ष में भी नहीं थे। छात्रों की योग्यता का मूल्यांकन नैतिक गुणों के आधार पर करते थे। विवेकानन्द जी गरीबों को मौखिक शिक्षा देने के हिमायती थे।

ISBN : 978-93-80216-12-6

विवेकानन्द शिक्षा के क्षेत्र में राज्य के हस्तक्षेप को स्वीकार नहीं करते थे। वे कहा करते थे कि शिक्षा अनिवार्य एवं निःशुल्क हो राज्य को उसमें सहायता देनी चाहिए। साथ ही साथ उन्होंने शिक्षा को स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा संचालित करने के ऊपर बल दिया।

विवेकानन्द के अनुसार बिना स्त्री शिक्षा के राष्ट्र की उन्नति असम्भव है। विवेकानन्द शिक्षा की दृष्टि से स्त्री और पुरुष में भेद नहीं करते है उन्होंने स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में निम्नलिखित सुझाव दिये।

(1) स्त्री शिक्षा का प्रसार सर्वसाधारण में होना चाहिए।

(2) स्त्रियों में शिक्षा का प्रसार ब्रह्मचारिणियों द्वारा होना चाहिए।

(3) शिक्षा का प्रसार करते समय वर्तमान उपलब्ध सस्ते वैज्ञानिक साधनों का प्रयोग करना चाहिए।

(4) चरित्र व नैतिकता की शिक्षा सीता जैसी महान देवी का आदर्श रखकर देनी चाहिए।

स्वामी जी ने न सिर्फ स्त्री शिक्षा की बात की बल्कि जनसमुदाय की शिक्षा की अवहेलना करना महान पाप समझते थे वह कहते थे “हमारा महान रूप जन समुदाय की अवहेलना करना और यही हमारे अंत: पतन का कारण है। राजनीति चाहे जितनी अधिक मात्रा में रहे पर उससे तब तक कोई लाभ न होगा जब तक भारत वर्ष की जनता पुनः एक बार सुशिक्षित न हो जाये जब तक उसे भरपेट भोजन न मिले और इस प्रकार उसकी सुविधा की ओर ध्यान न दिया जाये।”

स्वामी विवेकानन्द जी निर्धन तथा पद्दलित की दशा से अत्यन्त क्षुब्ध थे। उनका कहना था स्मरण रहे हमारा राष्ट्र झोपड़ियों में बसता है। वर्तमान समय में तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम देश के एक भाग से दूसरे भाग में जाओ और गाँव–गाँव जाकर लोगों को समझाओं कि अब आलस्य के साथ केवल बैठे रहने से काम नहीं चलेगा उन्हें उनकी यथार्थ अवस्था का परिचय कराओ और कहो भाईयों सब कोई उठो।

 ISBN : 978-93-80216-12-6

जागो। अब और कितना सोओग? जाओ और उन्हें अपनी अवस्था सुधारने की सलाह दो और शास्त्रों की बातों को विशद रूप से सफलतापूर्वक समझाते हुए उदात्त सत्यों का ज्ञान कराओ। उनके मन में यह बात जमा दो कि ब्राह्मणों के समान उनका भी धर्म पर वही अधिकार है। सभी को चाण्डाल तक को भी इन्हीं जाज्वल्यमानमंत्रो का उपदेश दो। उन्हें सरल शब्दों में जीवन के लिये आवश्यक विषयों तथा वाणिज्य व्यापार और कृषि आदि की भी शिक्षा दो।"

स्वामी जी कहते है कि कोई देश उसी अनुपात के उन्नत हुआ करता है जिस अनुपात में वहाँ के जन समूह में शिक्षा और बुद्धि का प्रसार होता है।

स्वामी जी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों से स्पष्ट होता है कि स्वामी जी अपने देश की गरीबी, अशिक्षा बेकारी और अधोपतन से दुखी थे। वह देश के नागरिकों को औद्योगिक एवं तकनीकी शिक्षा देना चाहते थे। इसके साथ ही दर्शन, भूगोल, इतिहास, भाषा, कला की शिक्षा देना चाहते थे। वह मानव निर्माण चाहते थे। मानव निर्माण के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व का समविकास आवश्यक मानते थे। इसलिए स्वामी जी बौद्धिक, आध्यात्मिक एवं शारीरिक विषयों की शिक्षा तथा जीवन निर्माणकारी शिक्षा देने के पक्षधर थे।

सन्दर्भ–

1. *आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन– अवस्थी एवं अवस्थी*
2. *आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन– डॉ. वी.पी. वर्मा*
3. *राजनीतिक चिन्तन की रूपरेखा– ओ.पी. गाबा*
4. *राजनीति विचारक विश्वकोष– ओ.पी. गाबा*
5. *भारतीय राजनीतिक चिन्तन– बी.एल. फड़िया*
6. *भारतीय राजनीतिक चिन्तन– प्रो. जीवन महता*

 ISBN : 978-93-80216-12-6

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और स्वामी विवेकानन्द

डॉ. बॉबी यादव
असि. प्रो. हिन्दी विभाग
मा.का.रा.महा., गाजियाबाद

स्वामी विवेकानन्द भारतीय 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' के अग्रदूत माने जाते हैं। यह बात अलग है कि अपने समस्त साहित्यिक लेखन में स्वामी जी ने कहीं भी उक्त शब्दावली का प्रयोग नहीं किया तथापि इनके लेखन में यह विचार बार–बार परिलक्षित होता है। स्वामी जी की कर्मभूमि परतंत्र भारत थी। अतः इनके विचारों में सांस्कृतिक उन्नयन तथा राष्ट्रीय चेतना का होना अवश्यंभावी है।

जिस प्रकार राजा राममोहन राय को 'भारत का प्रथम आधुनिक व्यक्ति' माना जाता है, उसी प्रकार स्वामी विवेकानन्द को 'भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का अग्रदूत' माना जा सकता है। यह बात भी उल्लेखनीय है कि दानों ही बांग्लभाषी थे। अठारहवीं सदी में बंगाल प्रांत देश का सर्वाधिक चेतनाशील तथा ज्ञानवान प्रांत था तथा समस्त विचार एवं ज्ञान का पूंजीभूत सार यहाँ विद्यमान था। उस काल में बंगाल प्रांत से ही भारतीय नवजागरण तथा पुर्नजागरण के विचार प्रादुर्भूत हुए। राजा राममोहन ने नवजागरण का सूत्र पकड़ा और देश को उस दिशा की ओर अग्रसर किया, वहीं स्वामी विवेकानन्द ने पुर्नजागरण का आलंब लिया और प्राचीन भारत की मेधा और औपनिषदिक विचारों को आधार बनाकर, आध्यात्म–केन्द्रित वैचारिक संपदा का प्रसार किया। आगे चलकर बंगाल ही अन्य विचारों की प्रसार भूमि बना जिसमें वामपंथ, दक्षिणपंथ, चरम वामपंथ, मध्यमार्ग उल्लेखनीय हैं।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने स्वामी जी को 'आधुनिक भारत का निर्माता' माना है। स्वामी विवेकानन्द ने अपनी प्रज्ञा के सहारे भारतीय पुर्नजागरण के विचारों से सहमति जताई तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति,

 ISBN : 978-93-80216-12-6

सभ्यता, दर्शन आदि के आलोक में अपने विचार प्रस्तुत किए और देश को उसी के सांतत्य में आगे बढ़ने के लिए उत्प्रेरित किया। स्वामी जी ने अपने तमाम लेखों, भाषणों में प्राचीन भारतीय धरोहरों, दर्शन, वाड़्मय आदि को प्रश्रय किया तथा इसी के आलोक में भारत राष्ट्र के 'ग्रैंड नैरेटिव' की संकल्पना का खाका प्रस्तुत किया। स्वामी जी के अनुसार– 'आगामी पचास वर्ष के लिए हमारे मस्तिष्क से अन्य सभी देवी–देवताओं को निकल जाने दो। हमारा राष्ट्र ही हमारा एकमात्र जागृत देवता है। ये मनुष्य और पशु, जिन्हें हम आस–पास और आगे–पीछे देख रहे हैं हमारे अपने देशवासी हैं।' उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट हो जाता है कि स्वामी जी भारत राष्ट्र को ही अपना इष्ट मानते हैं और यहां के निवासियों को देवता स्वरूप।

स्वामी जी का राष्ट्रवाद सांप्रदायिक नहीं था अपितु इसमें देश की समस्त जनता समाहित थी, चाहे उसका रंग–रूप, धर्म–पंथ, नस्ल आदि कुछ भी क्यों न हो। महान इतिहासकर रोमिला थापर के अनुसार 'राष्ट्रवाद दो रतह का होता है– धार्मिक राष्ट्रवाद तथा धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद'। स्वामी विवेकानन्द के विचारों का गहन अध्ययन करने के बाद हम कह सकते हैं कि स्वामी जी का राष्ट्रवाद धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद है। यही कारण है कि उन्होंने आध्यात्म को अपने विचारों के मूल में माना है न कि कर्मकाण्ड, विधि–विधान आदि को।

भारत राष्ट्र की मूल इकाई है यहाँ का प्रत्येक व्यक्ति। वह चाहे किसी भी धर्म, जाति, वर्ण, प्रांत, भाषा–भाषी हो। देश में प्रचलित जाति–प्रथा से स्वामी जी बड़े व्यथित थे और इसका उन्मूलन कर समस्त भारतवासियों को एक करना उनका उद्देश्य था। स्वामी जी ने जाति–प्रथा के विभेदकारी तथा विभाजनकारी स्वरूप की कड़े शब्दों में आलोचना की तथा समस्त मानवजाति को एक करने का उपाय सुझाया– 'एक ओर आदर्श है ब्राह्मण तथा दूसरी ओर आदर्शहीन है चाण्डाल। अतः चाण्डाल को उठाकर ब्राह्मण स्तर तक लाना ही जाति–व्यवस्था से उत्पन्न

 ISBN : 978-93-80216-12-6

असमानता रूपी बुराई के उन्मूलन का कारगर उपचार है।' अतः स्वामी जी ने दलित, दमित, शोषित, वंचित समुदाय के उन्नयन करने पर अपना ध्यान केन्द्रित किया और लोगों को इसकी ओर प्रेरित किया। स्वामी जी समस्त भारतवासियों की समानता को राष्ट्रवाद का मूल मानते थे।

स्वामी जी के राष्ट्रवाद में उन्माद नहीं है, वह युद्ध–पिपासु तथा सांप्रदायिक नहीं है अपितु वह समाज की भलाई, देश की सेवा तथा देशवासियों के भौतिक, आर्थिक तथा शैक्षणिक उन्नति के पक्षधर थे। इसी कारण उन्होंने देशवासियों की सेवा के लिए अस्पताल, औषधालय, स्कूल, कॉलेज आदि खोले और अन्य लोगों को खोलने के लिए प्रेरित किया।

स्वामी जी भारत के प्राचीन सांस्कृतिक इतिहास पर गौरवान्वित है परंतु मानव का मानव से भेद उन्हें मान्य नहीं है। पंडित जवाहरलाल नेहरू के अनुसार– 'उनका राष्ट्रवाद स्वतः भारतीय राष्ट्रवाद से एकाकार हो जाता है।' अतः हम कह सकते हैं कि स्वामी विवेकानन्द का राष्ट्रवाद संकीर्ण सीमाओं से बद्ध नहीं है। अपितु यह व्यापक वैचारिक सरणी से ओतप्रोत है।

राष्ट्रवाद के संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द के विचारों की महत्ता यह है कि धर्म एवं आध्यात्म पर आधारित पाश्चात्य राष्ट्रवाद को सर्वप्रथम उल्लिखित किया तथा इसके संबंध में अपने विचार प्रकट किए और उनकी अपेक्षा भारतीय सिद्धांतों को उत्कृष्ट बताया।

स्वामी विवेकानन्द ने राष्ट्रवाद के जिस सिद्धांत पर बल दिया उसे 'वेदान्तिक राष्ट्रवाद' कहा गया। उनके अनुसार प्रत्येक राष्ट्र में कम से कम एक ऐसा तत्व होता है जो उसे एकजुट करता है, वह चाहे भाषा हो, नस्ल हो, जाति हो अथवा कुछ अन्य। भारत के संदर्भ में यह 'धर्म' है, जो भारत राष्ट्र की एकता का सूत्र है। भारत की सांस्कृतिक एकता ही इसके ऐक्य का आधार है।

ISBN : 978-93-80216-12-6

स्वामी विवेकानन्द का 'वेदान्तिक राष्ट्रवाद' उनका विशिष्ट तथा वैकल्पिक सिद्धांत है। उन्होंने राष्ट्रीय चेतना के विकास के लिए देश के इतिहास, धर्म तथा आध्यात्म की गौरवशाली परंपरा को नवीन विचारों से ओतप्रोत कर भारतीय राष्ट्रीयता को पुष्ट किया।

उन्होंने स्वतंत्रता शब्द को नए आयामों से संपन्न किया। उनके लिए स्वतंत्रता का तात्पर्य केवल राजनैतिक अर्थ तक सीमित नहीं था अपितु यह आध्यात्मिक, नैतिक, भौतिक, आर्थिक, मानसिक, बौद्धिक धरातलों तक व्याप्त है।

अतंत: हम कह सकते हैं कि स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय संस्कृति के आलोक में राष्ट्रवाद को व्याख्यायित किया तथा भारतीय इतिहास, कला, सभ्यता, दर्शन, विज्ञान आदि के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रवाद की अवधारणा को गुंफित कर भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को प्रतिपादित किया। स्वामी विवेकानन्द की इसी विचारणा पर आज का भारत पुष्पित– पल्लवित हो रहा है तथा अपने भविष्य की ओर आशान्वित है।

स्वामी विवेकानन्द का यही सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एक विकसित तथा सुदृढ़ भारत का आधार है जो इसे निरंतर प्रगति की ओर उत्प्रेरित कर रहा है और सशक्त बना रहा है ताकि सार्वभौम भ्रातृत्व विकसित हो सके।

संदर्भ–

1. *स्वामी विवेकानन्द – भारत का भविष्य, पृष्ठ 18।*
2. *विवेकानन्द की जीवनी– रोमा रोला, अद्वैत आश्रम, कोलकत्ता, 2013।*
3. *विवेकानन्द साहित्य– खण्ड 1 से 6, अद्वैत आश्रम, कोलकत्ता, 2014।*
4. *भारत जागरण, स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण मिशन, नई दिल्ली, 2011।*
5. *व्यक्तित्व का विकास, स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण मिशन, नागपुर, 2014।*

 ISBN : 978-93-80216-12-6

भारतीय समाज के पुनरुत्थापक स्वामी विवेकानन्द जी का दार्शनिक एवं शैक्षिक चिन्तन

डॉ. जे. के. विकल
असि. प्रो. शिक्षाशास्त्र विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महा.
कैराना

"बिना ज्ञान और प्रेम के स्थायित्व नहीं हो सकता; ज्ञान बिना प्रेम और प्रेम बिना ज्ञान नहीं हो सकता। हमें स्थायी ज्ञान और आनन्द की अनन्ताओं में साम्य की आवश्यकता है। यही एकता प्राप्त करना तो हमारा अन्तिम लक्ष्य है। हमें एकांगी विकास नहीं चाहिए। हमें तो सांमजस्य एवं सर्वांगीण विकास चाहिए। तब संभव है कि हम 'शंकर' की मेधा के समान मेधा और बुद्ध के हृदय जैसा हृदय रख सकें। मुझे आशा है कि हम इस सुखद सांमजस्य को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करेंगे।"

–स्वामी विवेकानन्द

भारतीय समाज के पुनरुत्थापक स्वामी विवेकानन्द जी का दार्शनिक एवं शैक्षिक चिंतन–

भारत वर्ष की इस पवन भूमि पर अनेक ऐसे संत महात्मा एवं ऋषि व् समाज सुधारक अवतरित हुए हैं जिन्होंने अपने व्यक्तित्व व् के माध्यम से भारतीय समाज को एक नई दिशा दी तथा पतित समाज के पुनरुत्थान हेतु सार्थक प्रयास किये। तत्कालीन में भय एवं निराशा व् कुंठा का वातावरण निर्मित हो गया था, ऐसे में अनेक कुरितियो का जन्म होना स्वाभाविक है। स्वामी जी ने अपनी संकल्प साधना से जन कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया तथा निराशावादी समाज का उत्थान करने हेतु मानवमात्र में आशा का संचार किया।

उपरोक्त वर्णित अवधारणा को वास्तविकता के धरातल पर निरुपित करने वाले महान दार्शनिक स्वामी विवेकानन्द ने अपने व्यक्तित्व व

 ISBN : 978-93-80216-12-6

कृतित्व से इस महान धरा के ऋण को सम्यक् कर्मान्त द्वारा उऋण किया। अनन्त अस्तित्व, अनन्त ज्ञान एवं अनन्त आनन्द रूपी परमात्मा के विविध रूपों की अभिव्यक्ति प्राणिमात्र में देखने के कारण स्वामी विवेकानन्द जीवन पर्यन्त मानवमात्र के कल्याण हेतु निरन्तर प्रयासरत रहे। स्वामी विवेकानन्द ने सनातन संस्कृति का गूढ़ अध्ययन करके श्री रामकृष्ण परमहंस के शुभाशीष से भारतीस जनमानस के जीवन को प्रत्येक क्षेत्र में आलोकित किया।

स्वामी विवेकानन्द का दार्शनिक चिन्तन

स्वामी विवेकानन्द के जीवन दर्शन पर उनके पारिवारिक संस्कारों की अमिट छाप थी। इनके धर्मपरायण होने में इनके माता–पिता की धार्मिक प्रवृत्ति का अहम योगदान रहा। ये वेदान्त दर्शन व वैदिक धर्म को मानने वाले थे इन्होंने वेदान्त दर्शन को सर्वथा एक नवीन रूप में स्वीकार किया जो आगे चलकर नव्य–वेदान्त के रूप में निरूपित हुआ। स्वामी विवेकानन्द का वेदान्त दर्शन व्यापक था। वे चाहते थे कि वेदान्त दर्शन का ज्ञान जाति, वर्ण, सम्प्रदाय, मत और लिंग का भेदभाव किये बिना सर्व सामान्य के लिए सुलभ हो। ये वेदान्त दर्शन की व्यावहारिकता को जनमानस के समक्ष सरलीकृत रूप में व्यक्त करना चाहते थे। इनके अनुसार जनमानस को उन्नति के मार्ग पर ले जाना ही वेदान्त का शुद्ध आचरण है। विदेशों में भी वेदान्त का उपदेश देते हुए स्वामी जी ने अपने देशवासियों को यही संदेश दिया कि वेदान्त दर्शन को व्यवहार में न लाने के कारण भारतवासी निर्बल और निर्धन हो गये हैं। देश की अनेक समस्याएँ इसी अभाव से उत्पन्न हुई हैं। देशवासी अपना आत्म विश्वास खो बैठे हैं उनकी आत्मनिर्भरता हेतु वेदान्त दर्शन रूपी विवेक की आवश्यकता है।

धर्म और दर्शन के प्रति स्वामी जी का दृष्टीकोण बड़ा वैज्ञानिक था। अद्वैत वेदान्त को ये सार्वभौमिक विज्ञान धर्म की संज्ञा देते थे। इन्होंने वेदान्त को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में देखने–समझने और उसकी

वैज्ञानिक व्याख्या करने का प्रयास करते रहे। वेदान्त दर्शन के माध्यम से वे भारतवासियों में स्वावलम्बन व आत्मविश्वास जाग्रत करने के पक्षधर थे। उनका विश्वास था कि पूर्व के अध्यात्मवाद का पश्चिम के भौतिकवाद से समन्वय करके दोनों को पूर्ण व समद्ध बनाया जा सकता है। वे आध्यात्मिक मूल्यों का पूर्व से पश्चिम की ओर तथा भौतिक मूल्यों का पश्चिम से पूर्व की आरे विनिमय करना चाहते थे। स्वामी विवेकानन्द प्रत्येक धर्म को प्रगतिशील मानते हैं और उसे आदर देते हैं। जैसे मनुष्य–मनुष्य में सार्वभौमिक एकात्मकता पाई जाती है वैसे ही सभी धर्म एकात्मकता के सूत्र में बंधकर सार्वभौमिक धर्म की नींव डालते हैं। मनुष्य के जीवन का लक्ष्य है कि वह ब्रह्मज्ञान प्राप्त करे और ईश्वर की दिव्यशक्ति की अनुभूति करे। ब्रह्म की अनुभूति की अवधि लम्बे समय तक नहीं होती है। वह कुछ क्षणों तक ही सीमित रहती है। जैसे ही कोई साधु आत्मानुभूति के माध्यम से ब्रह्म के दर्शन कर लेता है वैसे ही प्राणि मात्र में ब्रह्म दर्शन करने लगता है। अतः वह अपना जीवन प्रत्येक प्राणी की सेवा में लगा देता है। इसलिए स्वामी विवेकान्द वेदान्त दर्शन के आधार पर सार्वभौमिक एकात्मकता और आध्यात्मिक बन्धुत्व को महत्व देते हैं। तथा सभी धर्म भेदों को भुलाकर सार्वभौमिक धर्म की स्थापना पर बल देते हैं जिससे विश्व भान्ति की संकल्पना को साकार किया जा सके।

स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक चिन्तन को संक्षिप्त रूप में निम्निलिखित मद्यांश से अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है:–"मानव शरीर में पाई जाने वाली जीवात्मा की प्रतिष्ठा करने से ईश्वर की पूजा हो जाती है। कदाचित् सभी प्राणी ईश्वरोपासना के मन्दिर हैं, परन्तु मनुष्य उन सभी प्राणियों में उच्चतम होने के कारण उच्चतम मन्दिर है। यदि मैं उसमें पूजा नहीं कर सकता तो मेरे लिए अन्य मन्दिरों का क्या उपयोग होगा? जिस क्षण मैं यह अनुभव कर लेता हूँ कि मानव शरीर में ईश्वर विद्यमान है, जिस क्षण मैं प्रत्येक मनुष्य के सम्मान में खड़ा

 ISBN : 978-93-80216-12-6

हो जाता हूँ और उसमें ईश्वर के दर्शन करता हूँ–उस क्षण मैं बन्धन मुक्त होता हूँ, वह प्रत्येक वस्तु जो मुझे बाँधती है दूर हो जाती है और मैं मुक्त हो जाता हूँ।"

उपरोक्त वर्णित स्वामी जी के शाब्दों से मनुष्य के प्रति अगाध आस्था झलकती है तथा मनुष्य में ईश्वरीय सत्ता की अधिकतम अभिव्यक्ति मिलती है। स्वामी विवेकानन्द के जीवन दर्शन का सार इसमें सन्निहित है।

स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक चिन्तन

भारतीय शिक्षा को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करने के लिए स्वामी विवेकानन्द का प्रयास सदैव स्मरणीय रहेगा। स्वामी जी संत और दार्शनिक होने के साथ–साथ एक उच्च कोटि के शिक्षाविद् भी थे इनके दार्शनिक चिन्तन का अध्ययन करने के उपरान्त इनके शिक्षा–दर्शन का विवेचन करना समीचीन होगा। स्वामी जी ने 'मानव निर्माण की शिक्षा' (डंद उंपदह मकनबंजपवद) की रूपरेखा प्रस्तुत की जिसका विवरण अधोलिखित है:–

शिक्षा की सम्प्रत्यय:–स्वामी विवेकानन्द के अनुसार मनुष्य को ज्ञान बाहर से प्राप्त नहीं होता वरन् वह मनुष्य के अन्दर छिपा रहता है। मनुष्य उस ज्ञान की खोज करके उसकी अनुभूति मात्र करता है। इनके शब्दों में "शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।" अर्थात व्यक्ति में पूर्णता निहित होती है और शिक्षा का कार्य है कि वह मनुष्य की उस पूर्णता को अभिव्यक्ति करने में सहायता करे। पूर्णता पर सबका अधिकार है और प्रत्येक व्यक्ति पूर्णता की प्रक्रिया में व्यस्त है। अत: स्वामी जी के अनुसार शिक्षा उस पूर्णता की अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम साधन है।

स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि बच्चा पौधे की भाँति स्वयं ही अपनी प्रकृति के अनुकूल विकसित हुआ करता है जैसे माली पौधे

 ISBN : 978-93-80216-12-6

की रक्षा करके उसे अच्छा वातावरण देता है वैसे ही शिक्षक को बालक के विकास हेतु उपयुक्त वातावरण देना चाहिए। उसे मार्गदर्शक व सहयोगी बनकर बालक में निहित ज्ञान को जाग्रत करना चाहिए।

शिक्षा के लक्ष्य

स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण पर्याप्त चिन्तन के उपरान्त किया। स्वामी जी के अनुसार शिक्षा का कर्तव्य है कि वह शिक्षार्थी में आत्मविश्वास उत्पन्न करे तथा ज्ञान के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करें क्योंकि श्रद्धा ही ज्ञान की कुंजी है परन्तु वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में इसका सर्वथा अभाव है। अत: शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों में श्रद्धा उत्पन्न करना आवश्यक है। स्वामी जी आगे कहते हैं कि वह शिक्षा किसी काम की नहीं जो व्यक्ति में इतनी भी सामर्थ्य पैदा न करे कि वह अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। शिक्षा द्वारा व्यक्ति में इतनी सामर्थ्य अवश्य आनी चाहिए कि वह आत्मनिर्भर बन सके तथा राष्ट्र की समृद्धि में भी अपना योग दे सके। अत: शिक्षा के उद्देश्यों में जीवन के व्यावहारिक पक्ष को भी स्थान मिलना चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों पक्षों के विकास पर बल देते हैं दोनों के सामंजस्यूर्ण विकास को ही वे मानव निर्माण की शिक्षा का आधार मानते हैं। नैतिक व चारित्रिक विकास भी इनके शैक्षिक उद्देश्यों की श्रंखला में प्रमुखता से समाहित है।

शिक्षा द्वारा व्यक्ति में विश्वबन्धुत्व का विकास भी होना आवश्यक है इस प्रकार के विकास में स्वतन्त्रता, अक्रोध और त्याग की भावना का विकास होगा तथा प्रत्येक व्यक्ति विश्व भान्ति में योग दे सकेगा। विश्व भान्ति की स्थापना एक सार्वभौम मूल्य है जिसे प्रत्येक राष्ट्र के मनुष्यों को आत्मसात् करना आवश्यक है और इसके विकास हेतु शिक्षा एक प्रभावशाली उपकरण है। अत: शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य विश्वबन्धुत्व का विकास, वर्तमान समय की आवश्यकता है।

 ISBN : 978-93-80216-12-6

स्वामी विवेकानन्द शिक्षा के माध्यम से जिस उद्देश्य की सर्वाधिक पूर्ति करना चाहते थे वह मूलतः आध्यात्मिक विकास था। यह एक व्यापक उद्देश्य था जिसमें अनेक उद्देश्य समाहित थे। पूर्णता की प्राप्ति इसी उद्देश्य का मूल था। वे कहते हैं कि व्यक्ति दूसरों के कल्याण के लिए तभी कार्य कर सकता है जब उसमें त्याग की भावना हो। आज भारत को ही नहीं सम्पूर्ण विश्व को इस भावना की आवश्यकता है। स्वामी जी के जीवन से हमें त्याग की अपूर्व शिक्षा मिलती है। शिक्षा द्वारा हमें यह बोध होता है। कि–"विश्व के प्रति हमारा बहुत बड़ा कर्तव्य है। हम उसके ऋणी है, वह हमारा ऋणी नहीं है। यह बड़े सौभाग्य की बात है कि हमें विश्व के प्रति कुछ करने का अवसर मिल सके।"

पाठ्यचर्या

स्वामी विवेकानन्द शैक्षिक उद्देश्यों की ही भाँति शिक्षा की व्यापक पाठ्यचर्या को प्रस्तुत करते हैं। इन्होंने शिक्षा की पाठ्चर्या में मनुष्य के शरीरिक विकास हेतु खेलकूद, व्यायाम और यौगिक क्रियाओं को प्रस्तुत किया तथा बौद्धिक विकास के लिए भाषा, कला, संगीत, सामाजिक विषय, गणित तथा वैज्ञानिक विषयों को पाठ्यक्रम में समाहित करने का सुझाव दिया। भाषाओं को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया क्योंकि धर्म–दर्शन को समझने हेतु भाषा ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है और इसमें भी मातृभाषा को सर्वधिक महत्व प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त पाठ्यक्रम में चित्रकला, वास्तुकला, संगीत, नृत्य व अभिनय को भी स्थान दिया गया। धर्म व नीतिशास्त्र के अतिरिक्त व्यावसायिक विषयों जैसे कृषि, विज्ञान, तकनीकी, उद्योग तथा कला कौशल आदि को शामिल किया गया। इस प्रकार पाठ्यक्रम की एक विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की गई।

शिक्षण पद्धति

स्वामी जी का मानवीय पूर्णता के हिमायती थे। वे भौतिक व

 ISBN : 978-93-80216-12-6

आध्यात्मिक दोनों पक्षों का विकास चाहते थे। मानवीय ज्ञान के दोनों पक्षों हेतु इन्होंने पृथक–पृथक शिक्षण विधियों के अपनाने पर बल दिया। भौतिक ज्ञान की प्राप्ति हेतु प्रत्यक्ष, अनुकरण, व्याख्यान, विचार–विमर्श और प्रायोगिक विधियों का सुझाव दिया तथा आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति हेतु स्वाध्याय, मनन, ध्यान और योग विधि को अपनाने पर बल दिया।

स्वामी जी ज्ञार्नाजन हेतु ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता पर बल देते थे वे कहते हैं–

"केवल एक ही मार्ग है जिसके द्वारा ज्ञान अर्जित किया जा सकता है" वह है ध्यान का केन्द्रीकरण। केन्द्रीकरण से शक्ति और बल की उपलब्धि होती है। मानव के मन की शक्ति की कोई सीमा नहीं है। ध्यान के केन्द्रीकरण की भक्ति जितनी घनी होगी किसी बात को उतनी अधिक शक्ति से ग्रहण किया जा सकेगा; यह एक रहस्य है।

ज्ञानार्जन के लिए ध्यान का केन्द्रीकरण ही सर्वोत्तम मार्ग है। कहा भी गया है कि एकाग्रता ही आत्मसाक्षात्कार की कुंजी है। जीवन की सफलता के लिए इसी शक्ति की आवश्यकता होती है और यही भक्ति शिक्षा का सार है।

शिक्षक की भूमिका

स्वामी जी के अनुसार शिक्षक की उन्नति उसके चरित्र से प्रतिबिम्बित होती है शिक्षक को त्यागी, पुरुषार्थी व परोपकारी होना चाहिए। एक आदर्श शिक्षक मन व हृदय से पवित्र होता है। भारतवर्ष में त्यागवान व परोपकारी महापुरुषों द्वारा ही उत्तम प्रकार की शिक्षा देने की व्यवस्था थी। वे कहते हैं कि यदि हमारे शिक्षक सच्चे अर्थों में गुरु बनना चाहते हैं तो उन्हें निःस्वार्थ सेवा की दृष्टि अपनानी होगी।

शिक्षक बालक में केवल बौद्धिक जिज्ञासा ही उत्पन्न न करे, वरन् अपने आदर्श चरित्र से भी उसे प्रभावित करे।

"शिक्षक का कर्तव्य वास्तव में ऐसा कार्य है कि वह शिष्य में

 ISBN : 978-93-80216-12-6

उपस्थित बौद्धिक और दूसरी क्षमताओं की प्रेरणा ही पैदा न करें वरन् कुछ अपना आदर्श भी उसे दे। वह आदर्श वास्तविक और प्रशंसनीय होना चाहिए जो शिष्य को मिले, क्योंकि शिक्षक के आदर्श व्यवहार का प्रभाव बालकों के व्यवहार को प्रभावित करता है। अतः शिक्षक में पवित्रता होनी चाहिए। शिक्षक में अपने शिष्यों के प्रति अगाध प्रेम होना चाहिए। बिना प्रेम के शिक्षक शिष्यों को कुछ नहीं अर्पित कर सकता। उसमें किसी भी प्रकार का स्वार्थ नहीं होना चाहिए। वह सच्चे प्रेम से मार्गदर्शन ले। आध्यात्मिक बल को विकसित करने का प्रेम ही सबसे अच्छा माध्यम है। स्वार्थ के कारण प्रेम नष्ट हो जाता है। अतः शिक्षक को चाहिए कि वह अपने शिष्यों के लिए प्रेम से वशीभूत होकर ही कार्य करे। शिक्षक में शिष्यों के प्रति अपार सहानुभूति होनी चाहिए।"

शिक्षक सहानुभूति द्वारा ही बालकों के स्तर की अनुभूति कर सकता है और उनमें अन्तर्निहित प्रवृत्तियों को समझ सकता है तभी उसका शिक्षण उनकी आवश्यकताओं के अनुकूल होगा। स्वामी विवेकानन्द शिक्षक के लिए आवश्यक आदर्श प्रस्तुत करते हुए कहते हैं:–"सच्चा गुरु वह है जो तुरन्त ही बालकों के स्तर तक उतर आए और अपनी आत्मा को उनकी आत्मा में स्थानान्तरित कर सके, उनकी आँखों से देख सके, उनके कानों से सुन सके और उनके मन से समझ सके। ऐसा ही शिक्षक वास्तव में पढ़ा सकता है और कोई नहीं।"

शिक्षार्थी के गुण

स्वामी जी के अनुसार भौतिक एवं आध्यात्मिक किसी भी प्रकार के ज्ञान की प्राप्ति हेतु ब्रह्मचर्य आवश्यक है। ब्रह्मचर्य द्वारा अल्प समय में ही आधिकारिक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। मन, वचन आक्र कर्म में पवित्रता एवं संयम का होना ही ब्रह्मचर्य है। प्रत्येक बालक और बालिका को ब्रह्मचर्य से रहने की शिक्षा मिलनी चाहिए जिससे वे ध्यान केन्द्रित करने की शक्ति पा सकें और सच्ची शिक्षा ग्रहण

 ISBN : 978-93-80216-12-6

कर सकें। उच्च कोटि के ज्ञानार्जन के लिए श्रद्धा व इन्द्रिय संयम दो आवश्यक भार्तें है। शिक्षक की ही भाँति शिक्षार्थी के विचार और वाणी में पवित्रता होनी आवश्यक है। शिक्षार्थी में ज्ञानार्जन के लिए उत्साह, उत्कंठा व वास्तविक रूप से ज्ञानपिपासा होनी चाहिए। गुरु–शिष्य का सम्बन्ध लौकिक ही नहीं होना चाहिए अपितु उन्हें एक दूसरे के दिव्य स्वरूप को भी जानना चाहिए।

विद्यालय की भूमिका

स्वामी विवेकानन्द गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के समर्थक थे। वे सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था में विद्यालय वातावरण को महत्वपूर्ण मानते थे और कहते थे कि विद्यार्थी के व्यक्तित्व निर्माण हेतु विद्यालय का वातावरण प्रभावपूर्ण होता है। समाज सेवा व राष्ट्र सेवा के प्रति ललक को जाग्रत करने के केन्द्र के रूप में विद्यालयों को विकसित किया जाना चाहिए। स्वामी जी के अनुसार विद्यालयों का प्राकृतिक वातावरण शुद्ध होना चाहिए तथा विद्यालयों को समाज का सच्चा प्रतिनिधि होना चाहिए। स्वामी जी विद्यालयों को विविध प्रकार की गतिविधियों के केन्द्र के रूप में विकसित करना चाहते थे। वर्तमान में अपेक्षित वातावरण का सृजन एक चुनौती बना हुआ है।

सार्वभौमिक धर्म के संवाहक के रूप में स्वामी विवेकानन्द

स्वामी विवेकानन्द आध्यात्मिक सन्दर्भों में भारत की विजय पताका विश्व भर में फहराना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने वेदान्त के व्यावहारिक रूप, नव्य वेदान्त को आधार बनाया जिसको समुन्नत कर वे विश्व धर्म के रूप में प्रतिष्ठित करने के पक्षधर थे।

कोलम्बों में भाषण करते समय स्वामी जी ने कहा था:–"एक बार फिर विश्व पर भारत की विजय होनी चाहिए। यह मेरा स्वप्न है और मैं चाहता हूँ कि मुझे सुनने वाले प्रत्येक व्यक्ति में यही स्वप्न पैदा हो। प्रतिदिन उनसे आप यही सुनेंगे कि पहले घर की परवाह करो,

 ISBN : 978-93-80216-12-6

तब बाहरी क्षेत्र में कार्य करो। परन्तु मैं आप लोगों को साफ–साफ बता देना चाहता हूँ कि आप सबसे अच्छा कार्य तब करते हैं जब आप दूसरों के लिए कार्य कारते हैं। यह हमारे लिए महान आदर्श है और प्रत्येक को इसके लिए उद्यत हो जाना चाहिए। भारत द्वारा विश्व विजय हो.............हे भारत, उठ और अपनी आध्यात्मिकता से विश्व को जीत।"

स्वामी जी चाहते थे कि भारत में ऐसे आदर्श समाज की स्थापना हो जा भारतीय अध्यात्मवाद से अनुप्राणित और युरोपी एवं अमेरिकी धर्म निरपेक्ष संस्कृति से प्रभावित हो। स्वामी जी भारत के प्रमाद को दूर करके उसमें ऐसी चेतना भरना चाहते थे। जिससे वह स्वयंसेवक बनकर अपना भला कर से और विश्व के कल्याण के लिए भी कटिबद्ध हो। स्वामी जी सार्वभौम धर्म के प्रतिपादन हेतु निम्न विचार को प्रस्तुत करते हैं–

1. कोई धर्म किसी से हीन नहीं है।
2. सभी धर्मों का एक ही लक्ष्य है।
3. प्रत्येक को अपने–अपने धर्म में ही आस्था रखनी चाहिए।
4. ईश्वर सर्वव्यापी और निराकार है। वह पृथ्वी के सभी प्राणियों के रूप में अभिव्यक्त हुआ है।
5. हिन्दु सभ्यता अच्छी है, सुन्दर है और आध्यात्मिक है।
6. हिन्दू सभ्यता पहले की भाँति पुनः विश्व को अध्यात्मवाद की शिक्षा देगी।

स्वामी जी विश्व के सभी प्राणियों में एक ही परमात्मा की व्याप्ति मानते थे। अपने प्रयासों से विश्व शान्ति की स्थापना करना चाहते थे।

वर्तमान शैक्षिक एवं सामाजिक परिवेश में स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक चिन्तन की उपादेयता स्वामी विवेकानन्द युगदृष्टा के रूप में

भारतीय समाज में अवतरित हुए तथा युगसृष्टा के रूप मं उनके जीवन की परिणति हुई। अपने जीवन काल की अल्पावधि में ही उन्होंने भारत के नवनिर्माण की आधारशिला रखी। उनका सम्पूर्ण जीवन धर्म दर्शन की वैज्ञानिक व्याख्या करके सार्वभौमिक धर्म की स्थापना हेतु व समाज सुधार के कार्यों से राष्ट्र निर्माण हेतु समर्पित हुआ। भारत के नवनिर्माण हेतु इन्होंने शिक्षा की आवश्यता को सर्वोपरि रखा। शैक्षिक सुधारों के लिए ये सदैव प्रयासरत रहे और समाज के समक्ष शिक्षा का एक नवीन प्रगतिशील मॉडल रखा। इनके शैक्षिक माडल में समन्वयवाद के दर्शन होते हैं जिसमें प्रकृतिवाद, आदर्शवाद व प्रयोजनवाद का अद्भुत साम्य है। इस सामंजस्य को इन्होंने भारतीय शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में विधिवत् रखा है।

प्रकृतिवादी विचारधारा के पोषण हेतु वे कहते हैं कि:—बच्चों को स्वतंत्रता मिलनी चाहिए कि वे अपना मार्ग स्वयं खोजें, बच्चों पर कोई बात बलपूर्वक न लादी जाए। बच्चों में अनन्त प्रवृत्तियाँ होती है जिनका संतुष्ट होना आवश्यक है। यदि बालक पर कोई बात लादी गई तो उसका विकास कुंठित हो जाएगा। बच्चों को यदा कदा झिड़कना ठीक नहीं। दया, सहानुभूति और प्रोत्साहन उनके विकास में मदद देंगे। इन्हें ही प्रयोग में लाना आवश्यक है। बालक की गलतियों को बताना मात्र ठीक नहीं, यह बताना आवश्यक है कि वह किस मार्ग को अपनाने पर इन गलतियों से बच सकता है। हमारा कर्तव्य है कि हम बच्चों को उनकी प्रगति की सूचना देकर प्रोत्साहित करते रहें और प्रेरणा दें कि इससे भी अधिक उन्नति करें।

जनशिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा व स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में स्वामी विवेकानन्द का योगदान उल्लेखनीय है। इन्होंने उद्घोष किया कि भारत के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित करो और शिक्षा द्वारा उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कुशलतापूर्वक कार्य करने के लिए सक्षम करो, उसे स्वावलम्बी बनाओ, आत्मनिर्भर बनाओ, स्वाभिमानी बनाओ और इन सबसे ऊपर एक सच्चा

 ISBN : 978-93-80216-12-6

मनुष्य बनाओ जो मानव सेवा द्वारा ईश्वर की प्राप्ति में सफल हो।

स्वामी जी कहते हैं कि राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण हेतु राष्ट्रीय शिक्षा की आवश्यकता है। ये शिक्षा को राष्ट्रीय समृद्धि का प्रमुख साधन मानते हैं। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली पर विशेष बल देते हैं। इनके अनुसार शिक्षा प्रणाली का प्रारम्भ बालक के घरेलू वातावरण के परिचय से होना आवश्यक है। बाद में उसे गाँव, नगर, समाज और देश के वातावरण से परिचित कराना चाहिए। अन्त में जैसे–जैसे उसकी समझ बढ़ती जाए उसे पूर्ण मानवता के प्रति सहानुभूति रखने की सीख दी जा सकती है। पहले बालक को भारतीय परम्पराओं, प्रथाओं, संस्कृति और दर्शन से परिचित कराना आवश्यक है, बाद में विश्व के अन्य देशों की सभ्यता से बालक का परिचय कराना उपयुक्त होगा।

स्वामी विवेकानन्द के पुनरुत्थान सम्बन्धी कार्यों को अग्रलिखित बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है। तथा व्यावहारिक एवं नव्य वेदान्त के जनक स्वामी विवेकानन्द वेदान्त दर्शन को मानने वाले थे। इन्होंने वेदान्त दर्शन को सर्वथा एक नवीन रूप से स्वीकार किया जो आगे चलकर नव्य वेदान्त दर्शन को मानने वाले थे। इन्होंने वेदान्त दर्शन का यह रूप व्यापक था। स्वामी जी वेदांत दर्शन की व्यावहारिकता को जनमानस के समक्ष सरल रूप में व्यक्त करना चाहते थे। इनके अनुसार जनमानस को उन्नति के मार्ग पर ले जाना ही वेदांत का शुद्ध आचरण है।

सार्वभौम धर्म के प्रणेता : धर्म के प्रति स्वामी जी का दृष्टिकोण बड़ा वैज्ञानिक था। अद्वैत वेदांत को ये सार्वभौमिक विज्ञान धर्म की संज्ञा देते थे। स्वामी जी ने वदांत को आधुनिक परीप्रेक्षय में देखने एवं समझने और उसकी वैज्ञानिक व्याख्या करने का प्रयास किया। इन्होंने वेदांत दर्शन के आधार पर सार्वभौमिक एकातमकता और आध्यात्मिक बंधुत्व को महत्व दिया तथा सभी धर्म भेदों को भुलाकर सार्वभौम धर्म की स्थापना पर बल दिया जिससे विश्व शांति की संकल्पना को साकार

 ISBN : 978-93-80216-12-6

किया जा सके।

मानव निर्माण की शिक्षा के अग्रदूत : स्वामी जी संत एवं दार्शनिक होने के साथ. 2 उच्च कोटि के शिक्षाविद् भी थे। शिक्षविद् के रूप में इन्होंने मानव निर्माण की शिक्षा की रूपरेखा प्रस्तुत की। इनके अनुसार मनुष्य में पूर्णता पहले से ही निहित होती है और शिक्षा का कार्य मनुष्य को उस पूर्णता को अभिव्यक्त करना है।

संक्षिप्त रूप में विवेचना करें तो स्वामी विवेकानन्द ने राष्ट्र निर्माण व मानव निर्माण की शिक्षा, जन शिक्षा, समाज सुधार, धर्म दर्शन एवं सांस्कृतिक व आध्यात्मिक विकास के क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान दिया। यह कहना न्यायोचित ही होगा कि स्वामी विवेकानन्द पुनरुत्थित भारत की आवाज थे।

सन्दर्भ–

1. *चौबे, सरयू प्रसाद : भारतीय शिक्षा दर्शन, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा*
2. *लाल, रमन विहारी : भौक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ*
3. *पाण्डे, राम भाकल : प्राचीन भारत के शिक्षा मनीषी, भारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद*
4. *लाल, रमन बिहारी : विश्व के श्रेष्ठ भौक्षिक चिन्तक, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ*

5- *The complete works of Swam Vivekanand Vol I to VII Adivaita Asharam, Publication Deptt. Kolkata*

स्वामी विवेकानन्द के चिन्तन में मानवतावादी विचारधारा का प्रभाव

डॉ. विकास चन्द वरिष्ठ
रीडर, राजनीति विज्ञान विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ

विजय कुमार (शोध छात्र)
4राजनीति विज्ञान विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ

स्वामी विवेकानन्द जी आधुनिक भारत के ऐसे सन्यासी, दार्शनिक, विचारक और प्रचारक थे, जिन्होंने स्वयं तो राजनीति में कोई भाग नहीं लिया, परन्तु अपनी प्रखर प्रतिभा से देश में स्वतन्त्रता प्रेम की ज्योति जगाई, राष्ट्रीय गौरव के प्रति चेतना जागृत की और पश्चिम में भारतीय संस्कृति की धाक जमा दी।[1] उन्होंने कहा, "मैं राजनेता या राजनीतिक कार्यकर्ता नहीं हूँ, मैं केवल आत्मा का चिन्तन करता हूँ।" दक्षिणे वर सन्त के नाम से प्रसिद्ध विवेकानन्द ने देश–विदेश में अनेक भाषण दिये और पुस्तकों एवं लेखों के माध्यम से अपने विचार सम्पूर्ण विश्व में फैलाये। उन्होंने धर्म, राजनीतिक, शिक्षा, समानता, समाजवाद, लोकतन्त्र आदि सभी विषयों पर अपने विचार रखे, लेकिन उनके विचारों का मुख्य ध्येय मानव कल्याण रहा, इसी कारण से मानवतावादी विचारकों में स्वामी जी का नाम सदैव गर्व से लिया जाता है। यदि हम विवेकानन्द के विचारों का गहन अध्ययन करे तो हम पायेंगे कि उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव उन्नति एवं विकास में लगा दिया। इन्होंने अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस से जो मानव प्रेम पढ़ा, उसे कार्यरूप देने के लिए 1897 में कलकत्ता के पास बैलूर में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। स्वामी जी उस हर एक वस्तु के उपासक थे, जो मानव विकास का मार्ग सशक्त करती हो। जहाँ एक तरफ विवेकानन्द ने भारतीय संस्कृति की उपलब्धियों की भी सराहना की।[2] स्वामी जी जानते थे कि अगर आत्मा की शुद्धि में आवश्यकता होती है, तो भौतिक विकास के लिए तकनीक व विज्ञान की आवश्यकता होती है। स्वामी विवेकानन्द

 ISBN : 978-93-80216-12-6

की प्रशंसा करते हुए नेहरु जी ने कहा "भारत के अतित में अटल आस्था रखते हुए, भारत की विरासत पर गर्व करते हुए भी विवेकानन्द का जीवन की समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण आधुनिक था और वे भारत के अतीत तथा वर्तमान के बीच एक बड़े संयोजक थे। उनका लक्ष्य समाज सेवा के द्वारा मानवता की सेवा करना और शिक्षा के माध्यम से जनता में धर्मिक चेतना तथा सामाजिक जागरुकता को पैदा करना था।"[3]

स्वामी जी मानव में बहुत आस्था और विश्वास रखते थे। उनकों मनुष्य में ईश्वरीय सत्ता की अधिकतम अभिव्यक्ति मिलती है। उनके अनुसार मनुष्य परमात्मा का अंश है, उसकी प्रवृत्ति आध्यात्मिक है, वह ईश्वर की सर्वोच्च रचना है, उसमे जन्म से ही पूर्णता विद्यमान रहती है और उसमें आध्यात्मिक रूप को समझने की अद्भुत शक्ति है। उनके अनुसार मानव शरीर में मानव आत्मा की उपासना ही ईश्वर की उपासना है। इसमें कोई सन्देह नहीं की सभी जीव ईश्वर का मन्दिर हैं, परन्तु मानव का शरीर सबसे ऊँचा मन्दिर है–मन्दिरों का ताजमहल। जिस क्षण से मैंने मानव शरीर रूपी मन्दिर में ईश्वर की विद्यमानता अनुभव की है, उसी क्षण से मैं प्रत्येक मनुष्य के सम्मुख ईश्वर के दर्शन करने के लिए सत्कारपूर्ण खड़ा हो जाता हूँ।[4] स्वामी जी ने मानव और ईश्वर के शाश्वत एकाकार की शिक्षा दी। उन्होंने कहा कि, "यदि आप मानव की पूजा नहीं कर सकते जो ईश्वर का रूप है तो आप उस ईश्वर की पूजा कैसे कर सकते हैं जो अरूप है।" स्वामी जी यह मानते थे कि मानव सेवा से बढ़कर अन्य कोई धर्म नहीं है–"पत्थर की मूर्ती भोजन नहीं खाती, भूखे व्यक्ति को भोजन चाहिए।"[5]

स्वामी जी मानव जीवन के उत्थान में शिक्षा को अत्यधिक महत्व देते थे। इसलिए उन्होंने सदैव ऐसी शिक्षा व्यवस्था पर जो दिया जो जनसाधारण तक पहुँच सके। उन्होंने कहा था, "जब तक भारत का जनसमूह भली प्रकार शिक्षित नहीं हो जाता, भली प्रकार उसका पेट

 ISBN : 978-93-80216-12-6

नहीं भर जाता और उन्हें अच्छा संरक्षण नहीं मिलता, तब तक कोई भी राजनीति सफल नहीं हो सकी।"[6] उन्होंने ऐसी शिक्षा पर बल दिया जो जनमानस के चरित्र का निर्माण करके, मानव में समाज सेवा की भावना का निर्माण कर सके।

विवेकानन्द जी ने पश्चिम के ज्ञान विज्ञान की सैदव प्रशंसा की, मगर वे पश्चिमी देशों की साम्राज्यवादी नीतियों की आलोचना करते थे। उन्होंने एक व्यक्ति या एक राष्ट्र पर, दूसरे व्यक्ति या राष्ट्र की पराधीनता की सदैव निन्दा की। वे आध्यात्मिक व सामाजिक दोनों प्रकार की स्वतन्त्रता के समर्थक थे। वे कहते हैं–"जैसे पीड़ित मानवता की सेवा से मुँह मोड़कर ईश्वर की सेवा नहीं की जा सकती, वैसे ही पराधीन देश की स्वतन्त्रता की चिन्ता छोड़कर आध्यात्मिक स्वतन्त्रता की तलाश करना व्यर्थ है।"[7] उनके स्वतन्त्रता सम्बन्धी विचार मात्र राष्ट्रवाद से नहीं बल्कि मानवतावाद से प्रेरित थे, क्योंकि उन्होंने ब्राह्मणों के अधिकारवाद पर प्रहार करते हुए शूद्रों को सर्वोच्च आध्यात्मिक ज्ञान से वंचित रखने की प्रथा का कड़ा विरोध किया।[8]

विवेकानन्द के मन में दलितों के उद्धार के लिए जो उत्साह था, वह इन पंक्तियों से प्रकट होता है–"मुझे इस बात की चिन्ता नहीं कि वे हिन्दू हैं या मुसलमान अथवा ईसाई, किन्तु जिन्हें ईश्वर से प्रेम है, उनकी सेवा के लिए मैं सदैव तत्पर रहूँगा। हम हम में से प्रत्येक पुरोहितों के जंजाल तथा अत्याचार में जकड़े हुए हैं।" मैं न तत्व शास्त्री हूँ, न दार्शनिक और मैं सन्त भी नहीं हूँ। मैं दरिद्र हूँ और मुझे दरिद्रों से प्रेम है। मैं उसी को महात्मा कहता हूँ–जिसका हृदय दूसरों के लिए द्रवित होता है। जब तक करोड़ों लोग भूखमरी और अज्ञान के शिकार है तब तक मैं उस प्रत्येक व्यक्ति को विश्वासघाती समझता हूँ, जो उनके धन से शिक्षा पाकर उन की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देता।[9]

स्वामी विवेकानन्द की रुचि प्रधानतः धर्म तथा दर्शन में थी। उनके

 ISBN : 978-93-80216-12-6

चिन्तन का मुख्य आधार वेदान्त की शिक्षाएँ थी। विवेकानन्द ने वेदान्त के अन्तर्गत इस तथ्य को प्रस्तुत किया कि "वेदान्त उस ईश्वर में विश्वास नहीं करता है जो मृत्यु के पश्चात स्वर्ग में समस्त सुख दे सकता है, किन्तु जीवित व्यक्तियों को रोटी उपलब्ध नहीं कर सकता। उनका वेदान्त दर्शन इन तीन मुख्य स्तम्भों पर आधारित था–(1) मानव की वास्तविक प्रकृति ईश्वरीय है, (2) जीवन का लक्ष्य उस ईश्वरीय प्रकृति की अनुभूति है, (3) समस्त धर्मो का मूल लक्ष्य सामान है। स्वामी जी ने वेदान्त और दर्शन से जो आध्यत्मिक प्रेरणा प्राप्त की, उसे उन्होंने मानवता की सेवा का रूप दे दिया।"[10]

विवेकानन्द धर्म को मानव जीवन के लिए अति आवश्यक मानते थे, इसलिए उन्होंने धर्म को व्यक्ति तथा राष्ट्र दोनों को भक्ति प्रदान करने वाला तत्व बताया। धर्म के सार और सर्वस्व को स्वामी विवेकानन्द ने इन शब्दों में व्यक्त किया–"प्रत्येक आत्मा ही अव्यक्त ब्रह्म है। ब्रह्म एवं अन्तप्रकृति, दोनों का नियमन कर इस अन्तनिर्हित ब्रह्म स्वरूप को अभिव्यक्ति करना ही जीवन का ध्येय है। कर्म, भक्ति, योग या ज्ञान के द्वारा या सबके समिलन के द्वारा यह ध्येय प्राप्त कर लो और मुक्त हो जाओ।"

स्वामी विवेकानन्द ने हिन्दू धर्म का इस आधार पर समर्थन किया कि वह नैतिक मानववाद और आध्यात्मिक आदर्शवाद का एक सार्वभौम संदेश है। विवेकानन्द की दृष्टि में कर्मकाण्डों का पुंज नहीं था, जिन्हें देखने के लिए पल्लवग्राही यूरोपियन आलोचक दुर्भाग्यवश सदैव इच्छुक रहता है। उनकी निगाह में हिन्दू धर्म मानव जाति के उद्धार के लिए नैतिक तथा आध्यात्मिक विधानों आदि कालनिरपेक्ष नियमों की संहिता था–एते जातिदेशकालसमयानवच्छिन्ना सार्वभोमाः महाव्रतम्।[11]

हिन्दू धर्म का उन पर प्रभाव जरूर था, मगर धार्मिक मामलों में किसी संर्कीणता के वे विरोधी थे। उन्होंने 1898 में लिखा–हमारी मातृभूमि के लिए दो महान प्रणालियों हिन्दू धर्म और इस्लाम धर्म का संगम

 ISBN : 978-93-80216-12-6

ही एक मात्र आशा है।[12] 1893 में शिकागों धर्म सम्मेलन में भी उन्होंने सर्वधर्म समानता कि बात कही। उन्होंने कहा–"जिस प्रकार सभी धारायें अपने जल को सागर में ले जाकर मिला देती हैं, उसी प्रकार मनुष्य के सारे धर्म ईश्वर की ओर ले जाते हैं।"[13]

स्वामी विवेकानन्द ने समाजवाद में अपनी आस्था रखते हुए, इसकी संकल्पना अपने ढंग से की। भारतक की निर्धनता के प्रति उनके मन में जो चिन्ता थी, उसने उन्हें समाजवाद की ओर आकर्षित किया। उन्होंने यह घोषणा कि–"मैं समाजवादी हूँ, इसलिए नहीं कि मेरी दृष्टि में यह कोई सर्वगुण सम्पन्न प्रणाली है, बल्कि इसलिए कि भूखे रहने से तो आधी रोटी पा लेना अच्छा है।"[14] विवेकानन्द समाजवादी इसलिए भी थे, क्योंकि उन्होंने देश के सब निवासियों के लिए 'समान अवसर' के सिद्धान्त का समर्थन किया। उन्होंने लिखा–"यदि प्रकृति कुछ को कम अवसर दिया जाये तो दुर्बलों को सबलों से अधिक और अवसर चाहिए।"[15] विवेकानन्द के अनुसार, आदर्श समाजवादी समाज में किसी के शोषण की कोई गुंजाईश नहीं रहेगी। उसमें अन्न उगाने वाले को भूखा नहीं रहना पड़ेगा, वस्त्र बुनने वाले को स्वयं नंगा नहीं रहना पड़ेगा, जूता सिलने वाले को स्वयं नंगे पैर नहीं चलना पड़ेगा, सफाई करने वाले को गंदगी में नहीं रहना पड़ेगा।[16]

स्वामी जी राष्ट्रवाद के समर्थक थे। उनका राष्ट्रवाद रचनात्मक विशुद्ध था। संकीर्णता, स्वार्थपरता, जातिवाद तथा क्षेत्रवाद से उनका कुछ लेना देना नहीं था, जो कि राष्ट्रवाद को आक्रामक और उग्रवादी बनाते हैं। यह रचनात्मक इसलिए था, क्योंकि यह गरीबों की सेवा कार्य से सम्बन्धित था, दूसरों से घृणा करने से नहिीं। यह विशुद्ध इसलिए था, क्योंकि वह चाहते थे कि भारत मानवता की सेवा के कार्य में महान और मजबूत बने। अपने असंख्य भाशणों और पत्रों में उन्होंने मानव एकता पर जोर दिया जो कि उनके मत में वेदान्त की प्रमुख शिक्षा थी।[17] उन्होंने कहा–राष्ट्र व्यक्तियों से बनता है, अतः सब व्यक्तियों को अपने

 ISBN : 978-93-80216-12-6

पुरुशत्व, मानव गरिमा तथा सम्मान की भावना आदि श्रेष्ठ गुणों का विकास करना चाहिए। उन्हीं के शब्दों में, "आवश्यकता इस बात की है कि व्यक्ति अपने अहं का देश और राष्ट्र की अवयवी प्रकृति का कितना ही गुणगान क्यों ना करें, पर वास्तव में व्यक्ति ही राष्ट्रीय ढांचे के घटक होते हैं, इसलिए जब तक व्यक्ति स्वस्थ, नैतिक तथा दयालु नहीं होंगे तब तक राष्ट्र की महानता तथा समृद्धि की आशा करना व्यर्थ है।"

हिन्दू नैपोलियन[19] के नाम से प्रसिद्ध स्वामी विवेकानन्द प्रधानतः भिक्षु, धर्मोपदेशक तथा सन्यासी थे, किन्तु उनके हृदय में जनता के लिए प्रगाढ़ प्रेम था। विवेकानन्द जनता महत्व की दृष्टि से अपने समय से बहुत आगे थे। उन्होंने जनता के शोषण का विरोध तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति तथा धर्म की प्रसंशा की। वे न तो क्रान्तिकारी थे और न ही दकियानूसी विचारों के। उनके सभी विचारों मानव मात्र की सेवा से प्रेरित थे, वे चाहे दरिद्रों के उत्थान से सम्बन्धित हो या धर्म से या फिर राष्ट्रवाद और समाजवाद से। धर्म, अध्यात्म और विज्ञान के जिस सामंजस्य की वे बात करते थे, वह तब और वर्तमान दोनों कालों में उपयोगी है। उनके समानता, स्वतन्त्रता, मानव प्रेम, नारी व दरिद्र उत्थान, धर्म राष्ट्रवाद आदि सभी साम्प्रदायिकता के समाधान के रूप में उनका संदेश, "गर्व से कहो, मैं भारतीय हूँ, सारे भारतीय मेरे बन्धु हैं–चाहे उनमें कोई दरिद्र और पतित हो और चाहे कोई सम्पन्न और माननीय हो, हर कोई मेरा बन्धु है।" बहुत उपयोगी है। उनका मानववाद साधारण मानववाद से बहुत आगे व विस्तृत था, क्योंकि उनका प्रथम और अन्तिम लक्ष्य मानव जाति की सेवा व उत्थान से सम्बद्ध था।

सन्दर्भ–

1. *गाबा ओ. पी., "राजनीतिक चिन्तन की रूपरेखा", पेज–376*
2. *सिंह एम.पी. व हिमांशु राय (सम्पादक), "भारतीय राजनीतिक चिन्तन", एम.बी.एस. 2000, पेज–95*

 ISBN : 978-93-80216-12-6

3. पचौरी गिरीश व रितू पचौरी, "उभरते भारतीय समाज में शिक्षक की भूमिका", आर. लाल. बुक डिपों, मेरठ–2011, पेज–315
4. "वही", पेज.–317
5. "वही", पेज–318
6. "वही", पेज–324
7. गाबा ओ.पी., "राजनीतिक चिन्तन की रूपरेखा", पूर्वोक्त, पेज–378
8. "वही", पेज–377
9. वर्मा वी.पी., "आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन", लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा–2004 पेज.–185
10. फडिया बी.एल., "आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन", साहित्य भव पब्लिकेशन आगरा–2004, पेज–49
11. वर्मा वी.पी., "पूर्वोक्त", पेज–181
12. फडिया बी.एल., "पूर्वोक्त", पेज–50
13. पाण्डे एस.के.,"आधुनिक भारत", प्रयाग एकेडमी पब्लिकेशन, इलाहाबाद–2013, पेज–192
14. गाबा ओ.पी., "राजनीति–विचारक विश्वकोश", मयूर पैपरबैक्स, नौएडा–2007, पेज–389
15. फडिया बी.एल., "पूर्वोक्त", पेज–53
16. गाबा ओ.पी., "राजनीति–विचारक विश्व कोश" मयूर पैपरबैक्स, नौएडा–2007 पेज–389
17. सिंह एम.पी. व हिमांशु राय (सम्पादक), "पूर्वोक्त", पेज–210 व 211
18. फडिया बी.एल., "पूर्वोक्त", पेज–53
19. वर्मा वी.पी., "पूर्वोक्त", पेज–180

 ISBN : 978-93-80216-12-6

स्वामी विवेकानन्द एक युवा आदर्श

रंजीता रानी (शोधार्थी)
चौ. च. सि. विश्वविद्यालय
मेरठ

डॉ. हरिन्द्र कुमार
असि. प्रो.–समाजशास्त्र विभाग
कु.मा.रा.म.स्ना.महा.
बादलपुर,

कृषि प्रधान देश होते हुए भी भारत पूर्णतः आत्म–निर्भर नहीं हैं जहाँ एक ओर भारत के पास भौतिक संसाधन सीमित हैं वही ये भौतिक संसाधन अविकसित भी हैं। मानव संसाधन, संरचनात्मक दृष्टि से तो प्रबल स्थिति में हैं, किन्तु गुणात्मक दृष्टि से पिछड़े हुए हैं अर्थात कुशल, योग्य, अनुभव जन शक्ति का अभाव है। प्राकृतिक दृष्टि से सम्पन्न होते हुए भी वे प्राकृतिक संसाधनों का पूरा–पूरा उपयोग नहीं कर पा रहे हैं।

लेकिन अब भारत परम्परागत समाज से आधुनिक समाज की ओर आगे बढ़ने का प्रयास रहा है। वह आधुनिक समाज की भाँति विज्ञान पर आधारित विज्ञान व टैक्नोलॉजी के अविश्कारों, नियमों, प्रक्रियाओं, एवं सिद्धान्तों का उपयोग और विकास कर रहा है।

स्वामी विवेकानन्द ने ऐसे ही भारत की कल्पना की, जहाँ उन्होंने नई युवा शक्ति को आगे बढ़ने, वीर, कर्मठ और निर्भय बनने का सुझाव दिया और लोगों से कहा–'वीर बनो! हमेशा कहो, मैं निभर्य हूँ, सबसे कहो–डरो मत, भय मुक्त है, भय पाप है, मन नर्क है, भय अधार्मिकता है एवं भय का जीवन में कोई स्थान नहीं है।' यही उनके जीवन–दर्शन का सार है।

जीवन दर्शन–स्वामी विवेकानन्द अपनी अदभुत स्मरण शक्ति, सुन्दर शरीर, प्रखर प्रतिभा और बातचीत के अलौकिक ढ़ंग के कारण लोकप्रिय बन गये। 18 वर्ष की अल्पायु में ही दिव्य ज्ञान की तीव्र पिपासा से प्रेरित होकर उन्होंने रामकृष्ण परमहंस से भेट की और 6 वर्षों तक

 ISBN : 978-93-80216-12-6

परम पूज्य गुरु के अनुभवों से प्रेरित होकर वे नरेन्द्र नाथ दत्त से स्वामी विवेकानन्द बन गये उन्होंने पाश्चात्य देशों में भावात्मक तथा भारत में क्रियात्मक वेदान्त का प्रचार कर हिन्दू धर्म की महानता को फैलाकर विश्व बंधुत्व पर बल दिया। स्वामी विवेकानन्द का जीवन–दर्शन नई युवा शक्ति और सम्पूर्ण मानवता के लिये अत्यन्त गौरवपूर्ण प्रेरणादायक रहा है, उनके अनुसार जीवन एक संघर्ष हे, जिसमें केवल समर्थ की विजय होती है। अतः मनुष्य को जीवित रहने के लिए जीवन की प्रत्येक चुनौती का डटकर संघर्ष करना चाहिए, लेकिन जब स्वामी विवेकानन्द जी ने तत्कालीन भारतीय जनता के कष्टों को देखा, उन्होंने दुखी होकर कहा–"आज हम लोग दीन–हीन हो गये हैं। हम प्रत्येक कार्य को दूसरों के डर से करते हैं, डरते हुए बोलते हैं तथा डरते हुए सोचते हैं, ऐसा लगता है कि हमने शत्रुओं के देश में जन्म लिया है, मित्रों के नहीं।" शीरू, मलीन और उदासीन व्यक्ति अपने जीवन में किसी कार्य को तब तक नहीं कर सकता, जब तक वह भय मुक्त हाकर अभय न बने, किसी के सुख–दुःख को न समझे अतः आवश्यक है कि व्यक्ति अपने आत्म को पहचाने, जो कि धर्म है और आत्मा प्रत्येक प्राणी में विद्यमान है। यही स्वामी विवेकानन्द के जीवन–दर्शन का सार है–अभय होकर संघर्श के द्वारा मानवता की सेवा करना। वे भारतीय युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा व नई ऊर्जा शक्ति के स्रोत थे।

शिक्षा के प्रति विस्तृत दृष्टिकोण–जहाँ उन्होंने पाश्चात्य विद्वानों का अध्ययन करके तकनीकी शिक्षा पर बल दिया, जिससे उद्योग–धन्धे विकसित हो सके तथा हमारा देश पुनः धन–धान्य से परिपूर्ण हो जाये वहीं उन्होंने सैद्धान्तिक शिक्षा का खण्डन करते हुए व्यवहारिक शिक्षा पर बल दिया।

शिक्षा–शिक्षा उस सन्निहित पूर्णता का प्रकाश है, जो मनुष्य में पहले से ही विद्यमान है वह शिक्षा जो बालक या व्यक्ति का चारित्रिक निर्माण करें, अतः इस हेतु आवश्यक है कि उसका शारीरिक, मानसिक नैतिक,

 ISBN : 978-93-80216-12-6

आध्यात्मिक, धार्मिक विकास हो, अच्छा व्यवहार, आचरण एवं संस्कार विकसित हों। इस सर्वांगीण विकास का मार्ग उसे उन्नति की ओर अग्रसर करेगा। जहाँ उसमें विभिन्नता में एकता की खोज, आत्मविश्वास, आत्म–नियन्त्रण, श्रद्धा एवं आत्मत्याग की भावना विकसित होगी। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो मनुष्य के अन्तर्निहित ज्ञान अर्थात् पूर्णत्व की अभिव्यक्ति करे। स्वामी विवेकानन्द जी को स्वः शिक्षा में विश्वास था।

भारत में युवाशक्ति की कमी नहीं परन्तु युवाशक्ति का संगठन व उसका सदुपयोग आवश्यक है। यह कार्य शिक्षा द्वारा ही सम्पन्न हो सकता है, युवाशक्ति को शिक्षित करके उसे उत्पादक कार्यों में लगाना आवश्यक है। आर्थिक विकास में 5M' की आवश्यकता पड़ती है। Men, Money, Material, Machinery - Methods और सबसे महत्वपूर्ण मानव है। यदि मानव शक्ति का संतुलित विकास किया जाए तो अन्य तत्वों का विकास स्वतः हो जायेगा। एक चीनी कहावत है–"यदि आप एक वर्ष के लिए योजना बना रहे हैं तो अनाज बोओ, यदि आप दस वर्षों की योजना बना रहे हैं, तो मानव तैयार करो।" स्वामी विवेकानन्द भी यही कहते थे कि वास्तव में यह शिक्षा, शिक्षा है जो मानव का निर्माण करें, यदि आज की युवा पीढ़ी अपने हाथ, पाँव, कान व आँखों के उचित प्रयोग के लिए अपनी बुद्धि का प्रयोग करना सीख ले तो सारी बात सरल हो जायेगी। उत्तम एवं विकासशील वालों मानव चारित्रिक एवं नैतिक वर्ग में आते है, उनको संवदेनशीलता त्याग की भावना, दूसरों के दुख–सुख में शरीक होना, आत्म–नियंत्रण, सत्य, साहस, उच्च आदर्श, उत्तरदायित्व की भावना परिश्रम एवं ईमानदारी से धन कमाना आदि गुण विकसित होने चाहिए। इसका तात्पर्य है कि मानव शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ हों। स्वामी विवेकानन्द ने नौजवानों से कहा–"मेरे नौजवान मित्रों! तुम पहले बलवान बनो। धर्म पीछे आयेगा। गीता के मार्ग की अपेक्षा फुटबाल के माध्यम से स्वर्ग अधिक नजदीक है। यदि तुम्हारे पुट्ठे और मांसपेशियां अधिक बलशाली होंगी तो गीता

 ISBN : 978-93-80216-12-6

अधिक समझ में आयेगी।" उन्होंने बार–बार कहा "दुर्बलता मृत्यु है" क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिस्क वास करता है।

ज्ञान–जो मानव–मस्तिस्क में पहले से ही विद्यमान है क्योंकि ज्ञान कोई बाहर की वस्तु नहीं है, उसे व्यक्तिगत निर्देशन और परामर्श द्वारा उचित मार्ग पर अग्रसर कर व्याख्यान, तर्क, विचार–विमर्श, तर्क–वितर्क चिन्तन–मनन, वाद–विवाद, स्वानुभाव और रचनात्मक कार्यों द्वारा अर्जित करना चाहिए। उन्होंने स्वयं कहा–'अपनी अन्दर जाओ और उपनिशदों को अपने में से बाहर निकालो, तुम सबसे महान पुस्तक हो, जो कभी थी अथवा होगी। जब तक अन्तरात्मा नहीं खुलती, समस्त बाह्य शिक्षण व्यर्थ है।

बालक–स्वामी विवेकानन्द जी कहते हैं कि "ज्ञान स्वयं व्यक्ति के मन में निहित है" वह बाहर की वस्तु नहीं है अतः वह स्वयं सीखता है, क्योंकि ज्ञान, बालक की आन्तरिक, मूल प्रवृत्ति अथवा जन्मजात भक्तियों के रूप में रुचि, क्षमता व योग्यता के रूप में विद्यमान है, जिसका विकास शिक्षा के द्वारा होता है, लेकिन उसकी पुस्तकों का अध्ययन ही शिक्षा नहीं है, मन, वचन एवं कर्म की शुद्धि, चिन्तन की एकाग्रता भी आवश्यक है। अतः आज आवश्यक है कि आज की युवा पीढ़ी में, सकारात्मक सोच, दृष्टिकोंण, चिन्तन, खोज एवं वैज्ञानिक अभिवृत्ति को विकसित किया जाए, ताकि ज्ञान की प्रबल धारा को सृजन, उत्पादन, खोज, शोध की आरे ले जाया जा सके।

स्वामी विवेकानन्द जी के जन्म उपलक्ष्य में ही 12 जनवरी को युवा वर्ष बनाया जाता है, जो युवा पीढ़ी आज कार्यशील है, दक्षता व कौशलपूर्ण कलाओं व व्यवहारों से भरपूर है, वे देश को आगे ले जाने में ऐसे महात्मा से सदा ही प्रेरणा लेते रहे और परिवार, समाज व राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर पहुँचाने में अपना योगदान देते रहें। ज्ञान प्राप्ति हेतु जीवन–संघर्ष आवश्यक है, तभी वह जीवन में प्रशिक्षित हो सकेगा। उन्हें तो केवल स्वतः प्रयास व परिश्रम से ज्ञान की खोज

करनी है, अर्थात् विद्यमान पूर्णता को अभिव्यक्त करना है शिक्षक का कार्य तो केवल पर्यवेक्षक मार्ग दर्शक, मित्रता व सहायक के रूप में होना चाहिए जिससे ज्ञान अन्दर से बाहर आए, तभी पश्चिमी विज्ञान व वेदान्त का संयोग होगा और उसके लिए आवश्यक है कि उसमें निम्न गुणों का होना जैसे–

* एकाग्रचित
* मन, वचन, कर्म की शुद्धि
* चित–वृत्तियों का निरोध
* आत्म नियंत्रण
* आत्मनिर्भरता
* सहनशीलता आदि

यही स्वामी विवेकानन्द जी का जीवन दर्शन है कि भारतीय युवा पीढ़ी सदा ही आगे बढ़े क्योंकि उनके अनुसार प्रत्येक बालक स्वयं शिक्षक हैं जो स्वयं अपनी आयु के अनुसार व रुचि, योग्यता, क्षमतानुसार सीखता है जैसे हम पौधे को तुरन्त बढ़ाकर विकसित नहीं कर सकते, वह तो अच्छी खाद्य, पानी आदि से समयानुसार ही विकसित होता है। अतः प्रत्येक बालक को इस बात का अवसर दिया जाना चाहिए कि उसकी प्रकृति में जो कुछ सर्वोत्तम है उसे व्यवहार में अपना सके और उस पर विचार कर सकें मनुष्य का बौद्धिक विकास उसके नैतिक और आवेगमयी प्रकृति पर निर्भर करता है। अर्थात् वह ज्ञान प्राप्ति हेतु संवेदनशील हो वह सदा प्रयासरत रहे।

मूल्यांकन

* स्वामी विवेकानन्द जी भारतीय युवा पीढ़ी के लिए अप्रतिम व्यक्तित्व थे, जिन्होंने पाश्चात्य दृष्टि कोण को बदलने पर बल दिया और आध्यात्मिकता पर बल दिया।

 ISBN : 978-93-80216-12-6

* उन्होंने बालक को प्रोत्साहित करने वाले वातावरण को सुखद, सम्पन्न, मनोहारी और उत्साहवर्धक बनाने पर बल दिया जिससे बालक की बहुमुखी रुचियों को जागृत कर उन्हें विकासात्मक क्रियाओं की ओर लगाकर जीवन को सुखदपूर्ण बनाया जा सके।

* उन्होंने जनतांत्रिक पद्धति पर बल दिया, जहाँ सर्वधर्म सम्भाव की भावना से ओतप्रोत युवा पीढ़ी को शैक्षिक समानता के अवसरों का लाभ मिल सके, उनमें सहयोग के साथ रहने की कला विकसित हो।

* शिक्षा का पाठ्यक्रम सैद्धान्तिक होने के साथ–साथ व्यवसायिक व तकनीकी होने पर बल दिया, जिससे नई युवा पीढ़ी अपनी रचनात्मक तथा सृजनात्मक क्षमताओं का प्रयोग खोज, शोध, उत्पादन व सृजन जैसी क्रियाओं में कर सके।

* उन्होंने प्रशिक्षित शिक्षकों पर बल दिया जहाँ शिक्षक अपने निर्देशन में बालक का निरीक्षण करते हैं व उसकी समस्या का समाधान करते हैं, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए स्वयं शिक्षक है, बाह्य शिक्षक केवल सुझाव प्रस्तुत करता है।

* स्वामी विवेकानन्द जी ने चारित्र निर्माण व नैतिकता के विकास पर पर्याप्त बिल दिया जहाँ उन्होंने आध्यात्मिकता का प्रसार किया, वहीं विश्व बन्धुत्व का भी प्रचार किया इस प्रकार वे वसुधैव कुटुम्बकम की भावना विकसित करने पर बल देते थे कि सारा संसार एक परिवार की भाँति है।

वे हृदय से आदर्शवादी थे, उन्होंने अपने विचारों को क्रियात्मक रूप भी प्रदान किया। उन्होंने सर्वप्रथम आध्यात्मिक विकास, भौतिक समृद्धि, जीवन रक्षा और भोजन की समस्याओं के सुलझाने पर बल दिया ताकि एक सुदृढ़ एवं शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण हो सके। स्वामी विवेकानन्द अद्भुत प्रतिभा के व्यक्तित्व के धनी थे जो युवाओं के लिए सदा ही आदर्श रहे।

 ISBN : 978-93-80216-12-6

सन्दर्भ–

1. गुप्ता, एस एवं अग्रवाल, जी.सी. उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, शिप्रा पब्लिकेशन्स दिल्ली, 2014
2. कुमार, अनिल, स्वामी विवेकानन्द, किताब घर, दिल्ली, 1975
3. मिश्रा, मंजू, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2012
4. निखिलानन्द, स्वामी, विवेकानन्द–एक जीवनी, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2014
5. रोलां, रोमा, विवेकानन्द की जीवनी, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2014
6. विवेकानन्द, स्वामी, भारत जागरण, रामकृष्ण मिशन, नई दिल्ली, 2011
7. विवेकानन्द, स्वामी, व्यक्तित्व का विकास, रामकृष्ण मठ, नागपुर 2014
8. विवेकवाणी, स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाएँ, रामकृष्ण मठ, नागपुर, 2014
9. विवेकानन्द, साहित्य खण्ड–5, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2014

ISBN : 978-93-80216-12-6

स्वामी विवेकानन्द एवं हिन्दू धर्म

डॉ. कनकलता वर्मा
असि. प्रो. संस्कृत विभाग
कु. मा. रा. म. स्ना. महा.
बादलपुर

स्वामी विवेकानन्द का युवा संन्यासी के रूप में भारतीय संस्कृत की सुगन्ध विदेशों में बिखरने वाले, राष्ट्र निर्माता, वेदान्त के प्रकाण्ड पंडित, नैतिकता के पुजारी के रूप में सम्पूर्ण विश्व में विख्यात हैं। स्वामी जी एक युगान्तकारी आध्यात्मिक गुरु, जिन्होंने हिन्दू धर्म को गतिशील बनाया और सुदृढ़ सभ्यता के निर्माण के लिए आधुनिक मानस से पश्चिमी विज्ञान व भौतिकवाद को भारत की आध्यात्मिक संस्कृति से जोड़ने का आग्रह किया। उन्होंने अपने कर्मठ और तेजोन्मय जीवन तथा गहन आध्यात्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों की छाप विदेशों तक में छोड़ दी। सामाजिक जड़ता एवं धार्मिक मूढ़ता को दूर करने का उन्होंने वैसा ही प्रयास किया जैसे किसी तालाब में सड़े हुए पानी को साफ करने के लिए किया जाता है। भारत के पुनर्निर्माण के प्रति उनके लगाव ने ही उन्हें शिकागो धर्म संसद में जाने के लिए प्रेरित किया, जहां वह बिना अमंत्रण के गए थे, स्वमी विवेकानन्द ने वहाँ भारत एवं हिन्दू धर्म की भव्यता स्थापित करके जबरदस्त प्रभाव छोड़ा। यह उन्हीं का व्यक्तित्व था, जिसने भारत एवं हिन्दू धर्म के गौरव को प्रथम बार विदेशों में जाग्रत किया। उनके द्वारा दिए गये वेदान्त के मानवतावादी, गतिशील तथा प्रायोगिक संदेश ने हजारों लोगों को प्रभावित किया। वहां उन्होंने घोशणा की कि सिर्फ वेदान्त के आधार पर ही विज्ञान एवं धर्म साथ-साथ चल सकते हैं।

स्वामी विवेकानन्द आधुनिक भारत के ऐसे संन्यासी, दार्शनिक विचारक एवं प्रचारक थे। जिन्होंने स्वयंता में कोई भाग नहीं लिया, परन्तु अपनी प्रखर प्रतिभा से देश में स्वतंत्रता प्रेम की ज्योति जगा

 ISBN : 978-93-80216-12-6

दी, राष्ट्रीय गौरव के प्रति चेतना धाक जमा दी। उन्होंने उद्घोश किया—

जो भरा नहीं भावों से, जिसमें बहती रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

जिन दिनों पूर्व के देशों में पश्चिम की महानता का गुणगान हो रहा था, उन दिनों स्वामी जी ने पश्चिम को पूर्व की महानता का प्रमाण देकर चकित एवं चमत्कृत कर दिया। स्वामी विवेकानन्द ध र्म को भारतीय समाज में जीवन के आधार के रूप में व्याख्यापित करते हैं साथ ही यह भी स्वीकार करते हैं कि भारत के पिछड़ेपन का कारण धार्मिक कुरीतियां जैसे जातिप्रथा, छुआछूत, सतीप्रथा है न कि धर्म। मानव उत्थान के लिए धर्म में उनकी आस्था को पुष्ट करना जरूरी है परन्तु जब तक लोगों की गरीबी व दुःख दर्द को दूर नहीं किया जाता, उन्हें धर्म का उपदेश देना व्यर्थ है। **मानव के पीड़ा का मूल कारण है सामाजिक प्रथाएँ जिसे धर्म का नाम देकर या ध र्म से सम्बद्ध कराकर पुष्ट किया जाता है ये प्रथाएँ जो किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए स्थापित की गयी थीं, परन्तु वर्तमान में ये अप्रासंगिक हो चुकी हैं।** हिन्दू धर्म की वर्ण व्यवस्था या जाति प्रथा जिसे कठोर नियमों से बा।ध कर तैयार किया गया। सभी के पिछड़ेपन एवं दुःख का कारण है। विवेकानन्द ने जाति प्रथा के नियमों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उदार बनाने का प्रयास किया। छुआछूत को जड़ से मिटाने का बीड़ा उठाया।

शिकागो के सर्वधर्म सम्मेलन में जहां अन्य वक्ता अपने-अपने धर्म को श्रेष्ठ बताते हुए व्याख्यान दे रहे थे वहाँ स्वामी जी ने सभी से भिन्न एवं उत्कृष्ट विचार दिया कि सब धर्म समान है, क्योंकि सब धर्मों का ध्येय एक जैसा है अर्थात् उद्देश्य एक ही है। सब धर्म एक ही ईश्वर के प्रति आस्था जगाते हैं। गीता में कहा गया है—

सर्व धर्मान् परित्यज्य, मामेंक शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो, मोक्षयिस्यामि माशुचः।।

 ISBN : 978-93-80216-12-6

अर्थात् सभी धर्मों का परित्याग कर एक मेरी शरण में आ। मैं तुझे समस्त पापों के पार लाग दूंगा। भय न कर। स्वामी विवेकानन्द ने सदियों के आलस्य को त्यागने के लिए भारतीयों को प्रेरित किया और उन्हें विश्व नेता के रूप में नए आत्मविश्वास के साथ उठ खड़े होने तथा दलितों एवं महिलाओं को शिक्षित करने एवं उनके उत्थान के माध्यम से देश को ऊपर उठाने का संदेश दिया। स्वामी जती ने इसी उद्देश्य से। मई 1897 में कलकत्ता में रामकृष्ण मिशन एवं 9 दिसम्बर 1898 ई. को गंगा किनारे बेलूर में रामकृष्ण मठ की स्थापना की। उनका जन्म का नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था, परन्तु 1893 में जब उन्होंने शिकागो के सर्वधर्म सम्मेलन में भाग लेने हेतु प्रस्थान किया, तब उन्होंने एक सन्यासी के रूप में विवेकानन्द नाम अपना लिया।

स्वामी विवेकानन्द ने तत्कालीन सामाजिक परिपेश का अनुभव किया कि वर्ण व्यवस्था तत्काल समाप्त नहीं हो सकती थी। अतः उन्होंने जाति प्रथा में किञ्चिद् सुधार का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। स्वामी जी ने यह मांग की कि सभी वर्गों को शिक्षा के समान अवसर मिलने चाहिए इसके साथ ही साथ शोषित वर्गों की विशेष शैक्षिक अवसर होने चाहिए। उन्होंने ब्राह्मणों के अधिकारवाद पर प्रहार करते हुए शूद्रों को सर्वोच्च माध्यामिक ज्ञान से वंचित रखने की प्रथा का पुरजोर विरोध किया। उनका तर्क था कि परम सत्य ज्ञान को सभी व्यक्तियों को मिलना चाहिए तभी आध्यात्मिक समानता की अवधारणा पूर्ण होगी एवं दीन दुःखियों की दासता के बंधन टूटेंगे और सम्पूर्ण देश का समग्र उत्थान व विकास होगा। एक ही ब्रह्म या ईश्वर कण-कण में विद्यमान है। अतः मनुष्य-मनुष्य के बीच केवल त्याग, प्रेम, सेवा का ही सम्बन्ध हो सकता है, अन्य कोई नहीं। वस्तुतः सभी धर्म मानव जाति की एकता के सूत्र में बांधने की मांग करते हैं अतः प्रत्येक मनुष्य को अपने-अपने धर्म का परिपालन करते हुए अन्य धर्मों का भी आदर करना चाहिए। भारतीय समाज की समस्याओं के सम्बन्ध में उनकी

 ISBN : 978-93-80216-12-6

चर्चित कृति जातिवाद का चक्र (The Cycle of Caste) में उन्होंने एक स्थान पर बताया है कि ब्राह्मण स्वयं को बुद्धिमान कहता है और शूद्र को मूर्ख।

ऐसी स्थिति में ब्राह्मण को यदि एक शिक्षक की जरूरत है शूद्र के लिए दस शिक्षक होने चाहिए। **अर्थात् उन्हें शिक्षा की अधिक आवश्यकता है तो भी वही वंचित हैं। स्वामी जी के अनुसार आदर्श राज्य वह होगा जिसमें ब्राह्मण युग के ज्ञान, क्षत्रिय युग के पराक्रम वैश्य युग की समृद्धि एवं शूद्र युग की समानता में संतुलन कायम किया जा सके।**

स्वामी विवेकानन्द ने वेदान्त दर्शन एवं धर्मदर्शन से जो आध्यात्मिक प्रेरणा प्राप्त की उसे उन्होंने मानवता के सेवा का रूप दे दिया। यह सेवा स्वार्थ–साधना से हटकर देश सेवा के रूप में आरम्भ होती है और सम्पूर्ण मानवता की सेवा की प्रेरक शक्ति बन जाती है। स्वामी जी ने आध्यात्मिक स्वतंत्रता के विचार को भी राष्ट्रीय की प्रेरक शक्ति बना दिया हैं राजनीति में प्रत्यक्ष अभिरुचि न रखते हुए भी स्वमाी जी ने सांस्कृतिक क्षेत्र में भरत के यूरोपीकरण का विरोध किया। उन्होंने बातया कि पश्चिम के अंधानुकरण से हम अपना उद्धार नहीं कर सकते। धर्म और आध्यात्मिकता हमारे राष्ट्रीय जीवन का आधार स्तम्भ है। अतः इन्हीं के आधार पर हमें सामाजिक पुननिर्माण करना चाहिए। स्वामी जी ने राष्ट्र के पुनरुत्थान का दायित्व वैसे तो हिन्दू धर्म को सौंपा, फिर भी उनका विश्वास था कि जांत–पांत, आस्था–धर्म, इत्यादि के पीछे जिस मनुष्य का अस्तित्व पाया जाता है, वह किसी तरह के भेदभाव को स्वीकार नहीं करता।

निष्कर्षः–

मानव मन के लिए धर्म प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य करती है। चरित्र निर्माण, शिव एवं महत् की प्राप्ति, स्वयं तथा विश्व की शक्ति की प्राप्ति के लिए धर्म ही सर्वोपरि प्रेरक शक्ति है अतः उसका अध्ययन

 ISBN : 978-93-80216-12-6

इस दृष्टि से भी होना चाहिए। धर्म का अध्ययन अब पहले की अपेक्षा व्यापक स्तर पर होना चाहिए। धर्म का अध्ययन अब पहले की अपेक्षा व्यापक स्तर पर होना चाहिए। धर्म सम्बन्धी सभी संकीर्ण, सीमित, विवादास्पद धारणाओं को नष्ट करना होगा।

सम्प्रदाय जाति या राष्ट्र की भावना पर आधारित सारे धर्मों का परित्याग करना होगा। स्वभावतः ही आने वाले धर्म को विश्वव्यापी, विस्तृत व असीम होना पड़ेगा। धर्मों में अद्‌भुत शक्ति है, पर केवल इनकी संकीर्णताओं के कारण इनसे कल्याण की अपेक्षा अधिक हानि ही हुई है। **अतः धर्म के उदार होने की नितान्त आवश्यकता है। वास्तव में स्वार्थोन्मूलन ही धर्म है तथापि भगवत्प्राप्ति ही धर्म है।**

सन्दर्भ–

1. राजनीति-चिन्तन की रूपरेखा, ओमप्रकाश गाबा
2. राजनीति सिद्धान्त की रूपरेखा, ओमप्रकाश गाबा
3. भारतीय राजनीति विचारक, ओमप्रकाश गाबा
4. आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, डॉ. वी.पी. वर्मा
5. स्वामी विवेकानन्द, भारत जागरण, रामकृष्ण मिशन
6. स्वामी विवेकानन्द, भक्तियोग, डॉ. विद्याभास्कर शुक्ल

 ISBN : 978-93-80216-12-6

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा-दर्शन का महत्व

सुचिस्मिता दास
शोध छात्रा हिन्दी विभाग
विश्वभारती, शांतिनिकेतन
प. बंगाल

वर्तमान समय में हमारा राष्ट्र कई समस्याओं से जूझ रहा है। इनमें से अधिकांश समस्याओं की जड़ है शिक्षा का अभाव। अगर हम अपने राष्ट्र की उन्नति चाहते हैं तो इन समस्याओं को जड़ से समाप्त करना होगा। इसका उपाय हम स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा–दर्शन से प्राप्त कर सकते हैं। एक देशभक्त होने के नाते विवेकानन्द जन-जन के लिए शिक्षा को आवश्यक मानते थे जो उनकी नजर में राष्ट्र की उन्नति का एक मात्र संभव मार्ग है। उनके अनुसार शिक्षा वह है जो अंदर से बाहर की तरफ आये न कि बाहर से थोपा जाये। इसके आध ार में स्वामीजी ने धार्मिक उत्थान एवं आत्मज्ञान को रखा। इन्हीं से शिक्षा में आत्मानुशासन की प्रवृत्ति आती है। शिक्षा का उद्देश्य मात्र धनोपार्जन नहीं अपितु इसका चरम लक्ष्य हैं सम्पूर्ण मानव का निर्माण। शिक्षा के माध्यम से ही स्वधर्म की प्राप्ति, चारित्र निर्माण, मानसिक दृढ़ता एवं बुद्धि की तीक्ष्णता आती है। साथ ही विवेकानन्द ने शरीरिक स्वास्थ्य एवं (जीविकोन्मुखी) प्रायोगिक शिक्षा पर भी बल दिया। इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम, आस्था, सिद्धांत, एकाग्रता एवं अपनी गलतियों से सीखने की कला आनी चाहिए। इन सबका पालन करते हुए शिक्षक एवं विद्यार्थी सही शिक्षा पद्धति पर चलकर अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकते हैं। विवेकानन्द ने शिक्षा के सरलीकरण पर विशेष जोर दिया। उनके अनुसार बच्चों को नैसर्गिक विकास हेतु छोड़ देना चाहिए वहीं शिक्षक का कर्त्तव्य है कि वह मार्ग की बाधाएँ

 ISBN : 978-93-80216-12-6

हटाता हुआ साथ रहे। इस प्रकार विवेकानन्द ने हमें एक ऐसा मार्ग दिखाया जिस पर चलकर हम राष्ट्र की उन्नति का सपना साकार कर सके।

भारतवर्ष में हम शिक्षा को मोक्ष के उपाय के रूप में देखते हैं। यहाँ शिक्षा वह माध्यम है जिससे चारित्र के माहनतम गुणों को प्राप्ति किया जा सकता है। यही शिक्षा का महत्तम उद्देश्य है। परन्तु इन सबसे पहले शिक्षा वह कुंजी है जो रोजमर्रा के कुछ मूलभूत एवं व्यवहारिक समस्या रूपी ताले को खोल सके।

हम सभी वर्त्तमान की आलोचना करते हैं। परन्तु सिर्फ कमियां गिनाने से हमार काम पूरा नहीं हो जाता। यदि हमें शिक्षा व्यवस्था को सकारात्मक रूप से बदलना है तो किसी आधारभूत सिद्धांत का सहारा लेना होगा और इस क्षेत्र में वर्तमान शिक्षा में आदर्श–पुरुष के रूप में मुझे स्वामी विवेकानन्द का नाम सर्वाधिक सार्थक प्रतीत होता है। विवेकानन्द आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने कि वे अपने जीवनकाल में थे। उनके शिक्षा संबंधी विचार जितने गहने आदर्श से जुड़े हैं। उतने ही व्यवहारिक भी हैं। यहाँ हमें दर्शन एवं प्रायोगिकता का अनूठा संगम देखने को मिलता है।

- विकेकानन्द के शिक्षा दर्शन को समझने के क्रम में दो मुख्य बिन्दु आते हैं–जन/सार्वजनिक शिक्षा एवं धर्म।

जन–शिक्षा–विश्व का कोई भी देश अशिक्षित जनता के साथ विकसित नहीं हो सकता है। विवेकानन्द ने पश्चिम के देशों की यात्रा की एवं देखा कि वहाँ सम्पन्नता तथा समृद्धि है जबकि हमारे देश में गरीबी एवं अभाव। इस अंतर का कारण उन्होंने शिक्षा में ही पाया।

आज भी हमारा भारतवर्ष दरिद्रता, भूख, असामाजिक तत्त्व, अपराध , बेरोजगारी, आर्थिक संकट, अज्ञान जैसे समस्याओं से जूझ रहा है। इनसे संघर्ष द्वारा विजय पाने के लिए भी हम विवेकानन्द के दिखाये

 ISBN : 978-93-80216-12-6

हुए रास्ते पर चल सकते हैं। विवेकानन्द सदा से गरीबों एवं कमजोरों के परम मित्र रहे हैं। असहाय भारतीय जनता का उत्थान उनका प्रमुख उद्देश्य रहा है। इसके समाधान एवं विकास के लिए शिक्षा को ही उन्होंने अपना हथियार बनाया। एक सच्चे देशभक्त के रूप में वे सदा ही भारत की निरीह जनता के प्रति संवेदनशील रहे। स्वामी जी के शब्दों में-जब तक हमारे देश में लाखों लोग भूख और अज्ञान में जीवन-यापन करेंगे, मैं हर उस इंसान को विश्वासघाती ठहराऊंगा जो उन लाखों लोगों की कीमत पर शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और उन लोगों पर ध्यान मात्र नहीं देते हैं। यह हमारा राष्ट्रीय पाप है कि हम जनता को अनदेखा करें और यही एकमात्र कारण है कि हमारा देश अवनति के मार्ग पर चल पड़ा है। कोई भी राजनीतिक प्रयास देश का उद्धार तब तक नहीं कर सकती जब तक कि जनता अच्छी तरह शिक्षित न हो एवं उसे भरपूर पोषण-संरक्षण न मिले।

शिक्षा तभी सार्थक होगी जब वह जन-जन तक पहुँचे क्योंकि एक-एक व्यक्ति से ही समाज बनता है। यह शिक्षा ही लोगों में आत्मा सम्मान की भावना को बढ़ायेगी तथा पूर्ण शिक्षित व्यक्ति ही अपने देश की उन्नति में सक्रिय भूमिका अदा कर सकता है।

धर्म–भारतवर्ष में भाषा, जाति, संस्कृति आदि की विधिता है इसलिए जनता में शिक्षा का आलोक बिखेरने हेतु एक सार्वजनिक एवं सामान्य मंच की आवश्यकता है। स्वामी विवेकानन्द ने धर्म को ही इस मंच के रूप में अपनाया।

यहाँ धर्म से तात्पर्य किसी सम्प्रदाय विशेष, जैसे-हिन्दू या ईसाई से नहीं है। धर्म अर्थात् वे शाश्वत तत्व जो मनुष्य को आत्मबोध करवाने में सहायक होते हों। यह आत्मबोध ही लोगों के मध्य सभी प्रकार के भेद-भाव को समाप्त कर देता है। हम अन्य सभी को आत्मवत् ही देखने लगते हैं। इससे आत्मविश्वास बढ़ता है। मानसिक क्षमता में वृद्धि होती है। यह आंतरिक शक्ति ही धर्म है एवं ठीक इसके

ISBN : 978-93-80216-12-6

विपरीत किसी भी प्रकार की मानसिक कमजोरी ही पाप है। यह कमजोरी हर प्रकार के बुरे कर्म एंव बुरी सोच के मूल में है।

विवेकानन्द उपनिषदों की सहायता से शक्ति, निर्भयता एवं सत्य का संदेश देते हैं; जो किसी भी धर्म की प्रारंभिक शर्त है और यही शिक्षा के प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

- अब हम देखते हैं विवेकानन्द के लिए शिक्षा का क्या तात्पर्य है–"Education is the manifestation of perfection already in man."

(अर्थात्–शिक्षा मनुष्य के अंतर में पहले से स्थित पूर्णता को व्यक्ति करने का माध्यम है।)

वास्तविक ज्ञान कभी बाहर से नहीं आता यह व्यक्ति के अंतर में आविष्कृत होता है। यह स्वतः ज्ञेय है। शिक्षा का कार्य है मस्तिष्क/मन में उपस्थित ज्ञान को आवर मुक्त करना तत्कालीन विश्वविद्यालय की शिक्षा पर टिप्पणी करते हुए स्वामी जी ने कहा कि यह मात्र एक मशीन है जो तत्परता से कार्यालय में काम करने वाले कर्मचारी उत्पन्न करती है। यह लोगों को उनके विश्वास से आस्था से वंचित कर देती है। शिक्षा को उन सूचनाओं के समतुल्य समझना भी गलत है जिन्हें दिमाग में भर दिया जाता हे, जो स्वयं में ही उलझकर रह जाती हैं एवं जीवन भर उनका कोई सार्थक उपयोग नहीं हो पाता है।

इसके विपरीत शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए स्वधर्म की प्राप्ति, चारित्र-निर्माण, मस्तिष्क का विकास (बौद्धिक विकास), बुद्धि की तीक्ष्णता एवं आत्मनिर्भरता।

स्वधर्म की प्राप्ति–प्रत्येक व्यक्ति का विकास एक अनोखे तरीके से होता है। कोई किसी की नकर करे ऐसा संभव नहीं। बाहरी दबाव द्वारा विनाशक वृत्तियों को ही विकास होता है जो जिद्द एवं अव्यवस्था को जन्म देती हैं। अगर हम किसी बच्चे को स्नेह, स्वतंत्रता एवं सहानुभूति प्रदान करते हुए उसके अपेन तरीके तथा अपनी क्षमतानुसार बढ़ने का

 ISBN : 978-93-80216-12-6

अवसर प्रदान करनें तभी उसका पूर्ण विकास संभव है एवं इसी प्रकार वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है। यह ठीक वैसा ही काम है जैसा पौधे को विकास में की गयी मदद। माता-पिता एवं शिक्षकों को बच्चे पर अपनी इच्छा नहीं थोपनी चाहिए।

चरित्र-निर्माण—आत्मविश्वास का प्रथम चरण है चरित्र निर्माण। यह शरीर एवं मन पर विषम परिस्थिति में भी नियंत्रण रखने का पर्याय है। यह व्यक्तिगत आदर्शों पर निर्भर करता है। इसके लिए शिक्षकों द्वारा व्यवहारिक उदाहरण दिये जा सकते हैं।

शारीरिक स्वास्थ्य—स्वामीजी ने शारिरिक स्वास्थ्य पर विशेष बल दिया है, क्योंकि एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन को धारण कर सकता है। उपनिषदों के अनुसार भी दुर्बल शरीर के स्वामी को आत्मज्ञान नहीं हो सकता है।

वृत्तिमूलक/कौशल संबंधी शिक्षा—विवेकानन्द ने शिक्षा के प्रायोगिक पक्ष पर भी बल दिया है। यह शिक्षा मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाती है। इसकी मदद से लोग नौकरी न ढूँढ़कर स्वयं किसी व्यवसाय की शुरुआत कर सकते हैं। विवेकानन्द के शब्दों में—"we need technical education and all else that may develop industries so that men, instead of seeking for service, may earn enough to provide for themselves, and save something against a rainy day."

विवेकानन्द की दृष्टि में शिक्षा का अंतिम लक्ष्य है 'मानव निर्माण'। यदि शिक्षा, मानव में सभी संभावित गुणों के विकास में समक्षम होती है तभी हम कह सकते हैं कि शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य पूरा हुआ।

- शिक्षा के इन लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु आवश्यक तत्त्व है—कठिन परिश्रम एवं एकाग्रता, गलतियों से सीखना एवं विश्वास/आस्था।

कठिन परिश्रम एवं एकाग्रता—किसी भी प्रकार के कार्य के लिए कठिन परिश्रम आवश्यक है। लक्ष्य के प्रति समर्पण एव उसकी प्राप्ति

के लिए हर संभव प्रसास ही उत्तम मार्ग है। लेकिन सिर्फ परिश्रम से काम नहीं बनता है। उसके साथ एकाग्रता की भी आवश्यकता पड़ती है। यदि हमारा ध्यान भटकता रहे तो कड़ी मेहनत के बाद भी संभव है कि लक्ष्य की प्राप्ति न हो। संघर्ष हमारा सर्वश्रेष्ठ शिक्षक एवं एकाग्रता ही शिक्षा प्राप्त करने का एकमात्र रास्ता है।

गलतियों से सीखना–हमेशा अपनी गलतियों पर अफसोस करना एवं यह सोचकर डरना कि आगे भी यही गलती दोबारा हो जाएगी; जीने का गलत तरीका है। इसके बदले हमें जीवन में आगे कुछ अच्छा करने की सोच रखनी चाहिए। गलतियों से सबक लेना चाहिए ताकि उन्हें बिना दोहराये आगे बढ़ सके। गलतियाँ ही इस प्रकार हमारे सफलता की सीढ़ी बन सकती है।

विश्वास/आस्था–आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए हमें अपना सम्मान करना चाहिए। अपनी क्षमता पर विश्वास होना चाहिए। इसी से लक्ष्य प्राप्ति की प्रेरणा मिलती है। माता-पिता को बच्चों के प्रति नकारात्मक सोच नहीं रखनी चाहिए, उन पर भरोसा रखना चाहिए। विद्यार्थी भी शिक्षकों पर आस्था रखे तो विद्यालय जीवन में बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं।

- **अब हम देखते हैं शिक्षा के तीन महत्त्वपूर्ण कारकों पर स्वामी विवेकानन्द क्या सोचते हैं। ये हैं–शिक्षक, विद्यार्थी एवं शिक्षण विधि।**

शिक्षक–शिक्षक को अपने विषय पर पूरा अधिकार होना चाहिए। उसका उद्देश्य धन या यश की प्राप्ति नहीं अपितु मानवता के प्रेम के लिए कर्म होना चाहिए। विद्यार्थियों के प्रति उनके मन में सहानुभूति हो, यह जरूरी है। शिक्षक से यह अपेक्षित है कि वह विद्यार्थियों के अंदर पहले से मौजूद पूर्णता को उभारे। ऐसा करते हुए शिक्षक स्वत: ही विद्यार्थी की श्रद्धा एवं प्रशंसा का पात्र बन जाते हैं। यथार्थ शिक्षक में यह क्षमता होनी चाहिए कि वह विद्यार्थी को उसके स्तर पर आकर

 ISBN : 978-93-80216-12-6

समझे एवं समझाये।

विद्यार्थी–एक विद्यार्थी के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है–अनुशासन। यह बाहर से नहीं अंदर से उपजना चाहिए। आत्मानुशासन सर्वोत्तम गुण है जो अन्य गुणों को आधार-शिला है। शब्द एवं कर्म की पवित्रता, ज्ञान-पिपासा, कठिन परिश्रम, समर्पण, श्रद्धता, उत्साह, सहनशीलता, सत्यान्वेशन, शिक्षक पर आस्था एवं आर्मनियंत्रण–विद्यार्थी के अन्य वांछित गुण हैं। ये सभी गुण शिक्षक के उचित मार्गदर्शन एवं अनुकूल वातावरण में विकसित किये जा सकते हैं।

शिक्षण विधि–हमें लक्ष्य के साथ शिक्षण विधि पर भी ध्यान देना चाहिए। शिक्षा ऐसी दी जाए जिससे विद्यार्थी की स्वच्छंदता नष्ट न हो। शिक्षक का धर्म है कि वह मार्ग की बाधाएँ हटाता रहे ताकि विद्यार्थी अपने अंदर छिपे ज्ञान की अनंत संभावनाओं से साक्षात्कार कर सके।

निष्कर्षतः–हम यह कह सकते हैं कि स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन की धुरी है–धार्मिक उत्थान एवं चरित्र निर्माण। वे चाहते थे कि शिक्षा अत्यंत स्वाभाविक एवं सरल पद्धति से दी जाए। वर्त्तमान समय में आत्मानुशासन, शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों के लिए आवश्यक है क्योंकि यही पूर्ण मानव का निर्माण करती है। पूर्ण मानव बने बिना शिक्षा कभी पूरी नहीं हो सकती। मानवता के बिना डिग्री या नौकरी मूल्यहीन है। विवेकानन्द के शब्दों में–"When you have men who are ready to sacrifice their everything for their country, sincere to the backbone—when such men arise, India will become great in every respect. It is the men that make the Country!"

अर्थात् शिक्षा ही हमें वह दृष्टि प्रदान करती है जिसके साथ हम अपना सर्वस्व न्यौछावर करके भी देश की उन्नति के महायज्ञ में शामिल हो जाते हैं। ऐसी शिक्षा ही राष्ट्र निर्माण में सक्षम एवं सच्ची शिक्षा है।

संदर्भ–

1. *Sen Amiya P. (2000). 'Swami Vivekanand', New Delhi : Oxford University Press.*
2. *Gupta Asha (1998). 'Vivekananda', Delhi : Atmaram and Sons Publications.*
3. *Saiyaidain, K.G. (1970), 'Facts of Indian Education', Delhi : NCERT*
4. *Saiyaidain, K.G. (1958), 'Education, Culture and Social Order, Delhi : Asia Publication House.'*
5. *Radhakrishnan. S. (1984), 'True Knowledge', Delhi : Ravindra Printing Press.*
6. *Radhakrishnan S. (1972), 'Indian Philosophy Vol. I & II, London : George Allen And Unwin Ltd.'*
7. *Sharma. D.S. (1961), 'The Upanishads, An Anthology', Bombay : Bharatiya Vidya Bhavan.*

Religious Harmony and Peace Through Knowledge – A Vision of Swami Vivekanand

Dr. Divya Nath

Asso. Prof., Political Science
K. M. G. G. P. G. College,
Badalpur

Religious harmony and peace is the backbone of a cultural and civilized society and nation. It is ingrained in the Indian psyche. All the invaders who came to India since ancient times, got so perfectly assimilated in the Indian society, that today no one can say if he is not a descendant of any one of them. Whatever their religion was, it got dissolved in the vast humanity of India. After the uprising of Islam in the Middle East, people belonging to the Zoroastrian religion, and those to the Syrian church, came to India to save themselves from those who believed in Islam. Such incidents prompted Swami Vivekanand to say, that ''we have gathered in our bosom, the pure remnants of the Israelites, who came to India and took refuge with us when their holy temple was shattered to pieces by Roman tyranny. Thereafter, on 11^{th}. September, 1893, Swami Vivekanand declared in the Parliament of Religions in Chicago, that he was ''proud to belong to a nation which has shattered the persecuted refugees of all religions and nations on earth.''

Religious harmony is the key to a peaceful society. It comes about where there is understanding between the followers of various faiths. For a country like India, which has been the birthplace of several major religions of the world, religious harmony is important, as it is the need of the hour to make India and the world, a better place to live

 ISBN : 978-93-80216-12-6

in. Whether it is a gathering of the faithful, bowing in prayer in a courtyard of a mosque, or the gathering of lamps that light up houses at Diwali, the good cheer of Christmas, or the brotherhood of Baisakhi, the religions of India are celebrations of shared emotions that bring people together. Even during the reign of the British, there was no religious tension among the peoples of various religions. India, a multi-racial, multi-lingual and multi-racial country, has always enjoyed the essential unity of culture amidst diversities that kept her people united. After independence, narrow regional and communal feelings attracted the country. The apparently mindless communal tensions and bloody riots that take place occasionally, create a sense of mistrust among the two principal religious communities involved in the clashes. The country pays a heavy price for such disturbances through loss of life and property. The alarming rise of fundamentalism is a great concern to the nation. Inter-communal relationship suffers a breach in this vitiated atmosphere. Our unity, integrity and solidarity is now at stake. It hampers the growth of the nation at every step. It is important to spread the message of communal harmony, so that the evil forces trying to break our nation are crushed at any cost.

Swami Vivekanand renewed peoples' interest in religion, by bringing it to the centre stage, after infusing it with new meaning. He promoted inter-faith harmony. Hence his teachings are of great relevance, particularly in the current context. For Vivekanand, service to God meant service to the disadvantaged. He coined a new word *Daridranarayan* – seeing God in the less privileged – and it was upheld as a religious axiom. He promoted rationality in the human conduct, so that religion related itself to the intellectual side

of man. He realised very well that religion had always been a dominating factor for men, their ways of thinking and behaviour. Within the modern global city, many religious believers live close to each other. To create peaceful coexistence within the global society, respect for religious diversity and acceptance of religious pluralism is essential. Swami Vivekanand therefore discovered a unique explanation for the concept of religion, and argued for the necessity of a universal religion.

According to Swami Vivekanand, religion is not just a talk on doctrines or theories, nor is it sectarianism. Religion does not live in sects and societies. It is a relationship between soul and God. He explained that religion does not consist in erecting temples, churches or attending public worship. Also, it cannot be found in books, words, lectures or organizations. Religion consists in spiritual realization, and different people in the world approach spirituality in different ways. He asserted that man and his true nature is already divine, but that the divinity is hidden. Therefore the realization of that divinity is the purpose of life, which is the essence of religion. To realise it, according to Swami Vivekanand, man should have to practice four yogas – the yoga of knowledge, control of mind, selfless work and love of God. Therefore, religion is the essence of human life and it has great motivating power for people, in relation to their social, political and economic aspects.

What makes the spiritual history of this land unique, is that it has engendered a tribe of seekers, not believers. India has been held together by plurality, not homogeneity. The Supreme Court has also pointed that the State should not interfere with religious freedom. Just as religion must respect the civil liberties enshrined in the Constitution, it is vital

for the state to respect freedom of faith. Spirituality and reason are not antagonistic. The knowledge gained through education, should make us develop a questioning mind, which does not blindly follow rituals, but understands the logical reason behind them. Spirituality and reason are not considered mutually exclusive, but the spiritual process in this tradition is not belief. It is simply the recognition that there is an intelligence in the universe far beyond our limited logic. As a guru, Swami Vivekanand encouraged people to doubt, because spiritual awakening requires that all indoctrination should be erased. We live in an incredibly composite culture, that celebrates multiple paths to the divine, and freedom as our birthright. If we disturb this civilizational unity through populist ideologies, or dogmatic belief systems, we run the risk of losing access to a precious and profoundly liberating fountain of wisdom.

In order to foster peace and harmony in a society like ours where religious plurality is deeply ingrained, we must analyze the commonality among all religions. According to Swami Vivekanand, in all religions there are three parts – first, the philosophy, which presents the whole scope of that religion, setting forth its basic principles, the goals and the means of reaching it. The second part is the mythology, consisting of legends etc., and the third part being the rituals, pertaining to the senses. Each religion brings out its own doctrines, insisting upon them as being the only true ones. Though it is hard to find any universal features with regard to religion, we do know that they exist. And since unity in variety is the plan of the universe, these differences must always remain. Swami Vivekanand said that if ,by the idea of a universal religion it is meant that one set of doctrines should be believed in by all mankind, it is wholly impossible.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Just as we have recognized unity by our very own nature, so we must also recognize variation. We must learn that truth may be expressed in a hundred thousand ways, and that each of these ways is true as far as it goes. Each of us has to understand ,that the same thing can be viewed from a hundred different standpoints, and yet be the same thing.

In order to attain peace and harmony in society, we must therefore, ''pull not, break not anything down, but build.'' If God is the centre of all religions, we all must teach ourselves to reach that centre, no matter which path we may take. An external teacher can only remove external obstacles, but we must recognise that the real teacher is our very own soul. Swami Vivekanand wanted to inculcate this ability in all, so that his religion was acceptable to all minds – the active, the emotional, the mystic and the philosopher. Religion must be able to show how to realise the philosophy, that teaches us that this world is one, and that there is but one Existence in this universe. Echoing this view, His Holiness the Dalai Lama, addressing the gathering at the World Meet for Peace and Harmony in New Delhi on 11th. September 2012 said, '' that prayer is good on a personal level, but it is not always effective in the wider world. What we need is, to take action. He also advised that if religious teachings remain in a book that we only read occasionally, while we lead our lives in another direction, there is something wrong, and it does not serve much purpose. Education however, is the instrument, that increases our ability to employ our own intelligence.''

Thus, education is the core to harmonizing the world. The essence of Swamiji's teachings was that if we can educate all our priests, Hindus, Muslims, Christians, about all other religions, then they can be the pall bearers of our

 ISBN : 978-93-80216-12-6

harmonious society. Today, the irony is that due to lack of character building in our education system, people, particularly the youth are weak from the soul, and become fallible to the convoluted preaching of their respective religious leaders, who themselves have very narrow view of other religions. We should make it mandatory for any priest of any religion to be qualified to take up the high job only after he crosses the knowledge bar of other major religions.

To conclude, education has a fundamental role to play in personal and social development, which if progresses on the right path, leads to peace and harmony in society. To this end, education for peace, human rights and democracy should receive more attention as well as greater priority. Knowledge and understanding of each other's cultural traditions, beliefs and practices will contribute to an appreciation of shared values and aspirations, appreciation for mutual differences, thus contributing to the development of respect and tolerance. The networking on education for peace and tolerance, human rights, democracy and international understanding will lead to the establishment of stronger regional and inter-regional links, leading towards the realization of a sustained global culture of peace.

References :

1. *www.newspeechtopics.com*
2. *Jaggi Vasudev, Speaking Tree, TOI, 20th. Sept,2013.*
3. *The Complete Works of Swami Vivekanand, vol.2, Advaita Ashram Publ., Kolkata,2013.*
4. *World Meet for Peace and harmony, Sept. 11, 2012, homepage.*
5. *Towards Harmony of Faith, TOI, Oct.,2, 2014.*
6. *www.religiousharmony.org*

Vivekananda's Views on 'Tolerance and Acceptance'

Dr. Anita Rani Rathore
Asso. Prof. – English
K.M.G.G.P.G. College
Badalpur

ॐ सह नाववतु। सह नौ भनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

Om, May God Protect us Both
(the Teacher and the Student),
May God Nourish us Both,
May We Work Together with Energy and Vigour,
May our Study be Enlightening and
not give rise to Hostility,
Om, Peace, Peace, Peace.

Tolerance is giving to every other human being every right that you claim for yourself.

-Robert Green Ingersoll

Try not to change the world
You will fail.
Try to love the world
Lo, the world is changed
Changed forever.

-Sri Chinmoy

"Tolerance, as we define it, refers to the skill we need to live together peacefully. In times of peace, people have a chance to prosper socially, economically and emotion-

 ISBN : 978-93-80216-12-6

ally. Tolerance creates a society in which people can feel valued and respected, and in which there is room for every person, each with their own ideas, thoughts and dreams". One of the most important tools a child needs in his or her social toolbox is the ability to be tolerant of others. The world is composed of people from different backgrounds who speak various languages and follow diverse customs and religions. Any child, whether in India or the United States or elsewhere, will be exposed to someone who identifies with a faith that is not the same as their own. In today's society, especially with how globalized the world has become, it is important for children to learn to accept others from an early age.

The objective of this research paper is to understand that in this age of globalisation, where people of different backgrounds, cultures and religions live together, and where the world has become multicultural and full of diversity, establishing tolerance and harmony become more crucial and important, and fostering mutual love and affection and acceptance has become vital. The need of the hour is to understand that tolerance does not simply mean tolerating intolerance. Tolerance becomes a crime when applied to evil. All religions are good since the essentials in all the religions are all the same. 'We need to believe not only in the universal toleration, but to accept all religions but true."

Sri Ramakrishna, India's prophet of the harmony of religions, reminded us that the essence of religion is God-consciousness. When that is forgotten, religious differences begin—and not before. The oneness of existence and harmony of religions are cardinal principles of Hinduism, and the Ramakrishna Order stands as an example of unity, tolerance, and diversity. There are monks in the

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Ramakrishna Order who are Muslim, Christian, Jewish, and Hindu. They live together, dedicating their lives to the service of all humanity. Its centers all over the world teach people to develop spiritually by seeing God in the hearts of all beings, irrespective of caste, creed, and culture.

This is the ideal which Sri Ramakrishna and his disciple Swami Vivekananda presented before the world. Foreseeing the need of our age, 123 years ago at the First World Parliament of Religions in Chicago, Swami Vivekananda made his famous farewell remarks:

"Sectarianism, bigotry, and its horrible descendant, fanaticism, have long possessed this beautiful earth. They have filled the earth with violence, drenched it often and often with human blood, destroyed civilization, and sent whole nations to despair. Had it not been for these horrible demons, human society would be far more advanced than it is now. But their time is come; and I fervently hope that the bell that tolled this morning in honor of this convention may be the death-knell of all fanaticism, of all persecutions with the sword or with the pen, and of all uncharitable feelings between persons wending their way to the same goal.

Swami Vivekananda's call for unity and love and tolerance is the voice of the prophets, saints, and seers of all traditions. If we fail to heed this call, our civilization is doomed to destruction. This is the merciless law of history. But, the Swami's assurance that the end of fanaticism and intolerance may be at hand—that we do have a choice, and that we can do better—gives us hope."

Swami Adiswarananda Ramakrishna

Vivekananda Center New York

People of the West should learn one thing from India

 ISBN : 978-93-80216-12-6

and that is toleration. All the religions are good, since the essentials are the same.

"We believe not only in universal toleration, but we accept all religions as true."

Quoting Gurudev Rabindranath Tagore's reference to a mind without fear, as in Gitanjali

Where the mind is without fear and the head is held high.

Where knowledge is free

Where the world has not been broken up into fragments

By narrow domestic walls

Where words come out from the depth of truth

Where tireless striving stretches its arms towards perfection

Where the clear stream of reason has not lost its way

Into the dreary desert sand of dead habit

Where the mind is led forward by thee

Into ever-widening thought and action

Into that heaven of freedom, my Father, let my country awake.

Modi said it was Tagore's "heaven of freedom that we are duty-bound to create and preserve. We believe that there is truth in every religion. Ekam Sat Vipra Bahudha vadanti."

Once again Modi's quote from the Rig Veda challenged his listeners to accept the reality that the dame same truth may be told differently by different religions.

There is no reason for any religion to claim superiority over another. Tolerance has to cut both ways.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

In 1893, a World's parliament of Religions was held in Chicago in conjunction with an early world's fair, the World Columbian Exposition. At the conference were representatives from Taoism, Confucianism, the Bahai Faith, Buddhism, and Jainism, from the east. New Western religious movements of this time were represented as well, including Theosophy, Spiritualism and Christian Science, the conference seemed an honest attempt to begin connection between groups that had not beforebeen able to communicate.

What is still remembered to this day from the conference was an opening day address given by a participant who was allowed entry almost as an afterthought. This was Swami Vivekananda, who subsequently founded The Vedanta Society in America. Swami Vivekananda was a devotee of Sri Ramakrishna, himself one of the earliest proponents of religious pluralism. Hearing about the parliament of Religions, Swami Vivekananda decided it was an opportunity to bring Vedic knowledge to the West, to educate Westerns about his homeland of India and to raise money for a mission he wished to build there.

From his first talk he was a hit. He seemed to embody the very principle around which the parliament was organized.

I am proud to belong to a religion (Hinduism) that has taught the world both tolerance and universal acceptance. We believe not only in universal tolerance but we accept all religions to be true.

- From Swami Vivekananda's Opening day Speech at the 1893 World's parliament of Religions

Though it is a different approach that ours to the same

 ISBN : 978-93-80216-12-6

end, Swami Vivekananda's expressed wisdom from the Veda is shared absolutely by our tradition. In the introduction to his book, Raja Yoga, Swami Vivekananda writes the following:

It is wrong to believe blindly. You must exercise your own reason and judgement; you must practice, and see whether these things happen or not. Just as you would take up any other science, exactly in the same manner you should take up this science for study.

-From Raja Yoga by Swami Vivekananda

Take nothing on faith. Try the concepts of unity, tolerance love and oneness that the Veda suggests. Learn to meditate and do it twice a day for a year. Even half a year. 90 days. See if anything changes.

We have our own World's Parliament of Religions to conduct. Our world perhaps more than ever before, requires that someone, somewhere bring the qualities of tolerance and acceptance to the collective that someone insists on seeing the divine in the face of their fellows, regardless of differences. We can all be this 'someone'.

Vivekananda strongly believed when he said, "we must not only tolerate others, but positively embrace them, and the truth in the basis of all religions." Tolerance is certainly better than intolerance. But even tolerance falls short of the highest ideal. Swamiji believed tolerance mean "I think that you are wrong and I am jut allowing you to live. Is it not a blasphemy to think that you and I are allowing others to live? I accept all religions that were in the past, and worship them all" "our watchword, then will be acceptance and not exclusion. Not only tolerance, for so called Toleration is often blasphemy. And I do not believe in It I

 ISBN : 978-93-80216-12-6

believe in acceptance.

"Social and religious leaders bear a heavy responsibility for promoting tolerance and acceptance of all people of diverse faiths, cultures, and countries. They must teach this generation that unity and tolerance cannot be promoted simply by treaties and diplomatic understandings, by symposiums and debates. We must learn to love each other in our social and individual lives. The cost of intolerance is too heavy to ignore. Pastors and priests, monks and nuns, and religious leaders of all faiths must emphatically put forward before the public that love and compassion are the basic bonds of humanity. Secular humanism without a spiritual basis—that is to say, that the same God dwells in the hearts of all—will not be much help to unlearn intolerance.

Hatred is conquered by love, ignorance by knowledge, and superstition by right thinking. Each one of us is called upon to promote these values not only for our social and community welfare, but also for our individual peace, happiness, and prosperity. It is by transforming ourselves that we transform the world. The key to transformation is the transformation of the soul. When we work together, we can certainly create a better world by understanding the purpose of the universe and identifying ourselves with it.

Laiq Ahmed Atif while talking about importance of tolerance believes that in an age where the electronic media has drawn us closer together into what is called a global village, or a global society, its benefits will only be felt when mutual goodness prevails, when mutual respect and understanding prevail.

If, instead of good feelings, hatred emerges, if restless-

ness usurps heartfelt peace, then we must accept that this is not progress, but is something that will take us towards unexpected results.

In this globalisation, where people of different backgrounds, cultures and religions are living together, and where the world has become multicultural and full of diversity, establishing tolerance and harmony has become very crucial and important, and fostering mutual love and affection has become vital.

Without tolerance and harmony the lasting peace of societies cannot be maintained, and loyalty for each other cannot be established.

Loyalty is borne from feelings of love and affection. At a personal level the feelings of love strengthens the feelings of loyalty. When a citizen loves his country, he exhibits loyalty and devotion and makes sacrifices for the sake of the nation.

If sentiments of love do not exist, then the spirit of sacrifice cannot be formed. Unless a person loves another he can never have good feelings in his heart towards him, and he cannot faithfully fulfil the rights due to that person.

Lack of tolerance leads to fighting, violence, and finally it destroys the peace and security of society. When people fail in their arguments they become intolerant, and then they use force and aggression to support their point of view.

We have seen considerable incidents in recent history where, because of lack of tolerance, people have attacked people of other faiths, their places of worship, their communities. How nice it would be if everyone tries to express himself in a decent and respectful way with tolerance.

The world is full of diversity, and that is the beauty of our universe. If there had not been any diversity, the world would appear boring and unattractive, and without any competition.

The worldwide celebration of the International Day for Tolerance was an annual observance declared by UNESCO in 1995 to generate public awareness of the dangers of intolerance, and to help people understand the importance of tolerance.

The annual celebration of this day reminds us how important and crucial these values are. And it does not mean that we only observe tolerance on this day, but this day is just a reminder, so we carry on these values throughout the year.

The word tolerance means the willingness to accept or to tolerate, especially opinions or behaviour you may not agree with, or to behave sensibly with those who are not like you. It means showing respect for the race, gender, opinions, religion and ideologies of other people or groups, and to admire the good qualities and good work of others. And to express one's point of view in a decent and respectful way while respecting the sentiments of others.

Tolerance can be shown in many ways, on different occasions and at different times. A person might fully disagree with others on any issue, from religion to politics, while at the same time honouring and respecting those with different ideas and opinions and treating them with full dignity and honour.

Tolerance is needed in all spheres of life, and on every level and on every stage, because it plays a vital role to establish peace and love, from the smallest unit up to the

 ISBN : 978-93-80216-12-6

highest unit of society.

Tolerance does not mean that only one person or party shows tolerance and the others do not. When some people disagree on a certain issue they must advocate and express their opinion in a respectful manner, and hateful and provocative words should not be used. Tolerance must be shown from both sides on issues, in order for it to be effective.

Here, let it be clear that showing respect and tolerance to the opinions of others does not necessarily mean you have to compromise your principles or embrace or accept others' ideas. It is simply a matter of fundamental human rights.

The right of every human being that his sensibilities and sentiments shall not be violated and offended must be recognised. And every human person has the right to have an opinion and to express it.

References :

1. *Vivekananda, Swami: Raja-Yoga, New York: Ramakrishna Vivekananda Center, 1956.*
2. *Swami Abhiramanand.Spiritual Life for Students in the Vedanta Kesari, Centenary Issue, Dec. 2014.*
3. *Sivaramkrishna, M and Narasimhananda, S., Vivekananda Reader, 2013. Pp135-150.*
4. *Swami, Vivekananda, "Complete Works of Swami Vivekananda (8 Volumes). Advaita Ashram, Kolkata, 1985.*
5. *Teelucksingh, Jerome (2006) "The Legacy of Swami Vivekananda." Peace Profile, 18(3) 411-417.*
6. *Vivekananda, Centenary Memorial Volume, (1963), p.353.*
7. *www.wikipedia.com*
8. *http://www.ramakrishna.org/kactivities/kmessage/kweekly_message45.htm*
9. *http://www.timesofmalta.com/karticles/kview/k20101226/kopinion/kimportance-of-tolerance.342594*

Political Views of Swami Vivekananda

Dr. Pankaj Choudhary
Asstt Prof., Political Science
K. M. G. G. P. G. College,
Badalpur,

Swami Vivekananda, the nineteenth-century Indian Hindumonk is considered as one of the most influential people of modern India and Hinduism. Rabindranath Tagore suggested to study Vivekananda's works to learn about India. Indian independence activist Subhas Chandra Bose regarded Vivekananda as his spiritual teacher. Mahatma Gandhi said that after reading the works of Vivekananda his love for his nation became a thousand-fold.Vivekananda's thought has been subject to many different interpretations. In recent years, the BharatiyaJanata Party has tended to appropriate Vivekananda for its own political purposes by interpreting him as an ideologist of its brand of Hinduism. There are others who have seen Vivekananda as a socialist; Vivekananda thought that India had steadily become degenerate over the last few centuries: its people were divided, they lacked vitality, and possessed no spirit of social service. Moreover, he thought that the traditional Hindu thought had a deep structural tendency to oscillate between anarchic individualism, on the one hand, and collective authoritarianism, on the other.

At the crossroads of two epoch-making centuries, when restless Europe was convulsing, on the one hand, under the far-flung tentacles of the greedy, shameless imperialists who were secretly conspiring to drag the world into a blood-bath for the sake of redividing their spheres of influence, colonies, markets, etc when the thinking people of India

 ISBN : 978-93-80216-12-6

were searching for the correct path which the country should follow in social, political and other matters, Vivekananda appeared like a meteor and within a short period of less than a decade of his public life not only endeared himself to millions of his countrymen and thousands of his admirers and followers in Europe and America, not only dispelled the century-old slanderous notions about India and Indians spread carefully and constantly by the imperialists and their agents in various guises, but made major contributions in many fields of human knowledge which were of far-reaching consequences.

Theworld knows him as a gigantic who employed his will power and energy to bring about aregeneration of India. He was a gilgrim of the city of God and a warrior for the cause of thesuppressed and oppressed all over the world. His personality was notable for itscomprehensiveness and deep sensitiveness to the evils prevalent in the socio-economic and moralstructure of the country. Due to his heroic mood and sometimes even domineering character,Swami Vivekananda was called, the 'Hindu Napolian'

Philosophical Aspect of Vivekananda's Political Thought-

Swami Vivekanand was muchimpressed by European science, liberalism and democratic pattern of western society as expressedin political and sociological literature. The sources of the philosophy of Vivekananda are threefold.

First, the great Vedic and vedantic tradition.Vedanitc philosophy of Sankaracharaya influenceda lot to the social philosophy of Vivekananda. Vivekananda was an apostle of the AdvaithaVedanta and he belongs to the tradition of

 ISBN : 978-93-80216-12-6

the commentators on the Advaita system. He studiedthe ideas and principles of J. S. Mill, the philopshers of French Revolution, Kant and Hegel. Heeven entered into correspondence with Herbert Spencer and offered criticism of some of his ideas.Secondly, a powerful source of Vivekanad's philosophy was his contact withRamakrishna Paramahamsa (1836 – 1886), one of the greatest saints and mystics of modern India.While Ramakrishna Paramahamsa had preached his sermons in a style of prophetic simplicity and clarity, Vivekananda was the philosopher combined with the religious teacher.

He traversed the wide world and to the interpretation of his experiences. Ramakrishna's death inAugust, 1886 brought a change in Vivekananda's life. After the death of his master, he embarkedupon extensive travels from the Himalayas to the Cape Comorin (Kanyakumari) with an urge tospread the message of Ramakrishna and see the natural beauty of Motherland and visited all theimportant centres of Indian culture.

Social And Political Views of Vivekananda-

He had three alternatives before him. First ,to follow the path shown by Raja Ram Mohan Roy and join Brahma Samaj. Secondly, to followthe path of total renunciation and go to Himalayas to attain the goal of liberion. Thirdly, to followthe path of service to the society and create social awakening in the minds of people aboutmodernisation of the Indian society. Swami Vivekananda chose the third path and told the Indiansto see Narayana (God) in the form of a poor beggar dying of starvation Thus for Vivekananda TheRadhakrishna Mission should stand for selfless service of the people, ceaseless efforts to find truthand thereby for

 ISBN : 978-93-80216-12-6

reawakening of the spirit of India. During Vivekananda's life time and after hisdeath, Sri Ramakrishna Mission played a key role in the renaissance of Hinduism.

Philosophy of Neo-Vedanta-

Vedantaphilosophy was one of the most important ancient philosophies of India which believed that Godabove was real and the visible world was unreal and the absorption of individual soul in the onesupreme soul was the goal of every human being. Vivekanda followed the Vedanta philosophy preachedby his teacher which was rooted in the traditional Indian wisdom of Bhakti traditionAccording to Vivekananda, New- Vedanta philosophy stood for service, sacrifice andfreedom. He was a metaphysician of the Vedantic school. He was one of the great interpreters ofthe Vedantic philosophy in modern times. He was the first great Hindu of modern period whomade persistent and systematic efforts to realise the dream of the universal propaganda of Hindureligion and philosophy

Views on Nationalism-

Swami Vivekanada is considered as one of the prophets of the Indian nationalism becausehe tried to awaken Indian people who were lying in deep slumber. Vivekananda believed that there is one all dominating principle manifesting itself in the lifeof each nation. According to him, religion had been the guiding principle in India's history. Hemaintained thus: In each nation as in music there is main note, a central theme, upon which allothers turn. Each nation has a theme: everything else is secondary. India's theme is religion.Social reform and everything else are secondary'Vivekananda was highly critical of the British rule in India because he held that due to theirrule Indians

lost confidence, famine engulfed the land, farmers and artisans were reduced topoverty and deprived. The British government, East India Company etc., were exploiting Indiansin all spheres of socio- economic activity. Due to discriminatory and exploitative economicpolicies of the British government, Indian's could not develop their natural resources and rawmaterials.

According to Vivekananda, the national regeneration of India would begin when peoplebecame fearless and started demanding their rights As a prophet of Indian nationalism, Vivekananda held that though there was a varietyfor, languages, cultures and religions in India, there existed a common ground between Indianpeople. For the Indians religion was unifying force as the spirituality was Blood in the life of India.Vivekananda was an ardent patriot and had tremendous love for the country. He was theembodiment of emotional patriotism. He had established almost a sense of identity- consciousnesswith the country, its peoples and its historic ideals'He said that Hindus should not blame Muslims for their numerous invasions because the Muslim conquest came as a salvation to the downtrodden masses in India. National unity,according to him, could not be fostered by caste conflict but it would be secured by raising thelower to the level of higher classes and not by bringing the upper to the lower level. For thegrowth of national spirit in India, independence of mind was necessary. Indians should be proudof their motherland and declare that all Indians, despite their caste, linguistic and religiousdifferences, are brothers.

Views on Freedom-

One of the important contributions of Vivekananda to

ISBN : 978-93-80216-12-6

political theory is his concept offreedom. He had a comprehensive theory of freedom. According to Vivekananda, freedom is thekeynote of spiritual life. The whole universe, he said, in its constant motion represented thedominant quest for freedom.He declared that liberty does not certainly mean the absenceof obstacles in the path of misappropriation of wealth etc, by you and me, but it is our natural rightto be allowed to use our own body, intelligence or wealth according to our wills without doing anyharm to others, and all the members of society ought to have the same opportunity for obtainingwell education or knowledge. Vivekananda considered freedom not only for maintaining religious harmony amongvarious religious faiths and for realising the spiritual life by the individuals but he also thought thatthe individual freedom was equally dispensable for the realisation of his personality in the socialand economic spheres. He, therefore, wanted to make freedom as the natural possession ofindividuals. He inspired that every individual must cultivate a free body mind and spirit.

However, individual freedom should not be viewed in an isolatedway, and it must be studied in relation to society. In fact, his concept of individual freedom has abearing on the problems of the individual's relationship with society.Although Vivekananda's concept of freedom was primarily spiritual, he did not ignore thesocial and material sides of it. To the wordly man, material life is as real as the social life. Todeny material life to him is to condemn him to death. Thus, Vivekananda wanted to base theorganisation of society on a synthesis of material and spiritual life. It stands for a synthesis of theindividual and social freedom, material and spiritual freedom.

Programme of National Regeneration-

In his Madras speech Vivekananda said: "...I have a message for the world which I will deliver without fear, and without care for the future. To the reformers I will point out that I am a greater reformer than any one of them. They want to reform only little bits. I want root and branch reform. Where we differ is in the method... I do not believe in reform; I believe in growth... This wonderful national machine has worked through ages, this wonderful river of national life is flowing before us...Thousands of circumstances are crowding round it, giving it a special impulse, making it dull at one time and quicker at another... Feed the national life with the fuel it wants, but the growth is its own; none can dictate its growth to it."After his return from a successful tour of the USA and England, Vivekananda toured the whole of India. He received a hero's welcome everywhere. Mass meetings were organised and in every meeting people heard him with rapt attention. During this period he made innumerable speeches and wrote a number of pamphlets—not only on religion, but on different aspects of sociology, on the future of his motherland and the fate of humanity as a whole. His views were taking more and more a political colour .The programme for the national regeneration of India, as propounded by Vivekananda, was not formulated all at once, was not given out just in one speech or writing but gradually crystallised and took shape in his speeches, talks and articles. Vivekananda was of the opinion that India should be saved by the Indians themselves. The new element in this concept was his refusal to stick to his original position, that India will follow its path of development in isolation from the rest of the world, exclusively by way of rediscovery of

its ancient glory and spiritual heritage of ancient India.

Views on Socialism, Communism And Democracy-

The deep socialrealism of Vivekananda is also revealed in his statement that India's political slavery of athousand years is rooted in the suppression of the masses. He mercilessly denounced thesophistication, the arrogance and the wickedness of the upper classes of Indian society. They havebeen responsible for exploiting the millions of masses throughout India's historyWhile the later perpetrated political and economicexploitation, the former enchained the masses with new complicated ceremonies and rituals. Heopenly denounced caste oppressions and refused to recognise any social barrier between man andman. His gospel of social equalitarianism is fundamentally socialistic. Secondly, Vivekanandawas a socialist because he championed the concept of equal chance. 'for all the inhabitants of thecountry. This concept of equal chances s definitely in the socialist direction.

Vivekananda was aware of the weaknesses of the western gospels of socialism andanarchism. He was agreat social realist who was conscious of caste oppressiveness in Indian society and who left thecrying urgency of the solution of the problems of food and hunger. Marx stressed the need for anorganised proletarian party for transformation from capitalism to socialism. Vivekanada wanted totrain individual workers for the social awakening and change in the traditional caste-ridden Indiansociety. According to him, the principle ofliberty was important because there could not be growth in society without liberty. He believesthat everyone should have liberty of thought, discussion, food, dress etc. He was a supporter ofequality of all men and

 ISBN : 978-93-80216-12-6

pleaded for the abolition of caste and class privileges. Caste system was a hindrance to the development of India into a strong nation.

Vivekananda's plea for the individual freedom and social equality made him a firm believer in theinstitution of democracy. The liberation of the masses necessitates their participation in theactivities of the government. Democracy, according to him, inculcates faith in self reliance andself – government; it eliminates the dependence of the individual on parliament. He vieweddemocracy both as a way of life and a form of government. As a way of life, democracy envisagesfreedom, equality, brother hood and their union. As a form of government he maintained thatsocial evolution was possible through the cyclic rule of the caste system. He believed thatdemocracy encourages individual initiative and self- reliance in administering the affairs ofgovernment. Democracy provides for them to uplift themselves and mould their future. Hebelieves that religious tolerance was crucial for the growthof democracy because that alone couldpromote the cause of liberty, equality and fraternity.

Importance of Vivekananda's Views-

Vivekananda's plan of action was not limited to the religious realm. He was equally sensitive to social and economic issues. In other words, Hindus should strive towards a total transformation and inclusive growth. Caste is omnipotent in Indian society but he discarded it without any hesitation. He had observed the working of the BrahmoSamaj and that experience seems to have coloured his general attitude to all reform movements. By the time Vivekananda came on the scene, except in a few pockets

like Kerala and Punjab, reformation had lost its vitality. He believed that reform had already run its course. By the last quarter of the 19th century, the religious movements had almost vanished, even if popular religion was on the ascendant. To the Indian middle class which formed the social base of these movements, he had choicest epithets: "cursed by the wheels of divisions, superstitious, without an iota of charity, hypocritical, atheistic cowards," etc. Such Socio-economic changes produce a transient or temporary phase of social confusion, unrest, and apprehension. It produces stressful life style. When science and technology, inventions and discoveries, and advances in knowledge (including humanities -such as psychology and human resource management) fail to answer questions pertaining to declining moral and ethical values, widening gap between the rich and the poor, failing economies, and feeling of insecurity all around, one turns to something else for finding peace and balance of mind. Religion offers such a hope for most of us.

Vivekananda's ideas, which emphasized the distinction between religion and spirituality and drew the attention of man to the limitations of the former and the unlimited powers of the latter, caught the imagination of the world. As he straddled across North America and undertook a whirlwind lecture tour, he became India's most prominent ambassador and opened the eyes of the West to the fount of knowledge and the civilisational treasures that lay across the seas in the East. Similarly, he traveled across the length and breadth of India and lectured incessantly on the ideas of modernity that Indians would pick up from the West. We must have eyesight over the views of Vivekananda in which he suggested that education should not be for stuff-

ing some facts into the brain, but should aim at reforming the human mind. Swami Vivekananda's teachings were focused on various aspects of religion, education, social issue, character building, etc.

Conclusion-

Vivekananda's influence on the 20th century thinking of India, especially during the early years of this century was very deep and wide-spread. His Vedanctic approach to the question of supremacy of soul over body or of the spiritual world over the material world; his teachings on the equality of all men and women, of all nations; his high evaluation of the spiritual treasure we have inherited from ancient India; his search for the Indian line of spiritual, social and political development; Vivekananda's burning patriotism, his love and sympathy for the toiling millions not only of India but also of America and Europe, his scorn and hatred for the parasitic exploiting upper classes of India, whom he considered to be unnecessary, outdated ornaments of the society, dead souls, "living corpses", his realisation of the role of labour in the construction of the edifice of human civilisation, its loftiness, patrio-tism and transformatory role in society and its power, his conviction that the next phase of human history is going to be guided and led by the toilers, Shudras, with all their Shudraness, his hatred for colonial exploitation and imperialist grabbing of the world coupled with his Vedantic conception of "freedom" of soul, equality of all men and nations, and universal brotherhood—all these helped Vivekananda to travel a long way from the position of a disciple of Rama-krishna... to one of the foremost thinkers of his period who could clearly see the complex machina-

 ISBN : 978-93-80216-12-6

tions of imperialism, could foresee its inevitable downfall, hear the footsteps of the advancing social revolution, which was maturing in the womb of imperialism and with the foresight of a genius could herald the appearance of the new rulers of the new society.

As we know, from our experience of history, Vivekananda's prophecy about Shudra Raj was not the empty mystical speculation of a fortune-teller but had a sound basis deeply embedded in the social relations themselves... "One of the great cause of India's misery and downful has been that she narrowed herself, went into her shell, as the oyster does, and refused to give her jewels and her treasures to the other races of mankind, refused to give the life-giving truth to thirsting nations outside the Aryan fold.The search for the path Indian society should follow in social, spiritual and political spheres is still going on along with all its accompanying sufferings, agonies, despair, frustration, hope and fear. In this context it would not be out of place to humbly suggest: let us go back to Vivekananda, assimilate a bit of his fire, sincerity of purpose, deep love for the downtrodden have-nots, faith in their future and readiness to accept the unknown new fearlessly.

References-

1. *Badrinath, ChaturvediSwami Vivekananda, the Living Vedanta. Penguin Books India.ISBN 978-0-14-306209-7.1 jan.2006.*
2. *Goel, S.L.Administrative and Management Thinkers (Relevance in New Millennium). Deep μ Deep Publications.ISBN 978-81-8450-077-6. 1 jan.2008*
3. *Grover, Verinder. Indonesia: Government and Politics. Deep μ Deep.ISBN 978-81-7100-932-9. 1 jan. 2000.*
4. *Minor, Robert Neil, "Swami Vivekananda's use of the Bhagavad Gita",*

Modern Indian Interpreters of the Bhagavad Gita, Albany, New York: SUNY Press, ISBN 978-0-88706-297-1

5. *Prabhananda, Swami, "Profiles of famous educators: Swami Vivekananda" (pdf), Prospects (Netherlands: Springer), XXXIII (2): 2245*
6. *Nikhilananda, Swami ,Vivekananda: A Biography (PDF), New York: Ramakrishna-Vivekananda Center, ISBN 0-911206-25-6 .1953.*
7. *Rajadhyaksha, Niranjan.The Rise of India: Its Transformation from Poverty to Prosperity. John Wiley µ Sons.ISBN 978-0-470-82201-2. 2007*
8. *Vivekananda, Swami; Lokeswarananda, Swami . My India : the India seternal (1st ed.). Calcutta: Ramakrishna Mission Institute of Culture. ISBN 81-85843-51-1.*
9. *RajagopalChattopadhyaya.Swami Vivekananda in India: A Corrective Biography. MotilalBanarsidass Publ.pp. 95–.ISBN 978-81-208-1586-5.Retrieved 29 September 2013.*
10. *http:èkèkwww.artic.eduèkaboutèkmission-and-historyèk1879-1913-formative-yearsèk1893-world-s-parliament-religions-and-swamièkref*
11. *Chaube, Sarayu Prasad (2005). Recent Philosophies On Education On India. Concept Publishing Company. ISBN 978-81-8069-216-1.*
12. *Mohapatra, AmulyaRanjan (2009). Swaraj - Thoughts of Gandhi, Tilak, Aurobindo, Raja Rammohun Roy, Tagore µ Vivekananda. Readworthy.pp. 14–.ISBN 978-81-89973-82-7.*
13 *Chattopadhyaya, Rajagopal (1999). Swami Vivekananda in India: A Corrective Biography. MotilalBanarsidass Publ. ISBN 978-81-208-1586-5.*

Swami Vivekananda : A Youth Icon

Abhinav Chaudhary
Research Scholar
Chaudhary Charan Singh University
Meerut,

Swami Vivekananda once said, "Whatever you think, that you will be. If you think yourselves weak, weak you will be; if you think yourselves strong, strong you will be." He also said, "See for the highest, aim at that highest, and you shall reach the highest." Great leaders have charismatic personality which is influencing generations. What is personality? It is not physical appearance or strength. It is not brain power or intellectual capacity. According to Swami ji, personality is deeper than that. Personality is related to will power, soul or atma of human being. There are lots of personality development courses today. Behavioral science is an important area of discussion in modern times. We read lot of books on this subject written by western management gurus. Can you believe that Swami Vivekananda wrote on personality development 100 years ago? Management gurus and researchers should understand the approach of Vivekananda. Today, I would like to share some of my learning from Vivekananda on personality development and his management capacity. Supreme value of youth period is incalculable and indescribable. Youth life is the most precious life. Youth is the best time. The way in which you utilize this period will decide the nature of coming years that lie ahead of you. Your happiness, your success, your honor and your good name all depend upon the way in which you live now, in this present period. This wonderful period of the first state of your life is related to you as the

soft wet clay in the hands of the potter. Skillfully the potter gives it the right and correct shapes and forms, which he intends to give. To develop our personality, we need to learn from both happiness and pain. Sometimes we learn more from pain. Man's character is the collective expression of past experiences. These experiences result in habits. Swami ji says that we need to have vairagya to change our habits to develop a better character. Swami ji also teaches us how to control our negative emotions.

Learning from Adversity: Lesson For Modern Management Swami Vivekananda once said, "The education which does not help the common mass of people to equip themselves for the struggle for life, which does not bring out strength of character, a spirit of philanthropy, and the courage of a lion – is it worth the name? Real education is that which enables one to stand on one's own legs". Swami Vivekananda often related the experiences of his time and Swami Sharadananda recalls him saying once, "Even before the period of mourning was over; I had to go about in search of a job. Starving and barefooted, I wandered from office to office under the scorching midday sun with an application in hand, one or two intimate friends who sympathized with me in misfortunes accompanying me sometimes. But everywhere the door was slammed on my face. This first contact with the reality of life convinced me that unselfish sympathy was a rarity in the world – there was no place in it for the weak, the poor and the destitute." Swami jib's legendary concern for the poor and the downtrodden was born out of these experiences and possibly shaped his thinking and future actions. Studies in modern management have many lessons to learn from him. According to Swami Vivekananda, "Teach yourselves, teach ev-

 ISBN : 978-93-80216-12-6

eryone his real nature, call upon the sleeping soul and see how it awakes. Power will come, glory will come, goodness will come, purity will come, and everything that is excellent will come when this sleeping soul is roused to self-conscious activity."

2. **Swami Vivekananda's View on the global world**

"If any change needs to be brought in society, we will have to mobilize the youth. It is the younger generation that has to realize our dreams," Swami ji said. According to him, science and technologies are must if you want to develop. Science and western science coupled with Vedanta, is what Swami Vivekananda emphasized. So he had a global perspective and that is why Federico Mayor, the Director General of UNESCO on the occasion of Centenary of Swami Vivekananda's participation in Parliament of Religions (1983) in 1993 said, 'why we are celebrating Swami ji's participation in Parliament of Religions, why UNESCO is celebrating?' And he gave the following reason. He said, 'when I went through the constitution of Ramakrishna Mission, that was drawn by Swami Vivekananda in 1897, I was surprised to see that that Constitution was exactly similar to the Constitution drawn up by the UNESCO in 1945.' Swami ji talked about the harmony of religions, serving the poor, and taking care of the underprivileged in 1897. And hence Federico Mayor said 'that is why, UNESCO is the proper place to celebrate Centenary of Swami Vivekananda's participation in World Parliament of Religions'. And now UNESCO is celebrating the 150th Birth Anniversary of Swami Vivekananda. "The pace of development will be faster if there is youth connect for it," Swami ji said.

ISBN : 978-93-80216-12-6

Swami Vivekananda and Jamshed Ji Tata

Visualize the young Vivekananda who wrote in one of his letters, “Life is short and the vanities of the world are transient. They alone live who live for others, the rest are more dead than alive.” Swami Vivekananda met Jamshed ji Tata in the year 1893, and discussed the latter’s plan of bringing the steel industry to India. Tata wrote to Vivekananda five years later: ‘I trust, you remember me as a fellow-traveler on your voyage from Japan to Chicago. I very much recall at this moment your views on the growth of the ascetic spirit in India...I recall these ideas in connection with my scheme of Research Institute of Science for India, of which you have doubtless heard or read’. Impressed by Vivekananda’s views on science and leadership abilities, Tata wanted him to guide his campaign. Vivekananda endorsed the project with enthusiasm. Today, the Indian Institute of Science (IISc), Bangalore has become a centre of excellence in the world, thanks to Vivekananda’s holistic vision. Actually, Tata offered the first Directorship of this Institute to Vivekananda. Inspiration by Vivekananda resulted in two world-class premier institutions in India, namely IISc and Tata Institute of Fundamental Research in Mumbai.

3. Conclusion

To sum up, it is appropriate to quote from the Swami Vivekananda’s poem ‘To the Awakened India’, the wandering monk says “And tells the world-awake, arise, and dream no more! This is the land of dreams, where Karma Weaves unthreaded garlands with our thoughts Of flowers sweet or noxious, and none Has root or stem, being

 ISBN : 978-93-80216-12-6

born in naught, which The softest breath of Truth drives back to Primal nothingness. Be bold, and face the truth! Be one with it! Let visions cease, or, if you cannot, dream but truer dreams, which are External Love and Service Free." "Take up one idea. Make that one idea your life – think of it, dream of it, and live on that idea. Let the brain, muscles, nerves, every part of your body, be full of that idea, and just leave every other idea alone. This is the way to success; that is way great spiritual giants are produced." These golden words of inspiration and motivation were said by Swami Vivekananda. So from the analysis of Swami ji thoughts, the uplift of masses is possible only through positive thinking. He views on youth encouragement brings a light of its constructive, practical and comprehensive character.

References :

1. *Barlett A. and David,P.: 2000, 'Can Ethical Behaviour really exist in Business?', Journal of Business Ethics, 23, 199–209.*
2. *Chesbrough, H.: 2003, Open Innovation: The New Imperative for Creating and Profiting from Technology (Harvard Business School Press).*
3. *Cremer, D. D., Tenbrunsel, A. E. and M van Dijke: 2010, 'Regulating Ethical Failures: Insights from Psychology', Journal of Business Ethics, 95, 1–6.*
4. *Covey, S.: 1989, The Seven habits of highly effective people: restoring the character ethic (Simon and Schuster).*

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Swami Vivekananda As A Nation Builder

Km. Poonam
Research Scholars
Banaras Hindu University
Varanasi

Dherander Kumar
Project Fellow, Dr. Ambedkar Study Centre
K.M.G.G.P.G. College
Badalpur

"The Hindu man drinks religiously, sleeps religiously, walks religiously, marries religiously, robs religiously. …… Each nation has a mission for the world. So long as that mission is not hurt, that nation lives, despite every difficulty. But as soon as its mission is destroyed, the nation collapses."[1]

—Swami Vivekananda

Swami Vivekananda was a well-known and a great personality of India. He was a dreamer who dreamt big days and nights, he only dreamt thematically of Integrated India like an astrologer who knows all about the art of the palm of the hand. He was a keen student of history and had thorough knowledge of India's glorious past. After passing away of his guru shri Ramkrishna Paramhansha, he visited all pilgrimage of India on foot. He met almost all kind ofpersons; rich and poor, religious priests of all the religions, the most ignorant casts of the society, the baggers and the kings who fulfilled him from inside with the firsthand knowledge and complete understanding which he gained through his explorations, through his knowledge he could understand the reasons behind the downfall of the country; among those lack of proper education was most relevant reason in this scenario.

Swami Vivekananda firmly believed in universal brotherhood. That's why in the year 1893, while addressing to the people of Chicago where a number of delegates

 ISBN : 978-93-80216-12-6

representing different region of the world, he made the superb learned and historic speech with the words as, 'Sisters and Brothers' of America. Such an address delivered by him shows his universal approaches in vast perspectives. According to Swami Vivekananda the whole difference between the West and East is in that, they are Nations and Civilizations, whereas we are not. That is the reason he emphasized on the idea of National Integration.

Another cause according to him was our exclusiveness. India, like the oysters went into her shell and refused to give her treasures to the mankind, refused to give the life giving truths to the thirsting Nations outside the Aryan fold. Here, he wanted the exposer of the qualities of our thousands of years old glorious Culture and Civilization.

Swami Vivekananda used to say emphatically that we should feel proud of our past and derive our strength and inspiration from those glorious chapters of the beyond days.

Swami Vivekananda greatly emphasized on education for the re-generation of our motherland. He said, "Education, education, education alone! travelling through many cities of Europe and observing in them the comforts and education of even the poor people, those brought to my mind, the state of our own poor people, and I used to shed tears, what made difference? Education was the answer I got" According to him education is must for the entire mass and mankind.

Swami Vivekananda had immense belief in the strength of youth of the country. He wanted them to work out his ideas like lions that might caught fire of intellectuality and patriotism with complete sincerity like the hero who could even sacrifice their lives in the battlefield of this world of

gaining knowledge and understanding to lead our Nation towards the ideal One.

Swami Vivekananda gave a great message to the world considering the newness or more it may be said that he fortunate in having a unique response from the American audience. It is true that through their Transcendentalist Movement, Emersion, Thoreau and Alcott had already introduced stands of Indian thought to the informed people of America. True too, that Walt Whitman had already echoed some Vedantic ideas in his leaves of grass. The invitation of the open road, of the expanding horizon, and of the unlimited had already reached the mind of the American Nation. Apart from this, as Ingersoll claimed, his relentless fight against traditional religions had shaken men's faith in theological dogmas and creeds, and thus prepared people's minds for the reception of Swami Vivekananda's message. All of these factors and some more, had undoubtedly created a mental climate in America. But this may not even fractionally explain the cause of Vivekananda's success on America. Indeed, even this word 'success' goes ill with Vivekananda. He never cared for success. If he cares for anything it was, in his own words,'eternal love and service free.' Vivekananda did not have it all very easy.[2]

Swami Vivekananda had to face an organized opposition. There were determined vilifications from certain quarters who saw a peril to path of their self-interests in the growing popularity of the Swami. At this point of time, it can be seen that Vivekananda's message had not an easy walkover. Indeed, the contrary forces were helpful to set the fire for purifying the real gold. Notwithstanding all anti-propaganda, Vivekananda's message was appreciated

with total depth by the cultured American, uncommitted to fundamentalism and bigotry. This not only proved the general goodness and receptivity of the people of America, but also the fact that this young nation at heart stayed a religious adventurer since the days of the Pilgrim Fathers. But the receivers' qualities will not fully explain the success of the giver. As the last analysis, we have to seek for the fullness of the explanation in the preciousness of the gift itself, and withal, the greatness of the giver. Here was a message which brought the gladdest tidings of the noblest birthright of man- his own divinity and the inevitability of salvation.

Background of Swami Vivekanand's Thought of Nation Building

Swami Vivekananda was born in Calcutta on January 12, 1863 and passed away from the journey of life on the 4th July, 1902. His short span of time, work of 39 years is an amazing record in human history. He was an exceptionally brilliant student with an athletic frame and robust mind. He met Shri Ramakrishna in 1881, andbecame his disciple. Guided by his wonderful teacher, this wonderful student attained highest spiritual realization in the very young age. Shri Ramakrishna left this physical world in the year 1886. After his death Vivekananda banded his world renouncing brother disciple together, and established the monastic order, which later came to be known as the Ramakrishna order. He travelled on foot all over India- all along practicing austerities and making intensive study of scriptures as also of the problems of India and of men. He communed with India's various sorts of problems. He went to America in 1893, represented Hinduism at the parliament of religions, worked in America for four years spreading

 ISBN : 978-93-80216-12-6

the message of Vedanta from place to place, coast to coast, helping earnest seeking people on the path of spiritual life.

After returning to India in 1897 he roused the whole nation in self- regenerating efforts which eventually culminated in the freedom of India from British rule. He organized the whole following of Shri Ramakrishna on the broader basis, gave in the character of a dynamic movement, and trained his brother disciples and own disciples for that purpose. In 1899, Vivekananda once again went to America to inspect and inspire the Vedanta movement he had started there earlier. In 1990, he attended the Paris Congress of the History of Religions and returned to India at the end of the same year. The remaining days of his life were devoted to preaching, teaching and consolidating the work he had done. He passed away in 1902 leaving behind him a world-wide spiritual movement.

Swami Vivekananda was a follower of Vedanta. To Swami Vivekananda religion was realization, not only talk or doctrine or theory, as he said, " It is being and becoming, not hearing or acknowledging; it is the whole soul becoming changed into what it believes."[3] He also felt religion is the gist of all worship is to be pure and to do good to others. According to Swami Vivekananda, religion is the idea which is raising the brute into man, and man unto God. He firmly said, despondency cannot be religion. According to Vivekananda, an important teaching he received from Ramakrishna was that Jiva is Shiva (each individual is divinity itself). So he stressed on Shiva JnaneJivaSeva, (to serve common people considering them as manifestation of God). According to Vivekananda, man is potentially Divine, so, service to man is indeed service to God.[4]

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Harmony of Religions

Swami Vivekananda felt, the greatest misfortune of the world is we do not tolerate and accept other religions. In his lecture in Parliament of religions on September 15, 1893, he told a story of a frog who lived in a well for a long time, he was born there and brought up there and he used to think that nothing in the world can be bigger that. Swami Vivekananda concluded the story-

"I am a Hindu. I am sitting in my own little well and thinking that the whole world is my little well. The Christian sits in his little well and thinks the whole world is his well. The Mohammedan sits in his little well and thinks that is the whole world."[5]

Swami Vivekananda compared human mind with a monkey who is always restless and incessantly active by his own nature.[6] He noticed, the human mind naturally wants to get outside, to peer out of the body, as it were, through the channels of the organs. So, he stressed on practice of concentrations, as he felt there is no limit to the power of the human mind, the more concentrated it is, the more powerful it becomes. Swami Vivekananda suggested not to do anything which disturbs the mind or makes it restless.Swami Vivekananda realized three things are necessary to make every man great, every nation great.[7]

- Conviction of the powers of goodness.
- Absence of jealousy and suspicion.
- Helping all who are trying to be and do good.[8]

Swami Vivekananda suggested to try to give up jealousy and conceit and learn to work untidily for others. He told, purity, patience and perseverance overcome all obstacles.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

He suggested to take courage and work on. Patience and steady work, according to Swami Vivekananda. This is the only way to get success.

Swami Vivekananda warned it is completely unfair to discriminate between sexes, as there is not any sex distinction in atman (soul), the soul has neither sex, nor caste nor imperfection. He suggested not to think that there are men and women, but only that there are human beings.[9] Swami Vivekananda felt, The best thermometer to the progress of a nation is its treatment of its women and it is impossible to get back India's lost pride and honor unless they try to better the condition of women. Vivekananda considered men and women as two wings of a bird, and it is not possible for a bird to fly on only one wing. So, according to him, there is no chance for welfare of the world unless the condition of woman is improved.

Swami Vivekananda noticed almost everywhere women are treated as playthings. In modern countries like America, women have more independence, still, Vivekananda had noticed, men bow low, offer a woman a chair and in another breath they offer compliments like "Oh, how beautiful your eyes.." etc. Vivekananda felt, a man does not have any right to do this or venture so far, and any woman should not permit this as well. According to Swami Vivekananda such things develop the less noble side of humanity. They do not tend to noble ideals.[10]

Swami worked in the very heart of human consciousness and strove to awaken the soul of man. He knew it for certain that once the soul was awakened in a man, all contradictions an d conflicts between the absolute and the relative, the past and the present, the new and the

old, the head and the heart, science and religion, reason and faith, East and the West, my ‘doxy’, my ‘Ism’ and your ‘Ism’(would just vanish). He illuminative cries were therefore: ‘Yield not to unmanliness, O man’ (klaibyam ma sma gamah partha), ‘Atman is notby one who has no strength’ (nayamatmabalahinenalabhyah), Arise, awake, stop not till the goal is reached’ (uttishthata jagrata prapya varan nibodhata), (Abhih, abhih’ – ‘strength, strength’, ‘fearlessness, fearlessness’.[11]

These Vivekananda dinned into the languid ears of confounded humanity, for he knew that all our sins and sufferings, crimes and cruelties, exploitations and oppressions in the world originated from fear which was born of the ignorance about the Atman-Brahman equation. ‘Strength’, he spoke to the oppressor, the powerful. ‘Strength’, he spoke the oppressed and the weak. Strength, he knew, could liberate all- the captives of freedom who make slaves of men; and captives of slavery who make Brutes of man. Strength is the realization of oneness of aught that exists. On this enduring foundation of the knowledge of Atman, Swami Vivekananda sought to build his edifice of human understanding and solidarity. All other attempts to build on the negation of this foundation are merely building on sands. Behold Vivekananda, the colossus of the Spirit, as wonderful as his messages, rising Everest-like with his head above the clouds and the storms of the doubts and confusions, with his feet firmly planted in the timeless, his heart spreading over the world like the sky, and uttering in deep reverence to the whole of humanity words from his soul.

After analyzing Swami Vivekananda’s contribution to the world we can say that he was truly the nation builder

 ISBN : 978-93-80216-12-6

and national reformer apart from being the great saint who not only recognized India's problems but also suggested the best possible solutions to resolve them by leading people and following them by self. He did the holy work of liting the brightened lamp of knowledge and brought people out of the darkness of ignorance.

References :

1. *Swami Vivekananda: "Call to the Youth for Nation Building." Sureshlibrarian.wordpress.com.*
2. *VyomanandSwami Ji, Vivekananda onthe World Stage, PrajgyaPrajna, Banaras Hindu University, Volume: 57, Part: 02, Year: 2011-12. ISSN: 0554-9884.*
3. *'Swami Vivekananda: Life and Teachings', belurmath.org.*
4. *'Ideology of Ramakrishna Math and Ramakrishna Mission', belurmath.org.*
5. *'Why wedisagree', belurmath.org.*
6. *'The Mind is Like a Monkey', psychokhemia.com.*
7. *'Why Control Mind', greenmesg.org.*
8. *Swami Vivekananda: "Call to the Youth for Nation Building." Sureshlibrarian.wordpress.com.*
9. *'Thoughts on Women', writespirit.net.*
10. *Vivekananda, Swami (1996). My India: the India eternal (1st ed.ed.). Calcutta: Ramkrishna Mission Institute of Culture. pp. 68-69. ISBN 8185843511.*
11. *Vyomanand Swami Ji, Vivekananda onthe World Stage, PrajgyaPrajna, Banaras Hindu University, Volume: 57, Part: 02, Year: 2011-12.ISSN: 0554-9884.*

Vivekananda's Views on Education and Youth

Mrs.Shilpi
Asstt. Prof., Home Science
K. M. G. G. P. G. College,
Badalpur

Introduction

Today, the world is passing through a difficult period, characterised by widespread feeling of insecurity. Everywhere, unrest and intolerance is prevailing all over the world. Even great advances in knowledge of science and technology have failed to arrest the social and economical confusion, leading to rapid decline of moral and ethical values. At such a line, one feels the need to turn to people like Swami Vivekananda, in order to find peace of find. Thus, harmony of religion, universal, solidarity and human being as the highest manifestation of spiritual consciousness are the basic fundamental, one should not lose sight of reading and understanding Vivekananda. His message both to Indian and foreign audience that India might not be militarily free or politically free, it had a special and influential role to play in creation of a world. Tolerance play vital role in shaping a peaceful and democratic society. He felt that Hinduism should be rational, non-mythical and activist especially in the field of social services. He propagated the ideas of Moral Universal in the 19^{th} century to the whole world. His ideas was adapted in the agenda of world politics in recent **year i.e. Universal Declaration of Human Right** which is the example of moral universal in practice. Awakening a sleeping nation, a sleeping levitation, to the realities of the contemporary world setting it on to the road of modern development like denouncing its caste, its

 ISBN : 978-93-80216-12-6

untouchability, its suppuration of women which Swami Vivekananda initiated towards the end of 19th century.

One of the greatest contributions of Swami Vivekananda towards making of modern India is the **concept of Education.** His valuable thought on the above subject that is relevant and viable today. Vivekananda realizes that mankind is passing through a crisis. The tremendous emphasis on the scientific and mechanical ways of life is fast reducing man to the status of a machine. Moral and religious values are being undermined. The fundamental principles of civilization are being ignored. Conflicts of ideals, manners and habits are pervading the atmosphere. Disregard for everything old is the fashion of the day. Vivekananda seeks the solutions of all these social and global evils through education. With this end in view, he feels the dire need of awakening man to his spiritual self wherein, he thinks, lies the very purpose of education.

Meaning of Education:

Vivekananda said: "The education which does not help the common mass of people to equip themselves for the struggle of life, which does not bring out strength of character, a spirit of philanthropy, and the courage of a lion – is it worth the name? Real education is that which enables one to stand on one's own legs. Education must provide 'life-building, man-making, character-making assimilation of ideas". The ideal of this type of education would be to produce an integrated person.The true education, gives the growth and expansion of personality. Vivekananda wanted that the education for total human development was the main vision. "Character, efficiency and humanism should be the aim of all education".

According to Vivekanada, Education is by which character is formed, strength of mind is increased, the intellect is expanded and by which one can stand on one's own feet. What we need is to study, independent of foreign control, different branches of the knowledge that is our own and with it the English language and Western science; we need technical education and all else that will develop industries. So that men, instead of seeking for service, may earn enough to provide for them and save against a rainy day. The end of all education, all training, should be man-making. **The end and aim of all training is to make the man grow**. The training, by which the current and expression of will are brought under control and become fruitful, is called education. What our country now wants are muscles of iron and a nerve of steel, gigantic wills which nothing can resists, which can penetrate into the mysteries and secrets of the universe and will accomplish their purpose in any fashion, even if it means going down to the bottom of the ocean, meeting death face to face. It is a man-making religion that we want. It is man-making theories that we want. It is man-making education all round that we want.

Vivekananda's ideas on education had a **democratic angle.** He expressed deep concern for the mass, "The education which does not help the common mass of people to equip themselves for the struggle for life, which does not bring out strength of character, a spirit of philanthropy, and the courage of a lion - is it worth the name? Real education is that which enables one to stand on one's own legs.

The Goal of Education

Vivekananda point out that in there is one defect in

modern education system that is no definite goal to peruse. Swamiji attempts to establish, through his words and deeds, that the end of all education is man making. He prepares the scheme of this man-making education in the light of his over-all philosophy of Vedanta. According to Vedanta, the essence of man lies in his soul, which he possesses in addition to his body and mind. In true with this philosophy, Swamiji defines education as 'the manifestation of the perfection already in man.' The aim of education is to manifest in our lives the perfection, which is the very nature of our inner self. This perfection is the realization of the infinite power which resides in everything and every-where-existence, consciousness and bliss (satchidananda). Meditation, fortified by moral purity and passion for truth, helps man to leave behind the body, the senses, the ego and all other non-self elements, which are perishable. He thus realizes his immortal divine self, which is of the nature of infinite existence, infinite knowledge and infinite bliss. In his scheme of education, Swamiji lays great stress on physical health because a sound mind resides in a sound body. He often quotes the Upanishadic dictum 'nayamatmabalahinenalabhyah'; i.e. **the self cannot be realized by the physically weak**. However, along with physical culture, he harps on the need of paying special attention to the culture of the mind. According to Swamiji, the mind of the students has to be controlled and trained through meditation, concentration and practice of ethical purity. All success in any line of work, he emphasizes, is the result of the power of concentration. By way of illustration, he mentions that the chemist in the laboratory concentrates all the powers of his mind and brings them into one focus-the elements to be analyzed-and finds out

 ISBN : 978-93-80216-12-6

their secrets. Concentration, which necessarily implies detachment from other things, constitutes a part of Brahmacharya, which is one of the guiding mottos of his scheme of education. Brahmacharya, in a nutshell, stands for the practice of self-control for securing harmony of the impulses. By his philosophy of education, Swamiji thus brings it home that education is not a mere accumulation of information but a comprehensive training for life. To quote him: 'Education is not the amount of information that is put into your brain and runs riot there undigested, all your life.' **Education for him means that process by which character is formed, strength of mind is increased, and intellect is sharpened, as a result of which one can stand on one's own feet.**

Swamiji lays a lot of emphasis on the environment at home and school for the proper growth of the child. The parents as well as the teachers should inspire the child by the way they live their lives. Swamiji recommends the old institution of gurukula (living with the preceptor) and similar systems for the purpose. In such systems, the students can have the ideal character of the teacher constantly before them, which serves as the role model to follow.

Vivekananda, in his scheme of education, meticulously includes all those studies, which are necessary for the all-around development of the body, mind and soul of the individual. These studies can be brought under the broad heads of physical culture, aesthetics, classics, language, religion, science and technology. According to Swamiji, the culture values of the country should form an integral part of the curriculum of education. The culture of India has its roots in her spiritual values. The time-tested values are to be imbibed in the thoughts and lives of the students through

the study of the classics like Ramayana, Mahabharata, Gita, Vedas and Upanishads. This will keep the perennial flow of our spiritual values into the world culture.

Vivekananda'sViews on Education system:

Education, according to Swamiji, remains incomplete without the teaching of aesthetics or fine arts. He cites Japan as an example of how the combination of art and utility can make a nation great. Swamiji reiterates that **religion is the innermost core of education**. However, by religion, he does not mean any particular kind of it but its essential character, which is the realization of the divinity already in man. He reminds us time and again that religion does not consist in dogmas or creeds or any set of rituals. To be religious for him means leading life in such a way that we **manifest our higher nature, truth, goodness and beauty**, in our thoughts, words and deeds. All impulses, thoughts and actions which lead one towards this goal are naturally ennobling and harmonizing, and are ethical and moral in the truest sense. It is in this context that Swamiji's idea of religion, as the basis of education should be understood. It is to be noted that in his interpretation, **religion and education share the identity of purpose.**

It is a misinterpretation of Vivekananda's philosophy of education to think that he has overemphasized the role of spiritual development to the utter neglect of the material side. Vivekananda, in his plan for the regeneration of India, repeatedly presses the need for the eradication of poverty, unemployment and ignorance. He says, We **need technical education** and all else which may develop industries, so that men, instead of seeking for service, may earn enough to provide for them-selves, and save something against a rainy day. He feels it necessary that India should take from

 ISBN : 978-93-80216-12-6

the Western nations all that are good in their civilization. However, just like a person, every nation has its individuality, which should not be destroyed. The **individuality of India lies in her spiritual culture**. Hence in Swamiji's view, for the **development of a balanced nation**, we have to combine the dynamism and scientific attitude of the West with the spirituality of our country. The entire educational program should be so planned that it equips the youth to contribute to the material progress of the country as well as to maintaining the supreme worth of India's spiritual heritage.

He put more **emphasis on physical, moral and spiritual education, medium of language, women education and education for weaker section of society.**

Physical Education:

Without the knowledge of physical education, the self-realization or character building is not possible. One must know, it is not possible to keep a strong mind without a strong body. In particular, Vivekananda stressed the need for physical education in curriculum. He said, "You will be nearer to Heaven through football than through the study of Gita. You will understand Gita better by your biceps, your muscles a little stronger. You will understand the Upanishads better and the glary of the Atman, when your body stands firm on your feet and you feel yourself as man.

Medium of language:

He said that Sanskrit is the source of all Indian languages and a repository of all inherited knowledge. Therefore without Sanskrit, it will be impossible to understand Indian culture. It is like a store house of ancient heritage. To

 ISBN : 978-93-80216-12-6

develop our society it is necessary that men and women know this language, besides the knowledge of their own mother tongue.

Emphasis on religion:

Vivekananda said, "Religion is the innermost core of education. Religion is like the rice and everything else, is like the curries. Taking only curries causes indigestion and so is the case with taking rice alone. Therefore, religious education is a vital part of a sound curriculum. Vivekananda considered Gita, Upanishads and the Vedas as the most important curriculum for religious education. For him, religion is attainment of self realization and divinity. It helps not only in individual's development but also in the transformation of total man. The true religion cannot be limited to a particular place of time. He pleaded for unity of world religion. He realized truth while practising of religion. The truth is the power, untruth is the weakness. Knowledge is truth, ignorance is untruth. Thus truth increases power, courage and energy. It is the source of light and therefore, necessary for the individual as well as collective welfare. In Vivekananda's point of view, ethics and religion are one and the same. God is always on the side of goodness. To fight for goodness is the service to God. The moral and religion education develop the self confidence among the young men and women.

Man kind education:

The educational philosophy of Swami Vivekananda is a harmonious synthesis between the ancient Indian ideals and modern Western beliefs. He not only stressed upon the physical, mental, moral, spiritual and vocational development of the child but also he advocated women education as well as education of the masses. The essential

 ISBN : 978-93-80216-12-6

characteristics of educational philosophy of Swami Vivekananda are idealism, naturalism and pragmatism. In a naturalistic view points, he emphasized that real education is possible only through nature and natural propensities. In the form of idealist view point, he insists that the aim of education is to develop the child with moral and spiritual qualities. In the pragmatists view point, he emphasized the great stress on the Western education of technology, commerce, industry and science to achieve material prosperity. In short, first he emphasized spiritual development, then the material prosperity, after that safety of life and then solving the problems of foods and clothing of the masses.

Self Education:

Self education is the self knowledge. That is, knowledge of our own self is the best guide in the struggle of our life. If we take one example, the childhood stage, the child will face lot of problems or commit mistakes in the process of character formation. The child will learn much by his own mistakes. Errors are the stepping stones to our progress in character. This progress will need courage and strong will. The strong will is the sign of great character of the man.

Apart from above concept he also focussed on **education of weaker section of society and Women.** Vivekananda pleaded for the universal education so that the backward people may fall in with others. To uplift the backward classes he chooses education as a powerful instrument for their life process. The important features of his scheme of female education are to make them strong, fear-less, and conscious of their chastity and dignity. He insists that men and women are equally competent not only in the academic matters, but also must have equal companion in the home and family.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Vivekananda being a keen observer could distinguish the difference in perception about the status of women in the West and in India. "The ideal women in India is the mother, the mother first, and the mother last. The word woman calls up to the mind of the Hindu, motherhood; and God is called mother.

Conclusion:

Swami Vivekanadawas actually the great synthesized of ever time. He laid on education as apowerful weapon for this change. As a educationist, he believes in absolute values which have to be realized by good system of education. From the analysis of Vivekananda's scheme of education, the uplift of masses is possible only through education. He views on education brings a light of its constructive, practical and comprehensive character. By giving education, he tries to materialize the moral and spiritual welfare and up-liftment of humanity, irrespective of caste, creed, nationality or time. By the way of his scheme of education, we can get the strong nation with peace and harmony and without caste and creed. He builds a strong nation for our sake. Only a process of good system of education can bring about a healthy political and social life. He stands for this and his message is for all time.

***References** :*

1. *Chandra, S.S. and Rajendra K. Sharma, Philosophy of Education, New Delhi: Atlantic Publishers and Distributors (p) LTD, 2004, p. 212.*
2. *Chandra, S. (1994) : Swami Vivekananda's Vision of Education, In : Roy, S. &*
3. *Sivaramkrishnan, M. (Eds), Reflections on Swami Vivekananda : Hundred Years After Chicago, Sterling Publishers Pvt. Ltd, New Delhi.*
4. *Ghosal , S. (2012) : The Educational Thoughts of Swami Vivekananda : A Review, University News, 50 (09), Feb. 27 – March 04, 2012, New Delhi*

5. *Siddiqui, M.H., Philosophical and Sociological Perspectives in Education, New Delhi: A.P.H. Publishing Corporation, 2009, p. 74.*
6. *Singh, Y.K. Philosophical Foundation of Education, New Delhi: APH Publishing Corporation, 2007, p. 233.*
7. *Pani, S.P. and Pattnaik, S.K. Vivekananda, Aurobindo and Gandhi on Education, New Delhi: Anmol Publications PVT. LTD., 2006, p. 80*

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Vivekananda : An Universal Saint

Dr. Seema Sharma
Asso. Prof. English
K. M. G. G. P. G. College Badlapur

Swami Vivekannd become popular for his great ideals not only in India but in other countries also. In such a short period of life of 39 years. He presented the true India to the whole world. He brought the motto of 'VasudhaivaKutumbarkam' the whole world is one family is a message for survival, growth and real progress of human society. Whatever message and teaching was given by our saints was explained and elaborated in the global contest by Vivekanand what a superhuman articulationand presentation he bestowed on all of us that the whole world was mesmerized and began to look towards India, to explore and learn about its past glory. Nowadays when there are many problems in society and we are trying to bring the concept of global village there is a greater need of the thoughts of Swami Vivekananda on learning to live together and universal brotherhood. According to vivekanand educational Concerns of a man are person's interaction with society. The purpose of society is to help and secure the well- being human beings. Society is a boundationthat always checks our activities and brings a check on our freedom. While freedom is essential for educational growth so a goodsociety provides the resources as well as the opportunity for each of its members to grow properly his or her views to the maximum . Education is for all either a person belongs to important sect or unimportant sect of society. Each society has its civilization or the inner aspect 'culture'. Vivekanand was impressed and told people that the development of a child is possible only when he lives in

a cultured life. Though much people help him in the process of development as parents, friends, teachers but education system is changing and a student is much influenced by teachers only. A student must know how to concentrate his mind only on useful things and detach his mind from distractions. Another important thing is that a student must focus on desired subject and focus the full force of his mind on it. According to Vivekanand a student is one whose inner Consciousness is awakened. Vivekanand emphasized that the ideal of all education, all training should be man-making. He was not happy with the education system. He said: "We are always trying to polish up the outside. What use in polishing up the outside when there is no inside. All education ends with the development of man."

Vivekanand emphasized on character building. He told that character is everything for man. He always focused on self control and study the scriptures with other branches of learning. He should observe strict continence, never Consciously departing from it. A student must have purity of thought, word deed and in all conditions forms the life of saints. A saint must have contort of all organs of sense. He taught that we must have self Control then only inner faith is produced. The whole energy of young age must be manifested not only in studies but also in the service of his companions. A young man is completely. Educated only when he develops the sense of service. He focused on women education in India. He was sad to see that the condition of women in India is so humble. Most of them are married at the age of eleventh before they understand society. Men are well educated but it is not so in case of women. He appreciated Indian women and said that hardly we find in other countries, women like here. It is indeed

true that 'the Goddess herself lives in the houses of Virtuous men as Lakshmi'. He said I have seen thousands of women here hearts are as pure and stainless as snow! Women are working in school, college , offices , do all kinds of works but they are not safe in the streets. He said 'Daughters should be supported and educated with as much care and attention as the sons.' As sons are given proper time to study and settle in life so daughters should also be given appertunity of education. If we educate and improve the Condition of women, our country will be good and improve so we will improve nation. When he went to world parliament of religion in Chicago in 15 sep. 1893 he addressed there people in such a manner that not only Indians but people living there followed him agreat lot for his ideals he told that we respect Rishis as perfect beings. But most of them are women. The Vedas teach us that creation is without beginning or end. It is good to love god for the hope of reward in this or the next world but it is better to love God for love's sake. He said " Lord, I do not want wealth, nor children, ner learning. If it be they will, I shall go from birth to birth, but grant me this, that I may love Thee without the hope of reward-love unselfishly for love's sake." The Vedas give us teaching that soul is permanent and never dies. Krishna also told in Geeta that Soul lives always only the body dies but soul will get perfection only when this body will decay. This is called muktior freedom, freedom from the miseries of this world. He told about every religion that every religion forms a mental image that helps us to follow right path of religion Christians go the church. By the law of association, the material image calls up the mental idea and vice versa. This is why the Hindu uses an external symbol when he worship. It is so because it keeps his mind

 ISBN : 978-93-80216-12-6

fixed on the Being to whom he prays. Everyone knows that the image is not God. We naturally connect our ideas of holiness with the image of church, a mosque or a cross. The Himdus have associated the idea of holiness purity, truth omnipresence, and such other ideas with different images and forms. This is the first stage of worship but the next stage comes and that is mental prayer. Great masters have sympathy for all and they are more safe to the ignorant and poor. Buddha told to his disciples that he is for the poor, for the people so he taught most of his teachings in the language of Common people.

He emphasized on Buddhism to be followed the separation between the Buddhists and the Brahmins is the cause of the downfall of India. India is much populated country but it is bad that it has been conquerored by foreigners for thousand years, but it would be good if we utilize wonderful intellect of Brahmins with the heart, the noble soul, the wonderful humanizing power of the great masters.

Vivekanand was a great saint and he raised a voice of religious unity in world's parliament of religions in Chicago people appreciated his thoughts. He told that it has been proved to the world that holiness, purity and charity are essential and possessions of every religion either it is Christianity or Hinduism. He again emphasized that the motto of every religion must be "help and not eight" "assimilation and not destruction".Harmony and peace and not dissension. What is the need of Hinduism, is the need of all religions

References :

1. *Hegde, A. (2016, February 2). Inspire to Reach Higher: Swami Vivekananda - Empowering quotes that inspire. Speech presented at 150th*

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Birth Anniversary of Swami Vivekananda.

2. *Majumdar, Ramesh Chandra (1963), Swami Vivekananda Centenary Memorial Volume, Kolkata: Swami Vivekananda Centenary, p. 577*
3. *Nikhilananda, Swami. (1953). "Vivekananda: A Biography". New York: Ramakrishna-Vivekananda Center.*
4. *Paul, Dr S. (2003). Great Men Of India : Swami Vivekananda. Sterling Publishers Pvt. Ltd.*
5. *Rolland, Romain (2008), The Life of Vivekananda and the Universal Gospel (24 ed.), AdvaitaAshrama*
6. *Sen, Amiya (2003), Gupta, Narayani, ed., Swami Vivekananda, New Delhi: Oxford University Press*
7. *Ritananda, Swami (2013). "Swami Vivekananda: The personification of Spirituality". Swami Vivekananda: New Perspectives And Anthology on Swami Vivekananda. Ramakrishna Mission Institute of Culture.*

Swami Vivekanand's Philosophy of Vedanta And Education

Dr Sonam Sharma
Asstt. Prof. , Education,
K. M. G. G. P. G. College,
Badalpur

Swami Vivekananda was a great philosopher, educationist, spiritual leader who toured almost the whole world but whose philosophy was deeply rooted in ancient Indian wisdom where education is acquired from spiritual life. He devised the idea that true education aims at life-building, man-making and character-developing. His Spiritual Humanism Philosophy of Education showed that education can be used as a tool to achieve, social justice and for resolution of all ethnic, religious, racial or social conflicts by propagating the idea of "Common Origin of Soul" and "Oneness of Soul."

Swami Vivekananda advocated a harmonious blend of the dynamism and scientific attitude of the west with the spiritual culture of our country.Swamiji has taught Indians how to adapt Western humanism (the ideas of personal liberty, social equality, justice and respect for women) to Indian ethos. He made the Western people realize that they had to learn much from Indian spirituality for their own well-being. He showed that, in spite of her poverty and backwardness, India had a great contribution to make to world culture. He was India's first modern educational and cultural ambassador to the West. On Swamiji's contribution, Netaji Subhash (1987-1945) said: "Swamiji harmonized the East and the West, religion and science, past and present. And that is why he is great. Our

 ISBN : 978-93-80216-12-6

countrymen have gained unprecedented self-respect and self assertion from his teachings.

Swami Vivekanand's Vedanta Philosophy:

Every soul, according to Swamiji, is potentially divine and everyone's goal is to manifest the divine within. Spirituality is the manifestation of this divinity already in man. Shri Ramakrishna, the guru of Swamiji, used to say that the Bengali synonym of **man is manush; that is, man + hush, which symbolizes a mind with spiritual consciousness**. This self-actualization is possible only through spiritual education. He realized that owing to centuries of oppression, the downtrodden masses had lost faith in their capacity to improve their lives. It was necessary to infuse into their minds faith in them. For this, they needed a life-giving, inspiring message.

Swamiji found this message in the "Principle of „Atman, the doctrine of the potential divinity of the soul, taught in Vedanta." .Swami Vivekananda was an idealist and a spiritualist emphasizing realization of divinity in man Vivekanda was greatly influenced by the classical Indian philosophy. His thoughts were shaped by the vendanta. His Vedanta is practical and not abstract. He applied vendanta to practical life.

Swami Vivekananda epitomized this Vedanta philosophy in modern times. "Vedanta" which is derived from the Sanskrit words„**Veda (wisdom) and "anta" (supreme), signifies „supreme wisdom**. Traditional Vedanta philosophy defines education as "The manifestation of perfection already in man." Every soul is the source of indefinite knowledge. Every human being is a reservoir of immense potential. He is born with an endless

 ISBN : 978-93-80216-12-6

range of abilities and talents, known and unknown to him. These potentials, which are dormant, need the awakening touch of the education for their actualization. What a man learns is actually what he „discovers within him by taking away the lid off his own soul.

Swami Vivekananda believed in the Vedanta philosophy which considers that the ultimate goal of human life is to attain 'Unity with the Creator'. According to him 'God resides in every human heart'. So that, the best worship of God is service to mankind.. According to him, morality is the important aspect of personality.

The belief of this philosophy is that every human being is spirit (Atma), the soul which is immortal, evolving up or reverting back from birth to birth and death to death. For this, Vivekananda laid stress on religious education. Swami Vivekananda believed in the liberal concept of religion. Essential elements of all religions are the same. No religion is inferior to other religion. Man should follow an attitude of respect for all religion. According to Vivekananda, love is the highest goal of religion. Man should imbibe love for all and hatred for none

Swami Vivekanand's Eucation's Philosophy :

Swami vivekanand defines education as the "development of faculty, not an accumulation of words". To him, education was enlightenment, education was illumination, education was meant for the training of individuals "to will rightly and efficiently". According to Swami Vivekananda 'Education means that process by which character is formed, strength of mind is increased, and intellect is sharpened, as a result of which one can stand on one's own feet' His educational thoughts and ideas have

been influenced by his philosophy of life. Swami Vivekananda had great faith in education to him; this was the basic means for achieving human excellence and solving national problems. He said there are no problems which cannot be solved by that magic word "education.

Vivekananda emphasised on such education through which moral values can be developed among the students so that they can conduct their life morally. They can decide what is right or wrong; what is good or evil; what is justice or injustice .Vivekananda believed the development of moral values within him is the prior task of education.

He further said that the education that does not help the common mass of people to equip themselves for the struggle for existence, which does not bring out strength of character, a spirit of philanthropy, and the courage of a lion, is not worth the name. Real education, to him, means that which enables one to stand on his own feets.Vivekananda stressed the need to educate the millions of our common people to revitalize Indian culture of the day. A nation is advanced in proportion as education and intelligence spread among the masses. National development rests upon the goodness and greatness of men; and goodness and greatness of men are determined largely by education.

Education for **"total human development"** was the vision of Vivekananda which, he believed, could be achieved by refining and processing of in eternal human energies through the science of man in depth (Adhyatma Vidya). Philosophy, the science, the art and studies of various other fields of knowledge could help nations in achieving this goal. Through education nations have to unfold the humanistic

and divine possibilities lying hidden within their people and raise the levels from which their consciousness handles their external, natural and social environment. True education is that which does this.

Vivekananda was deeply spiritual and intensely human. His message is the message of humanism. But his humanism has a deeper content. He said that education which gives us intellectual energy must also give us humanistic impulse and its energy of character. If man's education combines these two energy sources he will become tremendously powerful, well educated, and full of hope, endowed with a firm mind and will, and strength of muscle and nerve. Vivekananda said **"We want our education to turn out millions-of such young people enjoying that unit of human bliss."** He was fully aware of the need for national development to be achieved through education. He stressed education for democracy and said that strengthening of democracy was possible only through education. The strength of a democracy was seen to lie in its alert and patriotic citizens who could be produced and developed through education.

Education should involve all domains of health: physical, mental, social and spiritual with an ethical culture. But spirituality, which is the eternal principle that inspires every religion, must form the innermost core of education system. "What is the use of polishing the outside when there is no inside," he said. The ultimate aim of all training is to make a man. In today's world, this spiritual consciousness translates itself as values of unselfishness ethics, compassion, tolerance, security and harmony to develop peace and democracy.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Vivekananda said **"Education must provide life building, man-making, character - building assimilation of ideas."** This ideal education will produce an awakened person - the ideal one who knows how to improve his intellect, purify his emotion, and stand like rock on moral virtues and unselfishness. "If you have assimilated five ideas and made them your life and character," he said, "you have more education than the man who has memorized the whole library."

Swamiji observed "It is culture that absorbs shock, knowledge is only skin-deep. A little scratch brings about the old savage." Thus, the importance of exposing to and teaching of human culture cannot be overemphasized in making education human-friendly. According to him, the cultural values of the country should form an integral part of the curriculum of education.

He stated emphatically that if the Indian society is to be reformed, education has to reach everyone - high and low. He said that the sense of dignity rises in a man when he becomes conscious of his inner spirit. And it is the very purpose of education.Swamiji's most unique contribution to the cause of education was to open the minds of Indians to their duty to women and downtrodden masses. One of the most significant contributions of Swami Vivekananda to the modern world is his interpretation of religion and spirituality as the core of education.

Swamiji met the challenge of modern sciences by showing that religion is as scientific as science itself; religion is the science of consciousness. As such, religion and science are not contradictory to each other but are complementary. This universal conception frees religion from the hold superstitions, dogmatism, conflicts, ethnic confrontations

and intolerance. It makes spirituality the highest and noblest pursuit - the pursuit of supreme emancipation, supreme knowledge, and supreme bliss.

Vivekananda's concept of potential divinity of the soul gives a new concept of universal humanity. Swamiji's vision of education is life-building, man-making and character-building. His vision of an ideal man was where "all the elements of philosophy, mysticism, emotion and work are blended equally." Values, ethics, morality, compassion, tolerance, secularity are higher in his agenda of education.

He was a great educationist in India to speak for the masses, formulate a definite philosophy of service, and organize large scale educational social service system. He said, "They alone live, who live for others. The rest are more dead than alive." He was revolutionary in the field of education and touched every part of it. The cardinal definition of 'Education' given by him was, "**Education is the manifestation of perfection already in man**. Vivekananda advocated **man-making education**. He wanted 'muscles of iron' as well as 'nerves of steel.' He wanted the youth to possess indomitable will and the strength to drink up the ocean. What he wanted was to prepare the youth both physically and mentally to face the challenges that would lie ahead of social workers. He was also practical enough in warning the young of the pitfalls ahead and the way Society reacts to such endeavours.

According to swami ji, "All good work has to go through three stages. First comes ridicule, then the stage of opposition and finally comes acceptance."According to Vivekananda, "Three things are necessary to make every man great, every nation great":

- Conviction of the powers of goodness
- Absence of jealousy and suspicion
- Helping all who are trying to be and do good

He believed in the universal brotherhood of man and upliftment of mankind. Service and renunciation were the two key words which he believed most and tried to apply for the development of our society. The exposition and analysis of Vivekananda's innumerable thought of education brings to light its constructive, practical and comprehensive character. He was a real prophet of humanity who stood for the reconciliation of human contrasts and conflicts and the establishment of universal brotherhood. He states empathically that if society is to be reformed, education has to reach to everyone high and low, because individuals are the very constituents of society.

Swami Vivekananda's views as a progressive Indian thinker played a positive role in the development of the patriotic and national self consciousness of the peoples of India and he made a considerable contribution to our national struggle and his teachings continue motivating the masses in their lives. Swami Vivekananda had envisioned a society with a new type of human being in whom knowledge, action, work and concentration were harmoniously blended, and he proposed a new type of education for achieving this. Today after nearly a generation of changes, the philosophical thoughts, cultural ideas and idea about scientific principles of Swami Vivekananda remain absolutely acceptable. Swamiji's educational, spiritual thoughts and scientific ideas are still now significant for the development of socio-economic standard, educational, political and cultural aspirations in the 21^{st} century's Indian society.

References :

1. *Johari, PK (2005). Educational Thoughts, Anmol Publications PVT. LTD., New Delhi: 238.*
2. *Martin L, King J, The Maroon Tiger (1947). The Purpose of Education – Speech, Atlanta, USA.*
3. *Pani SP, Pattnaik SK (2006). Vivekananda, Aurbindo and Gandhi on Education, Anmol Publications Pvt. Ltd, New Delhi: pp. 59-60.*
4. *Sudharma J (2009). Educational Thoughts of Swami Vivekananda. Ed. 1, Crescent Publishing Corporation, New Delhi*
5. *Swami L (1996). My India: The India Eternal, Ramkrishna Mission Institute of Culture, Calcutta.*
6. *Swami V (1971). Teaching of Swami Vivekananda.*
7. *Swami V (1976). Powers of the mind. Vi. H. Foundation*
8. *Swami V (2009). Bhagvad Gita as Viewed by Swami Vivekananda, Vi. H. Foundation*
9. *Swami V (2010). Personality development. Vi. H. Foundation, New Delhi*
10. *Swami V (2011). Complete Works Swami Vivekananda- The Future of India. Vi. H. Foundation., New Delhi. 3(9).*
11. *Swami V (2011). Complete Works Swami Vivekananda-My Life and Mission. Vi. H. Foundation New Delhi., 8(9).*
12. *Swami V (2011). Complete Works Swami Vivekananda-The education that India that needs. Vi. H. Foundation, New Delhi. 4(9).*
13. *Swami V. My idea of education.*

INTERNET RESOURCES:

- *www.answers.com.*
- *http://www.academeresearchjournals.org/journal/ijerd*
- *http://www.thecho.in*
- *http://www.sasnet.lu.se*
- *www.google.com.*
- *www.belurmath.org/national_youth_day.htm*
- *www.sriramakrishna.org/bulletin/2008*
- *http://rbalu.wordpress.com*

Swami Vivekananda and Personlity Development

Balram Singh

Asstt. Prof., B.Ed.
K. M. G. G. P. G. College
Badalpur ,

Our personal development is more important that all other types of development economic educational rural etc. because all these other kinds of development are undertaken only for the benefit of man. Most of the people don't consciously develop their personality as they are not aware of it. Our appearance, speech and actions become apparent to us only through others as we don't see ourselves or our behaviour. Hence study and development of personality is to be done with three things in mind 1) Individual reflection 2) Social interaction and 3) Work. An individual with self reflection interacting with others especially through work is in a position to analyse & develop his / her personality. One must define a person first before talking of his / her personality. A person has a body, a mind & has a level of energy: this is called body-mind complex. All the three factors are changing and affect each other. However there is a constant factor in everyone of us which runs as a thread running through a garland of experiences. Some call it Soul or Atman the constant, the Real man behind the changing person. The most obvious amongst personality is the Body of a person. It goes without saying that the body structure is the most important factor in the first impression of a person. Naturally a healthy, strong, proportioned body is an asset to a person. Various books are available which deal with how to develop it. We suggest yogasanas for body

development. Wholesome food plenty of fresh water, regular exercise, timely habits of daily choice of likes getting up, sleep, eating etc. help develop a healthy, strong and well structured body.

A body is covered with clothes for protection. With modern technology clothes have become attractive and variety is available. Also changing morality, & sensuality has brought in another dimension in common mans dress. But one must keep in mind that the weather conditions, social demands, occasions require appropriate clothing & sober decent dress is what is appreciated, in the longer run. Further the external appearance is judged by the actions and speech of a person. A friendly and welcome personality has likeable postures, gesture, facial features, smile to its credit. The whole external appearance interms of its social implication through work & other interaction is judged by various bodily actions and reactions its speech and conversation.

Postures & gestures can be perfected as an actor does with practice infront of a mirror and also observing their impact on others. Co-ordinated movement of different limbs especially hands, feet, head, and eyes (parts that move) can create pleasing appearance. Behaviour & manners is a little deeper proposition. It is mainly dependent on the character of a person and social customs put together. Behaviour & manners can't be same under different time and place. Different cultures demand different manners. Story of Sir Keshab chandra Sen is told that when dining in a banquet given by Queen Victoria in his honor he mistook warm water with cut lemon brought at the end of a ten course dinner as sharbat to be drunk, there by causing all

 ISBN : 978-93-80216-12-6

including the Queen at the table to drink it after the example of the Chief-guest. The Namaste done in India in greeting others thus recognising the respectful divine in others is not one same as the handshake offered being reminiscent of the friendliness of the wild cowboys, showing only lack of enmity. Art of conversation is as old as civilisation. Languages developed for social interaction. A command on many languages besides ones mother tongue along with a modulated voice carries a lot of weight. A person with narrow interests, with little interest in others, showing great interest in talking about itself is a bore. Many people are cynical, talk in monosyllable are either too loud or hearty thus causing bad impression. In India people talk too much and monopolies conversation which is considered bad manners. In gestures postures, behaviour, manners and conversation imitation should be avoided.

Nowadays with high pressure advertisement young people tend to copy actors, actresses & TV personalities. However whatever is original is respectable. Imitation is entertaining but originality is enlivening. So act freely as every individual is unique. In the body mind complex the mental makeup or character carries greatest importance. Thinking, feeling, willing, imagination are some of the aspects of mind. Thought is the only force in the world as Swamiji says. Through thought I judge myself interact with the world. Hence mass thinking should be avoided. A habit of deep original thinking based on well collected data and capacity to analyse with concentration will go a long way in developing personality. A person has to balance between his intellect and emotions as intellect is lame and emotions are blind. Intellect is trained by reasoning and emotions by prayers, will power is developed through taking challenges

and the whole mind through continence. Life becomes meaningful when it fulfills certain felt needs. Depression, aggression & addiction is due to meaninglessness in life. The void can't by money power or position which is clear from examples of the Western Culture. The hippies were children of some of the richest people in the world. Drugs are taken by the affluent & powerful. So life should be made meaningful where you will have

1. Deep sense of satisfaction and contentment.
2. Whole hearted action
3. Creative dreaming
4. Love and care
5. Appreciation of beauty
6. Wonder about the mystery of life
7. Innocent fun
8. Life lived here & now.

It is said that " One who is content in mind is the richest person. However forced poverty can't be eulogised. Blind ambition is to be avoided. Fuelled by passion it leaves you high & dry. All the work that you do should neither be an enforced burden nor greed made visible but love made visible. For making work interesting one must be aware of the value of it to oneself & society. He can, who thinks he can. Nothing is impossible. Greater responsibilities must be taken in order to have greater scope to use your increased ability. One has to create opportunities & not wait for them. Within a short time remarkable results should be achieved. So efficiency is something between feverish over work & lazy sluggishness. Effective use of time should be made.

Irresponsibility should be overcome and fear of failure should be removed. Dignity of work is very important. Any work done to perfection is to be respected. Creative dreaming was recently talked about by Leander Paes our only Olympic meddle winner. Combined with resolve, grit, perservence it can give you success & satisfaction. Sense of imagination has to be inbuilt with an eye for beauty to create interest in work. The whole attitude of mind however depends on how you look at life around you. With little thinking and education one can appreciate creation around us and the hidden creator of it all. Energy pulsates around us, all we have to do is open ourselves to it and recognise it. Nature works through creation, preservation & destruction, through five elements and three gunas. We are in it and body mind complex is governed by this mysterious play, Recognise it & try to catch the glimpse of the creator which is the constant behind the changing phenomena. The same constant is in individual also and has to be recognised, meditated upon and then only inner stability & poise is achieved. Once you understand the play of nature around you, most of your fear about dealing with it goes away. You established a deeper communication and appreciation with other people. Your heart speaks for you. You develop a practical value structure on the fact that people's character is based on Gunas Sattwa, Rajas, Tamas in permutation & Combination and nobody is absolutely good or bad. People want affection friendship. People want to be nice, truthful. Even a thief doesn't want to be cheated by others. People are moved by emotions & not reason. Everyone is careful of his reputation. People do not understand in general that their words and behaviour affect others.

Hence while living & interacting with people following

 ISBN : 978-93-80216-12-6

points are to be remembered and followed. If we live with we learn to criticism condemn hostility fight fear apprehension ridicule shyness encouragement confident sharing generous tolerance patient praise appreciative acceptance love. Negative values can be change by putting in positive values.

Hence one must develop at least one good friend who can be trusted to appreciate our good qualities understand bad an suggesting good to replace the bad ones. Friends are of two kind, living beings and those who live without forms. Swami Vivekananda is such a voice without form and is a person always ready to help those who are ready. Born and brought up in Hindu as well as western samskaras he search for deeper meaning in life and through his sincerity & intensity came in tough with Sri Ramakrishna Paramhansa. He epitomises this inner realisation of the self the changeless eternal within everyone and stand as a perfected personality in all respects living a meaningful life full of intensity & creativity. He stands as a fully developed person with attractive appearance, dynamic behaviour, artistic conversational style, as a creative worker, accepted by millions as their leader, friend philosopher & guide. He took every opportunity to improve things around through positive attitude, was ready to help others at his own cost, avoided injustice & partiality with a composed mind, well integrated personality, thoughtful, concentrated, intense and fulfilled. May he help us in realising our goal of life here and now is our prayer to him.

Real personality ,which is based on character, is based on character, is remembered by the world through eternity. The number of such people though small can shape the

 ISBN : 978-93-80216-12-6

destiny of mankind. Their names remain imprinted in the hearts of millions of people forever. The sign of life is struggle for growth. A tiny seed breaks open the earth to grow into a plant, but growth alone does not add beauty of life, rather wild and abnormal growth sometimes leads to stagnation. Shaping the growth through proper training and systematic discipline is the only way to make life beautiful, which ultimately leads to fully -fledged personality.

In the history of mankind great personalities appear who shook the world during their lifetime. Their marvellous achievements dazzled the eyes of people for a while but were forgotten immediately after their demise. The reason being appearance of greater and stronger personalities with extraordinary brilliance, who made their hold strong on the minds of people. Achievement in life certainly makes a person great but does not add much to his or her personality. The need of the hour is to develop personality based on character and not on achievements in life. Real personality which is based on character is remembered by the world through eternity. The number of such people though small can shape the destiny of mankind. Their name remain imprinted in the hearts of millions of people forever. We are proud to say that in modern times India could produce such a real and universal person in Swami Vivekananda, whose thoughts are a source of inspiration throughout the world to shape a real personality.

Personality Development

There is a deep interest for personality development, specially among the youth. They are in a hurry and expect instant change in the personality. In fact they do not understand the difference between change and development.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

It is quite possible to change one's personality overnight. The beauty parlours, hair dressing, ready- made garments ,cosmetic and high heeled shoes can do this magic, which is only a temporary change and does not help in developing the real personality. It is not advisable to resort to such cheap methods, wasting time energy and money.

There are four dimensions of the human personality ; Physical, mental, Intellectual and Spiritual. A harmonious growth of all these aspects constitutes the real personality. One must strive for sound health, pure intellect, strong mind and spiritual growth simultaneously.

Physical Dimension

The human body is a rare gift of God. Good health is a source of happiness and success in life. Since the body and mind are closely related to each other. Ill health causes mental worries and depression, not enabling to pursue a definite goal in life. Swami Vivekananda has rightly said that most of our miseries are caused by our physical weaknesses.

Our ancient teacher said "The body is the means for the pursuit of religion'. Therefore it is our duty to maintain good health. Swami Vivekananda repeatedly asserted that we must development muscles of iron and nerves of steel. In one of his lectures, he said : Be strong my young friends, that is my advice to you. you will nearer to heaven through football than through the study of the Gita. These are my bold worlds, but I have to say them ,for I love you. I know where the shoe pinches. I have gained a little experience. You will understand the Gita better with your biceps, your muscles, a little stronger. Poor health not only creates tension person concerned, but also disturbs the whole family. To meet the medical expenses , the whole family

ISBN : 978-93-80216-12-6

has to suffer from financial strain. A healthy person always keeps his mind cool in all circumstances. He perform his duties efficiently, enthusiastically, and cheerfully. The development of physical strength, which is indispensable to serve others, to protect one's self interest, should not be abused for destroying national property. Uncontrolled physical energy many times erupts in the form of caste and communal riots, anti-social activities, violence, robbery, harassment etc. disturbing the peace and harmony in society. One must chanalize this physical energy into constructive purposes.

Habits play a vital role in developing physical dimension. Bad habits, such as drinking, smoking, drug addiction etc can do great harm to the physical health, making a person weak and susceptible to chronic diseases. One must be very careful and should never fall a prey to such harmful habits. Even the company of such people who are the victims of bad habit should be shunned at all cost. The influence of bad company is very harmful to the teenagers. Their tender and immature mind can easily succumb to the temptations of bad habits.

Practice of Yoga and breathing exercises is the most effective method to keep the body fit, but one must practise them under the guidance of a competent teacher.

Swami Vivekananda has rightly said; Do you see, simply by observance of strict brahmacharya all learning can be mastered in very short time. One has an unfailing memory of what one hears or know but once. It is owing to this want to continence that everything is on brink of ruin in our country.

So, nutritious food, regular exercise, cultivating good

 ISBN : 978-93-80216-12-6

habits, and self control help us to improve our health, which forms a part of personality development.

Mental Dimension

The mind is superior to the body. It is the mind that makes the body, but not vice versa. Mind is a repository of thought. Negative and evil thoughts make the mind weak. Weak and uncontrolled mind always succumbs to temptations, creating havoc with a person. The habit of brooding over failures give rise to negative thoughts. Swami Vivekananda's words will certainly help us to overcome such weaknesses. He said –The remedy for weakness is not brooding over weakness, but thinking of strength that is already within them.

There are a few fortunate soul who are lucky enough to attain success without pitfalls; the rest have to pass through the hurdles and difficulties. But the real hero is he who welcomes challenges in life and faces them with boldness and courage. Such a person crossing all the hurdles come out successfully like a lion. The following incident took place during Swami Vivekananda's wandering days, when he was stay at Banaras. Of late, people especially students, have become so sensitive that a little admonition from parents for fewer marks in examination is enough to disturb their minds. Violence, crime, killing, committing suicide are outcome of weak minds. The strong and disciplined mind acts like a friend, but the weak, uncontrolled and frustrated mind act like an enemy and leads to destruction. Here are few observations about the strong and weak minds.

Even a weak and uncontrolled mind can be controlled by applying strong will power and regular training. The body needs nutritious food, so does the mind need good

 ISBN : 978-93-80216-12-6

ideas. Thought power is great source for strengthening the mind. Sri Ramakrishna used to say that the mind is just like a laundered cloth; whatever colour you dip it in it will take the same colour. Our actions are the concrete forms of our thoughts. Once we change our way of thinking and develop a habit to think noble and positive ideas, it will bring tremendous change in our conduct and behaviour. Swami Vivekananda has given us hope when he said Whatever you think, that you will be; if you think yourselves strong, strong you will be. If you think yourselves weak, weak you will be. Underestimating one's own capacity and constantly thinking in a negative way, such as, I am good for nothing ,I am hopeless, I am worthless , I am sinner, is a prime cause of our mental weakness. Tremendous power hidden within us; positive thinking is the only way to bring it out.

The habit of reading good, mind strengthening, and wholesome literature always provides healthy food for our mind. The selection of such reading material and company of good people will certainly enhance our mental strength. Specially for the youth , Swami Vivekananda's literature is most inspiring, and a storehouse of all positive and constructive ideas. Often, evil company, vulgar and cheap novels, and movies create mental perversions, resulting in all type of psychological complexes and nervous weaknesses. Therefore, one must carefully avoid such things. Through the practice of regular meditation, it is quite possible to improve our mental strength. Practice of meditation helps us to overcome depression, tension and restlessness; and it makes the mind steady by controlling negative impulses and emotions. These accumulated tendencies are the products of our own past thoughts and actions. meditation helps us in replacing these negative and

 ISBN : 978-93-80216-12-6

undesirable tendencies with positive and divine thoughts.

So positive thinking, the habit of reading good books, and practice of meditation are the few means to improve our mental strength, which forms a part of our personality.

Interllectual Dimension

Strength is of four types . Intellectual strength is superior to physical, and mental strength, and hence it forms an important part of our personality. Though this intellectual faculty is present in everyone, in most of the cases it remains dormant due to lack of proper training and intellectual exercise. Excessive use of modern electronic gadgets has converted man into a machine. The result is computers are keeping everything in memory, and we the human beings, are keeping our memory undeveloped. Originality, creativity, and deep thinking are taking leave of mankind; and artificiality, imitation and shallow and superficial thinking are making their presence felt everywhere.

To cultivate different talents, such as music, fine art, poetry, dance drama etc., creative thinking is absolutely necessary. Deep thinking brings out of hidden talents in man or woman in the form of inspiration, which is possible only through the power of concentration. The power of concentration helps us to grasp subtle and higher things. And therefore, one must develop tremendous will power to control the mind and to fix it on higher things, to achieve success in life. The other function of intellect is to discriminate between right and wrong. The mind does not have that capacity. It can provide you a number of solutions for your problems, but it is for the intellect to choose the right one. This world is mixture of good and bad and therefore, unless we cultivate this power of discrimination, we will not be in position to discriminate between the right

 ISBN : 978-93-80216-12-6

and wrong. In this age of advanced communication and technology, everything is brought to our doorstep, through Internet ,Websites and Satellite T.V. One need to develop the discriminative faculty of the intellect, especially the youth, to choose the right form the wrong. If they go on lapping up everything available on the multi-media without discrimination, they are sure to land in trouble. Once the mind gets addicted to such things, it is difficult to get out of their clutches. Therefore, to develop a strong , discriminative, and determinative intellect, it is necessary to cultivate intellectual faculty.

Spiritual Dimension

In this mortal body, there is something immortal, eternal and of the nature of pure consciousness, bliss, peace and source of tremendous power , energy and knowledge. It is the nature of effulgent light; never undergoes any change, free from birth, old age and death. From it spring all divine qualities, such as love, compassion, service, purity, truthfulness etc. That is our divine nature.

This spiritual dimension is superior to all other aspects of personality. It is our birthright to realize this divine within. Those who neglect this vital aspect of personality are the killers of their own self, say the scriptures.

The people of gross mind and dull intellect neglect their spiritual dimension, thinking that it will hamper their spiritual worldly affairs. They think that it is meant only for saints and sannyasins to lead spiritual life and they need not have to bother about it. The purpose of human life is to manifest this divinity within, irrespective of caste, creed, sex, colour, position and status. Everyone must struggle to manifest this dimension. There are four different paths suited to different temperaments. They are: Bhakti yoga, Jnana

 ISBN : 978-93-80216-12-6

yoga, Karma yoga anf Raja yoga. That is the path of devotion, the path of discrimination, the path of selfless action and the path of mediation. Therefore, every day we must spare sometime for prayer, meditation, japa, selfless service and practice of discrimination which will certainly help us to develop the spiritual dimension of our personality.

Conclusion

A harmonious growth of the physical, the mental, the intellectual and spiritual dimension is essential for the all round development of personality. Struggle for perfection in all these aspects will ultimately lead us to the development of the real personality. Once we succeed in doing that , there will be a tremendous qualitative change in our lives. A great number of such people will certainly form a better sociaty and they will raise this nation once again to its highest glory.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Swami Vivekananda And Education

Dr. Tarun Shrivastava.
Asstt. Prof.
DPBS PG College Anoopshahr

Dr. Arvind Kumar Yadav,
Asstt. Prof. Commerce,
K. M. G. G. P. G. College, Badalpur.

Swami Vivekananda (1863 – 1902), a great thinker and reformer of India, embraces education, which for him signifies 'man-making', as the very mission of his life. In this paper, which purports to expound and analyze Vivekananda's views on education, an endeavor has been made to focus on the basic theme of his philosophy, viz. the spiritual unity of the universe. Whether it concerns the goal or aim of education, or its method of approach or its component parts, all his thoughts, we shall observe, stem from this dormant theme of his philosophy which has its moorings in Vedanta.

Vivekananda realizes that mankind is passing through a crisis. The tremendous emphasis on the scientific and mechanical ways of life is fast reducing man to the status of a machine. Moral and religious values are being undermined. The fundamental principles of civilization are being ignored. Conflicts of ideals, manners and habits are pervading the atmosphere. Disregard for everything old is the fashion of the day. Vivekananda seeks the solutions of all these social and global evils through education. With this end in view, he feels the dire need of awakening man to his spiritual self wherein, he thinks, lies the very purpose of education.

The Goal or Objective of Education

Vivekananda points out that the defect of the present-day education is that it has no definite goal to pursue. A sculptor has a clear idea about what he wants to shape out

 ISBN : 978-93-80216-12-6

of the marble block; similarly, a painter knows what he is going to paint. But a teacher, he says, has no clear idea about the goal of his teaching. Swamiji attempts to establish, through his words and deeds, that the end of all education is man making. He prepares the scheme of this man-making education in the light of his over-all philosophy of Vedanta. According to Vedanta, the essence of man lies in his soul, which he possesses in addition to his body and mind. In true with this philosophy, Swamiji defines education as 'the manifestation of the perfection already in man.' The aim of education is to manifest in our lives the perfection, which is the very nature of our inner self. This perfection is the realization of the infinite power which resides in everything and every-where-existence, consciousness and bliss (satchidananda). After understanding the essential nature of this perfection, we should identify it with our inner self. For achieving this, one will have to eliminate one's ego, ignorance and all other false identification, which stand in the way. Meditation, fortified by moral purity and passion for truth, helps man to leave behind the body, the senses, the ego and all other non-self elements, which are perishable. He thus realizes his immortal divine self, which is of the nature of infinite existence, infinite knowledge and infinite bliss.

At this stage, man becomes aware of his self as identical with all other selves of the universe, i.e. different selves as manifestations of the same self. Hence education, in Vivekananda's sense, enables one to comprehend one's self within as the self everywhere. The essential unity of the entire universe is realized through education. Accordingly, man making for Swamiji stands for rousing mans to the awareness of his true self. However, education thus signi-

 ISBN : 978-93-80216-12-6

fied does not point towards the development of the soul in isolation from body and mind. We have to remember that basis of Swamiji's philosophy is Advaita which preaches unity in diversity. Therefor, man making for him means a harmonious development of the body, mind and soul.

In his scheme of education, Swamiji lays great stress on physical health because a sound mind resides in a sound body. He often quotes the Upanishadic dictum 'nayamatma balahinena labhyah'; i.e. the self cannot be realized by the physically weak. However, along with physical culture, he harps on the need of paying special attention to the culture of the mind. According to Swamiji, the mind of the students has to be controlled and trained through meditation, concentration and practice of ethical purity. All success in any line of work, he emphasizes, is the result of the power of concentration. By way of illustration, he mentions that the chemist in the laboratory concentrates all the powers of his mind and brings them into one focus-the elements to be analyzed-and finds out their secrets. Concentration, which necessarily implies detachment from other things, constitutes a part of Brahmacharya, which is one of the guiding mottos of his scheme of education. Brahmacharya, in a nutshell, stands for the practice of self-control for securing harmony of the impulses. By his philosophy of education, Swamiji thus brings it home that education is not a mere accumulation of information but a comprehensive training for life. To quote him: 'Education is not the amount of information that is put into your brain and runs riot there undigested, all your life.' Education for him means that process by which character is formed, strength of mind is increased, and intellect is sharpened, as a result of which one can stand on one's own feet.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Method or Procedure

Having analyzed the goal or objective of education, the next question that naturally arises is about the method of imparting education. Here again, we note the Vedantic foundation of Swamiji's theory. According to him, knowledge is inherent in every man's soul. What we mean when we say that a man 'knows' is only what he 'discovers' by taking the cover off his own soul. Consequently, he draws our attention to the fact that the task of the teacher is only to help the child to manifest its knowledge by removing the obstacles in its way. In his words: 'Thus Vedanta says that within man is all knowledge even in a boy it is so and it requires only an awakening and that much is the work of a teacher.' To drive his point home, he refers to the growth of a plant. Just as in the case of a plant, one cannot do anything more than supplying it with water, air and manure while it grows from within its own nature, so is the case with a human child. Vivekananda's method of education resembles the heuristic method of the modern educationists. In this system, the teacher invokes the spirit of inquiry in the pupil who is supposed to find out things for himself under the bias-free guidance of the teacher.

Swamiji lays a lot of emphasis on the environment at home and school for the proper growth of the child. The parents as well as the teachers should inspire the child by the way they live their lives. Swamiji recommends the old institution of gurukula (living with the preceptor) and similar systems for the purpose. In such systems, the students can have the ideal character of the teacher constantly before them, which serves as the role model to follow.

Although Swamiji is of the opinion that mother tongue

is the right medium for social or mass education, he prescribes the learning of English and Sanskrit also. While English is necessary for mastering Western science and technology, Sanskrit leads one into the depths of our vast store of classics. The implication is that if language does not remain the privilege of a small class of people, social unity will march forward unhampered.

Fields of Study

Vivekananda, in his scheme of education, meticulously includes all those studies, which are necessary for the all-around development of the body, mind and soul of the individual. These studies can be brought under the broad heads of physical culture, aesthetics, classics, language, religion, science and technology. According to Swamiji, the culture values of the country should form an integral part of the curriculum of education. The culture of India has its roots in her spiritual values. The time-tested values are to be imbibed in the thoughts and lives of the students through the study of the classics like Ramayana, Mahabharata, Gita, Vedas and Upanishads. This will keep the perennial flow of our spiritual values into the world culture.Education, according to Swamiji, remains incomplete without the teaching of aesthetics or fine arts. He cites Japan as an example of how the combination of art and utility can make a nation great.

Swamiji reiterates that religion is the innermost core of education. However, by religion, he does not mean any particular kind of it but its essential character, which is the realization of the divinity already in man. He reminds us time and again that religion does not consist in dogmas or creeds or any set of rituals. To be religious for him means

leading life in such a way that we manifest our higher nature, truth, goodness and beauty, in our thoughts, words and deeds. All impulses, thoughts and actions which lead one towards this goal are naturally ennobling and harmonizing, and are ethical and moral in the truest sense. It is in this context that Swamiji's idea of religion, as the basis of education should be understood. We note that in his interpretation, religion and education share the identity of purpose.

Why religion forms the very foundation of education becomes clear in his following words: 'In building up character, in making for everything that is good and great, in bringing peace to others, and peace to one's own self, religion is the highest motive power, and, therefore, ought to be studied from that standpoint. Swamiji believes that if education with its religious core can invigorate man's faith in his divine nature and the infinite potentialities of the human soul, it is sure to help man become strong, yet tolerant and sympathetic. It will also help man to extend his love and good will beyond the communal, national and racial barriers.

It is a misinterpretation of Vivekananda's philosophy of education to think that he has overemphasized the role of spiritual development to the utter neglect of the material side. Vivekananda, in his plan for the regeneration of India, repeatedly presses the need for the eradication of poverty, unemployment and ignorance. He says, We need technical education and all else which may develop industries, so that men, instead of seeking for service, may earn enough to provide for them-selves, and save something against a rainy day. He feels it necessary that India should take from the

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Western nations all that is good in their civilization. However, just like a person, every nation has its individuality, which should not be destroyed. The individuality of India lies in her spiritual culture. Hence in Swamiji's view, for the development of a balanced nation, we have to combine the dynamism and scientific attitude of the West with the spirituality of our country. The entire educational program should be so planned that it equips the youth to contribute to the material progress of the country as well as to maintaining the supreme worth of India's spiritual heritage.

Another important aspect of Swamiji's scheme of education is women's education. He realizes that it if the women of our country get the right type of education, then they will be able to solve their own problems in their own way. The main objective of his scheme of female education is to make them strong, fear-less, and conscious of their chastity and dignity. He observes that although men and women are equally competent in academic matters, yet women have a special aptitude and competence for studies relating to home and family. Hence he recommends the introduction of subjects like sewing, nursing, domestic science, culinary art, etc which were not part of education at his time.

Conclusion

The exposition and analysis of Vivekananda's scheme of education brings to light its constructive, practical and comprehensive character. He realizes that it is only through education that the uplift of masses is possible. To refer to his own words: Traveling through many cities of Europe and observing in them the comforts and education of even the poor people, there was brought to my mind the state of our own poor people and I used to shed tears. When

 ISBN : 978-93-80216-12-6

made the difference? “Education” was the answer I got.’

He states it emphatically that if society is to be reformed, education has to reach everyone-high and low, because individuals are the very constituents of society. The sense of dignity rises in man when he becomes conscious of his inner spirit, and that is the very purpose of education. He strives to harmonize the traditional values of India with the new values brought through the progress of science and technology.

It is in the transformation of man through moral and spiritual education that he finds the solution for all social evils. Founding education on the firm ground of our own philosophy and culture, he shows the best of remedies for today’s social and global illness. Through his scheme of education, he tries to materialize the moral and spiritual welfare and upliftment of humanity, irrespective of caste, creed, nationality or time. However, Swami Vivekananda’s scheme of education, through which he wanted to build up a strong nation that will lead the world towards peace and harmony, is still a far cry. It is high time that we give serious thought to his philosophy of education and remembers his call to every-body-‘Arise, awake, and stop not till the goal is reached.’

References

1. *Chaube, Sarayu Prasad (2005). Recent Philosophies On Education On India. Concept Publishing Company*
2. *Vivekananda, Swami (2006). The Indispensable Vivekananda: An Anthology for Our Times. Orient Blackswan.*
3. *Mohapatra, Amulya Ranjan (2009). Swaraj - Thoughts of Gandhi, Tilak, Aurobindo, Raja Rammohun Roy, Tagore μ Vivekananda. Readworthy. pp. 14–. ISBN 978-81-89973-82-7.*

4. *Piazza, Paul (1978). Christopher Isherwood: Myth and Anti-Myth. Columbia University Press. ISBN 978-0-231-51358-6.*
5. *Chattopadhyaya, Rajagopal (1999). Swami Vivekananda in India: A Corrective Biography. Motilal Banarsidass Publ. ISBN 978-81-208-1586-5.*
6. *Dutt, Kartik Chandra (1999). Who's who of Indian Writers, 1999: A-M. Sahitya Akademi. ISBN 978-81-260-0873-5.b*
7. *Bibliography of Ramakrishna*
8. *Teachings and philosophy of Swami Vivekananda*

Vision of Vivekananda on Philosophy of Education

Dr. Vineeta Singh
Asstt. Prof., Sociology
K. M. G. G. P. G. College,
Badalpur,

"Education is the manifestation of the perfection already in man"

—*Swami Vivekananda.*

Swami Vivekananda was not only a social reformer, but also the educator, a great Vedanta's, patriot prophet of India who sought to modernize the nation of its social and cultural harmony. If education is viewed as the most powerful instrument of social change, his contribution to educational thought is of paramount importance. According to him education is a continuous process; it should cover all aspects of life - physical, material, intellectual, emotional, moral, and spiritual. His attitude towards modernization is that the masses should be educated before anything else is done. He tried to make the people of India understood that political and social strength should have their foundations on cultural strength. He has a true vision of philosophy of education in India in its cultural context.

He thought it a pity that the existing system of education did not enable a person to stand on his own feet, nor did it teach him self-confidence and self-respect. To Vivekananda, education was not only collection of information, but something more meaningful; he felt education should be man-making, life giving and character-building. To him education was an assimilation of noble ideas. Whether it concerns the goal or aim of education, or its method of approach or its component parts, all his thoughts

were stem from this dormant theme of his philosophy which has its moorings in Vedanta.

Meaning of Education:-

"Education is not the amount of information that we put into your brain and runs riot there, undigested, all your life. We must have life building, man making, character making assimilation of ideas. If you have assimilated five ideas and made them your life and character, you have more education than any man who has got by heart a whole library. " The ideal of this type of education would be to produce an integrated person. . Therefore, he suggested that education should not be for stuffing some facts into the brain, but should aim at reforming the human mind. True education to him, was not for the carrier, but for the contribution to the nation.

Aims of Education:-

According to Swami Vivekananda the following should be the main aims of education:

- The prime aim of education is to achieve fullness of perfection already present in a child. According to Swam ji all material and spiritual knowledge is already present in man covered by a curtain of ignorance.
- The second aim of education is the physical and mental development of the child so that the child of today, after studying Gita, is able to promote national growth and advancement as a fearless and physically well developed citizen of tomorrow.
- According to Swami Vivekananda, a nation's greatness is not only measured by its parliamentary institutions and activities, but also by the greatness of its citizens.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

But the greatness of citizens is possible only through their moral and spiritual development which education should foster.

- Character development is a very important aim of any education. For this, he emphasized the practice of Brahmcharya which fosters development of mental, moral and spiritual powers leading to purity of thoughts, words and deeds.
- Everyone should inculcate a spirit of self surrender, sacrifice and renunciation of material pleasures for the good of others. He gave this call to his countrymen. "Arise, awake and stop not till the goal is achieved."
- The true aim of education is to develop insight into the individuals so that they are able to search out and realize unity in diversity.
- Each individual should be able to search out and develop the religious seed embedded in him and thus find the absolute truth or reality.

Curriculum:-

According to Swami Vivekananda, the prime aim of education is spiritual growth and development. But this does not mean that he did not advocate material prosperity and physical well-being. He feelingly advocated the inclusion of all those subjects and activities, in the curriculum, which foster material welfare with spiritual advancement.

For spiritual perfection Swami ji prescribed Religious, Philosophy, Upanishads, Company of saints and their preaching's and for material advancement and prosperity he recommended Languages, Geography, Science, Political Science, Economics, Psychology, Art, Agriculture, Indus-

 ISBN : 978-93-80216-12-6

trial and Technical subjects together with Games, sports and other Physical exercises.

Swami ji prescribed the same ancient spiritual methods of teaching wherein the Guru and his disciples lived in close association as in a family. The essential characteristics of those religious and spiritual methods were as under:-

1. To control fleeting mental faculties by the practice of Yoga.
2. To develop the mind by concentration and deep meditation.
3. To gain knowledge through lectures, discussions, self-experience and creative activities.
4. To imitate the qualities and character of teacher intelligent and clear understanding.
5. To lead the child on the right path by means of individual guidance by the teacher.

Place of Child:-

Like Froebel, Vivekananda emphasized the education to be child centered. According to him the child is the store and repository of all learning material and spiritual. Like a plant a child grows by his own inner power naturally.

Hence advising the child to grow naturally and spontaneously, Vivekananda asserted-"Go into your own and get the Upanishads out of your own self. You are the greatest book that ever was or will be. Until the inner teacher opens, all outside teaching is in vain."

Place of Teacher:-

Swami ji believed in self-education. According to him each of us is his own teacher. The external teacher only

ISBN : 978-93-80216-12-6

guides and inspires the inner teacher (soul) to rise up and start working to develop the child. Hence discussing the role of teacher Swami Vivekanand said- "Teacher is a philosopher, friend and guide helping the educand to go forward in this own way."

Vivekananda's view on Education:-

Vivekananda's puts emphasis on physical education, moral and religious education, medium of language in education, women education and education for weaker sections of society.

Physical Education:-

Without the knowledge of physical education, the self-realization or character building is not possible. One must know, it is not possible to keep a strong mi without a strong body. In particular, Vivekananda stressed the need for physical education in curriculum. He said, "You will be nearer to Heaven through football than through the study of Gita. You will understand Gita better by your biceps, your muscles a little stronger. You will understand the Upanishads better and the glary of the Atman, when your body stands firm on your feet and you feel yourself as man.

Medium of Education:-

Like Mahatma Gandhi and Rabindranath Tagore, Vivekananda also emphasised on education through the medium of mother tongue. He said "Besides mother tongue, there should be a common language which is necessary to keep the country united". Vivekananda appreciated the greatness of Sanskrit. He said that it is the source of all Indian languages and a repository of all inherited knowledge. Therefore without Sanskrit, it will be impossible to

 ISBN : 978-93-80216-12-6

understand Indian culture. It is like a store house of ancient heritage. To develop our society it is necessary that men and women know this language, besides the knowledge of their own mother tongue.

Moral and Religious Education:-

Vivekananda said, "Religion is the innermost core of education. Religion is like the rice and everything else, is like the curries. Taking only curries causes indigestion and so is the case with taking rice alone."Therefore, religious education is a vital part of a sound curriculum. Vivekananda considered Gita, Upanishads and the Vedas as the most important curriculum for religious education. For him, religion is attainment of self realization and divinity. It helps not only in individual's development but also in the transformation of total man. The true religion cannot be limited to a particular place of time. He pleaded for unity of world religion. He realized truth while practising of religion. The truth is the power, untruth is the weakness. Knowledge is truth, ignorance is untruth. Thus truth increases power, courage and energy. It is the source of light and therefore, necessary for the individual as well as collective welfare. In Vivekananda's point of view, ethics and religion are one and the same. God is always on the side of goodness. To fight for goodness is the service to God. The moral and religion education develop the self confidence among the young men and women.

Education of Masses:-

The individual development is not a full development of our nation, so it is necessary to give education to the society or common people. The education is not only confined to the well-to-do persons only but also to the poor

 ISBN : 978-93-80216-12-6

people. Vivekananda emphasized on the improvement of the conditions of the masses and for this, he advocated mass education. He looks upon mass education as an instrument to improve the individual as well as society. By this way, he exhorted to his countrymen to know-"I consider that the great national sin is the neglect of the masses, and that is one of the causes of our downfall. No amount of politics would be of any avail until the masses of India are once more well-educated, well-fed and well-cared for.

Man Making Education:-

The educational philosophy of Swami Vivekananda is a harmonious synthesis between the ancient Indian ideals and modern Western beliefs. He not only stressed upon the physical, mental, moral, spiritual and vocational development of the child but also he advocated women education as well as education of the masses. The essential characteristics of educational philosophy of Swami Vivekananda are idealism, naturalism and pragmatism. In a naturalistic view points, he emphasized that real education is possible only through nature and natural propensities. In the form of idealist view point, he insists that the aim of education is to develop the child with moral and spiritual qualities. In the pragmatists view point, he emphasized the great stress on the Western education of technology, commerce, industry and science to achieve material prosperity. In short, first he emphasized spiritual development, then the material prosperity, after that safety of life and then solving the problems of fooding and clothing of the masses.

Self Education:-

Self education is the self knowledge. That is, knowledge of our own self is the best guide in the struggle of our life.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

If we take one example, the childhood stage, the child will face lot of problems or commit mistakes in the process of character formation. The child will learn much by his own mistakes. Errors are the stepping stones to our progress in character. This progress will need courage and strong will. The strong will is the sign of great character of the man .

Women Education:-

Vivekananda considered women to be the incarnation of power. He rightly pointed out that unless Indian women secure a respectable place in this country, the nation can never move forward. . The important features of his scheme of female education are "Make women strong, fear-less, and conscious of their chastity and dignity". He insists that men and women are equally competent not only in the academic matters, but also in other spheres of life. Vivekananda being a keen observer could distinguish the difference in perception about the status of women in the West and in India. "The ideal women in India is the mother, the mother first, and the mother last.

Education for Weaker Section of Society:

Vivekananda pleaded for the universal education so that the backward people may fall in line with others. To uplift the backward classes he chooses education as a powerful instrument for their life process. Thus education should spread to every household in the country, to factories, playing grounds and agricultural fields. If the children do not come to the school the teacher should reach them. Two or three educated men should team up, collect all the paraphernalia of education and should go to the village to impart education to the children. Thus, Vivekananda favored education for different sections of society, rich and poor,

 ISBN : 978-93-80216-12-6

young and old, male and female.

Conclusion:-

Swami Vivekananda was actually the greatest synthesizer of ever time. He wanted to remove the evils of the society by giving re-orientation to politics, sociology, economics and education. Swami Vivekananda laid stress on education as a powerful weapon for this change. As an educationalist he believes in absolute values which have to be realized by a good system of education. Education should be the preparation for life. It should develop a feeling of nationalism and international understanding, it should leads to the development of character and make individuals self-dependent. Today there is a deterioration of cultural ethics and standards. The supreme need of the hour is to counteract this emotional, moral and cultural collapse. Only a process of a good system of education can bring about a healthy political and social life. Swami Vivekananda stands for this and his message is for all time.

References :

1. *Chandra, S.S. and Rajendra K. Sharma,:- Philosophy of Education, New Delhi: Atlantic Publishers and Distributors (p) LTD, 2004,*
2. *Johri, Pradeep Kumar,:- Educational Thought, New Delhi: Anmol Publications PVT. LTD., 2005*
3. *Joshi,Sudharma :- Educational Thoughts of Swami Vivekananda,Neha Publishers and Distributors,2009*
4. *Pani, S.P. and Pattnaik, S.K.:- Vivekananda, Aurobindo and Gandhi on Education, New Delhi: Anmol Publications PVT*
5. *Singh, Y.K.:- Philosophical Foundation of Education, New Delhi: APH Publishing Corporation, 2007,*
6. *Vivekananda,Swami:-My Idea of Education- Advaita Ashrama, India; first edition ,2010*

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Swami Vivekananda – Religious View

Deepak Singh
Research Scholar – J.R.F.
Department of Commerce
Govt. P.G. College, Noida

Dr. Sohan Singh
Asso. Prof. Commerce
Govt. P.G. College, Noida

His pre-monastic name was Narendranath Dutta. Narendra, even from his childhood had started to practice meditation. At the age of six very easily he learnt by heart the whole of a Sanskrit grammar and long passage from the Mahabharata and Ramayana. As a boy, he observed and questioned the nature of man. Once he asked, 'Why one human being should be considered superior to another'.

One of the important points in his early days was his contact with the Brahmo Samaj his character (Brahmo Samaj was one of liberal movements led by Sri RajaRammohan Roy and Keshab Chandra Sen). This religious organization broke away from the rituals, image worship, and priest craft of orthodox Hinduism. Young Narendra as a member saw the uncovered area of this organization that was the spiritual side of the man.

Swami Vivekananda lived only for 40 years. Within this short span of life, he left a rich legacy of spectacular achievements in the religious and cultural history of the world

Concept of Religion

To him, Religion is not just a talk and doctrines or theories, nor is it sectarianism. Religion cannot live in sects and societies. It is a relationship between soul and God. Heexplains that religion does not consist in erecting temples public worship. Religion consists on realization. Religion does not

ISBN : 978-93-80216-12-6

consist insubscribing to a particular creed or faith but in spiritual realization. Therefore, spiritual realization is religion. He said that "I shall try to bring before you the Hindu theory that religions do not come from without, but from within. It is my belief that religious thought is in man's very constitution, so much so that it is impossible for him to give up religion until he can give up his mind and body, until he can give up his thought and life."

Religion is inseparable with man and his life. Another thing is that, it is within the man. Each and every one should understand God within their soul through self-realization. Religion is the manifestation of the divinity already within man. Therefore, it is not necessary to have doctrines or dogmas and intellectual argumentation. It is realization in the heart of our hearts. It is touching God; it is feeling God and realizing that I am a spirit in relation with the universal spirit and all its great manifestations.

In a simple manner, his way of understanding of religion is that man must realize God, feel God, see God, and talk to God. That is the religion. To him material prosperity and wealth is not an important thing. But the wealth of the spiritual thought in brain that is needed to the human progress. To him, religion has been a great healer as well as cruel killer. In this he try to explain if one religion given a true and bless to the people, it has capacity to heal evil thoughts in human mind, as well the false religion has a capacity to bring darkness inhuman mind. So that, Vivekananda's message was that man must occupy the highest place. Hence, the true welfare of man is his predominant impulse, and a true religion is the only agent for that purpose. He further said that the supreme reality is the only source of happiness. True religion teaches us that the goal

 ISBN : 978-93-80216-12-6

of life has to be sought in Atman only. The world is a vale of tears, but through such experience an ardent seeker has to find that the world is a vale of soul's growth too. Vivekananda said that, man is like an infinite spring, coiled up in a small box, and that spring is trying to unfold. His ideal of religion is a spiritual concept. So that without inner growth religion has no value. The every soul of religion is experience. To realize it his suggestion was the yoga system. Through practices of yoga, people can achieve the inner divinity.

The Concept of God

The existence of God and his nature is a major question in the Philosophy of Religion. Vivekananda questions, "Why people in every nation and every society looking for a God? Why they want perfect ideal somewhere, either in man, in God, or elsewhere? The idea is within you.' It is your own heart beating, and you did not know". In this we can see Vivekananda's identification of God with 'self'. He told that, God is with in your own self. That is propelling you to seek for him, to realize him. That is his concept of God. To him God exists, but he is not the man sitting upon a cloud. But if you approach to your real self you can see the God within you. He is pure spirit. That is yourself. God is body, mind, soul and everything in this world. He is something still higher than known, unknown, and unknowable. If it can be known, He will be no longer God. God can only be known in and through man.

We are ordinary morals and He can be seen n man alone as a form, cannot be worshipped as He is an imminent Being of the universe. Vivekananda's suggestion in this regard was

 ISBN : 978-93-80216-12-6

that, play your part in the universes an actor on the stage. He told to the people to see each and every man or woman in the world as God. His identification of God is in everything, in every work, every thought, in every feeling. Such realization of divinity in humanity leaves no room for arrogance. By realizing it, a man can not be jealous of or have pity for, any other being, saving man, knowing him to be the manifestation of God. Purifies the heart, and in a short time the aspirant who does realize this. He is a part of God- Existence- Knowledge- Bliss-Absolute. God in you is the God in all.

All old ideals, beliefs and superstitions, desires for this world or another and be determined to find freedom. He has to know from the start that all knowledge and all experience are in the soul and not in nature.

These are the marks of the true Jnâna –yogithat are mentioned below:a% He desires nothing, save to know.a% All his services are under perfect restraint.a% He knows that all but the one is unreal.a% He has an intense desire for freedom.

He wants to go beyond the visible and forces his way to the realization of God by the power of pure reason. All science even will not Jnâna Yoga based upon the teaching of the Upanishads, which from the philosophical section of the Hindu scriptures. In Vedas shows the way to realize theoneness of the individual soul and the supreme soul, through the disciple of discrimination between the real and the unreal.

The object of Jnâna Yoga is identical with that of Bhakti Yoga and Raja Yoga, but its method is different. The method is pure reason. According to the Jnâna discipline the high-

 ISBN : 978-93-80216-12-6

est good is realization of the self, which is beyond the senses and thought. A Jnâna Yogi goes to the farthest limits of reason, eliminating all objects until he reaches that which cannot be thrown away, the real , the Eternal Subject who is the witness of the universe.

In this we can see that to a Jnâna yogi, self-realization is the one and only way.

Vivekananda explained Jnâna Yoga is the important discipline to get realknowledge. It has given strength to life. To him the root cause of suffering is that the weakness itself. We become miserable because we are weak. We lie, steal, kill, and commit other crimes. We die because we are weak. When there is nothing to weaken us, there is no death nor sorrow. We are miserable through delusion. Give up the delusion, and the whole thing vanishes.

Vivekananda's idea was to pin point to the world, the highest ideal of morality and unselfishness going together with the highest metaphysical conception. To realize that man needs the highest philosophical and scientific conception. To him human knowledge is not antagonistic to human well being. On the contrary, it is knowledge alone that will save us in every department of life-in knowledge is worship.

Vivekananda gave a remedy for weakness that is the thinking of Strength.According to him strength, is already within man. Therefore, Jnâna Yoga has given a way and means for that.

Conclusion

Vivekananda proved that man and his true nature is already divine. But that divinity is hidden. Therefore, the realization of that divinity is the purpose of life; that is the

religion. To realize that religion, man should have to practice four yogas. Those are the yoga of knowledge or control of mind, or of selfless work, or of love of God. That is the realization of religion. Therefore, religion is the main essence of human life and it has the great motive power to life. Accordingly to him, religion is a value oriented concept too. His formation of new ideal on universal religion, we can call as universal love or universal brother-hood. It is given an equal value for all of religions of the world, as it is exist with truth. His identification of truth is not only absolute truth but also scientific. And his religion can be practice by each and every body. To understand that it is not necessary deep literacy knowledge, but the practice, it is very much needed. Therefore, it can be applied for all nations, all societies and individuals. It is the harmony of the all religions, so that it is one of best solutions for the prevalent religious conflicts in the world.

References :

1. *Definitions of the word 'Religion', (www.religioustolerance.orgèk), last updated, 08.07.20076. Tapasyananda, S*
2. *The Philosophy and Religious, Lectures of SwamiVivekanada, Trio Process, Kolkata, India, 19847. Tapasyananda, S*
3. *The Nationalistic and Religions Lectures, Vivekanada, Trio Process, Kolkata, India, 1990.8. Tapasyananda, S*
4. *The Four Yogas of Swami Vivekananda, Advaita Ashrama, Kolkata, 19799. Tapasyananda, S*
5. *The Yoga of Knowledge; Jnana Yoga, Advaita Ashrama,Kolkata, (www.advaitaonline.com) 200411. Vivekananda, S*
6. *The Science and Philosophy of Religion, AdvitaAshrama, Kolkata, (www.advaitaonline.com)*
7. *1995(15th impression) 12. Vivekananda, S*
8. *A Study of Religion, Advita Ashrama, Kolkata, (www.advaitaonline.com), 200413.Vivekananda, S*

9. *Bhakti Yoga, Advita Ashrama, Kolkata,(www.advaitaonline.com), 200314. Vidyatmananda, S*
10. *What Religion is; in the words of Swami Vivekananda, Trio Process, Advita Ashrama, Kolkata, 197215. Edi Mayavati Memorial*
11. *The completed Works of Swami Vivekananda, (Vol- 01to vol08) Advaita Ashrama, Kolkata, 198917*

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Swami Vivekananda and his Views on Physical Education

Jaipal
Research Scholar,
Deptt of Physical Education,
Chaudhry Devi Lal University, Sirsa

Dr. Ashok Kumar Sharma
Asst. Prof., Physical Education
Chaudhry Devi Lal University
Sirsa

Swami Vivekananda is one of the greatest thinkers and pioneers in social reform Indian Renaissance owes much to Swami Vivekananda. Among the contemporary Indian philosophers of education, he is one of those who appalled against the imposition of British Education system in India. Swami Vivekananda considered that the system of Education introduced by the British did not conform to India's culture. He considered that it turned men into slaves. He also felt that the education system in those days is no better than an efficient machine which rapidly turns men into clerks. The system Education deprived people of their faith and belief. It made the people believe that Gita was false and the Vedas are nothing but folklore. It made the learner (student) to feel that there is nothing noteworthy and appreciable in Indian culture and tradition. Vivekananda also criticized the British Education system from the humanistic view point. He says "it is not a man making education. It merely and entirely a negative education. A negative education or any training that is based on negation is worse than death. The child is taken to school and the first thing he learns is that his grandfather is a fool ,the second thing is that his grandfather is Lunatic, the third thing is that all his teachers are hypocrites, the fourth is that all the sacred books are lies. By the time he is sixteen, he is a mass of negation, lifeless and boneless".Vivekananda's views on

 ISBN : 978-93-80216-12-6

education deals with physical education, moral and religious education, medium of education, women education and education for weaker sections of society.

Teaching Methods

Swami Vivekananda elaborately discussed about teaching methods in physical, moral and religious education. He gave equal importance to all these three aspects of educationi.e.Moral and Religious Education, Women Education and Physical Education here we discussed only about Physical Education that in view of Vivekananda how much valuable is Physical Education in our society to build stronger nation through the youth.

Sawami Vivekananda's View on Physical Education:

Physical Education was the one the all aspect of Education, Sawami Vivekananda laid particular stress on the value of physical education in curriculum. He said "you will be nearer to Heaven through football than the study of Gita". You will understand the Upanishads better and the glory of the Atman, when your body stands firm on your feet and you feel yourself as man". One must know the secret of making the body strong through physical education. For a complete education it is necessary to develop both mind and body. Vivekananda himself took physical exercise every day. He glorified strength and opposed weakness in any form. Power is life and weakness is death. Because of the need of strength and power, he emphasized the importance of physical education particularly for young men and women.

Without the knowledge of physical education, the self-realization or character building is not possible one must know, how to make our body strong through physical

 ISBN : 978-93-80216-12-6

education, for to attain a complete education, it is universe definition that the "Physical education is the integral part of Education" it is necessary to develop both the mind and the body. You will understand Gita better by your biceps, your muscles a little stronger. So it is clear that Vivekananda is also consider the Philosophy of Greek philosopher Thales 'A sound mind in a sound body' is the famous quotation by the pre-Socratic demonstrating the close links between physical exercise, mental equilibrium and the ability to enjoy life. So Vivekananda give stress is his education system that the physical education must be a part of curriculum.

Physical Health and Brahmacharya

Brahmacharya or abstinence is the first means of achieving concentration. It bestows psychological and spiritual powers to the student. It transforms sexual drivein to spiritual force. Brahmacharya also implies purity of thought, deed and action.Brahmacharya improves and sharpens various Psychological processes such aslearning, remembering and thinking. Swami Vivekananda therefore stronglyemphasized the need for the student to observe Brahmacharya. It leads to mental and physical development. Firstly it controls distractions. Secondly it improves the bodyand mind so that they may become effective means of knowledge.

Vivekananda says "power comes to him who observes unbroken Brahmacharya for a period of twelve years.Complete continence gives great intellectual and spiritual power. He says the chaste brain has tremendous energy and gigantic will power without chastity there can be no spiritual strength. Continence gives wonderful control

 ISBN : 978-93-80216-12-6

over mankind. The spiritual leaders of men have been very continent and this iswhat gave them power. He says chastity in thought, word and deed always and in all conditions is what is called as Brahmacharya

Conclusion

From the analysis of Vivekananda's scheme of education, the uplift of masses is possible only through education. He views on education brings a light of its constructive, practical and comprehensive character. By giving education, he tries to materialize the Physical Education as well as moral and spiritual welfare and upliftment of humanity, irrespective of caste, creed, nationality or time. By the way of his scheme of education, we can get the strong nation with peace and harmony. He stated that Physical workout in form of Sports will help you be nearer to Heaven than the study of Gita". You will understand the Upanishads better and the glory of the Atman, when your body stands firm on your feet and you feel yourself as man". He give a clear message through his quote Physical workout through game for Body and Study of holy literature is necessary to attain the highest Goal of Life.

References :

1. *G. Ranjit Sharma Trends in contemporary In Philosophy of Education. P - 43*
2. *2013–14 Declared the Year for Skill Development of the Youth Parliamentary Consultative Committee Attached to Ministry of Youth Affairs µ Sports Meets". PTI. Retrieved 3 Jan 2016*
3. *Nitiya.P, (2012) Sawami Vivekananda's View on Philosophy of Education,Asian Journal of Multidimensional Research Vol.1 Issue 6, November 2012, ISSN 2278-4853 pp 42-48*
4. *E. Ravi Kumar(2015) Swami Vivekananda's Views on Education International Journal of Art, Commerce and Management Studies, Vol-*

ume 01, No.2, Feb 2015 ISSN:2395-0692 pp 66-68

5. *Hooda S. K. and Sarika, (2014) View of Sawami Vivekananda on Philosophy of Education in Relevant Modern Society, International Journal of English Language, Literature and Humanities Vol-II Issue-II June 2014, ISSN 2321-7065,pp 127-133*
6. *Johari, PK (2005). Educational Thoughts, Anmol Publications PVT. LTD., New Delhi: 238.*
7. *Martin L, King J, The Maroon Tiger (1947). The Purpose of Education – Speech, Atlanta, USA.*
8. *Pani SP, Pattnaik SK (2006). Vivekananda, Aurbindo and Gandhi on Education, Anmol Publications Pvt. Ltd, New Delhi: pp. 59-60.*
9. *Sudharma J (2009). Educational Thoughts of Swami Vivekananda. Ed. 1, Crescent Publishing Corporation, New Delhi*
10. *Swami L (1996). My India: The India Eternal, Ramakrishna Mission Institute of Culture, Calcutta.*
11. *Swami V (2009). Bhagvad Gita as Viewed by Swami Vivekananda, Vi. H. Foundation*
12. *Swami V (2011). Complete Works Swami Vivekananda- The Future of India. Vi. H. Foundation., New Delhi. 3(9).*
13. *Swami V (2011). Complete Works Swami Vivekananda-My Life and Mission. Vi. H. Foundation New Delhi, 8(9).*
14. *Swami V (2011). Complete Works Swami Vivekananda-The education that India that needs. Vi. H. Foundation, New Delhi. 4(9).*

Religion As Described In The Words of Swami Vivekanand : Some Observations

Dr. Anita Goswami,
Asstt. Prof.,
S.M.P. Government Girls PG,
College , Meerut

What Is Universal Religion

As our social struggler are represented amongst different nations by different social organisations, so is man's spiritual struggle represented by various religions; and as different social organisations are constantly quarrelling are constantly at war with one another, so these spiritual organisations have been constantly at war with one another, constantly quarrelling. Though there is nothing that has brought to man more blessings than religion yet, at the same time, there is nothing that has brought more horror than religion. Nothing has made more for peace and love than religion; nothing has engendered fiercer hatred than religion. Nothing has made the brotherhood of man more tangible than religion; nothing has bred more bitter enmity between man and man than religion. Nothing has built more charitable institution, more hospital for men, and even for animals than religion; nothing has deluged the world with more blood than religion.

We know, at the same time that there has always been an undercurrent of thought; there have been always parties of men, philosophers, students of comparative religion who have tried and are still trying to bring about harmony in the midst of all these jarring and discordant sects. As regards certain countries, these attempts have succeeded but as regards the whole world ,they have failed .

 ISBN : 978-93-80216-12-6

While talking about Hinduism and its greatness, Swami Vivekanand expressed his views in this manner that three religions now stand in the world which have come down to in from time prehistoric -Hinduism , Zoroastrianism and Judaism. They have all received tremendous shock and all of them prove by their survival their interval strength. But while Judaism failed to absorb christianity and was driven out of its place of birth by its all conquering daughter, and a handful of Parsees is all that remains to tell the tale of their grand religion, sect after sect arose in India and seemed to shake the religion of the Vedas to its very foundations but like the waters of the seashore in a tremendous earthquake it receded only for a while only to return in an all -absorbing flood, a thousand times more vigorous, and when the tumult of the rush was over, there sects were all sucked in, absorbed and assimilated into the immense body of the mother faith.

What is God

The Hindus have received their religion through revelation of the Vedas. They hold the views that Vedas are without beginning and without end The Vedas teach us that creation is without beginning or end. Science is said to have proved that the sum total of cosmic energy is always the same. Then ,if there was time when nothing existed, where was all this manifested energy? Some say that it was in a potential form in the God. In that case God is sometimes potential and sometimes kinetic, which would make Him mutable. Everything mutable is a compound, and everything compound must undergo that change which is called destruction. So God would die, which is absurd. Therefore there never was a time when there was no creation.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

God is the ever active providence by whose power systems after systems are being evolved out of chaos, made to run for a time and againdestroyed. This is what the Brahmin boy repeats every day:

'The sun and the moon, the lord created like the suns and moons of previous cycles'. And this agrees with modern science.

The first impression we get of the advice given by religions is that we had better terminate our existence. To the question how to cure the evils of life, the answer apparently is give up life. Life is full of ills, the world is full of evils; that is a fact no one who is old enough to know the world can deny. But what is remedy proposed by all the religions? That this world is nothing. Beyond this world is something which is very real. All religions tell us that, there is something beyond this world. This life in the five sense, life in the material world, is not all; it is only a small portion, and merely superficial. Behind and beyond is the infinite in which there is no more evil. Some people call it God, some Allah, some Jehovah, Jove, and so on. The Vedantin calls it Brahman.

Purpose of Religion

Religions divide themselves generally into three parts. There is the first part, consisting of the philosophy the essence, the principles of every religion. These principles find expression in mythology-lives of saints or heroes, demigods, or gods, or divine beings; and the whole idea is this mythology is that of power. And in the lower class of mythologies the primitive -the expression of this power is in the muscles; their heroes are strong, gigantic. One hero conquers the whole world. There heroes find expression in

something higher. The higher mythologies have heroes who are gigantic moral men.Their strength is manifested in becoming moral and pure. They can stand alone, they can beat back the surging tide of selfishness and immorality. The third portion of all religions is symbolism, which you call ceremonials and forms. Even the expression through mythology, the lives of heroes, is not sufficient for all. There are minds still lower. Like children they must have their kindergarten of religion, and these symbologies are evolved concrete examples which they can handle and grasp and understand, which they can see all feel as material somethings. So is every religion you find there are the three stages : philosophy, mythology and ceremonial.

But in Vedanta it is not necessary that we find all there three qualities. It is a little bit different from the above mentioned stages of almost all the religions. Vedanta philosophy focuses that we must see religion, feel it, realize it in a thousand times more intense a sense than that in which we see the wall.

Method of Religion

We must reason; and when reason proves to us the truth of these prophets and great men about whom the ancient books speak in every country, we shall believe in them .We shall believe in them when we see such prophets among ourselves. We shall then find that they were not peculiar men, but only illustrations of certain principles. They worked, and that principle expressed itself naturally, and we shall have to work to express that principle in us. They were prophet, we shall believe, when we become prophets. They were seers of things divine. They could go beyond the bounds senses and catch the glimpse of that which is beyond .We shall believe that when we are able to do it ourselves and not before.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

So says Vedanta, religions is to be realised now. And for you to become religious mean that you will start without any religion, work your way up and realise things, see things for yourself; and when you have done that, then and then alone, you have religion.

Religion as in Vedanta

This is the first principle of Vedanta, that realisation is religion, and he who realises is the religious man. Every science has its own method of learning and religion is to be learnt the same way It has its own method, and here is something we can learn, and must learn, from all the ancient prophets of the world, every one who has found something, who has realised religion. They will give us the methods, the particular methods through which alone we shall be able to realise the truths of religion. They struggled all their lives, discovered particular methods of mental culture, bringing the mind to a certain state, the finest perception ,and through that they perceived the truths of religion. To become religious, to perceive religion, feel it ,to become a prophet, we have to take these methods and practice them; and then if we find nothing, we shall have the right to say, 'There is nothing in religion, for I have tried and failed.'

If we talk about the prophets we find that their whole living, their practice, their method, everything was different from the masses who surrounded them; and these were the causes that have them the higher light, of the Devine, And we, if we want to have this vision, must be ready to take up there methods. It is practice, work ,that will bring us up to that. The plan of Vedanta, therefore, is: first, to lay down the principle, map out for us the goal, and then

ISBN : 978-93-80216-12-6

to teach us the method by which to arrive at the goal, to understand and realise religion.

Religion and Sience

Experience is the only source of knowledge. In the world religion is the only science where there is no surety, because it is not taught as a science of experience. This should not be. There is always, however, a small group of men who teach religion from experience. They are called mystics, and these mystics in every religion speak the same tongue and teach the same truth. This is the real science of religion. As mathematics in every part of the world does not differ, so the mystics do not differ. They are all similarly constituted and similarly situated. Their experience is the same ;and this becomes law.

In the church, religionists first learn a religion, then begin to practice it; they do not take experience as the basis of their belief. But the mystic starts out in reach of truth, experiences it first, and then formulates his creed. The church taken the experience of others; the mystics has his own experience. The church goes from the outside in; the mystic goes from the inside out.

Religion and mystics

Now here I would like to throw some light over mystics or ascetics. It has been realised universally that Indians have the highest regards for asceticism and that the men whose memories they cherish as ideals of human conduct are ascetics.

The concept of Indian asceticism had four dimensions. Tapas, Vairagya, Samnyasa and Yoga. Tapas or austerity had two aspects.

In its negative aspect it was self control through self training or self discipline. Vairagya was an essential condition to cultivate non-attachment to worldly pleasures and interests leading to renovation, tyaga or somnyasa. It was a worthy path towards the attainment of self-perfection or preparation for a spiritual life even when leading a worldly life. All schools of thought including Brahmanism, Buddhism and Jainism or discipline leading to the path of emancipation. Samnyasa was an unsocial, resource less and detached existence when all earthly ties were broken and all worldly desires given up for the final quest of the Atman. Yoga was an art of meditation which was closely connected with tapas for achievement of physical and mental power when yoga was accepted as a system of Philosophy, certain basic rules of ascetic practices and behaviour like observance of Animsa, Satya Asteya Brahmacarya and Aparigraha came to be included in it. They formed a standard of holiness to be observed by Hindu Samnyasis, Buddhist Bhikkhu's and Jaina Sarmanas. Yoga became a technique of intellectual illumination and a means of spiritual enlightenment.

Conclusion

Here again if we talk about experience, no one form of religion will do for all. Each is a part on a string. We must be particulars above all else to find individually in each. No man is born to any religion; he has a religion in his own soul. Any system which seeks to destroy individuality is in the long run disastrous. Each life has a current running though it, and this current will eventually take it to God. The end and aim of all religions is to realise God. The greatest of all training is to worship God alone. If each man chose

 ISBN : 978-93-80216-12-6

his own ideal and stuck to it, all religious controversy would vanish.

References :

1. *The Encyclopedia of Religion, Ed. Mircea Eliade, vol. I, New York, 1987, p. 441.*
2. *Benjamin Preciado-Solis, "Some Problems Concerning the Origin of Samnyasa"ABori,op.cit., p. 359*
3. *Dumont Leuis, "Renuciation in Indian Religions", in Religion, Politics and History in India, Nouton, The Hague, 1970, pp. 45-66*
4. *Margaret and James Stutley, A Dictionary of Hinduism, London, 1977.*
5. *Vivekanand Sahitya Sanchayan, Advita ashram, Calcutta.*
6. *S. Radhakrishnan ,Eastern religion and Western Thought, NEW DELHI, 1962.*
7. *J. C. Oman, Mystic Ascetic and Saints of India, BOMBAY, 1971.*
8. *J. W. Sedler, Asceticism in India and Greece, TOTOWA, 1981.*

Swami Vivekanand's Philosophy on Education

Anita Kumari
Asstt. Prof. Education
Govt. P.G. College, Noida

Swami Vivekananda's original name was Narendranath and was born in a Calcutta on 12 Jan 1863.He was an extraordinary learner and was in XI class when he was eight years old.Prof. William heretic remarked "Narendranath is really a jenius. I have travelled far and while,but I have never yet come across a land of his talent and possibilities even in German Universities amongst philosophical students. He is bound to make his remark in life".The influence of Ram Krishna was very strong on Narendra.

To Swami Vivekanada"Educationis mainmenifestation of the perfection already in man".A Permian philosophy encompassed with in 10 words,To reduce the self ,the perfection of God in man,is the good of education.This perfection has to be realized and manifested in one's own life. Swami ji drank deep from the formation of Vedanta philosophy.It may appear a little difficult for some group the significance of his premises with out some knowledge of Vedanta,but his language and exposition are so simple and Lucile that one may hardly fail to miss the import of his thought.

Aim of Education

According to Swami ji "we want that education by which character is formed,strength of mind is increasing,the intellect is expanded and by which one can stand on one's feet".Character is the strength of man,Swami explained what

 ISBN : 978-93-80216-12-6

a character was and how it could be formed, “of his tendencies,the sum total of the bent of his mind’The character of any man is but the aggregate.It is the product of man’s thought and actions.Character education is a community and national problem.In educational thinking there has never been any doubt regarding the obligation of the school in the development of character of the children and youth, the environmental potentiality that they can command.

Swamiji has repeatedly impressed the need to control the internal and external senses.It need hard practice and rigorous training to asset the mind against the command of nature. To Swami, education has no meaning, if it did not uplift the common man and people.

Methods of Teaching Learning

Concentration, meditation, study of scripture, guidance, congenal atmosphere based on freedom and discipline are the requirement of proper learning.Yet he says that the success of education depends upon the initiatives,self realization and self reliance.SoVivekanada also believed that the child does most of the learning while teacher is the facilitator.

Student

According to Swami ji the student must be pure in thought and speech, have real thirst for knowledge, Brahmacharya, continous struggle etc.

“All sins and evil can be summed up in that one word-weakness”. It is the weakness that is the motive power in all evil doing.It is the weakness that is the source ofallselfishness.It is the weakness that make injure others.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Teacher

The teacher should be of very high character and he should be sinless.He must be pure in mind and heart.He must have love for his students.Placing a lofty idea before teachers Swami Vivekanand says "The only true teacher is he who can immediately come down to the level of the student and transfer his soul to the student and see through his mind.Such a teacher can really teach and none else".

Curriculum

He recommended the study of languages specially regional language,Sanskrit,link languages and English.He encouraged the subjects like history,geography,economics and other social sciences and psychology.The supreme mission of Vivekananda's life was to spread the gospel of Vedas and Upanishads.Vivekananda favored the western sciences,engineering and other subjects.He wanted to synthesize the study of Vedanta, religion, philosophy, theology and western education because that was (and is) the requirement of the day. Physical and health education was one aspect of education received a special treatment in the hands of Swami Vivekananda.

Women Education

He was quite pained and worried about the condition of women in Indian society.He recommend that daughter should be brought up and educated just as son.He wants that the ideal and charity should be emphasized for women because this ideal would bring the need of Seeta for Indian women.Swami Vivekananda was against the child marriage.He wanted that the girls should be trained up in ethical and spiritual life.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Todays's Perspective

Swami Vivekananda's philosophy is an integration of several western and Indian schools of philosophy in the context of education.A brief idea of his thoughts in todays perspective is as follows-

As Naturalist

Like a naturalist Swami Vivekananda opposed book learning to a very great extent.He says that education should not overlook the practical aspect of life .By the practical aspect of life Swami Vivekanand did not refer to material prosperity or the amassing of wealth,but he hinted at natural satisfaction or primary needs of the individuals.He has adviced us to lead a life without artificiality and blind faith.

As Idealist

Swami Vivekananda propogated to the world the real meaning of education by saying that education is the manifestation of perfection already inherent in man.He has regarded concentration as the only method of gaining knowledge.Brahmacharya is needed for developing the power of concentration. The teacher has to enable the children to develop the power of concentration.Only a good teacher,who has dedicated his life to the service of others by renouncing his personal interests, can do this.

As Pragmatist

Swami Vivekananda advocates mass education and says that education should cater to the needs of the common man in the country. It has to take into account the practical side of life.That education is worthless which does not aim at enabling the children to be useful to the society.

Moral values

Education for good citizenship requires effective training of human instinct , impulses, emotion and desires in the longer interest of the nation. There must be different avenues for student to develop proper standards in art, science and literature. It is a fault of modern age that students in general are announcing about certain examination by merging answer to related questions with help of their teachers.

Swami Vivekananda had once said about the idea of education "Suppose I had a child . I should not teach him any religion;I should teach him breathings- the practice of concentrating the mind, just one line of prayer- not prayer in your sense , but simply ,"I meditate on Him who is the creature of this universe; may He enlighten my mind."

Areas of education

Swami Vivekananda in his scheme of education meticulously includes all those studies , which are necessary for the all round development of body ,mind and soul of the individual.These studies can be brought under the broad heads of physical,cultural, aesthetics ,classics ,language ,religion, science and technology.According to Swamiji the cultural values of the country should form an integral part of the curriculum of education.The culture of India has its roots in her spiritual values.The time tested values are to be embibed in the thoughts and lever of the students through the study of the classics like Ramayana, Mahabharata,Gitaetc.Education remains incomplete without the teaching of aesthetics or fine arts.

Swami Vivekananda's whole concept of philosophy of life as well as education can be felt in his these words-

 ISBN : 978-93-80216-12-6

"One infinite pure and holy- beyond thought , beyond qualities I bow down to Thee".

References :

1. *Chaube S.P. : Recent Educational philosophies in India -Pandey R.S. : Philosophising Education (2005)*
2. *SrivastavaKamal and SrivastavaSangeeta : Great philosophers and Thinkers on Education*
3. *Abhedananda Swami : Swami Vivekananda and his works in America*
4. *Swami Brahmasthananda : SwamiVivekanandSahitya- Sanchayan Pandey R.S. : Principles of Education*

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Swami Vivevekananda: The Voice of Resurgent India

Dr. Pratima Verma
Asstt Prof.
Dayanand Women's
Training CZZollege, Kanpur

Sunita Srivastava
Lecturer
Dayanand Women's
Training College, Kanpur

Swami Vivekananda cast India's cultural heritage into international spotlight when he began his speech at the Parliament of World Religions with the phrase, "My sisters and brothers of America." The idea of referring to an auditorium full of strangers as family left many Americans surprising and was the first glimpse of traditional Indian culture shown to the world.

The dynamism of Swami Vivekananda's message of universal harmony can be seen in that his concern for humankind beyond geographical and national boundaries. True to the spirit of the Vedic injunction "Vasudaiva Kutumbakam" - The whole world is one family with no discrimination or favouritism or hierarchy. Vivekananda's quest for East-West unity and global re-spiritualization was projected on a worldwide scale.

The life and teachings of both, his guru, Sri Ramakrishna, and Swami Vivekananda signified not only a new awakening of the national consciousness of India but also the new spirit of love, fellowship and understanding that was growing among the different sections of humanity on the basis of their spiritual oneness. This message is one that is needed as critically today, perhaps even more critically.

Humanism is an attitude of mind attaching prime im-

 ISBN : 978-93-80216-12-6

portance to man and human values are often regarded as the central theme of Renaissance civilization. In recent years the term ‘humanism’ has often been used to refer to a value system that emphasizes the personal worth of each individual. Swamiji’s concept of humanism bears a unique stamp of individual power and potentiality. It is ‘intensely human, even suprahuman.’ It cannot be equalled with the prevalent idea of humanism in the West or with the scientific humanism. It is altogether a different form which is strengthened and sustained by the ignition of divine spark in man as supported by Vedantic thought. Vivekananda’s concept of humanism, however, was not only confined to his native land only but its broad divergence is trying to achieve international solidarity and brotherhood.

Swami Vivekananda’s humanistic philosophy insisted upon the essentiality to work for happiness and welfare for all.

Apart from the enduring icon of the rise of Indian nationalism in modern India we know him today as among one of the leaders who raise voice of Indian nationality. His position was unique in that along with a modern education which gave him a critical attitude, and his account of his experience and the importance of this in his life are as important as his work in nation building.

A true nationalist in heart and spirit believed that there is one all dominating principle manifesting itself in the life of each nation gave Indians proper understanding of their country’s great spiritual heritage and thus gave them pride in their past.

Vivekananda worked for awakening the masses, development of their physical and moral strength and created in

them a consciousness of being proud of the ancient glory and greatness of India. It is therefore he was hailed as one of the great architects of modern nationalism in India. He had created a feeling in the minds of Indians that the country had a role to play in the world affairs his impact and influence still live and quite dynamically too. It was Vivekananda, ancient yet modern, a bridge between India's past and present a beacon-light beaconing her to her destined and glorious goal. He not only bridged India's past and present, he also bridged the East and West.....

Swami Vivekananda gave to the people a vision of the glorious national destiny and infuse them with the sense of national direction to march forward which lit the fire of national idealism in a thousand hearts, right from fiery revolutionaries to moderates in politics, from wandering monks to social reformers, and in every field of national resurgence, indeed today, the need of hour is such men-not merely for one man here and another there but hundreds and thousands and laks covering every tiny part of the country to spread the vision of Vivekananda and awake everyone to develop the sense of pride and respect for nation and adhere with her core values.

In present time overall technological developments in various spheres though conduced man to material pleasures and personal comforts that contentment had made him more self centered, mean and restless, this malady prevails worldwide. The remedy that he chose was a thorough change from human sensuality to human spirituality. A strong belief in spirituality could bring in dynamism, rationalism, universalism, and progressivism and, of course, humanism.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Swami Vivekananda explained that religions of the world were not contradictory but complementary to one another. According to him religions may differ outwardly in rituals and mythologies but their philosophy is the same. Each religion contained in itself some elements of truth. No religion should be condemned or treated as low. We must respect all religions because all try to reach the same goal. This is known as his concept of universal religion.

The central idea in the life and teaching of Vivekananda was religious universalism. In the eyes of those who believed in universalism, there was no difference between the followers of different religions. All religions are universal — equal and true . Vivekananda believed that in Hinduism, universalism found ideal articulation. And was hence a leader in spiritual matters. That is the reason for his initiative for the formation of the Ramakrishna movement which organised its activities in the field of education and social service.

In his highly applauded speech at the Congress, he tried to highlight the universalism inherent in all religions and then to demonstrate that it was best exemplified in Hinduism. Such a position was derived from his belief in Vedanta which, he argued, transcended the limits of any particular religion or cultural tradition. Hence he tried to reconcile his understanding of universalism with the Hindu philosophical system. Because he argued that all religions were universal and that there was no superiority of one over the other. He said "every religion is an expression, a language to express the same truth, and we must speak to each other in his own language."

His religious and moral philosophy is suitable for the

modern man because it is very much practical for him. As it is known that man in the present age does not need so much ritualistic religion and ethics. Neither he gets much time to worship God through ritualism nor his rational mind allows him to do so. One can be religious by serving suffering humanity. One who tries to eradicate different social and national ills sincerely, can be regarded to truly religious.

"Whether you believe in spirituality or not, for the sake of the national life, you have to get a hold on spirituality and keep to it. Then stretch the other hand out and gain all you can from other races, but everything must be subordinated to that one ideal of life; and out of that a wonderful, glorious, future India will come - I am sure it is coming - a greater India than ever was".

India's history is inseparable from the history of spirituality and religion. Our country even today holds the torch of spirituality to the rest of the world which is ridden by fear of annihilation on account of racial conflicts, greed for territory and power. In spite of strong influence of western civilization on Indian mind, its core remains spiritual. Swami Vivekananda was responsible for awakening of the soul of the country. He reminded people of our hoary cultural heritage and exhorted them to preserve the spiritual values in life. He preached that the best and sincere way to worship God is to love fellow beings, especially the poor and the weak. He strongly urged that our country should first become free from ignorance, poverty and disease.

His teachings seem to be more relevant to the present world situation. We can say that the answer to the various complex problems confronting the world today lies within

 ISBN : 978-93-80216-12-6

the life and teachings of Swami Vivekananda.

Knowledge is inherent in man, not acquired from external sources. Like sparks in a flint, knowledge is potentially there in human mind. The stimulus of education causes the friction that ignites the fire of knowledge.

Swami Vivekananda , a great philosopher, thinker and reformer of India, defines education as the manifestation of perfection already in men .To him education was not only collection of information, but something more meaningful; he felt education should be man-making, life giving and character-building. He states it emphatically that if society is to be reformed, education has to reach everyone-high and low, because individuals are the constituents of society. He was also emphatic that women must be educated, for he believed that it is the women who mould the next generation, and hence, the destiny of the country.

Vivekananda stressed on the importance of women education. He explained the point about how female illiteracy retards the progress of a society. "There is no chance for the welfare of the world unless the condition of woman is improved. It is not possible for a bird to fly on only one wing" "Educate your women first and leave them to themselves; then they will tell you what reforms are necessary for them" "Our right of interference is limited entirely to giving education. Women must be put in a position to solve their own problems in their own way. No one can or ought to do this for them. And our Indian women are capable of doing it as any in the world"

Unless the gap between males and females literacy is abridged, it is very difficult to steer and propel national development. Respect, reverence and love for women not as

ISBN : 978-93-80216-12-6

objects of desire but as manifestations of the Divine. Feminine is part and parcel of India's cultural and spiritual heritage. Without it, as we are seeing in the streets of India today, no resurgence will be successful. Vivekananda repeatedly told that India's downfall was largely due to her negligence of women. He uphold and do work for the freedom and equality of women and realizing her importance for the functioning of home and society.

Never forget.. .. the word is Women and the People .... The uplift of the women, the awakening of the masses, must come first, and then only can any real good came about for the country .... Women are not weak, nor ignorant.. .. just the contrary. But they lack opportunities, they lack training .... give them both, give them all. (Complete Works of Vivekananda, Vol 6, 1985 : 445).

In tune with his doctrine of equality and liberty for all, Swami Vivekananda's views regarding the upliftment of women manifests clearly this holistic Vedantic spirit of unity and practicality. He advocates full individual freedom for men and women equally; he also holds that as social beings, their responsibility and dharma or duty is for the construction of a harmonious society based on social, economic and political stability.

Swami Vivekananda had a message for India and the world. He spoke to the urgent need for India to incorporate the spirit of modern science, develop technical efficiency and practical skills and through these build up a healthy and body politic education according to him should be a blend of Vedanta and modern science. He believed that a proper system of education was the only remedy for all our social ills.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Swami Vivekananda is no more with us but his message continues to inspire us and will continue to inspire millions of people for all ages to come.

Conclusion

In modern age, humanity is being crushed by inhuman deeds. Everywhere, we see the dominance of inhuman tendencies. Anger, greed, scramble for power, hatred, jealousies- all this basal tendencies are bringing man to brutal level. Man instead of being the savior is becoming the destroyer of his race. Swami ji opined that man becomes the subject of all these brutal instinct because he is ignorant. Lack of knowledge guides him towards anger, greed, jealousy, hatred, malice etc. as he thinks himself separate from other individual, he exhibits these brutal instincts in social, national and international affairs.

In this hour of crisis, the teachings of Swami Vivekananda will prove like nector for the suffering humanity.He showed to the world the dignity of human soul, the potentiality of man and the rationality of the being – a path of enlightened citizenship. We need to practice developing trust in the good of human beings and join hands with the good if we are to feel the strength inherent in goodness.

A resurgent India requires not just the number of “friends” or “followers” we have globally but should truly and deeply take the world into our heart. Feel their pain, anguish, sufferings as our own and truly, selflessly, lovingly make choices and sacrifice for them. At this time of hour when the world is suffering from hatred, jealousy, terrorism, intolerance if we Indians can imbibe us the values of Swami Vivekananda with the values, ethics and sanskaras

of Bharitya sanskriti are re-infused with their cultural significance then only India truly can see a resurgence.

A Resurgent India needs a return to the values espoused by Swami Vivekananda. His call for greatness is greatness deeper than the distance our missiles can travel or the value of our GNP. It is a greatness that penetrates the core of each Indian that makes himèkher grounded, anchored, centered and rooted in an unbreakable, unshakeable connection to the Divine, to the country, to her soil and to each other. We hope that India's lot can be bettered to a great extent if we try to preach and practice Swami ji's idea pertaining to religion and morality. We also reiterate that his teachings will be beneficial for the entire human race, not only spiritually but also materially.

At present our country is facing various maladies like poverty, unemployment, terrorism, degraded condition of women, illiteracy, regionalism, religious fanatism, unemployment, degradation in values and character all due to the lack of perspectives and goal of life these evils existed even a century ago.thus it is quite evident that what he preached a century ago is relevant even today. It is a call of time for us to be guided by the teachings of Vivekananda and infuse them in us then only we could see us and world as perceived by him.

It is a high time to inculcate the values and preachings of Swami Vivekananda in us and set an enlightened path to the rest of the world and practice his beliefs, ideas and in his philosophy in all spheres that are not only practical but relevant also in the present global scenario. The only way out is how we perceive, think and apply.

I conclude with Swami Vivekananda's saying

"We are what our thoughts have made us ;so take care about what you think. Words are secondary. Thoughts live; they travel for"

References *:*

1. *Complete Works of Vivekananda, Vol 6, 1985 : 445*
2. *He believed that no religion was superior to another: by K.N. Panikkar*
3. *Religious and Moral Philosophy of Swami Vivekananda: by Shail Kumari Singh*
4. *Swami Vivekananda and Nationalism: by Dr. Saroj Kumar Panda*
5. *Swami Vivekananda on Women Empowerment: by Dr. V.K. Maheshwari*
6. *Swami Vivekananda's Neo- Vedantic Universalism: Its relevance for the reconstruction of South African Society: by Nelistra Singh*
7. *Vivekananda : His gospel of Man-making with a Garland of Tributes and A Chronicle of his Life and Times with Pictures: Compiled by Swami Jyotirmayananda*
8. *Vivekananda : The Humanist: by Dr. Somarani Chand*
9. *Writings from the Banks of Mother Ganga: by Sadhvi Bhagwati Saraswati*
10. *www.brainquote.comèkquotesèkauthersèksèkswami_vivekananda*

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Swami Vivekananda : A Historical Personality

Dr. Santosh Singh
Asstt. prof.
Ancient History and Culture,
M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly

Swami Vivekananda is a reformer of Indian culture. His contribution to Indian national movement by stage of Ramakrishana mission. Swami Vivekananda is known for his inspiring speech at the Parliament of the World's Religions at Chicago on 11 September, 1893, where he introduced Hindu philosophy to the west. this was not the only contribution of the saint but also he revealed the true foundations of India's unity as a nation. He taught how a nation with such a vast diversity can be bound together by a feeling of humanity and brother-hood. Vivekananda emphasized the points of drawbacks of western culture and the contribution of India to overcome those. Freedom fighter Netaji Subhash Chandra Bose once said: "Swamiji harmonized the East and the West, religion and science, past and present. And that is why he is great. Our countrymen have gained unprecedented self-respect, self-reliance and self-assertion from his teachings." Vivekananda was successful in constructing a virtual bridge between the culture of East and the West. He interpreted the Hindu scriptures, philosophy and the way of life to the Western people. He made them realize that in spite of poverty and backwardness, India had a great contribution to make to world culture. He played a key role in ending India's cultural isolation from the rest of the world.

In his early life Swami Vivekananda or Narendranath

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Datta, or simply Naren, as he was called in his pre-monastic days, was born to Vishwanath Datta and Bhuvaneswari Devi in Calcutta on Monday, 12 January 1863. The Datta family was rich, respectable, and renowned for charity, learning, and a strong spirit of independence. Vishwanath Datta was an attorney-at-law in the Calcutta High Court. He was proficient in English and Persian, and took great delight in reciting to his family the poems of the Persian Poet Hafiz. Bhuvaneswari Devi was an accomplished lady with a regal bearing. She was deeply religious. Before the birth of Naredranath, though she had daughters, she yearned for a son and asked one of her relatives at Varanasi to make religious offerings to Viresvara Siva. It is said that she dreamt later that Siva promised to be born as her son. Narendranath was born some time afterwards. In this early childhood, Narendranath was rather restless and given to much fun and frolic. But at the same time, he had a great attraction for spiritual matters and would play at worshipping or meditating on the images of Ram-Sita, Siva etc. The stories of the Ramayana and the Mahabharata, which his mother told him, left an indelible impression on his mind. Traits such as courage, sympathy for the poor, and attraction towards wandering monks appeared spontaneously in him. Even in childhood, Narendranath demanded convincing arguments for every proposition. With these qualities of head and heart, he grew into a vigorous youth.

At the feet of Sri Ramakrishna As a youth, Narendranath's leonine beauty was matched by his courage. He had the build of an athlete, a resonant voice, and a brilliant intellect. He distinguished himself in athletics, philosophy and music, and among his colleagues was the undisputed leader. At college, he studied and absorbed

 ISBN : 978-93-80216-12-6

western thought, and this implanted a spirit of critical inquiry in his mind. His inborn tendency towards spirituality and his respect for ancient religious traditions and beliefs, on the one side, and his argumentative nature, coupled with his sharp intellect, on the other , were now at war with each other. In this predicament, he tried to find comfort in the Brahmo Samaj, the popular socio-religious movement of the time. The Brahmo Samaj believed in a formless God, deprecated the worship of idols and addressed itself to various forms of social reform. Narendranath also met prominent religious leaders, but could not get a convincing answer from them to his questions about the existence of God. This only accentuated his spiritual restlessness. At this critical juncture, he remembered the words of his Professor, William Hastie, who had mentioned that a saint lived at Dakshineswar, just outside Calcutta, who experienced the ecstasy described by words worth in his poem, The Excursion. His cousin Ramachandra Datta also induced him to visit the saint. Thus came about, in 1881, the historic meeting of these two great souls, the prophet of modern India and the carrier of his message. Narendranath asked: " Sir, have you seen God?' Sri Ramakrishna answered his question in the affirmative: ' Yes, I have seen Him just as I see you here, only more intensely.' At last, here was one who could assure him from his own experience that God existed. His doubt was dispelled. The disciple's training had begun. While Sri Ramakrishna tested him in so many ways, Narendranath, in turn, tested Sri Ramakrishna in order to ascertain the truth of his spiritual assertions.

At one stage, after the passing away of his father in 1884, Narendranath's family suffered many troubles and priva-

 ISBN : 978-93-80216-12-6

tions. At the suggestion of his Master, Narendranath tried to pray to Mother Kali at Dakshineswar for the alleviation of the family's distress. He found, however, that although his need was for wealth, he could pry only for knowledge and devotion. Gradually, Narendranath surrendered himself to the Master. And Sri Ramakrishna, with infinite patience, claimed the rebellious spirit of his young disciple and led him forth from doubt to certainty and from anguish to spiritual bliss. But, more than Sri Ramakrishna's spiritual guidance and support, it was his love which conquered young Narendranath love which the disciple reciprocated in full measure. With Sri Ramakrishna's illness and his removal to Cossipore, on the outskirts of Calcutta, for treatment, began Narendranath's final training under his guru. It was a time remarkable for the intense spiritual fire which burned within him and which expressed itself through various intense practices. The Master utilized the opportunity to bring his young disciples under the leadership of Narendra. And when Narendra asked that he might be blessed with nirvikalap samadhi, ordinarily regarded as the highest spiritual experience, the Master admonished him saying: "Shame on you ! I thought you would grow, like a huge banyan, sheltering thousands from the scorching misery of the world. But now I see you seek your own liberation.' All the same, Narendra had the much-coveted realization, after which the Master said that the key to this would thenceforth remain in his keeping and the door would not be opened till Narendra had finished the task for which he had taken birth. Three or four days before his mahasamadhi, Sri Ramakrishna transmitted to Narendranath his own power and told him: ' By the force of the power transmitted by me, great things will be done

 ISBN : 978-93-80216-12-6

by you; only after that will you go to whence you came.' After the passing away of the Master in August 1886, many of the young disciples gathered together in an old dilapidated house at Baranagore under the leadership of Narendranath. Here, in the midst of a life of intense austerity and spiritual practices, the foundation of the Ramakrishna brotherhood was laid. It was during these days that Narendranath, along with many of his brother disciples, went to Antpur; and there on Christmas Eve (1886), sitting round a huge fire in the open, they took the vow of sannyasa. The days at Baranagore were full of great joy, study, and spiritual practices. But the call of the wandering life of the sannyasin was now felt by most of the monks. And Narendranath too, towards the close of 1888, began to take temporary excursions away from the Math.

As a monk his remarkable change of outlook came over Narendranath between the closing of 1888, when he first left on his temporary excursions, and 1890, when he parted finally from his brethren and travelled alone as an unknown mendicant. He began to assume various names in order to conceal his identity that he might be swallowed up in the immensity of India. Now it was that the natural desire of an Indian monk for a life of solitude gave way to the prescience that he was to fulfill a great destiny; that his was not the life of an ordinary recluse struggling for personal salvation. Under the influence of his burning desire to know India better and the mute appeal rising all around him from oppressed India, he went first to Varanasi, the holiest city of the Hindus. After Varanasi, he visited Lucknow, Agra, Vrindaban, Hathras, and Rishikhesh and then returned to Baranagore for a time. At Hathras, he met Sarat Chandra Gupta who became his first disciple (Swami Sadananda).

He revealed to him the mission entrusted to him by his Master, namely, the spiritual regeneration of India and the world. Sarat, who was on the staff of the railway station at Hathras, resigned his post and followed his guru to help him in his mission in July, 1890, the Swami, took leave of Sri Sarada Devi, the holy consort of Sri Ramakrishna, who was the spiritual guide of the young monks after the Master's passing away. He also took leave of his brother monks, with the firm resolve to cut himself free from all ties and to go into the solitude of the Himalayas, for he felt it essential to be alone.

His wandering took him to various places of pilgrimage and historical interest in Uttar Pradesh, Rajasthan, Gujarat, Maharashtra, Mysore, Kerala, Madras, and Hyderabad. Everywhere the glory of ancient India vividly came before his eyes, whether political, cultural, or spiritual. In the midst of this great education, the abject misery of the Indian masses stood out before his mind. He moved from one princely State to another, everywhere to explore avenues of mitigating their lot. Thus he came to meet many leading personalities and rulers of the princely States. Among them, Maharaj Ajit Singh of Khetri became his fast friend and ardent disciple. At Alwar, he studied the Mahabhasya of Patanjali. At Pooona, he stayed with Bal Gangadhar Tilak, the great national leader. At first, Tilak talked with the Swami somewhat ironically, but later his depth of learning and profundity of thought impressed him and he invited the Swami to stay with him. From there, after a stay at Belgaum, he went to Bangalore and Mysore. The Maharaja of Mysore gave him the assurance of financial support to enable him to go to the west to seek help for India and to preach the eternal religion. From Mysore, he visited Trivandrum and

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Kanya Kumari. Wherever he went, it was not the important places and people that impressed him most. It was the terrible poverty and misery of the masses that caused his soul to burn in agony. He had travelled through the whole of India, often on foot, for nearly three years, coming to know India at first hand. Now he had reached the end of his journey, as it were.

He prostrated himself with great feeling before the image of Mother Kumari at the Kanya Kumari temple. Then he swam across the sea to a rock off the south coast, and sitting there for the whole night went into deep meditation. The vast panorama of his experiences during his travels passed before his mind's eye. He meditated on the past, the present, and the future of India, the causes of her downfall, and the means of her resurrection. He then took the momentous decision to go to the West to seek help for the poor of India and thus give shape to his life's mission. With this decision, he journeyed to Rameswarm and Madurai. He then went on to Madras, where a group of young men, headed by Alasinga Perumal, were eagerly awaiting his arrival. To them, he revealed his intention of visiting America to attend the Parliament of Religions that was being convened at Chicago. His young disciples forthwith raised a subscription for his passage. But the Swami was not yet certain that it was the Divine Mother's will that he should go, and so he asked them to give away the money to the poor. At this juncture, the Swami had a symbolic dream in which Sri Ramakrishna walked out into the sea and beckoned him to follow. This coupled with the blessings and permission of Sri Sarada Devi, who also, in a dream, had received Sri Ramakrishna's consent, settled the question for him, and his young friends again set about collecting the necessary funds.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

On the world stage Swami Vivekananda traveled to America via China, Japan, and Canada, reached Chicago about the middle of July. At Canton, he saw some Buddhist monasteries; in Japan, he noted with admiration the industrial progress and cleanliness of the people. Now, at Chicago, so dazzling with riches and the inventive genius of the West, he was puzzled like a child. To his disappointment, he learnt that the Parliament of Religions would not be held until September, and that no one could be a delegate without credentials. He felt lost, but resigning himself to the will of Providence, he went to Boston which was less expensive than Chicago. In the train, he happened to become acquainted with Miss Katherine Sanborn, who invited him to be her guest at Boston. Through her, he came to know Professor John Henry Wright of Harvard University, who gave him a letter of introduction to the Chairman of the Parliament of Religions. In the course of this letter, Dr. Wright said: 'Here is a man who is more learned than all our learned professors put together.' The Swami returned to Chicago a couple of the days before the opening of the Parliament of Religions, but found to his dismay that he had lost the address of the committee which was providing hospitality for the oriental delegates. After a night's rest in a huge box in the railway freight-yard, the swami set out in the morning to find somebody who could help him out of his difficulty. But help for a colored man was not readily available. Exhausted by a fruitless search, he sat down on the roadside resigning himself to the divine will. Suddenly, a lady of regal appearance emerged from the fashionable house opposite, approached him, and offered him help. This was Mrs. George W. Hale, whose house was to become in future the permanent address of the Swami while in the

 ISBN : 978-93-80216-12-6

United States, for the Hale family became his devoted followers.

The Parliament of Religions opened on 11 September 1893. The spacious hall of the Art Institute was packed with nearly 7000 people, representing the best culture of the country. On the platform, every organized religion from all corners of the world had its representatives. The Swami had never addressed such a huge and distinguished gathering. He felt extremely nervous. When his turn came, he mentally bowed down to Sarasvati, the goddess of learning, and then began his address with the words, 'Sisters and Brothers of America'. Immediately, there was thunderous applause from the vast audience, and it lasted for full two minutes. 'Seven thousand people rose to their feet as a tribute to something, they knew not what.' The appeal of his simple words of burning sincerity, his great personality, his bright countenance, and his orange robes was so great that next day the newspapers described him as the greatest figure in the Parliament of Religions. The simple monk with a begging bowl had become the man of the hour. All the subsequent speeches of the Swami at the Parliament were listened to with great respect and appreciation. They all had one common them universality. While all the delegates to the Parliament spoke of their own religion the swami spoke of a religion that was vast as the sky and deep as the ocean. When the Parliament ended, the days of quiet had ended for the Swami. What followed were days of hectic lecturing in almost every part of the United States. Having signed a contract for a lecture tour with a bureau, the Swami had to be constantly on the move, speaking to all sorts of audiences. Though this tour provided him with opportunities of knowing the different aspects of western life at first hand,

he found that the bureau exploited and embarrassed him. He felt disgusted and severed his connection with it. Now he wanted to form a group of earnest American disciples, and began classes, free of charge, for sincere students. His stay in the West, which lasted till December 1896, was packed with intense activity: besides innumerable lectures and classes at New York, he founded a Vedanta Society there; he trained a band of close disciples at the thousand Island Park; and he wrote Raja-yoga and paid two successful visits to England, where he gave the lectures which now form Inana-yoga. There he made some disciples, prominent among them being Capt. And Mrs. Sevier, Sister Nivedita, and E.T. Sturdy. Earlier, in New York, J.J Goodwin, a young English stenographer had been accepted as his disciple. It was during these visits that he had the pleasure of meeting the great savant Max Muller. During his tour of Europe in the summer of 1895, he also met the famous German orientalist Paul Deussen. He had labored hard to give to the West his message of Vedanta as the universal principle basic to all religions, and his effort had by now resulted in the establishment of the Vedanta work on a permanent basis in the United States. The London work, too, had made some progress. Now his motherland was calling him and was eager to receive his message. So, from London, he started for India at the end of 1896. Besides his American and English disciples, he left behind his brother disciples Saradananda and Abhedananda to carry on the work.

Swami Vivekananda left London with the Saviors on 16 December 1896, and after a visit to Rome and other places in Italy, he took the boat for India at Naples on 30 December. At Naples, Mr. Goodwin joined the party. They

 ISBN : 978-93-80216-12-6

reached Colombo on 15 January 1897. The news of the Swami's return had already reached India, and the people everywhere, throughout the country, were afire with enthusiasm to receive him. He was no more the unknown sannyasin. In every city, small or big, committees had been formed to give him a fitting reception. At Madras, he delivered five public lectures, every one of which was a clarion call to throw away weakness and superstition and rise to build a new India. He emphasized that in India 'the keynote of the whole music of the national life' was religion, a religion which preached the 'spiritual oneness of the whole universe', and when that was strengthened, everything else would take care of itself. He did not spare his criticism, however, castigating his countrymen for aping the west, for their blind adherence to old superstitions, for their caste prejudices, and so on. To establish his work on a farm basis, the Swami summoned all the monastic and lay disciples to a meeting at Balaram Bose's house, and the Ramkrishna Mission was formed in May 1897. The aims and ideals of the Mission propounded by the Swami were purely spiritual and humanitarian. He had inaugurated the machinery for carrying out his ideas.

When plague broke out in Calcutta in May 1898, he organized relief work with the help of the members of the monastery and lay disciples. After the plague was under control, the swami and his western disciples left Nainital and Almora. This was a period of great preparation and training for his western disciples, especially Sister Nivedita. On 16 June, the Swami left for Kashmir with some of these disciples. This trip to Kashmir was an unforgettable experience both for the Swami and for the disciples. When he reached Calcutta on 18 October, he was pale and weak and

 ISBN : 978-93-80216-12-6

suffering from various ailments. Despite this, he engaged himself in numerous activities. A piece of land had been acquired at Belur on the west bank of the Ganga, five miles above Calcutta, and the construction of the monastery had started. In January 1899, the monks moved to the new monastery, the now famous Belur Math. The Nivedita Girls' School had been inaugurated earlier. The Bengali monthly Udbodhan was also started at this time. And the Sevier fulfilled the Swami's dream of having a monastery in the Himalayas, by starting the Advaita Ashrama at Mayavati (Almora) in March 1899. The English monthly Prabuddha Bharata had been started at Madras earlier, but on the untimely passing away of its editor in 1898, it ceased publication for a month. The monthly started again at Almora under the editorship of Swami Swarupananda, a disciple of Swami Vivekananda, and in 1899, it was transferred to the Advaita Ashrama at Mayavati. During this period, the Swami constantly inspired the sannyasins and brahmacarins at the Math towards a life of intense spirituality and service, for one's own emancipation and the good of one's fellow men- Atmano moksartham jagat hitaya, as he out it. But the swami's health was failing. And his plan to revisit the west was welcomed by his brother monks, in the hope that this would improve his health.

Swami Vivekananda left India on 20 June 1899, taking with him Swami Turiyananda and Sister Nivedita. The journey with the Swami was a great education to both of them. Sister Nivedita wrote: 'From the beginning to the end, a vivid flow of stories went on. One never knew what moment would bring the flash of intuition and the ringing utterance of some fresh truth.' After touching Madras, Colombo, Aden, and Marseilles en route, the ship arrived

at London on 31 July. The trip was beneficial to the Swami's health. After spending two weeks in London, he sailed for New York. Arriving there, he went with Mr. and Mrs. Leggett to their beautiful country home called Ridgley Manor on the River Hudson. The swami stayed at this country until 5 November and then went to the west coast. He visited Los Angeles, Oakland, San Francisco, and also made short trips to Chicago and Detroit. The main event of this period was the starting of the Shanti Ashrama in Northern California, which he placed under the charge of Swami Turyananda. A Vedanta centre at San Francisco was also inaugurated. He also delivered a number of lectures in the western cities during this period. But the Swami was becoming more and more aware of the approaching end. He wrote to Miss MacLeod: 'My boat is nearing the claim harbour from which it is never more to be driven out.' On 1 August 1900, he arrived in Paris to participate in the Congress of the History Religions, held there on the occasion of the Universal Exposition. With some friends, he left Paris in October and visited Hungary, Rumania, Serbia, and Bulgaria, before arriving at Constantinople. Then they proceeded to Athens and Cairo. In Cairo, the Swami suddenly became restless to return to India; he had a premonition of Capt. Sevier's death. He took the first available boat and hurried back to India and reached the Belur Math on 9 December 1900, without any previous intimation. It was a pleasant surprise to his brother monks and disciples, who greatly rejoiced at his return.

At the Math, Swami Vivekananda heared that Capt. Sevier had passed away on 28 October, and he left immediately for Mayavati to console Mrs. Sevier. Arriving there on 3 January 1901, he strayed for a fortnight. The gran-

 ISBN : 978-93-80216-12-6

deur of the scenery of this Himalayan Ashrama, dedicated to Advaita, delighted him. In spite of his ill health and the severe cold, he wandered in the woods and around an artificial lake, happy and carefree. Returning to Belur, he stayed there for seven weeks and then left for East Bengal and Assam. He returned to the Math in the second week of May 1901, after visiting Nangalbanth, Kamakhya, and Shillong during the tour, and delivering a few lectures at Dacca and Shillong. Now the Swami tried to lead a carefree life at the monastery. He would roam about the Math grounds, sometimes clad only in his loin-cloth; or he would supervise the cooking; or sit with the monks singing devotional songs. Sometimes, he would be seen imparting spiritual instructions to the visitors, at other times engaged in serious study in his room or explaining to the members of the Math the intricate passages of the scriptures and unfolding to them his schemes for future work. He freed himself entirely from all formal duties by executing a Deed of Trust in favour of his brother disciples,transferring to them all the properties, including the Belur Math, so far held in his name.

Towards the end of 1901, two learned Buddhists came from Japan to invite him to attend the forthcoming congress of Religions there. The Swami could not accept their invitation, but went with them to Bodh Gaya and from there to Varanasi. At Varanasi, he was delighted to see a few young men who, started nursing the poor and needy. Their work formed the nucleus of the future Ramakrishna Mission Home of Service. The Swami knew his end was nearing. All his actions during the last days were deliberate cannot grow under the shade of a big tree. On 4 July 1902, he meditated from 8 to 11 in the morning, rather unusu-

ally. In the afternoon, he went out for a walk with Swami Premananda and explained his plan to start a Vedic school. In the evening, he retired to his room and spent an hour in meditation. Then he lay down quietly and after some time took two deep breaths and passed into eternal rest. He had renounced his mortal body, but his words uttered in 1896 to Mr. Eric Hammond in London remained to reassure everyone of his immortality that it may be that I shall find it good to get outside my body to cast it off like a worn-out garment, but I shall not cease to work, i shall inspire men everywhere, until the world shall know that it is one with God.

Swami Vivekananda was ideal for Indian youth.By the lectures and speeches of Swami Vivekananda, many youth were inspired to ideas of social-service and character-building. Swami Vivekananda dedicated his life to teaching and guiding the youth the importance of social-service and laying the groundwork of character and leader attributes. His concept of service to the poor helped fire inspiration to many youth including many in Benares; these youth eventually formed the Sri Ramakrishna Vivekananda Mission Home of Service, which exists even today. The Ramakrishna Mission came into existence in 1897 and since then continues to function and inspire youth all over India. Swami Vivekananda was a mighty inspiration to youth throughout his lifetime, and continues to inspire the youth of today. National Youth Day Swami Vivekananda's birthday celebrated as National Youth Day because, “In 1984, the Government of India declared and decided to observe the Birthday of Swami Vivekananda (12 January, according to English calendar) as National Youth Day every year from 1985 onwards. To quote from the , Government of

 ISBN : 978-93-80216-12-6

India's Communication, 'it was felt that the philosophy of Swamiji and the ideals for which he lived and worked could be a great source of inspiration for the Indian Youth.' Swamij's Birthday according to Indian Almanac (Vishuddha Siddhanta Almanac) is on Pausha Krishna Saptami tithi, which falls on different dates of english calendar every year.

The Headquarters of Ramakrishna Math and Ramakrishna Mission as well as their branch centers observe the birthday of Swami Vivekananda with mangalarati, special worship, homa, meditation, devotional songs, religious discourses, sandhyarati, etc. on Pausha Krishna Saptami tithi, and as National Youth Day (12 January) with processions, speeches, recitations, music, youth conventions, seminars, Yogasana presentation, competitions in essay-writing, recitations, speeches, music, sports, etc. on 12 January." While talking about the needs of youth education J.S. Rajput says, "The youths are to be taught to point the vast canvas of life with ideas and activities that could help them visualize the future they are to create for themselves and their fellow men. They need to strive to know what is real and what is unreal. They could also be guided to appreciate that the search for truth is the ultimate goal that one realizes only after understanding the transitory nature of all that is constant changing around every moment. An acquaintance with the history and heritage of Indian could give them a feeling of continuity and motivate them to assume responsibility to take the lineage ahead. Above all, cultural moorings and scriptures may motivate and instill in them sense of possession of the sublime, goodness and beauty, which they need to assimilate and internalize."]

As Vivekananda was a great observer of the human mind and the human society at large. He understood that undertaking any social change needed enormous energy and will. Hence he called upon the youth to not only build up their mental energies, but their physical ones as well. He wanted 'muscles of iron' as well as 'nerves of steel.' He wanted the youth to possess indomitable will and the strength to drink up the ocean. What he wanted was to prepare the youth both physically and mentally to face the challenges that would lie ahead of social workers. He was also practical enough in warning the young of the pitfalls ahead and the way Society reacts to such endeavors. He said, "All good work has to go through three stages. First comes ridicule, then the stage of opposition and finally comes acceptance."

Swami Vivekananda worked on many themes-

- Karma Yoga (1896) , Raja Yoga (1896[1899 edition]),
- Vedanta Philosophy: An address before the graduate philosophical society (1896) ,
- Lectures from Colombo to Almora (1897),
- Vedanta philosophy: lectures on Jnana Yoga (1902), published in his lifetime.
- Bhakti Yoga , Complete Works. Vol 5,
- The East and the West , Inspired Talks (First published 1909) ,
- Lectures from Colombo to Almora (1904),
- Para Bhakti or Supreme Devotion ,
- Practical Vedanta, Jnana Yoga , Raja Yoga (1920), The followings are the main articles by Swami Vivekananda-
- The Ether - New York Medical Times, Feb 1895

- Reincarnation - The Metaphysical magazine March 1895
- Is The Soul Immortal- New York Morning Advertiser (1895)
- On Dr. Paul Deussen- Brahmavadin 1896
- On Professor Max Muller - Brahmavadin 1896
- The education that India needs - Bharati, 1897
- The Problem of Modern India and Its Solution Udbodhan Jan 14, 1899
- Knowledge Its Source and Acquirement- Udbodhan Feb 12, 1899
- Modern India - Udbodhan Mar, 1899
- Memoirs of European Travel - Udbodhan 1899
- The Paris Congress of the History of Religions- Udbodhan 1900
- Memoirs of European Travel -Udbodhan 1900

Thus Swami Vivekananda is a real ideal personality forever by his teaching, philosophy and work for Indian society. Swami Vivekananda was a multi facet personality. A.L. Basham, one of the greatest historians of our times said in 1963, 'it is very difficult to evaluate the importance of Swami Vivekananda in the scale of history as we are very near to his times.' Perhaps the future generations will be able to understand the importance better. We are even after 150 years also telling the same thing. We are too near the history to evaluate the importance of Swami Vivekananda. But we can hope that the future generations will be able to do the justice.

References :

1. *Brodov, V. (1984). Indian Philosophy in Modern Times. Moscow: Progress*

Publishers. Moscow,p.209

2. *Swami Vivekananda in Outstanding Indians (2000). Chennai : Alpha Books, p.9*
3. *Vivekananda (1946). On India and Her Problems. Almohra, Himalayas: Advaita Ashrama, Mayavati,p.39*
4. *Brodov, V. (1984) Indian Philosophy in Modern Times. p.283*
5. *Vivekananda (1957). My Life and Mission. Calcutta: Adviata Ashram, p.03*
6. *Vivekanda (1924). The Complete Works of Swami Vivekananda, Vol. IV.*
7. *Almohra, Himalayas : Advaita Ashram, p.309*
8. *Brodov, V. (1984) .Indian Philosophy in Modern Times. p.287*
9. *The Complete Works of Swami Vivekananda (1963). (hereafter cited as C.W.S.), Vol. 2, eventh edition . Calcutta: Advaita Ashram, p.15*
9. *Ranganathananda, Swami (1963). "Swami Vivekananda the Spiritual Teacher of Modern India" in Prabuddha Bharata, p. 35*
10. *Pandy R.S.; Philosophising Education (2005) New Delhi; Kanishka Publishers μ Distributors.*
11. *Srivastava Kamal S. Srivastava Sangeeta; Great Philosophers μ Thinkers on Education (2011) New Delhi; A.P.H. Publishing Corporation.*
12. *Johri, Pradeep Kumar, Educational Thought, New Delhi : Anmol Publications Pvt. Ltd. 2005, p. 238.*
13. *Chakrabarti Mohit; Pioneers in philosophy of education (1995) New Delhi; Concept publishing company*
14. *Chakrabarti Mohit;SwamiVivekananda-Exellence in Education (2008) Delhi; Kalpaz Publication*
15. *Chaube S.P.; Recent Educational Philosophies in India (1967) Agra Asia Press*
16. *Grover Verinder;Swami Vivekananda-A biography of his vision μ ideas (1998) New Delhi, Deep μ Deep Publications*
17. *Nair V.S. Sukumaran; Swami Vivekananda The Educators (1987) New Delhi; Sterling Publisher (P) LTD*
18. *Pani, S.P. and Pattnaik, S.K. Vivekananda, Aurobindo and Gandhi on Education, New Delhi: Anmol Publications PVT. LTD., 2006, p. 68.*

Relevance of Swami Vivekananda as A Political Thinker In Contemporary World

Dr. Sarita Sharma
Editorial Associate,
SEDRF, Research Journal
Sahibabad, Ghaziabad,

Dr. Gunjan Sachdeva
Lecturer,
Political Science
V.M.L.G. College, Ghaziabad

In spite of her innumerable linguistic, ethnic, historical and regional diversities, India has hadfrom time immemorial a strong sense of cultural unity. It was, however, Swami Vivekananda who revealed the true foundations of this culture and thus clearly defined and strengthened the sense of unity as a nation. Free India's first Prime Minister Jawaharlal Nehru wrote: "Rooted in the past, full of pride in India's prestige, Vivekananda was yet modern in his approach to life's problems, and was a kind of bridge between the past of India and her present ... he came as a tonic to the depressed and demoralized Hindu mind andgave it self-reliance and some roots in the past." Netaji Subhash Chandra Bose wrote: "Swamiji harmonized the East and the West, religion and science, past and present. And that is why he is great. Our countrymen have gained unprecedented self-respect, self-reliance and self-assertion from his teachings."Swamiji's most unique contribution to the creation of new India was to open the minds of Indians to their duty to the downtrodden masses. Long before the ideas of Karl Marx were known in India, Swamiji spoke about the role of the labouring classes in the production of the country's wealth. Swamiji was the first religious leader in India to speak for the masses, formulate a definite philosophy of service, and organize large-scale social service.

Objective

 ISBN : 978-93-80216-12-6

- To describe Swami Vivekanada Political Philosophy..
- To analyse the relevance Swami Vivekananda ideas and thought in the contemporary world

1. Political Views of swami Vivekananda

Swami Vivekananda stands for the universal tolerance and goodwill. He opposes war and violence as means to change the world. He believes that it is only the power of true love and truth that can change the world for the better. Good things cannot be had through war and violence Moreover all nations like individuals have right to develop according to their capacities. Hence it is foolish to impede their development by imposing war on them. Vivekananda thought that equality and liberty, the two being the essence of democracy, should be bestowed on all only then it would be possible to bring the poor and the downtrodden in the national mainstream. According to him the poor people are the backbone of a nation. So unless the poor masses are raised, the nation cannot progress. He declared that Religion is not the crying need of India. But bread is the need for poor are dying for food. Chakrabarthy Rajagopalachari, a man of razor sharp intelligence has defined Swamiji's contribution in a most befitting manner: - 'Swami Vivekananda saved Hinduism and saved India. But for him we would have lost our religion and would not have gained our freedom. We therefore owe everything to Swami Vivekananda. May his faith, his courage and his wisdom ever inspire us so that we may keep safe the treasure we have received from him. Political Views of swami Vivekananda are as follows

State: Vivekananda considered State as a moral and divine institution whose function was to keep the individual

 ISBN : 978-93-80216-12-6

in his moral perfection. according to Vivekananda, man was a spiritual entity firstly his only purpose of life was to be one with one the Absolute the Brahman. His purpose of life was not self-sacrifice in the sense that man must merge his entity into the State. His conception of the purpose of State was not utilitarian or hedonistic but spiritual perfection. State is Man, which is the miniature microcosm of the macrocosm - the Universe. Man is more than an intellectual being. His real nature is divine. So also State is a divine institution.

Freedom : According to Vivekananda freedom is meaningless unless it is based on the edifice of equality. He was a staunch-supporter of equality. To him, equality was the "way to freedom; inequality, the way to bondage. No man end no nation can attempt to gain neither physical freedom without physical equality, nor mental freedom without mental equality .He develops an idealistic concept of freedom. True freedom will descend only when there is no State compulsion and "the individual freedom is determined by man's internal nature. To be free is to be divine. The concept of freedom represents a synthesis between material and idealism. The individual is freedom and not free at the same time. It transcends the division between subjective and objective freedom, it includes both within its scope. It meant freedom from the bondage of good and evil. It is linked with love, and with the feeling of oneness of the Universe. It is also interlinked with the concept of equality. There is no incompatibility between freedom and equality. It embodies in it the concept of liberty, which is the first and most essential condition of growth. Environment changes the nature of duties.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Therefore, according to Vivekananda freedom and equality, far from being antithetical, are complementary. Unless we build social structure on the recognition that each individual is entitled to happiness proportionate to his contribution to society, there can be freedom only for a few and slavery for many. Conversely, without freedom equality would. Have no meaning, for equality is only a condition of freedom. There can not be any interests of ours outside the interests of the society.

Rights - Duties: According to Vivekananda, the rights are the products of social circumstance. They cannot be independent of society. The contents of rights are very largely dependent upon the customs and ethos of society, at a particular time and place. No list of absolute rights which are universally applicable can be formulated. Rights are not absolute in character. One man's right is limited by the same right of his fellow citizens. Duties of men differ in each stage of life. Vivekananda says about the individual's right to liberty : "it is our natural right to be allow to use our own boay, intelligence or wealth according to our will, without doing any harm to others, and all the members of a society ought to have same opportunity for obtaining wealth, education or known ledge." From this statement it is clear that he stood for equality of rights and privileges of men in society. He emphasis that every man has a right to live, and that there is an equal duty incumbent upon every man to respect that which his neighbour respects. Vivekananda recognises the right to freedom of speech and expression along with the right to proper education for the people for the development of their personality. Vivekananda believes that rights and duties are interdependent. Vivekananda further explains that duties of man dif-

 ISBN : 978-93-80216-12-6

ferent each stage of life. Environment changes the nature of duties. A man is not fit for every duty. Every man has to perform duties assigned to him by nature. Vivekananda emphasises that duties must be performed without any selfish motive. It must be done with a sense of duty. One should perform his duty like a free man free from anger and jealousies. He further instructs that duty should be performed with devotion and as the highest worship "The right performance of the duties of any station in life, without attachment to results, leads us to the highest realisation of the perfection of the soul. Vivekananda believes that society is a graded organisation. Concept of morality and duty varies greatly from culture to culture. Yet Vivekananda says that in spite of these variances "There must be a universal standard of morality and duty.

Government : According to Vivekananda Monarchy and aristocracy are not good forms of governments, as they were not compatible with individual liberty. A democratic form of government is the best in which each individual participated Vivekananda regards self government as the best government because in such a government the individual can get ample opportunities for his moral, merit and material development. He neither favours the Parliamentary Government of British model nor does he like the monopolistic Presidential. He emphasises spiritual democracy in every country. A good government must be based upon the teachings of Upanisads. In this .connection he says :"when the government of a country is guided by codes of law, enjoined,by Shastras which are the outcome of knowledge inspired by the divine genius of great sages, such a government must lead to the unbroken welfare of the rich and the poor, the wise and the ignorant, the king and

the subjects alike.

Society : Vivekananda's concept of society, though derived from Vedantik philosophy, seeks to integrate both the spiritualistic and materialistic interpretations of both man and society; it is both individualistic and socialistic. Believing in the divine nature of man, Vivekananda seeks to establish a continum between society, culture and civilization, like the wick, oil and the flame. This approximates the integral view of both man and society. There is no antithesis between the two.he writes, "The ideal society would be the one in which would be synthesised the Indian idea of spiritual integrity and the western idea of social progress." He writes further, "If society is net fit for highest truths; make it so, and the sooner, the better." Vivekananda stressed that orthodoxy must go from society. To him society is a stratified organisation. Man lives in groups and performs his own function according to his capacity.

Secularism : Swami Vivekananda advocates the practical religion which consists not in preaching the high and well-spun philosophy but in serving the weak, poor and the miserable He says that all religions are equally good and true. They are all different paths to reach God. Hence all religions-Taoists, Confucianists, Buddhists, Hindus, Jews, Mohmmedones, Christians, Zoroastrians are equally reverend to him as they all worship the same Almighty. Hence all quarrels and differences in the name of religion are false. All religions have certain common grounds, the life- giving common principles based on morality. Therefore we must seek the unification of all religions.

Socialism : According to him socialism is based on individual freedom than social supremacy. It is only the

 ISBN : 978-93-80216-12-6

means and not the end. A true socialism should be based on a social order in which diversity of capacity and occupation areallowed to exist, but in which privilege is totally abolished. Such a socialism is to be brought about through culture andmutual esteem. It should be of the " levelling-up" variety and not of "levelling-down" variety. Vivekananda refuted this concept of Man and Society. The purpose of Man's life was only moral and spiritual, as hinted above. Material well-being was a means to spiritual perfection; it could never be treated as an end.

Democracy : Vivekananda was a great advocate of democracy and he wanted to awaken the young people to establish free and democratic government in India. For him, the principle of liberty was important because he held that there could not be growth in society as well as that of an individual without liberty. He wanted to democratise the Indian society by abolishing casteprivileges, by opposing cunning of priest craft and social tyranny. Vivekananda was a supporter of equality of all mpn and pleaded for the abolition of caste and class privileges. He thought that the spirit of equality in India could be inculcated through the spread of knowledge and education. Caste system was a hindrance to the development of India into a strong nation. He held that in democracy, power rested with the people. He was of the view that for the democratisation of the country, the western thinkers tried to perfect the political and social order but the Eastern thinkers laid more stress on perfection of individual. For, sound social and political institutions were ultimately rooted in the goodness of individuals. For him, religious tolerance was crucial for the growth of democracy because that alone could promote the cause of liberty, equality and fraternity.

Swami Vivekananda Views On Nation

Vivekananda was "one of the great founders of the national modern movement of India" Vivekananda, believed in India's spiritual superiority and mission to the materialistic West. He laid the foundation stone of religious theory of nationalism, which is also known as Vedantic nationalism, in India. According to Vivekananda, each nation has at least one unifying principle. India's is religion deepest religious and moral urges of the people, rather than political ideal, would be the basis of India as a nation. The spiritual past of India would act as the unifying force in building up the nation and would be a gift of India to the West. Spirituality or religion had no orthodox or narrow implication to Vivekananda. By these, he meant eternal human values and moral and spiritual advancement. Vivekananda considered the Vedanta as the greatest treasure-house of rational explanations for forging a modern nation. This concept of Vedantic nationalism is to be regarded as Vivekananda unique and alternative theory. Vivekananda insisted on reclaiming the pristine glory or rich heritage of the past, religion èk spirituality in the case of India, for creating national consciousness.

Vivekananda opined, "strength must come to the nation through education" . He wanted to build character through education. Though the nation is a collective identity, he gave sole importance on the constituent individuals as the character of the later would determine the nature and fate of the nation. Vivekananda identified two great ideals of Indian civilization, i. e. service to man and emancipation èk salvation for the individual, as the moral foundations of national comradeship which an individual must

 ISBN : 978-93-80216-12-6

learn and imbibe with utmost sincerity. He welcomed Western science and technology to eradicate poverty, hunger from society and save the starving masses. The Indian way of life badly needed materialistic support of the West while the latter needed the spiritual values from the East. This inter-dependence and co-ordination between the Orient and the Occident was largely popularized by Vivekananda for the true development of mankind in general. This science-religion nexus may be considered as a unique contribution of Vivekananda to the process of nation-building. Vivekananda, however, did not believe in centre èk periphery binary as he liked multi-racial and multi-religious conglomeration, as he looked forward to a nation upholding "unity in diversity". He was the true embodiment of tolerance, freedom and strength, service and renunciation. There is no denying the fact that he has had an irresistible impact on the later generations of nationalists, politicians and citizens before and after India's independence.

Swami Vivekananda views on Nationalism

Swami Vivekananda is considered as one of the prophets of the Indian nationalism because he tried to awaken Indian people who were lying in deep slumber. He wanted to see the emergence of a strong and self confident India which would give the message of the Vedanta to the world. He strongly believed that the Indians should be proud of their rosy history, tradition, culture and religion and should try their level best to reform them. The awakening of the spirit of India was the goal for young people. Hence he advised them to 'arise, awake and stop not till the goal is reached' Vivekananda believed that there is one all dominating principle manifesting itself in the life of each nation.

According to him, religion had been the guiding principle in India's history. He maintained thus: In each nation as in music there is main note, a central theme, upon which all others turn. Each nation has a theme: everything else is secondary. India's theme is religion. Social reform and everything else are secondary'. Vivekananda was the passionate advocate of the religious theory of nationalism because religion, according to him, had to be made the backbone of the national life. He believed that the future greatness of the nation could be built only on the foundations of its past greatness.

According to Vivekananda, the national regeneration of India would begin when people became fearless and started demanding their rights. He asked the Indians to develop solidarity and oneness of the spirit by the eradication of social evils, superstitions and evils of caste system. He was of the opinion that the evils of caste system divided the Indian society into classes and created the feeling of inferiority and superiority among them.

As a prophet of Indian nationalism, Vivekananda held that though there was a variety for, languages, cultures and religions in India, there existed a common ground between Indian people. For the Indians religion was unifying force as the spirituality was Blood in the life of India. Vivekananda was an ardent patriot and had tremendous love for the country. He was the embodiment of emotional patriotism. He had established almost a sense of identity- consciousness with the country, its peoples and its historic ideals'. According to him, it was the duty of the educated Indians to make its knowledge available to the people in their oneness and solidarity. He exhorted Indians not to get

involved in the divisive issue of race and language and imbibe the spirit of unity. He said that Hindus should not blame Muslims for their numerous invasions because the Muslim conquest came as a salvation to the downtrodden masses in India. For the growth of national spirit in India, independence of mind was necessary. Indians should be proud of their motherland and declare that all Indians, despite their caste, linguistic and religious differences, are brothers.

- The main component of Vivekananda concept of nationalism is as follows.
- There was unity and oneness of the Indian people despite their out ward diversity.
- It was necessary to remove the evils of caste system in order to inculcate the spirit of social solidarity.
- There was similarity in the teachings of different religions and India consisted of all religious communities.
- National spirit in India could be developed by young people by devoting their life to social service and national awakening.

Swami Vivekananda Views on National Integration

Through his writings, lectures and works Vivekananda seeks to develop a sense of oneness among all, the oneness which is the only reassuring principle of India for her stability and progress. As an 'Advaitin' Swami Vivekananda believes in the inner unity or one-ness of all human beings and tried to awaken the dormant spirit of each individual. He addressed man as the glorious children of immortality. He had firm conviction that India is full of endless spiritual potentialities and that these potentialities could not be actualized if man does not know himself, does not grow fear-

 ISBN : 978-93-80216-12-6

lessly having faith in his fellow beings. In his 'Practical Vedanta' Vivekananda provided a very powerful basis for awakening of the masses of Indian society. With the Upanishad he declared, "Arise! Awake! And stop not until the goal is reached". We will then certainly cross the path, sharp as it is like the razor, and long and distant and difficult though it be. What he wanted in every individual human being is his character to be built upon firm determination and good will for others.

He realized that the root cause of all evils is selfishness tending towards exploitation. Thus the poor is exploited by the rich; the illiterate is exploited by the learned, physically weak is exploited by the physically strong and soon. He wanted to eliminate all these basic evils of society and to develop a sense of unity and integrity among them. He believed that all evils may be conquered by love, which is the real, living force of mankind. He proclaimed, "India will be raised, not with the power of the flesh but with the power of the spirits; not with the flag of destruction, but with the flag of peace and love." It is the power of love which prompts us to do actions which are morally good, universally accepted and conducive to the welfare of the society. Vivekananda held that all distinctions and separateness are illusory and unreal, and therefore unjust. Swami Vivekananda worked for awakening of the masses, the development of their physical and moral strength and creating in them a consciousness of the pride in the ancient glory and greatness of India.

Vivekananda was an apostle of national unity and communal harmony. In his own words, "One atom in this universe cannot move without breaking the whole world

 ISBN : 978-93-80216-12-6

along with it. There cannot be any progress without the whole world following in the wake and it is becoming everyday clearer that the solution of any problem can never be attained on racial or national or narrow grounds. Every idea has to become broad till it covers the whole of the world. Every aspiration must go on increasing till it has engulfed the whole of humanity, nay, the whole of life, within its scope". It is to be remembered that Swami Vivekananda never entertained narrow nationalism; rather he embraced all nations, great or small. He had a catholic and tolerant mind to discover fundamental unity behind all nations of the world. As Nehru said, "His was a kind of nationalism which automatically slipped into Indian nationalism which was a part of Internationalism".

Vivekananda foresaw the problems we are facing at the present world. For the solution of all problems he gave stress on man making. It was Sri Ramakrishna, the Master who taught Vivekananda to serve people. As a result Vivekananda, even after realizing the highest spiritual Truth, walk around the country, meet people, the rich and the poor and make people conscious about their inherent unity.

As a preacher of Vedantic view of equality Vivekananda wanted total abolition of the cruel and unjust social customs due to misinterpretation of the real caste system. He said that the solution of our national problem does not lie in bringing down the higher, but raising the lower up to the level of the higher. Vivekananda's idea of integrating the whole nation is not just a geographical or political integration, not even an emotional or sentimental integration, not even an integration based upon the feeling that we are Indians, but it is a spiritual integration based upon the

awakening of the inner Spirit which is dormant in ordinary human being. He said that a nation can be integrated by upholding the national ideals. In his own words, The national ideals of India are renunciation and service, Intensify her in those channels and the rest will take care of itself". The message of Vivekananda is of immense value for social progress, international understanding and world peace. It has been rightly observed: In Swami Vivekananda the past and future of India fused in an ideal way and he shines as the symbol of integrated India for centuries to come.

Internationalism:

Vivekananda considered nationalism and internationalism as interdependent. Vivekananda believed that India would become dynamic only by expanding her spiritual knowledge at home and abroad. He wanted to unite mankind on the basis of spirituality. The persuit of spiritualism was not only in the interest of India but also in the larger interest of humanity. Spirituality formed the basis of his internationalism. He was of the opinion that nationalism is conducive to the growth of internationalism. He was of the view that the growth and expansion of a nation depend on cultivating international outlook and mutual exchange of knowledge. He postulated his internationalism on mutual exchange of knowledge among nations advocated union of nations on spiritual basis. He regarded internationalism as a cultural and spiritual necessity for nations to find fulfilment of national ideals and realisation of universal oneness. The perception of Vivekananda's internationalism will become clear in consideration of the impact of various forces that moulded his outlook. He put forward his idea of internationalism on the basis of existence of

national diversity, fostering mutual contacts and exchange of knowledge and asserting India's spiritual leadership of the world. Vivekananda's faith in international unity was nourished by Vedanta. He was captivated by the concept of love and universal oneness

On the basis of the lesson derived from Vedanta, he regarded all nations as equal and condemned all kinds of privileges. He was of the opion that Vedanta postulates good neighbourliness and brotherhood among nations Vivekananda wanted to strengthen International understanding and brotherhood among the people by encouraging mutual cultural contact Vivekananda was in favour of all round progress and perfection of the human race. Vivekananda wanted co-ordination and unity among the nations. He maintained neither the supremacy of nationalism at the cost of internationalism nor internationalism at the cost of national individuality.

2. Relevance of Swami Vivekananda in contemporary world

Swami Vivekananda's thoughts and teachings reflect upon these social issues and human conditions. Time has changed. Mankind has made monumental progress in science and technology. But still the despair, anxiety and misery are still in same quanta as during the time of Swami Vivekananda. So, when the constrains are same, it logically follows that the ethical values and thoughts which were pronounced by swamiji during his period will hold today with equal footing. Swamiji often said that he has never quoted anything but the Upanishads. The word 'Upanishad' means 'sitting near the teacher'. So the aspects mentioned in the Upanishads about 5000 years from today are still

ISBN : 978-93-80216-12-6

valid. Main tenants on which swamiji stresses were:

- Strength
- Freedom
- Learning to solve the mysteries of life

Swamiji preached that strength, and strength alone is reflected in each and every pages of the Upanishad. Since weakness cannot cure weakness, sin cannot wash away sin.so O man says the Upanishad, stand up and be strong. He says that the therein lies strength enough thorough which the whole world can be energized. But all these teachings are required to be applied. Mere theoretical knowledge is of no use...what is wanted is practical applications of those teachings.Further he says that whether we belief in these ancient writings or not it does not matter, but for a moment if we just think that we have infinite power within us, this power never perishes but is immortal. Often it gets a veil over it and the same has to be removed. The removal may be either achieved through a tireless personal revolution or through a general social evolution. The infinite potential within will be in its full glory, when it's free. So the key word towards individual success is freedom... we should be free mentally from all physical phenomenon. This freeness comes from faith with us. Faith and faith on our self alone can make our mind free from all obstructions.

Further all our misery is due to our ignorance. Swamiji says this clause is perfectly true when applied to every state of life. It is ignorance alone that makes us hate each other. The cause of all mental agony, conflicts of all orders is ignorance. And the way to know our self from within is renunciation. Renounce everything is what swamiji says. This is more of an attitude than a physical concept. We

 ISBN : 978-93-80216-12-6

should live in this world of everything without getting our selves attached to anything. When we are unattached, we are free from mental tensions. When the full society thinks in that way, social conflicts disappears, no one harms each other. There will be no more longing for worldly things and so on. This in turn will make our mind calm, which thereby would facilitate our mind to reflect on our true potential. All successful people in this world would agree with these facts. Whether one is a scientist, a sportsman, an artist or an engineer... no great heights can be obtained without having strength, having mental freeness and the ability to solve worldly problems. This would transform this earth to a heaven. So the teachings of Swami Vivekananda are echoes of messages in our Upanishad which has a universal appeal not restricted in time and space.

The ideas of Swami Vivekananda have been a treasure for people across the world. It is imperative that one looks at his ocean of knowledge to seek more clarity. Even though he lived a century ago, some of his views are applicable to today's young India more than any other era. the relevance to todays world is pretty significant. This might be striking but the visionary was so ahead of his time, that it is important to understand his views on the youth even today.

Women empowerment:

The progressive agenda that Vivekananda had towards women is very well known. In his own words, he says "That country and that nation which doesn't respect women will never become great now and nor will ever in future." This relentless pursuit of his to treat both genders with equality is evident through most of this discourses. At this juncture, Indian society is at a tipping point especially with the re-

cent increase in number of rape incidents across the country. The increase in education standards among females is triggering them to ask questions and confront the patriarchal nature of social systems which have diluted the equal space that women were offered even in our ancient scriptures. In this context, Vivekananda's message of greater education and equality for the female is pertinent especially with his visionary thinking of making female empowerment the benchmark for the measurement of any society's growth.

Positive thinking:

The works of Vivekananda are more than 100 years old. Within this time span, the world has changed so much in relation to technology and scientific development. Despite such massive change, the words of Vivekananda resonate so energetically amidst the reader even today. He thunders "Arise, Awake and stop not till the goal is reached". He even talks about a broader vision for India with progressive values in an interview published in the 'The Hindu' in 1897(!). At this juncture in Indian history, with so much negative energy around, the positive energy of the saint is something that is so dearly needed especially for the younger generation. A leader with a level of sky level optimism, his words resonate a sense of exuberance even among his least ardent followers.

Rationality in religion:

He had the rare distinction to challenge intellectually and with reason, his spiritual renaissance. This was a rare quality since reasoning complex spiritual understanding to the common man is not easy by any means. The arguments had a scientific outlook to it, had reason, it had debate and

it won over individuals neither by force nor brutality but by sheer intellectual superiority and sound reasoning. In a time where reason is the mantra for any belief system, his works would provide a broader scientific and logical understanding of the goals of spirituality and religion as a whole. The positive vibe and optimistic zeal in his words are even more magnified when he provides the template that every Indian misses in today's era- an identity which is inclusive and Indian by nature.

An Inclusive Indian Identity :

One of the biggest traits of Vivekananda's legacy is his firm belief in an Indian identity which is inclusive and encompasses the various religions and multiple cultures across the country. This is a dire need in a society which is by and large still in a colonial hangover with regards to its glorious history and its prosperous past. To put it bluntly, the younger generation post liberalization is at odds with the rich heritage that it hears "once in a while" and the modern upbringing which is very Americanised in nature. Ironically one of the major reasons for countries such as America to succeed is their strong sense of pride and identity with their own roots and heritage. The words of Vivekananda would provide the much needed impetus and clarity in the minds of the younger generation which is bursting to succeed yet is in a confused state about its own past.

Vivekananda's works would indeed instill a matter of pride and aura around our heritage and provide a well chartered out identity that the younger generation craves so much.There is no denying the fact that he has had an irresistible impact on the later generations of nationalists,

 ISBN : 978-93-80216-12-6

politicians and citizens before and after India's independence. He was the true embodiment of tolerance, freedom and strength, service and renunciation To the present-day citizens, secularism is akin to anti-religion and something far from Vedanta. And so Vivekananda does not come within the purview of the discussion on political nationalism. He is irrelevant to the modern form of governance and process of nation-building. But the paradox lies in the fact that Vivekananda idea of religion èk spirituality is secular, all-embracing, rational and more modern than the modern concept of political nation itself. Vivekananda avoided politics and state power for being a sanyasin but believed in a political organization as a must for a nation.

Conclusion

Swami Vivekananda has a perennial appeal. He is a phenomenon. His relevance will increase with each passing day. The world today has hardly understood Swami ji. One needs to read him deeply to understand his message properly. In 1921, Mahatma Gandhi after visiting Belur math wrote in the visitor's book, "I have thoroughly read the works of Swami Vivekananda. My patriotism increased by 1000 times after reading him."For swami Vivekananda, India was not just a geographical unit. According to him, India is an extraordinary reality that was not limited to geographical boundaries. To him, India was an extraordinary principle that will rule the world. Swami Ji spoke on many topics including women and society but his main thrust was on spiritualism. That is the foundation of Swami ji's all ideas. Swami ji talked about 'complete freedom'. Some people want to be free from poverty, some people want to be free from ageing, and everybody is seeking free-

dom from something. Swami Ji said that once you realise your inner power and divinity present within yourself, you will get freedom from everything. Views on Oppression of underprivileged section of society Swami ji said that we talk of highest Vedanta but do not even think about the oppressed classes. We trample them and crush them. That's why he said that we need to give them back their self-respect, their lost individuality. Allow everybody to move forward.

References :

1. *Vivekananda, his call to the nation (A compilation), Advaita Ashrama, Calcutta-14, 1971.*
2. *Ainslic T.Emvree, Vivekananda and Indian Nationalism, SVCMV,1963.*
3. *V.P. Verma, Modern Indian Political Thought,1980*
4. *Vishno Bhagaban, Indian Political Thinkers,Delhi, 1999*
5. *Sanghamitra Debnath ,Swami Vivekananda And Indian National Integration, International Journal Of Current Research,Vol. 4, Issue, 03, Pp.164-165, March, 2012*
6. *Amit Kumar Raul, Swami Vivekananda On India As A Nation, Iosr Journal Of Humanities And Social Science, Volume 9, Issue 3 (Mar. - Apr. 2013)*
7. *Swami Vivekananda, My India: The Eternal India, (Kolkata: R. K. Mission Inst. Of Culture, 1993, Rpt. 2008)*
8. *V. Rathna Reddy, "Political Philosophy of Swami Vivekananda", Sterling Publishers Private Limited,1984, p. 154.*
9. *The Complete Works of Swami Vivekananda, Advaita Ashrama, Calcutta, 1926, Vol. I. p342.*
10. *"The Legacy of Vivekananda", Frontline February 2013 issue*
11. *Abhik Roy "Vivekananda's vision and relevance " , http:èkèkwww.thestatesman.com*

Swami Vivekananda : Thoughts on Different Dimensions in Education

Dr. Surendra Singh
Principal, P.S. Shahganj
Bhawalkhera, Shahjahanpur,

Swami Vivekananda views that education is not information of knowledge which will insert into the mind of a child by force. He say about education that "Education is the manifestation of perfection already reached in man." He describes that the libraries could be the greatest saints of the world and encyclopedias have become seers and rishis. Vivekananda's concept of education was that, "it is the manifestation of the perfection already in man." He further said that the education was not of getting huge amount of information; it would be an undigested material of our brain. The good quality education must have the life building, man-making, character building, and assimilation of ideas. This would help to the common people to equip themselves for the struggle of life. According to Vivekananda, the means for education is love. Love and character building are the best means for education. Love is the best inspiration in character building. Love in the minds of the educator is the real source of his influence upon the educated. The true education, gives the growth and expansion of personality. He wanted that the education for total human development was the main vision. "Character, efficiency and humanism should be the aim of all education. Vivekananda strongly pleaded that development of character through the service of his fellowmen, the utilization of his talents for ensuring the happiness and welfare of the millions of his less fortunate fellow-citizens

 ISBN : 978-93-80216-12-6

should be the aim of the education." The child should be taught through by love, it makes fellow feelings and love for human beings. Education must help the individual to recognise his cultural heritage and to use it in his struggle of life. Education is a life-long process towards the fullest development of human personality, self-discovery, self-perfection, self-awareness and self-manifestation.

Vivekananda wanted all-round development of education to heart and mind, to strengthen character and national consciousness, to help in the cultivation of strength and energy, nurture the brain and intellect and stir feelings of kindness and sympathy. He emphatically said: "We want that education by which character is formed, strength of mind is increased, the intellect is expanded and by which one can stand on one's own feet. What we need is to study, independent of foreign control, different branches of the knowledge that is our own and with it the English language and Western science; we need technical education and all else that will develop industries. So that men, instead of seeking for service, may earn enough to provide for them and save against a rainy day. The end of all education, all training, should be man-making. The end and aim of all training is to make the man grow. The training, by which the current and expression of will are brought under control and become fruitful, is called education. What our country now wants are muscles of iron and a nerve of steel, gigantic wills which nothing can resists, which can penetrate into the mysteries and secrets of the universe and will accomplish their purpose in any fashion, even if it means going down to the bottom of the ocean, meeting death face to face. It is a man-making religion that we want. It is man-making theories that we want. It is man-making education

 ISBN : 978-93-80216-12-6

all round that we want."According to Vivekananda, education is a process in which the young minds, will receive strength, energy and vigorous character. By the way of getting this process, the individual will mould themselves of their life. "All knowledge and all powers are within. What we call power; secrets of nature and force are all within. All knowledge comes from the human soul. Man manifests knowledge, discovers it with himself, which is pre-existing through eternity." Education is a man-making and nation-making process. It is the process which awakens the sleeping soul to self-conscious activity. It will become a powerful instrument to achieve the developmental qualities among the people. The prime aim of education is to achieve the full perfection already present in a child. According to Vivekananda, all the materials and spiritual knowledge are already present in the individuals mind, but it is covered by certain ignorance. The second aim of education is the physical and mental development of the child. "For stressing the mental development of the child, Swamiji, wished education to enable the child to stand on his own legs economically rather than becoming a parasite on others."6Th third aim of education is the character development of the child. He emphasizes the child should practice Brahmacharya which fosters development of mental, moral and spiritual powers leading to purity of thought, words and deeds. In the fourth aim of education, he emphasises the religious development. Every individual should search out and develop the religious seed and to reach the absolute truth or reality.

Vivekananda's ideas on education had a democratic angle. He expressed deep concern for the mass, "The education which does not help the common mass of people to

equip themselves for the struggle for life, which does not bring out strength of character, a spirit of philanthropy, and the courage of a lion - is it worth the name? Real education is that which enables one to stand on one's own legs. The education that you are receiving now in schools and colleges is only making you a race of dyspeptics. You are working like machines merely, and living a jelly-fish existence." Vivekananda's aim of education had strong nationalist bias. He was not critical of Western system of education rather; he questioned the suitability of Western Model in India. The system of education in India was based on Indian Foundation that was supported with the broader argument that the every nation should develop a system of education based on his own nature, history and civilization. Like Rabindranath Tagore, Vivekananda also prescribed the same ancient spiritual methods of teaching, where Guru and his disciples lived in close association as in a family. The following are the basic principles of education.

i. Education is not only for getting information; rather it should develop character, mental powers, intelligence and inculcate self-confidence together with self-reliance.

ii. Education should develop the child physically, mentally and spiritually.

iii. While giving educational qualification, the technical education was necessary for the industrial growth which would lead to the economic prosperity of the nation.

iv. Practicing of Brahmacharya is very essential for getting knowledge. The concentration is the key to all

 ISBN : 978-93-80216-12-6

the knowledge.

v. Religious education should be imparted through sweet impressions and fine conduct in preference to books.

vi. Education should be foster spiritual faith, devotion and self-surrender in the individual and should foster full development through service and sacrifice.

vii. Education should develop character, mental powers, intelligence and inculcate self-confidence together with self-reliance.

viii. All the subjects must be included in the curriculum which promotes the material and spiritual advancement of a child.

The views of Vivekananda on education deals with physical education, moral and religious education, medium of education, women education and education for weaker sections of society. The View on physical education that without the knowledge of physical education, the self-realization or character building is not possible one must know how to make our body strong through physical education, for to attain a complete education, it is necessary to develop both the mind and the body. In particular, Vivekananda stressed the value of physical education in curriculum. He said, "You will be nearer to Heaven through football than through the study of Gita. You will understand Gita better by your biceps, your muscles a little stronger. You will understand the Upanishads better and the glary of the Atman, when your body stands firm on your feet and you feel yourself as man." Like Gandhi and Rabindranath Tagore, Vivekananda also emphasised education through the mother tongue. Besides mother tongue,

there should be a common language which is necessary to keep the country united. Vivekananda appreciated the greatness of Sanskrit that it is the source of all Indian languages and a repository of all inherited knowledge; with the absence of this knowledge, it will be impossible to understand Indian culture. It is like a store house of ancient heritage, to develop our society it is necessary that men and women should know this language, besides the knowledge of the mother tongue. Vivekananda said, “Religion is the innermost core of education. I do not mean my own or anyone else opinion about religion. Religion is as the rice and everything else, like the curries. Taking only curries causes indigestion and so is the case with taking rice alone.”9 Therefore, religious education is a vital part of a sound curriculum. Vivekananda considered Gita, Upanishads and the Vedas are the most important curriculum for religious education. For him, religion is a self realization and divinization. It is not only individual’s development but also for the transformation of total man. The true religion cannot be limited to a particular place of time. He pleaded for unity of world religion. He realized truth while practicing of religion. The truth is the power, untruth is the weakness. Knowledge is truth, ignorance is untruth. Thus truth increases power, courage and energy. It is light giving, therefore, necessary for the individual as well as collective welfare. In the Vivekananda’s point of view, ethics and religion are one and the same. God is always on the side of goodness. To fight for goodness is the service to God. The moral and religion education develop the self-confidence among the young men and women.

The individual development is not a full development of our nation, so he needs to give education to the society

or common people. The education is not only confined to the well-to-do persons only but also to the poor people. Vivekananda emphasis to improve the conditions of the masses and he advocated mass education. He takes this mass education as an instrument to improve the individual as well as society. By this way, he exhorted to his country-men to know-"I consider that the great national sin is the neglect of the masses, and that is one of the causes of our downfall. No amount of politics would be of any avail until the masses of India are once more well-educated, well-fed and well-cared for. The educational philosophy of Swami Vivekananda is a harmonious synthesis between the ancient Indian ideals and modern Western beliefs. He not only stressed on the physical, mental, moral, spiritual and vocational development of the child but also he advocated women education as well as education of the masses. The essential characteristics of his educational philosophy of Swami Vivekananda are idealism, naturalism and pragmatism. In a naturalistic view points, he emphasized that real education is possible only through nature and natural propensities. In the form of idealist view point, he insists that the aim of education is to develop the child with moral and spiritual qualities. In the pragmatists view point, he emphasized the great stress on the Western education of technology, commerce, industry and science to achieve material prosperity. In short, Swami Vivekananda an idealist at heart. First of all he emphasized spiritual development, then the material prosperity, after that safety of life and then solving the problems of fooding and clothing of the masses. Self education is the self knowledge. That is, of our own self is the best guide in the struggle of our life. If we take one example, the childhood stage, the child will face lot of problems or com-

 ISBN : 978-93-80216-12-6

mit mistakes in the process of character formation. The child will learn much by his mistakes. Errors are the stepping stones to our progress in character. This progress will need courage and strong will. The strong will is the sign of great character will makes men great.

Women education is not in the hands of others, the powers are in the women. Vivekananda considered that women to be the incarnation of power and asked men to respect them in everywhere. He rightly pointed out that unless Indian women secure a respectable place in this country, the nation can never march forward. The important features of his scheme of female education are to make them strong, fear-less, and conscious of their chastity and dignity. He insists that men and women are equally competent not only in the academic matters, but also must have equal companion in the home and family. Vivekananda being a keen observer could distinguish the difference in perception about the status of women in the West and in India. The ideal women in India is the mother, the mother first, and the mother last. The word woman calls up to the mind of the Hindu, motherhood; and God is called mother. Vivekananda pleaded for the universal education so that the backward people may fall in with others. To uplift the backward classes he chooses education as a powerful instrument for their life process. Thus education should spread to every household in the country, to factories, playing grounds and agricultural fields. If the children do not come to the school the teacher should reach them. Two or three educated men should team up, collect all the paraphernalia of education and should go to the village to impart education to the children. Thus, Vivekananda favoured education for different sections of society, rich and poor,

young and old, male and female.

Philosophy of Education of Swami Vivekananda is ideal for a long time. The real education according to Swami Vivekananda is that which prepares the individual for struggle for existence. Education prepares a man for social service, to develop his character and finally iambuses him with the spirit and courage of a lion. For getting degree is not an education, the proper education must be viewed on the basis of character, mental powers, intelligence and inculcates. Self-confidence and self-reliance in the individuals. Swami ji has emphasized that all the knowledge which we gets from worldly or spiritual lies embedded in the human mind. It was covered with a veil of darkness and ignorance. Education is a tool to open from the darkness and ignorance, after getting of education, the knowledge will shines out dazzlingly. The teaching and learning are the one way of process. The teacher only guides, suggests, points out and helps the student. Self learning and self getting knowledge is the real education. The teacher only motivates and encourages the students to find out the hidden treasure of knowledge that lies dormant within him. He condemned and refused the bookish learning and rote memory education. Condemning the theoretical and academic education, he spoke emphatically for practical and experimental education. He warned his countrymen saying "you will have to be practical in all spheres of work. The whole country has been ruined by mass theories."

During his travels all over the country, Vivekananda was deeply hurt to see the appalling poverty and backwardness of the countrymen. He found people starving for days and there are no food and shelter for them. He also found

that, despite of poverty, the masses clung to religion. One thing became clear to Swami ji: to carry out his plans for the spread of education and for the uplift of the poor masses, and also of women, an efficient organization of dedicated people was needed. Few years later, he founded one of the world's largest charitable relief missions, the Ramakrishna Mission established at 1879. The powerful mediam of the social reform and national service. Development of art, science and educational professional studies. Teaecher training facility in different areas. Establishment of school, college, medical.

The teaching of Swami Vivekananda is a treasure of motivation and inspiration for all of us, whether we are students, teachers, common people or any other professional. He said that-

- Your country requires heroes; be heroes; your duty is to go on working, and then everything will follow of itself.
- The greatest sin is to think yourself weak.
- Stand up, be bold, be strong. Take the whole responsibility on your own shoulders, μ know that you are the creator of your own destiny.
- Arise! Awake! And stop not till the goal is reached.
- To be good and to do good - that is the whole of religion.
- Strength is life, Weakness is death.
- All the power is within you; you can do anything and everything. Believe in that; don't believe that you are weak. Stand up and express the divinity within you.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

- Whatever you think, that you will be. If you think yourself weak, weak you will be; if you think yourself strong; strong you will be.
- Stand and die in your own strength; if there is any sin in the world, it is weakness; avoid all weakness, for weakness is sin, weakness is death.
- Neither money pays, nor name pays, nor fame, nor learning; it is CHARACTER that cleave through adamantine walls of difference.
- He is an atheist who does not believe in himself. The old religion said that he was an atheist who does not believe in God. The new religion says that he is an atheist who does not believe in himself.

From the analysis of Vivekananda's scheme of education, the uplift of masses is possible only through education. Swami Vivekanand was a idealistic thinker. Indian culture movement of Swami ji*s physical religions,character and symbol of unity. His views on education brings a light of its constructive, practical and comprehensive character. By giving education, he tries to materialize the moral and spiritual welfare and upliftment of humanity, irrespective of caste, creed, nationality or time. By the way of his scheme of education, we can get the strong nation with peace and harmony and without caste and creed. He builds a strong nation for our sake.

References :

1. *Nair V.S. Sukumaran; Swami Vivekananda The Educators (1987) New Delhi; Sterling Publisher (P) LTD*
2. *Pandy R.S.; Philosophising Education (2005) New Delhi; Kanishka Publishers; Distributors.*
3. *Srivastava Kamal S. Srivastava Sangeeta; Great Philosophers μ Think-*

ers on Education (2011) New Delhi; A.P.H. Publishing Corporation.

4. *Johri, Pradeep Kumar, Educational Thought, New Delhi: Anmol Publications PVT. LTD., 2005, p. 238.*
5. *Biswan A. µ Aggraval J.C; Seven Indian Educators (1977) New Delhi; National Solidarity (publication)Press*
6. *Chakrabarti Mohit; Pioneers in philosophy of education (1995) New Delhi; Concept publishing company*
7. *Chakrabarti Mohit;SwamiVivekananda-Exellence in Education (2008) Delhi;Kalpaz Publication*
8. *Chaube S.P.; Recent Educational Philosophies in India (1967) Agra Asia Press*
9. *Grover Verinder;Swami Vivekananda-A biography of his vision µ ideas (1998) New Delhi; Deep µ Deep Publications*
10. *Pani, S.P. and Pattnaik, S.K. Vivekananda, Aurobindo and Gandhi on Education, New Delhi: Anmol Publications PVT. LTD., 2006, p. 68.*
11. *Brodov, V. (1984) Indian Philosophy in Modern Times. p.283*
12. *Vivekananda (1957). My Life and Mission. Calcutta: Adviata Ashram, p.03*
13. *Vivekanda (1924). The Complete Works of Swami Vivekananda, Vol. IV.*
14. *Bharthy Vijaya; Educational Philosophies of Swami Vivekananda µ John Dewey (2010)New Delhi; A.P.H.Publishing Corporation*

Relevance of Swami Vivekananda Thoughts in Today's Time

Dr. Vikas Gupta
Asstt. Prof.
(Knowledge Management - Innovation),
Delhi School of Management,
Delhi Technological University

"If you want to know India, read Vivekananda", said Rabindranath Tagore. I would say that if you wish to understand the world, read Vivekananda. Man's progress, it seems, has reached the zenith. But man is still confused. We can witness this in the rapid decline of moral and ethical values. Though mankind thinks it is ready for the next level of technological change, with great advances in knowledge, science and technology, the quest seems to be never ending. There is no satisfaction and contentedness. In such turmoil, peace of mind and harmony in actions is required. The teachings of Swami Vivekananda can be the guiding force in striking the right balance in life. The practical aspects of his teachings reflect renunciation and service. We should install the ideals of Swami Vivekananda in our heart and soul.

Even though his message was delivered in the late 1890s, it is very relevant today. The teachings of Swami Vivekananda are the mantra for a meaningful life for today's man and woman. Along with excellence and perfection in every field of human endeavour, one should follow these ideals, to contribute to society (Jyothirmayananda, 1988). He envisaged new age problems in his time as his thoughts were judicious and pragmatic. His ideology regarding global issues and their solutions is the key for the new age

 ISBN : 978-93-80216-12-6

leaders when it comes problem solving. He highlighted issues related to cultural exclusiveness and blind fanaticism in his famous Chicago address.

Religion : Harmonization of ideologies

His mission was to lead mankind to the point where there is harmonization of the Vedas, the Bible and the Koran. Swamiji said that there could be different paths and each of us may choose the path that suits him best. There could be varied expressions of religion but there is oneness in that also. He told the Parliament of Religions, "I accept all religions that were in the past, and worship with them all, I worship God with every one of them, in whatever form they worship Him. I shall go to the mosque of the Mohammedan; I shall enter the Christian's church and kneel before the crucifix; I shall enter the Buddhist temple, where I shall take refuge in Buddha and in his Law. I shall go into the forest and sit down in meditation with the Hindus, who are trying to see the light which enlightens the heart of every one." (Vivekananda and Adiswarananda, 2006).

He emphasized the importance of what was still unknown but covered in sacred books. We understand what we read but what about the knowledge which is yet to unfold? One cannot be aware of every scripture, and in the view of that limit, it is not justified to declare who is superior and who is not. We have a great reservoir of knowledge which needs to be explored and this exploration will be the key to the future. Religion can pave the way for solutions, not problems. In case it creates problems, it is not true religion. It is just the manifestation of the limited thinking of a group of people.

He envisioned religions as different radii leading to the

 ISBN : 978-93-80216-12-6

center of the circle. Each religion, he pleaded passionately, must assimilate the spirit of the others and yet preserve its individuality and grow according to its own law of growth (Besant, 1897).

The Two Civilizations: Bhoga and Tyaga

In Swami Vivekananda's view, there exist two types of civilizations: 'Bhoga' (consumerism) and 'Tyaga' (renunciation). One approach was based on the quest as to acquire and possess in order to be happy. This approach is associated with consumerism where the emphasis is on materialism. However, the second approach is associated with renunciation. The Hindu approach is a quest for the minimum that a man requires to possess in order to remain happy (Hill, 1928). The approaches have more relevance in today's time as we encounter issues related to conflict in these approaches every day, There is a continuous struggle in the two ideologies. People find it difficult to resist the temptation of materialism and live a contented self-denying life. In our life, we need to maintain a balance among us human beings, nature and necessities peculiar to each walk of life. This is the key to a prosperous India that can lead to a prosperous world.

He condemned the accumulation of wealth and criticized the western view on Liberty, as it does mean the absence of obstacles in the path of misappropriation of wealth etc. He declared, "it is our natural right to be allowed to use our own body, intelligence, or wealth according to our will, without doing any harm to others; and all the members of a society ought to have the same opportunity for obtaining wealth, education, or knowledge." His thoughts were clear and catered to every aspect of human

 ISBN : 978-93-80216-12-6

life. He suggested practical solutions to the cumbersome problems we are facing today. He had given detailed consideration to every single point and suggested solutions which were implementable.

Vedanta Philosophy: Unity of existence

His philosophy of Vedanta focuses on the unity of existence. It is believed that Man, nature and universe are all one, interrelated, interconnected and interdependent. One cannot exist without the other. A closer look at the word "Vedanta" is revealing: "Vedanta" is a combination of two words: "Veda" which means "knowledge" and "anta" which means "the end of" or "the goal of." In this context, the goal of knowledge isn't intellectual—the limited knowledge we acquire by reading books. "Knowledge" here means the knowledge of God as well as the knowledge of our own divine nature (Torwestern, 1994). Vedanta, then, is the search for Self-knowledge as well as the search for God.

The individual's life is in the life of the whole, the individual's happiness is in the happiness of the whole; apart from the whole, the individual's existence is inconceivable. There is a symphony and interrelationship amongst these forces. Sustainability can be attained when there is a balance. When human beings exploit nature, there is bound to be a backlash and consequent chaos. This makes it imperative that man and nature replenish each other and both attain maximal well-being.

Conclusion

The message is loud and clear. In order to take India to its peak we must remember, "Each nation, like each individual, has one theme in life." He believed that, "if any nation throws off its national vitality, it dies." He knew

 ISBN : 978-93-80216-12-6

that India could teach the world, as the great American historian, Will Durant, believed, "tolerance and gentleness of the mature mind, the calm of the understanding spirit, the quite contentment of the un-acquisitive soul, and a unifying, pacifying love for all living things."

What inference can we draw for our country? Let us ask ourselves: Are the problems of our country related only to poverty, population, and inadequate natural resources? What really is our understanding of the core human values viz. respect for women, social equality, individual freedom μ justice for all citizens, tolerance towards other castes and religions, basic hygiene, purpose of education? Have we really understood Vivekananda? How much has changed at the basic levels of society during the last 150 years? Are we indeed on the path of improvement? It is difficult to answer these questions as we, as a nation, also failed him. We have become a part of this widespread chaos. We all are contributing to it directly and indirectly.

In order to change this situation, we all have to work together for a common goal, and sacrifice a lot in the rat race of accumulation of wealth. We have to be a role model for the generations to come, as the future looks blurred. The time has come where there is no scope for going back. We have to imbibe Swamiji's ideas in our life to make it both happy and productive. His stirring message of oneness of religions came like the breath of fresh air to a suffocated people. Rising above cramping creeds and dwarfing dogmas, Vivekananda spoke of harmony, understanding and universalism.

Vivekananda is a messiah of a new age, the symbol of a new spirit and source of strength for the future. At the

age of 39, the great man Swami Vivekananda passed away but his life and action inspired millions of Indians. His name remains a source of national inspiration. We should appreciate his work for society and the wisdom he has left for us and the generations to come.

References :

1. *Besant, Annie. Four Great Religions. Second Edition. London: Theosophical Publishing Society, 1897.*
2. *Hill, W.D.P. The Bhagavad-Gita. London: Oxford UP, 1928.*
3. *Jyothirmayananda, Swami, Comp. and ed. Vivekananda: His Gospel of Man-making, with a Garland of Tributes and a Chronicle of His Life and Times with Pictures. Second Edition. Madras: 1988.*
4. *Swami V; and Swami A; (2006), Vivekananda and World Teacher: His Teachings on the Spiritual Unity of Humankind, 2006 edition: Sky Light Paths Publishing.*
5. *Torwestern, Hans. Vedanta: Heart of Hinduism. 1st English-language Ed ed. New York: Grove Press, 1994. Print*

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Swami Vivekananda A Youth Icon

Seema Teotia
Deptt. of Physics
G.R.P.G.College, Rampur

Swami Vivekananda (Narendranath Dutta) was born in a Bengalifamily on12 January 1863 and died on 4 July 1902 at an early age of 39. He was an Indian Hindu monk and chief disciple of the 19th-century Indian mystic Ramakrishna. He was a key figure in the introduction of the Indian philosophies of Vedanta and Yoga to the Western world[1] and is credited with raising interfaith awareness, bringing Hinduism to the status of a major world religion during the late 19th century[2]. He was a major force in the revival of Hinduism in India, and contributed to the concept of nationalism in colonial India [3]. Vivekananda founded the Ramakrishna Math and the Ramakrishna Mission[1]. He is perhaps best known for his speech which began, "Sisters and brothers of America ...,"[4] in which he introduced Hinduism at the Parliament of the World's Religions in Chicago in 1893.

It is interesting and debatable for the simple reason that Swami Vivekananda is not identified with any particular religion and had much broader and secular views about various religions. However it cannot be denied that Vivekananda is widely credited for introducing Vedanta to the western world. He is also attributed for reviving and redefining certain aspects of Hindu religion. But his contributions had a broad specter as far as our country is concerned. The essence of his teachings was love, humanity, compassion, harmony of religions, universal solidarity and human being as the highest manifestation of spiritual con-

 ISBN : 978-93-80216-12-6

sciousness.

I believe that Swami Vivekananda's teachings are relevant for centuries to come because it was Vivekananda who had cited some of the causes of our downfall. He had said neglecting the masses is our great national sin neglecting of our women folks as another great sin. Considering some of the developments of the recent past I must say this holds good even today. Vivekananda had objected to mass oppression in the name of religion, stressed on the importance of education, had great faith in the younger generation and had said that lack of unity among Indians was also one of the causes of our downfall. He taught Indians how to love and respect our country and stressed on the importance of national integration and it is for this reason Vivekananda is regarded as a fiery patriot. VinobhaBhave, Indian non-violence activist had rightly said "Vivekananda not only made us conscious of our strength, he also pointed out our defects and drawbacks".Gandhi once said, "My love for India has become a thousand fold after thorough reading of Swami Vivekananda."

Vivekananda's teachings are particularly relevant today at a time when divisive forces are working overtime to weaken our country. Let us hope his philosophy and the ideals which he lived continue to inspire our younger generation. India's youth has the capacity to make Swami Vivekananda's third prediction of 'India rising to greater heights of prosperity and power', becoming a reality.

"Give me 100 energetic young men and I shall transform India", Vivekananda had said. His faith in the Indian youth never wavered. "My faith is in younger generation, modern generation. Out of them will come my workers.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

They will work out whole problems like lions." He believed and lived by the ideals of Tyaga (Sacrifice) and Seva (Service).

Vivekananda was absolutely fearless. He used to say, "Fly from evil and terror and misery, and they will follow you. Face them and they will flee." He understood that undertaking any social change needed enormous energy and will, which was why he called upon the youth to not only hone their intellect, but also build upon physical prowess. "It would be better to play football than read the Gita..." is one of his controversial statements and it's bound to resonate with Young India today.

For the youth of our country Swami Vivekananda is a role model, an icon, an embodiment of youth, dynamism and vibrancy. He ignited young minds saying "my faith is in the younger generation, the modern generation, out of them will come my workers. They will work out the whole problem like lions".

Vivekananda is the rejuvenator of Indian though in modern times and is rightly called as the modern prophet of India.

References :

1. *Georg, Feuerstein (2002), The Yoga Tradition, Delhi: MotilalBanarsidass.*
2. *Clarke, Peter Bernard (2006), New Religions in Global Perspective, Routledge.*
3. *Von Dense, Christian D. (1999), Philosophers and Religious Leaders, Greenwood Publishing GroupDutt,*
4. *Harshavardhan (2005), Immortal Speeches, New Delhi: Unicorn Books, p. 121, ISBN 978-81-7806-093-4.*
5. *Swami Vivekananda - India's Youth Icon,Florine Roche,Daijiworld Media Network - Mangalore*

Swami Vivekananda As A Youth Icon

Dr. Seema Varma
Asstt. Prof.
Deptt. of Political Science
Mahila Mahavidyalaya, (P.G.) College
Kidwai Nagar, Kanpur

Swami Viveknanda was born at 6.33 a.m, a few minutes before sunrise, on Monday, January 12, 1863 at Calcutta. It was the day of the great Hindu festival, Mahasankranti, when special worship is offered to the Ganga by millions of devotees. Thus the future Vivekananda first drew breath when the air above the sacred river not far from the house was reverberating with the prayers, worship, and religious music of thousands of Hindu men and women. His mother was a pious Hindu lady, had observed religious vows, fasted and prayed. She might be blessed with a son who would do hounour to the family.

She offered special worship to the Vireshawara Shiva of Varanasi. One night she dreamt that this supreme deity aroused himself from his demitation and agreed to be born as her son. When she woke she was filled with joy. His mother Bhuvneshwari Devi, accepted the child as a born of Vireshwara Shiva and named his Vireshwara. The family named him Narendranath Dutta, calling Narendra or Naren.

His family was well known for its affluence, philosophy, soholarships and independent spirit. His father Vishwanath an attorney-at-law of the High Court of Calcutta, kept a sharp eye on his children and would not tolerate the slightest deviation from good manners.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Narendra (Vivekananda) bore a striking resemblance to the grandfather who had renounced to the world to lead a monastic life.

Early years:-

During his childhood he developed a love for Hindu deity. He daily experienced a strange vision when he was about to fall asleep.

In 11871, at the age of eight he entered High School and his exceptional intelligence was soon recognised by his teachers and classmates. He used most of his energy in outside activities. Various kinds of games kept his occupied.

He also tried his hand in Art of cooking. As he grew into adolenseene, his temperament showed on marked change. he became keen about intellectual matters, read stories books on history and literature, Newspapers and attended public meetings, music was his favorite past time.

At the age of fifteen he experience his first spiritual ecetosy. In 1879 he graduated in the first division. He also acquired at this time an unusual method of reading a book and acquiring the knowledge of its subject matter. In 1879, he entered the presidency college of Calcutta for Higher Education.

Disciples of Shri Ramkrishna Paramhansa:-

Vivekananda heard the name of Shri Ramkrishna. As a result of his association with Shri Ramkrishna, his innate spiritual yearning was stirred up. The day before his B.A. examination, he suddenly felt and all-consuming love for God and standing before the room of a college-mate, was heard to sing with great feeling-

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Sign ye, O mountains, O clouds, O great winds!

Sing ye, Sing ye, Sing his glory!

Sing with joy, all ye suns and moons and stars!

Sing ye, sing ye, his glory!

From boyhood he had shown a passion for purity. He met Ramkrishna Paramhans in 1881. He was the man who helped him in his spiritual guest. He based his philosophy and mission upon Vedanta Darsha, preaching's of Ramkrishna Paramhans and experiences of his own life.

Vivekanand as youth icon:-

Swami Vivekanand was an young saint, philosopher, spiritualists a good orator and friends of all Arise, awake and stop not till the goal is reached, was his motto. In India Swamiji is regarded as patriotic saint and his Birthday is celebrated as 'Nationa Youth Day.'

Sandeep Reddy said that, "Swami Vivekanand is one of the greatest man from India, who discovered many hidden secrets of human like and shared with the world thereafter.

The power of mind are life the rays of the sun, when they are concentrated, they illumine Swami Vivekananda was not only the son of India but a rising Sun of India. He did so much for India in field of Religion, womanhood, Education, youth for making the Nation.

A magnetic Personality:-

His personality influenced Subhash Chandra Bose, Aurobindo Ghosh, Bagha Jatin, Mahatma Gandhi, Chakrovorty Raja Gopalachari, Jamsedji Tata, Nikola Testa, Sarah Berhardt, Emma calve, Jagdish Chandra Bose.

Swamiji said, "This life is short the varieties of the would

 ISBN : 978-93-80216-12-6

are transient, but alone they live, who live for others, the rest are more dead."

He also said, "India is immortal...... if she persists in her search for God. But if she goes in polities and social conflicts, she will die." It was said by him on the day of his death 4th July 1902.

Harmany between East and West:-

In order to sow the seed of the vedantic truths in the ready soil of America his campaign to America was a keypoint of the bridging of Eastern and Western spirituality.

In his first talk in America- People, Audience, immerdiately feeling the depth and sincerity, rose to their feet and standing clapping more then three minutes. Swamiji continued to preach the religion of love. renunciation, and truth as taught by Christ. How significant were his words, "It is well to be born in a church, but it is terrible to there!"

Swamiji has sincere admires and devotees among the Americans, who looked after his comforts, gave him money when he lacked it and followed his instructions. He was particularly grateful to American women.

In one letter he wrote, "No where in the world are women like those of this country. How pure, independent, self-relying and kind hearted. It is the women who are the life and soul of this country. All learning and culture are central in them.

Swami Vivekananda was a lover of humanity. Man is the highest manifestation of God, and this God was crucified in different ways in the East and West. Thus he had double missions to perform in America. He wanted to obtain

from Americans- Money, Scientific knowledge and technical help for the regeneration of the Indian masses and in turn to give to the Americans the knowledge of the Eternal spirit to ends their material progress with significance.

Margaret noble of England wrote about Swamiji's teachings" 'To not a few of us the words of Swami Vivekananda came as living water to men perishing of thirst........ people that walked in darkness have seen a great light."

Half-a-century after Swamiji's visit to America India gained her freedom from British rule, when she thus obtained facilities to arrange her national affairs in her own way, India sent thousands of students to the New world to acquire advanced knowledge in the physical sciences and technology. Swami Vivekananda was not a mere visionary, but had been successful in planting the seeds of India's spiritual ideas in the very heart of the English speaking world in the New York and London.

Economic Freedom:-

Swami Vivekananda thought that poverty is the main hindrance in freedom of a man. He used to said that, "property is for distribution not for collection. Like Mahatma Gandhi, Viveknanda neither advised to live in poverty nor appreciated it. He said, "Spiritualism cannot be gain by hungry stomach."

Principles:-

Swamiji emphasized upon following principles:-

- Democracy
- Human Rights
- Nationalism

 ISBN : 978-93-80216-12-6

- Spiritual Reincarnation of India
- Patriotism
- Internationalism
- Awareness through positive education

Few teachings of Swami Vivekananda-

Swamiji said, "To devote your life to the good of all and to the happiness of all is religion. More ever you do for your own sake is not religion."

He said, "This world is the great gymnasium where we come to make ourselves strong."

Swamiji said about Gautam Budha, "Budha is the only prophet who said, I do not care to know your various theories about God what is the use of discussing all the subtle dictions about the soul? Do good and be good.

Swamiji suggested, "we must overcome difficulty by constant practice. We must learn that nothing can happen to us unless we make ourselves susceptible to it."

"Take up an idea, devote yourself to it struggle on it with patience and the sun will rise for you."

"Struggle is life, weakness is death."

He quoted, "fear is death, fear is sin, fear is hall, fear is unrighteousness, fear is wrong life. All the negative thoughts and ideas that are in the world have proceeded from this evil spirit of fear."

Swamiji quoted hymns remembering from his childhood. "As the different streams having their sources is different places all might their water in the sea. So, O lord, the different paths when men take through different tenden-

 ISBN : 978-93-80216-12-6

cies various though they appear, crooked or straights all lead to thee."

Swami Vivekanand lesson to youth of India:-

Today, in the shocking wave of modernization, westernization, indistnalization it is the need of hour to give the preaching's and lessons of Swami Vivekanandji to the youth for building a healthy and wealthy nation India. His sayings are still fit for modern generations who are loosing their path due to take culture. They should learn their own culture, religion and civilisation too.

He said, Today the only service to be done for country so to educate all class mainly lover class to develop their individuality. They are to be given ideas, their eyes are to be opened to what is going on in. The world ground them and then they will work out their own salvation. Every nation, every man, and every women must only help they require. This is what to be done in India.

He said, "all the wealth of the world cannot help one little Indian village if the people are not taught to help themselves."

After the demise of his Guru Swami Ram Krishna Paramhansa, he started a math named after his Guru at Belur. He imposed the youth to develop the spiritual adventure. After travelling all over India, he reached Kanya Kumari. There he saw the ocean, reached to rock nearby and meditated there.

Swami Vivekanand passed away at the age of thirty nine years on 4th July 1902 fulfilling his own prophecy, "I shall not live to be forty years old."

For centuries to come people everywhere will be in-

 ISBN : 978-93-80216-12-6

spired by S.V.S. messonje: O man! first realize that you are one with Brahwan- aham Brahmani and then realize that the whole universe is verity the some Brahman-Sarvam Khalvidam Brahma. You cannot believe in God, until you belive in yourself.

Reminiscences of Swami Vivekananda-Eastern and Western admires 1st ed.

References

1. *Swami Vivekanand (1993)- Ramkrishna Mission Institute, Calcutta.*
2. *The life of Swami Vivekanand- Eastern and Western Disciples.*
3. *Swami Nikhilanand (2013)- Vivekanand: Abiography Advait Ashram, Kolkata.*

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Swami Vivekananda:-Education Philosophy

Sudhir Kasana
Research Scholar
Chaudhary Charan Singh University
Meerut, U.P., India

Swami Vivekananda (1863 – 1902), a great thinker and reformer of India, embraces education, which for him signifies 'man-making', as the very mission of his life. In this paper, which purports to expound and analyze Vivekananda's views on education, an endeavor has been made to focus on the basic theme of his philosophy, viz. the spiritual unity of the universe. Whether it concerns the goal or aim of education, or its method of approach or its component parts, all his thoughts, we shall observe, stem from this dormant theme of his philosophy which has its moorings in Vedanta.

Vivekananda realizes that mankind is passing through a crisis. The tremendous emphasis on the scientific and mechanical ways of life is fast reducing man to the status of a machine. Moral and religious values are being undermined. The fundamental principles of civilization are being ignored. Conflicts of ideals, manners and habits are pervading the atmosphere. Disregard for everything old is the fashion of the day. Vivekananda seeks the solutions of all these social and global evils through education. With this end in view, he feels the dire need of awakening man to his spiritual self-wherein, he thinks, lies the very purpose of education.

Swami Vivekananda – Real Meaning Of Education

According to Vivekananda, the meaning for education is love. Love and character making are the best means for

 ISBN : 978-93-80216-12-6

education. Love is a good inspiration in character making. Love in the minds of the educator is the real source of the influence upon the educated. The real education, gives the growth and opportunity to expand the personality. Swami ji wanted that the real education for total human development was the main vision. "Character, efficiency, accuracy and humanism must be the aim of all education. Vivekananda strongly pleaded that development of character through the service of his fellowmen, the utilization of his talents for ensuring the happiness and welfare of the millions of his less fortunate fellow-citizens should be the aim of the education." The child should be taught through by love, it makes fellow feelings and love for human beings. Education must help the individual to recognize his cultural heritage and to use it in his struggle of life. Education is a life-long process towards the fullest development of human personality, self-discovery, self-perfection, self-awareness and self-manifestation.

Method or Procedure

Having analyzed the goal or objective of education, the next question that naturally arises is about the method of imparting education. Here again, we note the Vedantic foundation of Swamiji's theory. According to him, knowledge is inherent in every man's soul. What we mean when we say that a man 'knows' is only what he 'discovers' by taking the cover off his own soul. Consequently, he draws our attention to the fact that the task of the teacher is only to help the child to manifest its knowledge by removing the obstacles in its way. In his words: 'Thus Vedanta says that within man is all knowledge even in a boy it is so and it requires only an awakening and that much is the work of a teacher.' To drive his point home, he refers to the

 ISBN : 978-93-80216-12-6

growth of a plant. Just as in the case of a plant, one cannot do anything more than supplying it with water, air and manure while it grows from within its own nature, so is the case with a human child. Vivekananda's method of education resembles the heuristic method of the modern educationists. In this system, the teacher invokes the spirit of inquiry in the pupil who is supposed to find out things for himself under the bias-free guidance of the teacher.

Swamiji lays a lot of emphasis on the environment at home and school for the proper growth of the child. The parents as well as the teachers should inspire the child by the way they live their lives. Swamiji recommends the old institution of gurukula (living with the preceptor) and similar systems for the purpose. In such systems, the students can have the ideal character of the teacher constantly before them, which serves as the role model to follow.

Although Swamiji is of the opinion that mother tongue is the right medium for social or mass education, he prescribes the learning of English and Sanskrit also. While English is necessary for mastering Western science and technology, Sanskrit leads one into the depths of our vast store of classics. The implication is that if language does not remain the privilege of a small class of people, social unity will march forward unhampered.

Philosophy Of Swami Vivekananda About The Education

The education according to Swami Vivekananda is that which prepares us for all struggles for the existence in this scenario. Education prepares us for the social service, to develop our character. For getting only a degree is not an education, the proper and right education must be viewed

on the basis of the character, confidence mental powers, intelligence, and intellectual power and inculcate Self-confidence and self-reliance in the individuals. Swamiji has also emphasized that the knowledge which we gets from worldly, by writing or spiritual lies embedded in the human mind. It was also covered with a veil of darkness and ignorance. Education is an important tool to open from the darkness and ignorance, after getting of education, the knowledge will shines out dazzlingly. The teaching and learning are the one way of process. The teacher only guides, suggests, points out and helps the student. Self learning and self getting knowledge is the real education. Our teacher only motivates and encourages the students to find out the hidden treasure of knowledge that lies dormant within us. He condemned and refused the bookish learning and rote memory education

Fields of Study

Vivekananda, in his scheme of education, meticulously includes all those studies, which are necessary for the all-around development of the body, mind and soul of the individual. These studies can be brought under the broad heads of physical culture, aesthetics, classics, language, religion, science and technology. According to Swamiji, the culture values of the country should form an integral part of the curriculum of education. The culture of India has its roots in her spiritual values. The time-tested values are to be imbibed in the thoughts and lives of the students through the study of the classics like Ramayana, Mahabharata, Gita, Vedas and Upanishads. This will keep the perennial flow of our spiritual values into the world culture.

Education, according to Swamiji, remains incomplete

ISBN : 978-93-80216-12-6

without the teaching of aesthetics or fine arts. He cites Japan as an example of how the combination of art and utility can make a nation great.

Swamiji reiterates that religion is the innermost core of education. However, by religion, he does not mean any particular kind of it but its essential character, which is the realization of the divinity already in man. He reminds us time and again that religion does not consist in dogmas or creeds or any set of rituals. To be religious for him means leading life in such a way that we manifest our higher nature, truth, goodness and beauty, in our thoughts, words and deeds. All impulses, thoughts and actions which lead one towards this goal are naturally ennobling and harmonizing, and are ethical and moral in the truest sense. It is in this context that Swamiji's idea of religion, as the basis of education should be understood. We note that in his interpretation, religion and education share the identity of purpose.

Swami Vivekananda- Principles of Education

As we all know very well Swami Vivekananda also prescribed the same archaic spiritual methods of teaching for education, where Guru and his followers lived in very close association as in a good family.

Some Basic Principles of Education Are Listing Below:

1. While giving basic and higher qualification, the technical qualification is also necessary for the vast industrial growth which will lead to the economical prosperity of the nation.
2. Being of Brahmacharya is also very essential for getting education. The strong concentration is the main key

for all type of knowledge.

3. Real Education must develop the childmentally, physically and spiritually with high morale.
4. Real education must develop strong character, mental powers with active brain, intelligence and inculcate high self-confidence with self-reliance.
5. Real Education is not only for getting only information; rather then it should develop strong character, mental powers, intelligence, emotions and inculcate huge self-confidence as well as self-reliance.
6. Education of religion must be imparted through kind and sweet impressions and fine conduct in preference to books of knowledge.

Swami Vivekananda- View's on Education

View on education of Swami Vivekananda deals with moral & education of religion, physical education and, medium of education, women education and education for each & every sections of society in our country.

1. Education For Each and Every Section of Society

Swami Vivekananda has advocated for the universal education so that the backward people in our country may fall in with others. To uplift the backward classes heèkshe chooses an education as a very powerful instrument for their life process in the society. Thus the education must spread to every household in the country, to factories, playing grounds and agricultural fields. If our children do not come to the school the teacher must reach them. Three or fourwell educated men should team up, collect all the data of education and must go to the village to impart the education to our children. Thus, Swami Vivekananda has favored an education for different type of sections of our

 ISBN : 978-93-80216-12-6

society, poor and rich, young and old, male and female.

2. Physical Education

As we all know that without the knowledge of physical education, our self-realization or strong character building is not possible. We must know how to make our body strong through physical education, to attain a complete education, it is almost very necessary to develop both the body and the mind. In particular, Swami Vivekananda has stressed the kind value of physical education in curriculum. He has also said, "You will be nearer to Heaven through football than through the study of Gita. You will understand Gita better by your biceps, your muscles a little stronger. You will understand the Upanishads better and the glary of the Atman, when your body stands firm on your feet and you feel yourself as man."

3. Moral and Education of Religion :

Swami Vivekananda has said, "Our religion is the most innermost core of education. I do not mean my own or anyone else opinion about religion. Religion is as the rice and everything else, like the curries. Taking only curries causes indigestion and so is the case with taking rice alone." Therefore, education of religion is a main part of a curriculum. Swami Vivekananda considered MadbhagwatGita, Upanishads and all the Vedas are the most important curriculum for religious education. For him, a religion is a self realization. It is not only an individual's development but also for the transformation of totality of a man. The real religion will not be limited to a particular place of time. He has advocated for the unity of world religion. He also has realized real truth while practicing of the religion. The truth is our main power, where untruth is our weakness. Where our knowledge is our truth, thereour ignorance is our

 ISBN : 978-93-80216-12-6

untruth. Thus the real truth increases our mental μpower, courage and energy. It is light giving, therefore, necessary for the individual as well as collective welfare. In the Vivekananda's point of view, religion and ethics are one and the same.

4. Self Education:

In fact Self education is only the self knowledge. That is, of only our own self is the good guide in all the struggle of our life. If we take an example, at the childhood stage, the child will face lot of problems or commit mistakes in the process of character formation in his life. The child will also learn very much by his mistakes. All the errors are the stepping stones to our progress in our character. This progress will need more and more courage. The strong will also is the sign of great character will makes men great, which is also needed.

5. Women Education:

In our world women education is not in the hands of other people, the powers are in the women only. Swami Vivekananda has also considered that eachwoman to be the incarnation of boost power and asked men to respect them in each μevery place. He has rightly pointed out that unless Indian women own secure a respectable place in this country, other people can never march forward to them. The important features of Swami Ji's scheme of woman education are to make them stronger, more fear-less, and more conscious of their chastity and dignity. He also insists that men and women are equally competent not only in the academic matters, but also must have equal companion in the home, office, schools, colleges and family. Vivekananda being a keen observer could make the difference in perception about the status of women in the West

 ISBN : 978-93-80216-12-6

and in rest of India.

6. Man Making Education :

Another view of educational philosophy of Swami Vivekananda is a harmonious deduction between the archaic Indian ideals and modern Western beliefs. He did not only stress on the mental,physical, moral, spiritual and vocational development of a child but also he has advocated the women education as well as education of the masses. The essential characteristics of his educational philosophy of Swami Vivekananda are idealism, naturalism and pragmatism. In a naturalistic view points, he emphasized that real education is possible only through nature and natural propensities.

7. Medium of Education :

In this worldLike Sh. Rabindranath Tagore and Sh. Mohandas Karamchand Gandhi, Swami Vivekananda has also emphasized the education through the mother tongue. Besides this, there must be a common acceptable language which is very necessary to keep the country united in all over the world. Swami Vivekananda has appreciated the greatness of our Sanskrit that it is the only source of all Indian languages; with the absence of this knowledge, it will not be possible to understand our Indian culture. It is like a store or a house of archaic heritage, to develop our society it is necessary that all of us should know this language, besides the knowledge of our mother tongue.

Conclusion

The exposition and analysis of Vivekananda's scheme of education brings to light its constructive, practical and comprehensive character. He realizes that it is only through education that the uplift of masses is possible. To refer to

his own words: Traveling through many cities of Europe and observing in them the comforts and education of even the poor people, there was brought to my mind the state of our own poor people and I used to shed tears. When made the difference? "Education" was the answer I got.'

He states it emphatically that if society is to be reformed, education has to reach everyone-high and low, because individuals are the very constituents of society. The sense of dignity rises in man when he becomes conscious of his inner spirit, and that is the very purpose of education. He strives to harmonize the traditional values of India with the new values brought through the progress of science and technology.

It is in the transformation of man through moral and spiritual education that he finds the solution for all social evils. Founding education on the firm ground of our own philosophy and culture, he shows the best of remedies for today's social and global illness. Through his scheme of education, he tries to materialize the moral and spiritual welfare and upliftment of humanity, irrespective of caste, creed, nationality or time. However, Swami Vivekananda's scheme of education, through which he wanted to build up a strong nation that will lead the world towards peace and harmony, is still a far cry. It is high time that we give serious thought to his philosophy of education and remembers his call to every-body-'Arise, awake, and stop not till the goal is reached.'

References :

1. *Biswan A. µAggraval J.C; Seven Indian Educators (1977) New Delhi; National Solidarity (publication)Press*
2. *Singh, Y.K. Philosophical Foundation of Education, New Delhi: APH Publishing Corporation, 2007, p. 233.*

 ISBN : 978-93-80216-12-6

3. *BharthyVijaya; Educational Philosophies of Swami Vivekananda µ John Dewey (2010)New Delhi; A.P.H.Publishing Corporation*
4. *Pandy R.S.; Philosophising Education (2005) New Delhi; Kanishka Publishers; Distributors.*
5. *4 Pani, S.P. and Pattnaik, S.K. Vivekananda, Aurobindo and Gandhi on Education, New Delhi: Anmol Publications PVT. LTD., 2006, pp. 59-60.*
6. *Pani, S.P. and Pattnaik, S.K. Vivekananda, Aurobindo and Gandhi on Education, New Delhi: Anmol Publications PVT. LTD., 2006, p. 68.*
7. *Srivastava Kamal S. SrivastavaSangeeta; Great Philosophers µ Thinkers on Education (2011) New Delhi; A.P.H.Publishing Corporation.*
8. *www.google.co.in*
9. *Nair V.S. Sukumaran; Swami Vivekananda The Educators (1987) New Delhi; Sterling Publisher (P) LTD*
10. *ChakrabartiMohit; Pioneers in philosophy of education (1995) New Delhi; Concept publishing company*

Vivekananda's Vision on Character Building

Dr. Aparna Sharma
Asstt. Prof.
ALS(D), GGSIP University, Delhi

Rabindranath Tagore once commented about Swami Vivekananda and his teachings, "If you want to know India, study Vivekananda, in him everything is positive and nothing negative." Vivekananda realized that a country's future depends on its people, so he mainly stressed on man, "man-making is my mission", that's how he described his teaching. Vivekananda put his real ideals in few words and that was: "to preach unto mankind their divinity and how to make it manifest in every movement of life."

It is said that if you want to judge the character of a person, do not look at his great performances, every fool may become a hero at times. If you really wish to know the reality of a person, observe him performing his most common actions, this will expose the true individuality of the person, i.e. his real character. Great occasions rouse even the lowest of human beings to some kind of greatness, but he alone is the really great man whose character is great always, the same wherever he be.1

The methodology taken up in this paper is doctrinal as there is no parameter on which the psychology of mankind could be estimated. Character is a phenomenon of mindset evolved and progressed in different manners as per the different people, their priorities and preferences, their problems in life. Someone may bear a very strong moral character but may be at times the issue of family or some other sensitive issue which can weigh more than that moral perspective and the character is given up. Then there are

allurements strong enough to shake the firmness of mind. One can preach lot of good things but when it comes to practice they are meant for others. These days this type of scenario is seen in majority. Vivekananda's vision was to make people strong enough, not to give up under any circumstances. And for this very purpose he says, “Nothing else is necessary but these love, sincerity, and patience.2

The simple path is the most difficult one as the people won't let you with your goodness, they will come with lot of obstacles, and there comes the test of character one has to be strong enough to face the stumbles and to revert back as well in the most appropriate manner.

Bravery is not a limited version confined to armed and police forces protecting us from external and internal attacks. Its range is very wide, if one stood up for a cause that is bravery, in an era which is full of materialism the one who impart love and service without any expectation of return is brave, the one who is not lured up by the vices of air and keeps a stand of his own at work place and society is an act of bravery. Doing the work with honesty and integrity is bravery, to help out someone in need is bravery, not to give up under any circumstances is bravery. What to say, in fine any act of kindness with pure intentions too is bravery. Coming up with such gestures was the objective of Vivekananda and such was his concept of character building.

Character to him on the equal parameters to bravery was bearing a wider explanation; loyalty to one partner is the very confined and limited version of it. As the ideology of Vivekananda was not an ordinary one so does his philosophies. He focused that if the character is firm the per-

ISBN : 978-93-80216-12-6

son can come up with unexpected positivity at times. He believed that "Money does not pay, nor name; fame does not pay nor learning. It is love that pays; it is character that cleaves its way through adamantine walls of difficulties."3 His philosophy discarded any cowardice act as weak character is not able to stand in his own eyes forget about the society or any concrete action. He believes, "no cowardice no, no sin, no crime, no weakness- the rest will come of itself."4

The problems of the world cannot come to an end suddenly, one can provide material help but it will come to an end one can support by actions but for a limited time period. The need is to focus over the change in nature of mankind; it has to be pure and balanced so that the character could get impetus and strength. Physical help is a temporary feature and it weakens the people contrary to it to develop inner strength is like assisting them for life long to stand on their own. He stated, "let men have light, let them be pure and spiritually strong and educated, the alone will misery cease in the world, not before."5

Why the character building has to be given such importance over the innovations, solutions to problems, scientific inventions, and achievement of economic goals etc.? It is because only character can tell us to use the above mentioned in a proper manner or as in appropriate resource, else one can end up to be engrossed in pleasures coming up as a result of material progress, instead of the perfect use of resources.The character of any man, it really is but the aggregate of tendencies, the sum total of the bent of his mind. As pleasure and pain pass before his soul, they leave upon it different pictures, and the result of these combined impression is what is called a man's character.6

“Arise awake and stop not till the goal is reached”, are the golden words spoken by Swami Vivekanand. This quote is very apt in the modern perspectives which make us understand that his vision was much ahead of his times and philosophy was not relevant to his contemporary world but was like milestones of Bihari and Kabir (Hindi poets). After many decades and vast change we find every statement very relevant and useful. Today also if his philosophies are given due weight age and be taught religiously on a practical note we can have a new set of people, who will be taking up the character, on a broader perspective, and will be brave in their actions.

To promote ethical values, including thinking, behavior and feelings to it, creating a caring community, using a comprehensive intentional approach to character development, providing opportunities for moral action, developing intrinsic motivation, foster moral leadership etc. are the principles of effective character education7 time to time practiced by Vivekananda.

Swami Vivekananda once spoke of himself as a "condensed India." His life and teachings are of inestimable value to the West for an understanding of the mind of Asia. William James, the Harvard philosopher, called the Swami the "paragon of Vedantists." Max Muller and Paul Deussen, the famous Orientalist of the nineteenth century, held him in genuine respect and affection8. The aura which was there in Vivekananda to raise the voice against injustice, and not only to raise but not to agree unless it is rectified, in itself speak volumes for character building.

His wordsare great music, phrases in the style of Beethoven, stirring rhythms like the march of Handel

 ISBN : 978-93-80216-12-6

choruses. I cannot touch these sayings of his, scattered as they are through the pages of books, at thirty years' distance, without receiving a thrill through my body like an electric shock. And what shocks, what transports, must have been produced when in burning words they issued from the lips of the hero!9 Character is something which is very personal and that much personal of an individual which either he knows or his God. One may feel bad for someone in his heart but may be on the face appear very affable and deceive the person; there comes into picture the true character. Vivekananda asked to know the true self or the purpose of soul for which it took birth, in that process one has to follow the path of character building as the one who lack in values cannot achieve that.

The secret of life lies in honesty and bravery, numbers do not count, nor does wealth or poverty, a handful of men can throw the world off its hinges, provided they are united in thought, word and deed10. These words speak volumes of his perception to hold on to the firm character which can suggest and action for the betterment of self and society too.

The relevance of these details can be observed in life, time to time when we say, teach yourselves, teach everyone his real nature, call upon the sleeping soul and see how it awakes. Power will come, glory will come, goodness will come, purity will come and everything that is excellent will come when the sleeping soul is rousedto self-conscious activity11. It is only the character which motivates the self by making it fearless and to set an example for others to dare.

All the power is within you; you can do anything and

everything. Believe in that; don't believe that you are weak. Stand up and express the divinity with in you. His firm faith in this quote supports the importance of virtues which comes from within. Any task, even if it is of least importance if be given 100% gives the utmost satisfaction to the self and encourages one to take up another. For that very purpose he suggested to,

"Take up one idea, make that one idea your life, think of it, dream of it, live of it, let the brain, muscle, nerves, every part of your body be full of that idea and just leave every other idea alone. This is the way great spiritual giants are produced, others are mere talking machines". In fine it could be said that in the process of character building, three things are necessary to make every man great, every nation great- Conviction of the powers of goodness, Absence of jealousy and suspicion, Helping all who are trying to be and do good. If this perception is taken up by mind then the exact character edifice will be the result, which can create wonders.

References :

1. *Complete Works: The Complete Works of Swami Vivekananda, Vol.1,Advait Ashram, Kolkata, 1989, p. 29*
2. *Complete Works: The Complete Works of Swami Vivekananda, Vol.4,Advait Ashram, Kolkata, 1989, p. 367*
3. *Ibid, p.367*
4. *Complete Works: The Complete Works of Swami Vivekananda, Vol.5,Advait Ashram, Kolkata, 1989, p. 3*
5. *Complete Works: The Complete Works of Swami Vivekananda, Vol.1,Advait Ashram, Kolkata, 1989, p. 53*
6. *Complete Works: The Complete Works of Swami Vivekananda, Vol.1,Advait Ashram, Kolkata, 1989, p.27*
7. *Lickona, T., Schaps, E., μ Lewis, C. (2000). Eleven principles of effective character education. Washington, DC: Character Education Partner-*

ship (CEP). Retrieved May 2004, from http://kwww.character.org/kprinciples/kindex.cgi.

8. *Nikhilananda, Swami Vivekananda Biography, Ramakrishna-Vivekananda Center, New York, 1953, http://www.ramakrishna.org/ksv.htm*
9. *Romain Rolland,Life of Vivekananda,Vedanta Press μ Bookshop, 195.*
10. *Arise Awake an Exhibition on Swami Vivekananda, Sri Ramkrishna Ashram, Mysore, 2002, panel 40*
11. *Arise Awake an Exhibition on Swami Vivekananda, Sri Ramkrishna Ashram, Mysore, 2002, panel 27*

Importance of Swami Vivekananda's Educational Thoughts In Present Scenario

Dr. Manorama Singh
Asstt. Prof., Political Science
D.D.U College, University of Delhi

Swami Vivekananda is not only a social reformer but also the educationist, profound scholar of the vedic lore, patriot prophet of India. If education is viewed as the most powerful instrument of social change, his contribution to educational thought is of paramount importance. He is one of the famous philosopher as well as educationist in the history of Indian education. He believed in Vedanta philosophy which considers that the ultimate goal of human life is to attain 'Unity with the creator'.[1] According to him God resides in every human hear so the best worship of god is service to mankind. In the words of Vivekananda 'Education means that process by which character is formed, strength of mind is increased, and intellect is sharpened, as a result of which one can stand on one's own feet'.[2]

Swami Vivekananda always believed that without real education the development of a nation is not possible. In case of national building, development of good personality in every human being is very essential. Therefore Swami Vivekananda emphasized on man making education by which we can made a good citizen for our national development. According to him, "Man making means a harmonious development of body, mind and soul".[3] Vivekananda realizes that mankind is passing through a crisis, Moral and religious values are being undermined. The fundamental principles of civilization are being ignored, conflicts of ideals, manners and habits are pervading the

 ISBN : 978-93-80216-12-6

atmosphere, disregard for everything old is the fashion of the day. Vivekananda seeks the solutions of all these social and global evils through education'.

Goal of Education

According to Vivekananda "Education is manifestation of perfection already in man".[4] This definition of education given by him purely based vedanta philosophy. From the begining our sacred literature considered that knowledge was inbuilt within the soul. He could not get from out side. Everyone is endowed with contain capacities which remain dormant. Vivekananda believed that the education is the process by which these inherent potential in human being manifest themselves in completing his or her total development.

Swami Vivekananda says 'Education is not the amount of information that is put into your brain and runs riot there, undigested all our life. We must have life building, man making, character making education system.' According to him the defect of present education is that it has no definite goal. He attempts to ascertain, through his words and deeds, that the end of all education is man making. He further says that the object of the ideas system of education should not merely be the advancement of theoretical knowledge but also the advancement of life, development of highest powers and capacities and the enfoldment of the noblest potentialities of student. As Vivekananda said, 'what a man "learns" is really what he "discovers", by taking the cover off his own soul, which is mine of infinite knowledge'.[5]

Religion Should be Firm Foundation of Education.

Swami Vivekananda emphasized the religion should be

 ISBN : 978-93-80216-12-6

the firm foundation on which the great structure of education was to be built. He had in mind no particular religion but a universal religion, so he said “I look upon religion as the innermost core of education. I do not mean my own or any body else opinion about religion. Religion is as the rice and everything else like the curries; Taking only curries causes indigestion and so is the case with taking rice alone.”[6] The true eternal principles have to be held before people. Vivekananda considered Gita, Upanishads and the Vedas as the most important curriculum for religious education. For him religion is attainment of self realization and divinity. It helps not only individual development but also the transformation of total man. The true religion cannot be limited to particular place or time. He realized truth while practicing of religion. The truth is the power, untruth is weakness knowledge is truth, ignorance is untruth. Thus truth increase power, courage and energy. It is the source of light and therefore necessary for the individual as well as collective welfare. In Vivekananda’s point of view, ethics and religion are one and same god is always the side of goodness. The moral and religious education develops the self confidence among the young men and women.

It is a misinterpretation of Vivekananda’s philosophy of education to think that he has overemphasized the role of spiritual development to the utter neglect of the material side. He feels it is necessary that India should adopt all the good things from the western civilization.

However, just like a person every nation has its individuality, which should not be destroyed. The individuality of India lies in its spiritual culture. Hence in Vivekananda’s view, for the development of a balanced

 ISBN : 978-93-80216-12-6

nation, we have to combine dynamism and scientific attitude of the west with the spirituality of the nation. The entire educational program should be so planned that it equips the youth to contribute to the material progress of the country as well as to maintaining the supreme worth of India's spiritual heritage.

Man Making Education

The educational thoughts of Vivekanandaa's is a harmonious synthesis between the ancient Indian ideals and modern western beliefs. He not only stressed upon the physical, mental, moral and vocational development of child but also he advocated women education as well as masses. The essential characteristics of educational philosophy of swami Vivekananda are idealism, naturalism and pragmatism. In naturalistic views, he emphasized that real education is possible only through nature and natural propensities. In the form of idealist view he insists that the aim of education is to develop the child with moral and spiritual qualities. In the pragmatists view, he emphasized the great stress on the western education of technology, Commerce, industry and science to achieve material prosperity. In brief, first he emphasized spiritual development then material prosperity after that solving problem of fooding and clothing of the masses.

Vivekananda considered women to be the incarnation of power. He rightly pointed out that unless Indian women secure a respectable place in this country, the nation can never move forward. The important features of his education system about women education are – 'Make women strong, fearless and concious of their charity and dignity.' He insists that men and women are equally

 ISBN : 978-93-80216-12-6

competent not only in the academic matters, but also in other spheres of life.

Swami Vivekanandaa emphasised on Man making education for human development as well as national development. According to him, man making education is inherent in character development as well as vocational development. Vivekananda always said one thing that the main purpose of education is to build up such a personality whose character is covered with full of morality. He also said that education without character is like a flower without fragrance. An education system that doesn't recognize this can be self defeatist at the best.

He said, education is a process in which the young minds will receive strength, energy and vigorous character. "All knowledge and all powers are within, what we call power, secrets of nature and force are all within. All knowledge comes from the human soul. Man manifest & knowledge discover it with himself, which is pre-existing through eternity."[7]

The best way to develop a character is the personal example of high character set by the teacher. In ancient Indian system of education, the teacher used to present high ideal before the pupils, who in their turn imitated these ideals according to their capacities.

Education of Masses

The individual development is not full development of our nation, so he needs to give education to the society or common people. The education is not only confined to the well-to-do person only but also to the poor people. He takes this mass education as an instrument to improve the individual as well as society. He exhorted to his country

men to know "I consider that the great national sin is the neglect of the masses and that is one of the causes of our downfall. No amount of politics would be of any avail until the masses of India are once more well-educated well fed and well-cared for."[8]

He wanted that the education for total human development was the main vision. "Character efficiency and humanism should be the aim of all education. Vivekananda pleaded that the development of character through the service of his fellowmen, the utilization of his talents for ensuring the happiness and welfare of the millions of his less fortunate fellow citizens should be the aim of the education"[9]

He states it emphatically that if society is to be reformed education has to reach every one high and low, because individuals are the very constituents of society. The sense of dignity rises in man when he become conscious of his inner spirit and that is the very purpose of education. He strives to harmonize the traditional values of India with new values brought through the progress of science and technology.

It is in the transformation of man through moral and spiritual education that he finds the solution for all social evils education which is based on firm ground of our philosophy and culture, he shows the best of remedies for today social and global illness. Through his scheme of education, he try to materialize the moral and spiritual welfare and upliftment of humanity. Netaji Subhash Chandra Bose wrote, "Swamiji harmonized the east and the west, religion and science past and present. And that is why he is great. Our countrymen have gained unprecedented

self respect, self reliance and self assertion from his teachings".[10]

Lastly, we can say that the thoughts and ideas of Swami Vivekananda regarding moral values and character building is bearing a great significance in the field of our present education. According to him thus we can make a society or nation or universe where everything is good, no corruptions no anti-social activities no immoral activities are exist by value based education system.

References :

1. *Jyotirmayananda, Swami (2000) [1986], Vivekananda, His gospel of Man making with a garland of tributes and a chronicle of his life and times, with picture (4th ed) Chennai, India, Swami Jyotirmayananda P 960, ISBN 81-85 304-66-1*
2. *Prabhananda Swami (June 2003), "Profile of famous educators Swami Vivekananda", prospects (Netherlands Springer) XXX111 (2) 231-245.*
3. *Rolland Romain (2008), the life of Vivekanandaa and the Universal Gospel (24 ed), Advaita Ashrama, P. 328, ISBN 978-81-85 301-01-3*
4. *Johri Pradeep Kumar, Educational thought, New Delhi: Anmol Publication Pvt. Ltd. 2005 P.238.*
5. *Complete works of Swami Vivekananda(CW), Advaita Asharam, Kolkata, Vol. I, P.28.*
6. *Chandra S.S. and Rajendra K. Sharma Philosophy of Education New Delhi: Atlantic Publishers and Distributors (P) Ltd., 2004 P. 212.*
7. *Pani, S.P. and Pattnaik, S.K. Vivekanandaa, Aurbindo and Gandhi on Education, New Delhi: Anmol Publication Pvt. Ltd. 2006, PP-57-58.*
8. *Siddique, M.H., Philosophical and sociological perspectives in education New Delhi Aph publishing corporation, 2009 P. 74*
9. *Johri, Pradeep Kumar, Educational thought, New Delhi: Anmol Publication Pvt. Ltd. P.239.*
10. *Cited in http://www.merinews.com/article/swamivivekananda and nationalyouthday/15793970.shtml.*

Need To Pour Oil-Drops Upon The Troubled Water

Dr. Usha Sawhney

Asstt. Prof. – English

SMPG Govt. Girls PG College, Meerut

"Anything that makes you weak physically, intellectually and spiritually, reject as poison".

— Swami Vivekananda

Nationalism simply means national interests. The world constitutes of a number of nations. Each and every nation looks for one's own national interests. Not only the nations look for their own interest rather they look forward for caring and respecting the interests of other nations too.

The purpose of this paper is not to discuss the political issues and aspects of nationalism. The purpose of this paper is to examine the insight and vision of Indian artists and literary personalities in context to the present day nationalism also how does these national interests affect our youth. This paper is certainly going to discuss as to how the Indian youth should look at the nationalism.

There is no denying the fact that definition, meaning and interests of nationalism keep changing from time to time for every nation. For us, during the time when India was under British rule it meant total independence from that foreign rule. After we achieved freedom from British rule, got independence, the interest of our nation changed and now it simply meant consolidation of our boundaries, security and development our social and political institutions. Also to build up our structure strong decorated and ornamented by high values of humanity and integrity.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Ours is a nation that never looks beyond the norms of humanity and integrity.

In present scenario, nationalism means to us development with a strong and stable economy along with maintaining the harmony among the people of different sects living in the country. India is a big country and since long is known for its various types of social and religious diversities. Undoubtedly, our country is still maintaining its unity in diversity firmly and beautifully.

Swami Vivekananda too was strictly against favouring a specific caste, creed or religion. He talked about various agendas like[1] :

1. A critic of orthodox and conservative approach
2. Upliftment of poor people
3. Against Child Marriage
4. Caste culture was not at all appreciated by Swami Vivekananda
5. Against following blindly the Western Culture[2]
6. Never supported revolutionary changes

But, it's the universal fact that the time doesn't remain same, it keeps on changing. The present conditions are witnessing innumerous differences among the people at the global level. The thunder and sparks of those differences can be heard everywhere and in our country too. One can not remain detached and aloof for long from all these happenings in the world, in your own country and around your very neighborhood, neither politically nor socially and in context of literature. A writer or an artist is certainly one who is equally alert and foresees things much earlier than others.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

Through this paper, my aim is to take up certain issues in context to the present day literary personalities related to literature and art of our country with reference to the spirit of nationalism and nationalism only.

For the last few months nation is witnessing some sort of protest amongst few of our literary personalities and artists on certain events and happenings in the country. May I very respectfully raise a voice, "Is it correct?" or "Is it in the interest of the nation to exhibit their protest the way few of those did?" Once again, I transparently state that this paper will not discuss a single individual or mention any name whosoever, but will solely concentrate upon discussing the issues and ideas.

"BY the study of different religions we find that in essence they are one".

— Swami Vivekananda

We all know that all such incidents have been largely criticized. Some went to the extent that these were those who could not make it by taking an honor and now returning it to gain some fame and popularity for themselves. Is that so? Does a literary personality, an artist, or a play-write works with this intention? Does a thinker, a philosopher or a writer become a political propagandist and write for a particular political party? I strongly hold this ideology that a thinker, a philosopher or a writer writes for the issues and values related to the humanity and the human life. A writer is much above the worldly outlooks and works for the overall development of human kind and humanity. According to Swami Vivekananda one should be strongly work / duty oriented not rights oriented[3]. Be it an author or a common man; one must focus upon the work and

duties that are associated with onself. It was painful that the people from literary background began to take care of their rights whereas it was their prime duty to concentrate upon the needs of the society. What was right for the society in a particular situation ? The society always gets influenced by the PEN.

If for any reason, a gap between two groups of people is widened due to any circumstance they don't laugh or scream over it and show their protest in any form of condemnation, while their positive concern is always welcomed by the society. They are not at all expected to raise a voice of revolt against the existing government and order. We can not always hold our government responsible for every such act and incident. Usually all such scenes and issues are very deep routed and have their connections out of our boundaries. A cool and pacifying attitude is a wise step and expected by the intelligentsia strata, artists and from almost all those who lead a prominent role in any sort of public life. In any case, criticism in any negative form worsens the scene and situations and makes a bad thing ugly. A sweet melody is always welcome as compared to a loud yelling siren or alarm of discontentment. A man of pen should never leave the companionship of the pen, for it is much mightier than anything else in this huge universe. It is he who can pour oil-drops over to troubled water with this vital use of his strong weapon.

My submission is that that the work, the act and almost every word uttered of a public figure matters, it matters more for their own image and personality than it matters for the public, hence they should always be very careful in their acts and words . The entire career and life of an artist depends upon the fancy of the people. Once an image of

 ISBN : 978-93-80216-12-6

an artist is tarnished his / her career is gone forever and to re-establish that previous image or status becomes a herculean task.

Censor should not be looked forward for restriction from the government, generally their own censor should be considered for helping the writers and artists for their good and glory. Also it plays a vital role in decorating the society in a beautiful and perfect manner by the intelligentsia class. A public figure is always required to be extremely careful in dealing with such matters pertaining to the life and peace of social order. Undoubtedly, these public figures act as the role models for a huge number of people and also are followed blindly.

Now before I conclude, I have few words for our youth. I would draw their attention towards the meaning of present day nationalism and its requirements. To achieve and maintain strong feeling of nationalism is not only a responsibility of the government. It is our concern and we along with all our youth are required to achieve and maintain it. Youth certainly plays a prominent role in the development of a society, a nation. So it is necessary to for the youth to have their minds very clear in following or accepting the right direction and discarding the wrong and harmful ways by their own sense of intelligence. It is not only their responsibility but also their duty not to be misguided by such incidents which can lead to thunders and sparks resulting into utter chaos. Instead they should maintain their cool in the interest of the nation and pursue all the countrymen to follow the cool and right way.

"Fill the brain with high thoughts, highest ideals place them day and night before you and out of that will come a great work".

— Swami Vivekananda.

 ISBN : 978-93-80216-12-6

References :

1. *Dr. Avasthi, A.P; Indian Political Thinkers; Laxmi Narain Agarwal, Agra; 2007*
2. *Shri Sharma, V.P; Swami Vivekananda : On India and her Problem; Pages 102-103*
3. *Shri Mehta, Jivan; Indian Political Thinkers; Sahitya Bhawan; 2008.*

Vivekananda As Futuristic Thinker

Neetika Sharma
B.A., L.L.B.
Govt. Law College Mumbai

Futuristic thinker means a thinker who thinks for the present contesetas well as for the future also. Swami Vivekananda was born on 12 January 1863 in kolkata, in a respectable middle- class family. His father, Vishwanath Dutta, was an attorney, and a lover of Fine arts. His mother, Bhuvaneswari Devi was also religious and kind hearted lady The influence of both parents was deep on Narendra. He developed high ideals in family atmosphere. From the very childhood he liked meditation and become engrossed he is called saint for the reason because his power of concentration or he fixed his mind on one thing and detached it from everything else. It was different from other saints. His ideals made him the first and for most thinker of India.

It was his meeting with shri Ramakrishna that gave him much help to display his ideas on religion shri Rama Krishna's question if he believed in god and Narendra'sa answer that he can ever prove God. Who is omnipotent and omnipresent and he can even like him like other human beings. He got Knowledge of religion in the company of Ramakrishna . His ideals helped him in preaching about religion

Shri Ramaprishna passed his life in spirituality. He discovered some truths of great significance to all of us today. Shri Ramakrishna believed that all religions either it is Hinduism, islam or Christianity, but they all direct their

steps towards the same god though the ways may be different. Narendra travelled most ports of India on foot because he was trying to search a religion that will be for the good of all. A religion that can be adopted by all. Vivekanand completed his tour of India. He was asked to represent Hinduism at the world parliament of religions, to be held that year in 1893 in Chicago.

There were many speakers who spoke on then on faiths and Creeds but Vivekanand spoke of the God of all. His Call for religious harmony and acceptance of all religions brought him great acclaim. When parliament was over, he went on many lectures at different places in the mid west and the East coast of the United states, there were a large number of people, intellectuals who followed him. Vivekanand Started free classes on Vedanta and yoga in New York. Thus he formed Vedanta society there. Swamy's definition of education is defferent to others. He believed that what we learn, it already exists and is waiting to be expressed. The main aim of learning is to make the display of hidden ability. Vivekanand said in his lecture "What a man learns is really what he discovers. Another important things in Swamy's definition of education is the expression that exists already in man. This emphasizes the potential of human beings which can be called the range of abilities and human talents. The goal of education differs from person the person and from society to society.

Vivekanand gave great importance to women education. He told that women should solve their can problems in their can way. Nobody will help them Generally it is found that virtues and morals are shown as Values. These have

Values and value education. He felt that religion on should form the core of education. By religion he meant spirituality.such education will be helpful in forming characters.

In Hinduism people love to god for the hope of reward in the next world but he good thing is to love God for love's sake. We must ask God Without the hope of reward The Vedas teach that the soul is divine but it is in the bondage of body. Soul will get perfection when this bandage will burst and soul will get freedom from all bondages. And what happens of man after getting perfection. He lives the life of bliss. It cannot be an individual. When the soul becomes perfect, it gets its own nature and existence, absolute knowledge and absolute bliss. It is called losing of individuality. Therefore to attain infinite individuality, this little prison has to be left. Science has proved this fact that physical individuality is a delusion that really my body is one little continuously changing body in an unbroken matter. Science is also the name of unity. Hence every science has its own fundamental fact. Science of religion becomes perfect when it would discover God who is the one life in a universe of death. God is Constant in the even Changing life all Science is bound to came to this conclusion The religion of Hindus is divided into two parts The Ceremonial and spiritual in both of the sects spiritual is more important in the sense that they paid much attention for God and its facts. There is no caste of saints they may be from high caste as well as from low caste.

He emphasized on practical experience of everything. He believed that we cannot understand a word of truth

until we experience it ourselves. A man cannot become a doctor simply by bookish knowledge but he has to have some experience through practical. We can read books, hear lectures, but experience is like a teacher. Practice is absolutely necessary. He believed that education system must not be entirely literary. The student should be made to think for himself and work for himself. It will not do merely to listen to great principles, rather we must apply them in practical fields, turn them in Constant practice.

Vivekananda put emphasis on character building that is the most important aspect that made him popular not only in India but abroad and it is the need of modern society also today the most important thing that is lost in society is character. He told that every foot may become a hero at one time or another but he alone is the really great man whose character is great always the same wherever he be. Money, power name or fame all have no importance if character is weak. It is only character that cleaves its way through adamantine walls of difficulties.

Thus Vivekanand is a great thinker of all ages like William Shakespeare. He taught to his age as well as for future. He presents a way to walk. People followed him and still try to follow for his ideals. He said: "A true taught is one who is pure and has a real thirst for knowledge"

References :

1. *Rolland, Romain (2008), The Life of Vivekananda and the Universal Gospel (24 ed.), AdvaitaAshrama*

2. *Sen, Amiya (2003), Gupta, Narayani, ed., Swami Vivekananda, New Delhi: Oxford University Press*

3. *Hegde, A. (2016, February 2). Inspire to Reach Higher: Swami Vivekananda - Empowering quotes that inspire. Speech presented at 150th Birth Anniversary of Swami Vivekananda.*

4. *Majumdar, Ramesh Chandra (1963), Swami Vivekananda Centenary Memorial Volume, Kolkata: Swami Vivekananda Centenary, p. 577*

5. *Nikhilananda, Swami. (1953). "Vivekananda: A Biography". New York: Ramakrishna-Vivekananda Center.*

6. *Paul, Dr S. (2003). Great Men Of India : Swami Vivekananda. Sterling Publishers Pvt. Ltd.*

 ISBN : 978-93-80216-12-6

NATIONAL ADVISORY BOARD

- **Dr. Ashwani Kumar Goyal,** Joint Secretary, Deptt. of Higher Education, U.P. Government, Lucknow
- **Prof. R. K. Barik,** Deptt. of Public Administration, Indian Institute of Public Administration, New Delhi
- **Dr. Arun Mohan Sherry,** Senior Vice President. H.C.L., Chennai
- **Prof. Sanjeev Sharma,** Deptt. of Political Science, C.C.S. University, Meerut
- **Dr. Rajesh Kumar,** Associate Professor, Deptt. of History, Aryabhatta College, Delhi University, Delhi
- **Dr. Anand Singh,** Associate Professor, School of Buddhist Studies and Civilization, G.B.U, Greater Noida
- **Dr. Ajay Chaturvedi,** Associate Professor, Deptt. of History, Vardhman College, Bijnore, U.P.
- **Dr. Vinod Kumar Shanwal,** Head of Deptt. of Education and Training, School of Humanities and Social Science, Gautambuddh Nagar
- **Dr. Molik Gadani,** Associate Professor, Deptt. of Botany, St. Xavier College, Ahmedabad
- **Dr. A. K. Ranjit Singh,** Deptt. of Zoology, Rajsunakhala College, Rajsunakhala Nayagarh, Orissa
- **Dr. V. K. Singh,** Deptt. of Zoology, Agra College, Agra
- **Sh. Vikram Bhardwaj,** Deptt. of History, Govt. College, Karsog, Distt. Mandi, Himachal Pradesh

माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्जवलित कर संगोष्ठी का शुभारम्भ करते हुए
माननीय संयुक्त सचिव, उच्च शिक्षा डॉ. अश्वनी कुमार गोयल एवं प्राचार्या जी

माननीय मुख्य अतिथि डॉ. कमल टावरी, IAS (सेवा निवृत) एवं पूर्व अतिरिक्त
सचिव भारत सरकार को पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत करती प्राचार्य जी

विषय प्रवर्तन करते हुए संगोष्ठी संयोजक डॉ. किशोर कुमार

मुख्य वक्ता प्रो. अशोक कुमार शास्त्री अपना सारगर्भित
वक्तव्य प्रदान करते हुए

संगोष्ठी के सम्मानित अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत
उद्बोधन करती हुई प्राचार्या महोदया

अपर सचिव, उ. प्र. उच्च शिक्षा परिषद्, लखनऊ
डॉ. आर.पी.एस. यादव स्व-विचार व्यक्त करते हुए

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र का संचालन करती हुई डॉ. रश्मि कुमारी

उद्घाटन सत्र की विशिष्ट अतिथि डॉ. शीला टावरी
अपना उद्बोधन देते हुए

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ. कमल टावरी अध्यक्षीय
उद्‌बोधन प्रदान करते हुए

संगोष्ठी में उपस्थित प्रतिभागी एवं विषय–विशेषज्ञ

डॉ आर. पी. एस. यादव को पुष्प गुच्छ भेंट कर
उनका स्वागत करते हुए डॉ. जे.पी. सिंह

उत्तरीय प्रदान कर मुख्य अतिथि डॉ कमल टावरी
का सम्मान करती हुई प्राचार्या महोदया

प्रो. अशोक शास्त्री जी को स्मृति चिन्ह प्रदान करती
हुई डॉ. अर्चना वर्मा, एसो. प्रो. (इतिहास)

संगोष्ठी में उपस्थित विद्वतजन परिचर्चा का आनन्द लेते हुए

प्रथम तकनीकी सत्र का संचालन करती हुई डॉ. दिव्यानाथ

प्रथम तकनीकी सत्र में अपना शोध-पत्र प्रस्तुत करती हुई
डॉ. उषा साहनी, असि. प्रो. (अंग्रेजी)

अपना शोध-पत्र प्रस्तुत करती हुई डॉ. अनीता गोस्वामी

प्रथम तकनीकी सत्र के अध्यक्ष के रूप में प्रतिभागियों के
शोध-पत्रों का सार प्रस्तुत कर सत्र का समापन करते हुए डॉ. राजेश कुमार

द्वितीय तकनीकी सत्र में सम्भाषण करती हुई
सत्र उपाध्यक्ष डॉ. सक्षम सिंह

संगोष्ठी में अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ. राजेश कुमार द्विवेदी

प्रसन्न मुद्रा में संगोष्ठी पंजीकरण समिति के सदस्यगण

श्री विक्रम भारद्वाज को स्मृति चिन्ह भेंट करती हुई डॉ. मिन्तु, असि. प्रो. (हिन्दी)

द्वितीय तकनीकी सत्र के अवसर पर विषय पर प्रकश डालते हुए
(डॉ. के. के. शर्मा)

द्वितीय तकनीकी सत्र का संचालन करती हुई डॉ. अर्चना सिंह
एसो. प्रो. (हिन्दी)

समापन सत्र के अतिथि वक्ता प्रो. हरविन्दर सिंह,
(IMT GHAZIABAD) अपना उद्‌बोधन देते हुए

समापन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. अश्वनी कुमार गोयल
संगोष्ठी पर अपने विचार व्यक्त करते हुए

समापन सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. हरविन्दर सिंह को
स्मृति चिन्ह भेंट करती हुई डॉ. दीप्ती वाजपेयी

संगोष्ठी समापन अवसर पर संगोष्ठी की आख्या प्रस्तुत
करते हुए संगोष्ठी आयोजन सचिव डॉ. दिनेश चन्द शर्मा

प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित करते हुए प्रमाण-पत्र लेखन समिति के सदस्य

संगोष्ठी समापन सत्र के अवसर पर मंचासीन सम्मानित अतिथिगण एवं प्राचार्या महोदया

समापन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. अश्वनी कुमार गोयल जी को पुष्प गुच्छ भेंट करती हुई डॉ. अनीता रानी राठौर

उत्तरीय भेंट कर प्राचार्या महोदया का सम्मान करते हुए संगोष्ठी संयोजक डॉ. किशोर कुमार

National Seminar Committees

Chief Patron : **Dr. R. P. Singh**
Director- Higher Education, U.P.

Patron : **Dr. Jyotsna Garg, Principal,**
K.M.G.G.P.G. College, Badalpur

Conveners : **Dr. Kishor Kumar**

Organizing Secretaries : **Dr. Anita Rani Rathore**
Dr. Dinesh C. Sharma

Advisory Board

Ms. Ranjana Jain
Dr. Seema Sharma
Dr. Sangita Gupta
Sh. J.P. Singh
Dr. Archana Singh
Dr. Rashmi Kumari
Dr. Asha Rani
Dr. Jeet Singh
Dr. Anita Singh

Organizing Committee

Dr. Divya Nath
Dr. Deepti Bajpai
Mrs. Shilpi
Dr. Harindra Kumar
Dr. Satyant Kumar

Treasurer

Dr. Arvind Kumar Yadav
Sh. Sanjeev Kumar

Welcome Committee

Ms. Ranjana Jain
Dr. Deepa Chand
Dr. Seema Sharma
Dr. Archana Verma
Dr. Sangita Gupta
Dr. Divya Nath
Sh. J. P. Singh
Dr. Anita Rani Rathore
Dr. Anita Singh

Master of Ceremony

Dr. Divya Nath
Dr. Kishor Kumar
Dr. Deepti Bajpai
Dr. Archana Singh
Dr. Sushila

Editorial Board

Dr. Kishor Kumar
Dr. Divya Nath
Dr. Anita Rani Rathore
Dr. Deepti Bajpai
Dr. Vineeta Singh

Registration Committee

Dr. Seema Sharma
Dr. Nidhi Raizada
Dr. Seema Devi
Dr. Kanaklata Yadav
Sh. Balram Singh,
Sh. Ratan Singh

Stage Decoration Committee

Dr. Shivani Verma
Ms. Shilpi
Ms. Nisha Yadav
Dr. Vineeta Singh
Dr. Annu Mahajan

ISBN : 978-93-80216-12-6

Seating Arrangement Committee
Dr. Pankaj Chaudhary
Sh. Dheeraj Kumar
Mohd. Waqar Raza
Sh. Chandra Prakash
Sh. Rajkumar

Sound Committee
Dr. Harindra Kumar
Dr. Dheeraj Kumar
Sh. Kanak Kumar
Sh. Mukesh Sharma

Beautification of College Premise
Dr. Sangita Gupta
Sh. Dheeraj Kumar
Ms. Pawan
Dr. Neelam Sharma
Dr. Arvind Kumar Yadav
Dr. Vandana Sharma

Purchase Committee
Dr. Divya Nath
Dr. Anita Rani Rathore
Dr. Dinesh C. Sharma
Dr. Kishor Kumar

Photography Committee
Dr. Anita Singh
Ms. Neha Tripathi
Sh. Manik Rastogi

Travel Allowance µ Finance Committee

Dr. Arvind Kumar Yadav
Dr. Harindra Kumar
Sh. Mahesh Bhati

Certificate Writing Committee
Dr. Kanak Kumar
Dr. Bhawana Yadav
Dr. Diksha
Dr. Mintu
Sh. Udai Kumar Paswan

Press and Publicity
Dr. Dinesh C. Sharma
Dr. Kishor Kumar
Dr. Deepti Bajpai
Dr. Satyant Kumar

Cultural Committee
Dr. Babli Arun
Dr. Sonam Sharma

Refreshment Committee
Dr. Mamta Upadhayaya
Ms. Shilpi
Sh. Arvind Kumar
Dr. Neha Tripathi

Lunch - Committee

Dr. Satyant Kumar
Dr. Pankaj Chaudhary
Dr. Rajesh Yadav
Dr. Vikram Singh

Stationary, Banner and Folder Committee
Dr. Dinesh C. Sharma
Dr. Kishor Kumar

Disciplinary Committee
Ms. Ranjana Jain
Dr. Asha Rani
Sh. Sanjeev Kumar
Dr. Neha Tripathi
Dr. Satyant Kumar
Mohd. Waqar Raza

 ISBN : 978-93-80216-12-6

पुनरुत्थित भारत से अभिप्राय है-चेतनाशील भारत, तर्क रहित धारणाओं से मुक्त भारत, औचित्यपूर्ण अवधारणाओं का भारत, स्वतन्त्र और सही भारत, सिद्धान्त एवं व्यवहार में मानवतावादी भारत। पुनरुत्थित व्यक्ति, पुनरुत्थित समाज और पुनरुत्थित राष्ट्र सीमाओं से, विभिन्न दायरों से छद्‌म चेतनाओं से, किसी क्षेत्र से और किसी विषय वस्तु के एकान्तिक पक्ष से स्वयं को सीमित नहीं रखता अपितु उसका दायरा और सीमायें असीमित हैं, अनन्त हैं।

ISBN : 978-93-80216-12-6

SWAMI VIVEKANAND STUDY CENTRE
Km. MAYAWATI GOVT. GIRLS POST GRADUATE COLLEGE
Badalpur (Gautambudh Nagar) U.P. - 203207
Website : www.kmgcbadalpur.org
E-mail : principal@kmgcbadalpur.org

9 789380 216126